मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी

मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी

प्रेमशंकर सिंह



श्रुति प्रकाशन

दिल्ली

ISBN : 978-93-80538-12-9
Price Rs.400/-
US $ 100 (for abroad)

पहिल संस्करण : 2009

श्रुति प्रकाशन

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१ ,भूतल ,न्यू राजेन्द्र नगर ,
नई दिल्ली-११०००८.
दूरभाष)-०११ (२५८८९६५६-५८ फैक्स)-०११(२५८८९६५७
Website :http ://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

Typeset by thebookdesigner@live.com
Printed at : Ajay Arts, Delhi-110002

Distributor :
AJAY ARTS
4393/4A, Ist Floor, Ansari Road, Darya Ganj, New Delhi-110002.
Telephone : 2328-8341, 4362-8341

MAITHILI BHASHA SAHITYA: BEESAM SHATABDI by Premshanker Singh
a Criticism in Maithili Language

आरम्भिक

विश्व मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्म प्रकाशित होइछ। देशक परिवर्त्तित परिवेशमे विगत शताब्दीक साहित्यमे नवशिरासँ विकसित हैबाक प्रेरणा देलक। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे साहित्य चिंतक भगीरथ साधना क' कए साहित्यमे नव भाव मन्दाकिनीक अवतारणा कयलनि जे मातृभाषानुरागक प्रति जनरुचि जागल जकर जीवंत दस्तावेज थिक विगत शताब्दीक साहित्य। एहि सन्दर्भमे काव्य धारा आ गद्य धारामे अभूतपूर्व परिवर्त्तन ,परिवर्द्धन आ परिमार्जनक फलस्वरूप जनोपयोगी साहित्य सृजनक शुभारम्भ भेल। एहि कालावधिमे प्रकाशित साहित्य मिथिलाञ्चलक जनजीवनक प्रभातकालीन गतिशीलता ,ग्राहिकाशक्ति ,चेतना आ स्फूर्त्तिक आशा भरल गाथा थिक। एहि परिप्रेक्ष्यमे साहित्यक कोनो एहन विधा बाँचल नहि रहल जाहिमे तिल तिल नूतनताक संचार भेल आ साहित्य नव स्पन्दनसँ भरि गेल। यथार्थतः विगत सहस्त्राब्दीक कालावधि मानसिक उथल पुथल आ बौद्धिक क्रांतिक संधि स्थल थिक जकर यथार्थ प्रतिनिधित्व करैछ प्रकाशित साहित्य। परिवर्त्तित परिवेशमे साहित्यांतर्गत एक नव स्पन्दनक संचार भेल जकर जीवंत प्रतिमान थिक।

शिक्षाक व्यापक प्रचार प्रसार ,रेल तारक विस्तार ,स्वायत्त शासन व्यवस्था , मुद्रण कलामे आमूल परिवर्त्तन ,परिवर्द्धन ,परिमार्जन आ विश्व स्तरक सामाजिक चेतनाक प्रभाव मिथिलाञ्चलक समाजपर पड़ल जकर क्षीण आलोक साहित्य सर्जक लोकनिपर पड़लनि जे आधुनिकताक सन्दर्भमे एहि दिशामे उन्मुख भेलाह। विगत शताब्दीमे मैथिली भाषा आ साहित्यमे महाक्रांतिक उद्भावना भेल जे साहित्यिक गतिविधिकेँ दिशाबोध करौलक। कतिपय मातृभाषानुरागी तपःसपूत कर्त्तव्यबुद्धया ,मनसा वाचा कर्मणा नव स्फूर्त्तिक संग मातृभाषाक अभ्युथानार्थ अपन अभूतपूर्व नव नव विधादिक रचनादि द्वारा साहित्यिक गवाक्षसँ प्रवेश कयलनि , जाहिसँ नूतनताक संचार भेल तथा एहिमे जे अभावादि छल तकर पूत्यर्थ रचनाधर्मी साहित्य मनीषी अत्यंत तन्मयता ,मनस्विता आ लगनशीलताक संग एकर सम्वर्द्धनार्थ तत्परता देखौलनि जकर सुखद परिणाम भेल जे मातृभाषा मैथिलीक विशाल भण्डार नव नव कनोजरसँ अंकुरित होमय लागल।

आलोच्य शताब्दी यथार्थतः गद्य युगक रूपमे प्रस्फुटित भेल जकर फलस्वरूप आधुनिकताक बीज वपन भेल। विगत शताब्दीक सर्वाधिक उपलब्धि थिक अनुवाद ,

आत्मकथा ,आलोचना ,इतिहास ,उपन्यास ,कथा ,कविता ,गल्प ,डायरी ,नाटक एकांकी ,जीवनी ,पत्रिका ,निबन्ध ,रिपोतार्ज ,लोकसाहित्य ,संस्मरण एवं साक्षात्कार आदि नव साहित्यिक विधादिक उद्भावना भेलैक जे हमर संस्कृति एवं सभ्यताकेँ उद्घाटित करबामे ,नव स्पन्दन भरबामे आ नव रश्मिकेँ आलोकित करबामे समर्थ भ' सकल। यथार्थतः विगत शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णयुग थिक जे गद्यक माध्यमे आधुनिकताक प्रवेश द्वारपर दस्तक देलक। विगत शताब्दीक परिप्रेक्ष्यमे मुख्य मुख्य रचनाकारक आलोकमे प्रस्तुत कृतिकेँ रूपायित करबाक उपक्रम कयल गेल अछि जे अपन अनमोल कृतिक कारणेँ साहित्यांतर्गत परिवर्त्तनक स्वरकेँ अनुगुंजित कयलनि आ परिवर्त्तित परिवेशमे नव स्पन्दन अनबाक उपक्रम कयलनि।

यद्यपि साहित्यमे नवीनताक शुभारम्भ विगत शताब्दीक आरम्भिक कालहिसँ भ' गेल छल ,किंतु एकैसम शताब्दीमे प्रगतिक पथपर एहि रूपें पल्लवित पुष्पित भेल जे मिथिलाञ्चलसँ नहि भ' सकल ,मुदा प्रवासी मातृभाषानुरागसँ प्रतिफल उत्प्रेरित भ' एकरा विश्व फलकपर आनि एहिमे प्रथमे प्रथम *ई जर्नल विदेह* (www.videha.co.in) *अर्काइवक* प्रकाशन निर्विवाद रूपें एक स्वर्णिम इतिहासक शुभारम्भ थिक, जकर श्रेय आ प्रेय छनि युवा क्रांतिकारी मातृभाषानुरागी *गजेन्द्र ठाकुरकेँ* जे एकरा इंटरनेटपर आनि निखिल विश्वकेँ मातृभाषाक अर्वाचीन आ प्राचीन साहित्यिक इतिवृत्तिसँ परिचय करयबाक उपक्रम कयलनि जे चिरन्तन धरि अर्चित चर्चित रहताह से हमर दृढ़ विश्वास थिक।

प्रस्तुत कृति मैथिली पाठकक सम्मुख आबि सकल तकर श्रेय छैक ,ई जर्नल विदेहकेँ जाहिमे धारावाहिक रूपें कतिपय अंकमे ई प्रकाशित होइत रहल तकरा पुस्तकाकार रूपमे श्रुति प्रकाशनक *श्रीमती नीतू कुमारी* आ *नागेन्द्र कुमार झाकेँ* , जे भारतक राजधानी दिल्ली सदृश महानगरसँ मैथिली प्रकाशन दिस उन्मुख भेलाह जे एकर आलोकमय भविष्यक सूचक थिक। एकर रूपायनमे समय कुसमय कतिपय व्यवधान उपस्थित भेल जकर समाधानार्थ *प्रणव ,दीपशिखा ,निहारिका* आ *ध्रुवक* अपरिमित सहयोग सतत भेटैत रहल एतदर्थ अशेष शुभकामना अछि जे हुनका सभक भविष्य उत्तरोत्तर विकसित होइन। *अजय आर्टक* व्यवस्थापक *अजय मल्होत्राक* अयाचित सहयोगक फलस्वरूप प्रस्तुत कृति पाठकक सम्मुख अछि तदर्थ बधाई। शब्द संयोजनक शुद्धाशुद्धिक दुर्वह दायित्वक भार सम्हारलनि *आशीष कुमार चौधरी* जे हुनक मातृभाषानुरागक प्रतिफल थिक ,तदर्थ शुभाशीष।

प्रेमशंकर सिंह
नई दिल्ली

क्रम

प्राक्कथन

मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी - प्रेमशंकर सिंहजीक एहि निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रहमे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न प्रिय-अप्रिय पक्षपर चर्चा भेल अछि। अप्रिय पक्ष अबैत अछि एहि द्वारे जे राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखनो काल परस्पर विरोधी होइत अछि।

मैथिली साहित्यक पुरान सन्दर्भ *मैथिली भाषा आ साहित्य*मे वर्णित अछि। *लोकगाथा* मे मणिपद्मक लोकगाथाक क्षेत्रमे अवदानकेँ रेखांकित करैत लोकगाथाक चर्चा भेल अछि । *लोकनाट्य* मे मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत उल्लेख अछि। *बीसम शताब्दी-स्वर्ण युग*मे मैथिली साहित्यक सए बर्खक सर्वेक्षण अछि। *पारंपरिक नाटक* मे मैथिलीक आ मैथिलीमे अनूदित पारम्परिक नाटकक चर्चा अछि। *सामाजिक विवर्तक जीवन झा* मैथिली नाट्य साहित्यमे हुनका द्वारा आनल नूतन कथ्य-शिल्पकेँ रेखांकित करैत अछि। *हरिमोहन झाक परवर्त्ती रचनाकारपर* प्रभाव हरिमोहन झा पर समीक्षा अछि। *मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी* जयकान्त मिश्रक अवदानक आधारित अछि। *संस्मरण साहित्य* मे मणिपद्मक *हुनकासँ भेँट भेल छल क सन्दर्भमे* संस्मरण साहित्यपर चर्चा भेल अछि। *अमरक एकांकी: सामाजिक यथार्थ* मे अमरजीक एहि विधा सभक *तँ मायानन्दक रेडियो शिल्प* मे मायानन्द मिश्रक एहि विधाक सर्वेक्षण अछि। *चेतना समिति ओ नाट्यमंच* मे चेतना समिति द्वारा कएल रचनात्मक कार्यक विवरण अछि।

एहि सभ आलेखमे सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, संस्था सभक निर्माण वा वर्तमानमे संपूर्ण समुदायक धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित सुधारक आवश्यकता, महिला-लेखन आ बाल-साहित्यक स्थान-स्थापर चर्चा, यथासंभव मेडियोक्रिटी चिन्हित करबाक प्रयास, मूल्यांकनमे ककरो प्रति पूर्वाग्रह वा घृणा नहि राखब- ई सभटा समीक्षाक आवश्यक तत्वक ध्यान राखल गेल अछि। एक पाँतिक वक्तव्य कतहु नहि भेटत, पूर्ण विवेचन भेटत।

कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति होअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइत छैक। आ एहने साहित्य बेर-बेर अपनाकेँ परिमार्जित-परिवर्धित करितो मूल दोषसँ दूर नहि भऽ पबैत अछि, अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। मुदा तथ्यपूर्ण मूल्यांकनसँ लेखकक एहि प्रवृत्तिकेँ प्रेमशंकर सिंह चिन्हित करैत छथि। जातिवाद-सांप्रदायिकतावाद आबिये जाइत छैक, तकरा चिन्हित करैत छथि, हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? ओ ई सेहो चिन्हित करैत छथि। मैथिली साहित्य, जतए पाठकक संख्या शून्य छैक, एक साहित्यकार दोसराक समीक्षा करैत अछि आ एतए व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक पूर्ण गुंजाइश छैक। अहाँ दू-चारिटा कवि-कथाकार सम्मेलनमे चलि जाऊ, उद्घोषकक उद्घोषणा आ थोपड़ी उद्घोषकक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रहकेँ चिन्हित कऽ देत। एहि सन्दर्भमे ई संग्रह एकटा नूतन दृष्टिकोण उपस्थित करैत अछि, बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन करैत अछि आ गपाष्टक आ समीक्षाक अंतरकेँ चिन्हित करैत अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली भाषा आ साहित्य

ऋगवेदक भाषाक अध्ययन-अनुशीलन, चिन्तन-मनन, विवेचन-विश्लेषणसँ अवबोध होइत अछि जे वैदिक युगमे तीन उपभाषा प्रचलित छल- *उत्तरक भाषा मध्यक भाषा* आ *पूर्वी मध्यक भाषा*। ब्राह्मण ग्रन्थक अवगाहनोपरान्त एहन प्रतीत होइत अछि, ओही भाषा सभकेँ क्रमशः *उदीच्च*, *मध्यदेशीय*, एवं *प्राच्य* भाषाक नामसँ सम्बोधित कयल गेल। प्राच्य बोली अर्द्ध मागधी आ मागधी प्राकृतक साक्षात माय छलीह। *पूर्वी हिन्दी* आ *कौसली* क स्रोत अर्द्ध मागधी थिक। एखन मागधी अपभ्रंशक अत्याधुनिक प्रतिनिधित्व बाङला, असमिया, ओड़िया, मैथिली, मगही आ भोजपुरी क' रहल अछि। उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे स्पष्ट भ' जाइछ जे मैथिली आर्यभाषा परिवारक एक प्राचीनतम भाषा थिक। एकर उत्पत्ति पूर्वी प्राकृतिक पूर्वी कोष्ठ मगध विदेह प्राकृतसँ भेल अछि। प्राचीन उपलब्ध सामग्रीमे एकर अनेक नाम प्रकाशमे आयल अछि। विश्वकवि विद्यापति (1350-1450) एकरा *अवहट्ठ*, लोचन (1650-1725), मिथिला अपभ्रंश बेलिगत्ती (Beluigatti), *तिरहुतिया*, वा *तिरहुतियन* आ सुभद्र झा (1909-2000), *मिथिला अपभ्रंश* नामे सम्बोधित कयलनि। मिथिलाक भाषाक उल्लेख *आइने अकबरी* मे सेहो भेल अछि जतय एकरा पृथक भाषाक रूपमे स्वीकार कयल गेल अछि। आधुनिक कालमे मैथिली नाम सर्वाधिक प्रचलित अछि। ई नाम जे लोकप्रियता अर्जित कयलक तकर सब श्रेय छनि हेनरी थॉमस कोलब्रुककेँ जे सर्वप्रथम एशियाटिक रिसर्चेज भाग-7, पृष्ठ-199 पर हुनक संस्कृत आ प्राकृत सम्बन्धी निबन्धक अन्तर्गत भेटैत अछि। तत्पश्चात् सिरामपुर मिशनरी द्वारा अपन सोसायटीक 1816 ई.क छठम मेम्वायरमे अन्य आर्य भाषा सभक संग तुलना करैत मैथिली शब्दक उल्लेख कयलनि अछि (इण्डियन एण्टीक्वेरी 1903, पृष्ठ.245)। पाछाँ जा क' एस.डब्लू. फेलन, विशप कैम्पबेल (1814-1891), डॉ. हार्नेले (1841-1915) आ केलाग आदि विद्वत्-वृन्द स्थल-स्थलपर मिथिलाक भाषा मैथिलीक चर्चा कयलनि अछि। पाश्चात्य विद्वत्-वृन्दमे मैथिलीक सबसँ उल्लेखनीय सेवा डॉ. जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1851-1941) कयलनि। वस्तुतः ग्रियर्सन द्वारा मैथली शब्दक प्रचार कयल गेल आ मिथिलाक भाषाक अर्थमे कयल जाय लागल।

मिथिलाक भाषा मैथिलीक एहि व्यापकताकेँ सर्वप्रथम डॉ. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन लक्ष्य कयलनि। 1880 ई.मे अपन *बिहारी भाषा* क व्याकरणक भूमिका ओ लिखलनि जे निकट भूतमे मिथिलाक भाषापर पश्चिमसँ भोजपुरी अधिकार क' लेलक अछि आ बदलामे ई गंगा पार क' गेल अछि आ उत्तर पटना तथा मुंगेर एवं भागलपुरक ओहि भागपर अधिकार क' लेलक जे गंगाक दक्षिणमे पड़ैत अछि। ई कोसीकेँ पार क' पूर्णियाँ धरि पसरि गेल। ओ पुनः 1903 ई.मे गंगाक दक्षिण भागलपुर एवं मुंगेरक अतिरिक्त संथालपरगनाक पश्चिमोत्तर भागकेँ मैथिली कहलनि।

अतएव मैथिल संस्कृति आ मैथिली भाषा मिथिलाक भौगोलिक सीमासँ विशेष व्यापक अछि। मैथिली भाषा सम्बन्धी सीमापर जखन विचार करब तखन पायब जे मैथिलीक पश्चिमी, पूर्वी, उत्तरी तथा दक्षिणी सीमापर क्रमशः भोजपुरी, बाङला, नेपाली आ मगही भाषा स्थित अछि।अपन निजी क्षेत्रमे मुण्डा आ संताली एहि दुनू अनार्य भाषासँ मिलैत अछि। ई कहब निरर्थक अछि जे अपन पड़ोसक भाषासँ सीमापर ओहिसँ मिश्रित भ' जाइत अछि आ ओहि क्षेत्रमे ई कहब कठिन अछि जे बाजल गेनिहार भाषा ओहि भाषादिसँ प्रभावित मैथिलीक उपभाषा थिक वा नहि।

मैथिली मुख्यतया उत्तर-पूर्वक बिहारक आदिवासी लोकनिक मातृभाषा थिक। बिहार प्रान्तक मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चम्पारण, पश्चिमी चम्पारण, बेगूसराय, खगड़िया, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, पूर्णियाँ, किशनगंज, कटिहार, मुंगेर, भागलपुर, लखीसराय, शेखपुरा, बाँका, आ झारखण्ड प्रदेशक संथालपरगना, गोड्डा, देवघर, जामताड़ा इत्यादि जिलामे ई भाषा बाजल जाइत अछि। एहि भाषाकेँ ई श्रेय छैक जे ई अन्तर्राष्ट्रीय भाषाक रूपमे नेपालक रोतहट, सरलाही, सप्तरी, महोत्तरी आ मोरंग आदि जिलामे बाजल जाइत अछि। एहि भाषा क्षेत्रक उत्तरमे मगही आ ओड़िया तथा पश्चिममे हिन्दी अछि। प्राचीन कालसँ ल' कए आधुनिक काल धरि भाषातत्वविद् लोकनि एकर बोली उपरूपक तालिका प्रस्तुत कयलनि अछि। एकर निम्नांकित उपरूप अद्यापि उपलब्ध अछि: मानक मैथिली, दक्षिणी मैथिली, पूर्वी मैथिली, पश्चिमी मैथिली, छेका-छीकी मैथिली, जोलही बोली आ केन्द्रीय वर्त्तात्मक मैथिली।

मैथिली भाषाक अधिकांश साहित्य मानक मैथिलीमे उपलब्ध अछि जकरा *साहित्यिक भाषा, साधुभाषा* अथवा *शिष्टभाषा* सेहो कहल जाइत अछि। अधिकांश समयधरि ई एकमात्र साहित्यिक अभिव्यक्तिक भाषा छल जाहि आधारपर एकरा मानक मैथिली कहल जाइत अछि। ई दरभंगा आ मधुबनी जिलामे बाजल जाइत अछि। दक्षिणी मानक मैथिली समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, सहरसा,मेधपुरा आ

सुपौल जिला आदिमे बाजल जाइत अछि। एहिमे मानक मैथिलीसँ किछु अन्तर अछि। पूर्वी मैथिली पूर्णिया, अररिया, किशनगंज, कटिहार आदि जिला क केन्द्रीय आ पश्चिमी भागमे अशिक्षित वर्ग सभमे चलैत अछि तथा महानन्दासँ पूर्व सेहो हिन्दू लोकनि बजैत छथि जतय मुसलमान मुख्यत: बाङला बजैत अछि। छिकाछिकी बोली गंगाक दक्षिण भागमे बाजल जाइत अछि। एहिमे खगड़िया आ बेगूसराय जिलाक पूर्वी भाग, बाँका जिलाक पश्चिम भागकेँ छोड़ि क' संथालपरगनाक उत्तरी आ पश्चिमी भागमे बाजल जाइत अछि। पश्चिमी मैथिली मुजफ्फरपुर, पूर्वी चाम्पारण आ पश्चिमी चाम्पारण जिलाक पूर्वी भागमे बाजल जाइछ। चम्पारण आ उत्तर मुजफफरपुरक बोली भोजपुरीसँ प्रभावित अछि। जोलही बोली दरभंगा जिलाक अधिकांश इस्लाम धर्मावलम्बी अपन पड़ोसी हिन्दूक भाषा मैथिली बजैत अछि, मुदा ओकर बोली थोड़ेक विकृत आ अरबी-फारसी शब्दसँ मिश्रित रहैत अछि।

वर्त्तमान समयमे मैथिलीक दू उपभाषाक नव नामकरण आ नवजागरण भेल अछि जाहिमे प्रथम थिक अंगिका आ द्वितीय थिक बज्जिका। अंगिका भाषाक नाम पड़ल अछि जकरा हम पूर्वी मैथिली कहल अछि आ डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन छिकाछीकी गँवारी कहलनि।एकर क्षेत्र भागलपुर, गोड्डा आ देवघर तथा संथालपरगना मानल जाइत अछि। बज्जिका ओहि उपभाषाक नाम पड़ल अछि जकरा हम पश्चिमी मैथिली कहलहुँ अछि। ई नामकरण बज्जी आ लिच्छिवीक इतिहासक आधारपर कयल गेल अछि, किन्तु आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे एहि जातिक नामोनिशान नहि भेटैत अछि।

मैथिली व्याकरणक अपन निजी विशेषता अछि। एकर विशिष्टताक प्रसंगमे डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन लिग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया (खण्ड-5, भाग-2 1902), एन इण्ट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज ऑफ नौर्थ विहार (1800) तथा सेभन ग्रामर्स ऑफ द डायलेक्ट्स एण्ड सब डायलेक्ट ऑफ द विहारी लैंग्वेज (1883)मे विस्तारपूर्वक विचार क' ई प्रमाणित क' देलनि अछि जे ई विश्ष्टिता अन्य भारतीय भाषादिमे नहि उपलब्ध भ' रहल अछि। मैथिली व्याकरणमे सर्वनामक तीन रूप प्रयुक्त होइत अछि- अपने, अहाँ आ तों वा तोरा, मुदा बाङ्लामे दू आपनी आ तूमि वा तुइ आ हिन्दीमे सेहो दूइए रूप प्रयुक्त होइत अछि आप आ तुम। मात्र भाषा-शास्त्रक दृष्टिएँसँ नहि, प्रत्युत व्याकरण आ शब्दावलीक विभिन्नतादि आ विशेषतादि कारणेँ नहि, अन्य भाषा-भाषी लोकनिक द्वारा सरलतासँ बुझबाक कारणेँ नहि, प्रत्युत अपन एक स्वतन्त्र साहित्यिक आ सांस्कृतिक परम्परा हैबाक कारणेँ मैथिली भाषाक स्वतन्त्र अस्तित्व अछि। मैथिली भाषा आ व्याकरणक सम्बन्धमे अनेक कार्य भेल अछि। ओहुना संस्कृत आ अंग्रेजी व्याकरणक आधार मानि क' मैथिलीमे छोट-पैघ अनेक व्याकरण लिखल गेल अछि,

मुदा महावैयाकरण दीनबन्धु झा (1878-1955) क मिथिला भाषा विद्योतन (1945) क ऐतिहासिक महत्व अछि जकरा सूत्र-शैलीमे ओ लिखलनि जे संस्कृत-प्राकृतक श्रेष्ठ व्याकरणादिसँ तुलना कयल जा सकैछ। एहि व्याकरणकेँ आधार मानि क' गोविन्द झा (1923) लघुविद्योतन (1963) आ उच्चतर मैथिली व्याकरण (1979) क रचना कयलनि। हिनक अन्य कृतिमे मैथिलीक उद्‌गम ओ विकास (1968) आ मैथिली भाषा (1974) उल्लेखनीय अछि। एहि दिशामे सुभद्र झा (1909-2000) द फारमेशन ऑफ मैथिली लैग्वेज (1960) सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्य कयलनि अिछ।

अन्य स्वतन्त्र साहित्यिक भाषाक समान मैथिली भाषाक अपन स्वतन्त्र प्राचीन लिपि थिक जकरा *तिरहुता* वा *मिथिलाक्षर* वा *मैथिलाक्षर* वा *मैथिली लिपि* कहल जाइत अछि। तिरहुता नामसँ ज्ञात होइत अछि जे ई लिपि तिरहुत देशक अछि जकर विकास *तीरमुक्त* वा *तिर्हुत* नामक व्यवहार हैबाक बाद पूर्णत: प्राप्त कयल गेल अछि। बौद्ध ग्रन्थ *ललित-विस्तार* मे एहि लिपिकेँ *वैदेही लिपि* क नामपर अभिहित कयल गेल अछि। घुमा क' लिखनिहार पूर्वी वर्णमाला साक्षात बाङला असमिया, मैथिली आ ओड़िया लिपिक स्रोत थिक। वस्तुत: मिथिलांचलमे उपलब्ध प्राचीन संस्कृत ग्रन्थ एहि लिपिमे उपलब्ध अछि जकरा बाङला, असमिया आ ओड़ियाक पण्डित लोकनिकेँ पढ़बामे सुविधा होइत छनि। पटनासँ प्रकाशित आचार्य परमानन्द शास्त्री (1915–2000) मिथिला मिहिरमे *मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास* (1960-61)मे अनेक किस्तमे एहि लिपिक तात्विक अध्ययन प्रस्तुत कयलनि, किन्तु दुर्योग रहल जे पुस्तकाकार प्रकाशित नहि भ' सकल। एहि दिशामे राजेश्वर झा (1923-1977) *मिथिरलाक्षरक उद्भव आ विकास* (1971) लिखि क' एकर ऐतिहाकिसकता, प्राचीनता, शास्त्रीयता प्रमाणित कयलनि अछि जे भाषा-वैज्ञाानिक दृष्टिसँ एकर सर्वातिशायी महत्व थिक। उनैसम शमाब्दीक मध्य धरि ई लिपि जीवित छल, मुदा वर्त्तमान सन्दर्भमे एकरा लोक बिसरि गेल अछि आ ओकरा स्थनपर देवनागरी लिपि व्यवहार कयल जाय लागल अछि।

मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि एकरा सामान्यत: तीन काल आदिकाल, मध्यकाल आ आधुनिक कालमे विभक्त क' अध्ययन कयलनि अछि। किन्तु ओकर समय सीमाक निर्धारणमे इतिहासकार लोकनिमे मतैक्यक सर्वथा अभाव अछि। इतिहास-लेखनक आधार-भूत प्रक्रियाकेँ घ्यानमे राखि क' एकरा निम्नस्थ काल खण्डमे विभाजित करब श्रेयस्कर प्रतीत होइत अछि:

i. आदिकाल 800 ई.सँ 1350 ई. धरि।
ii. मध्यकाल 1351 ई.सँ 1857 ई. धरि।
iii. आधुनिक काल:-

i. ब्रिटिशकाल 1857 ई.सँ 1947 ई. धरि।

ii. स्वातन्त्र्योत्तर 1947सँ अद्यपर्यन्त।

सन् 1857 ई. क सिपाही विद्रोहक पश्चात् मैथिली साहित्यमे आधुनिक कालक सूत्रपात मानल जा सकैछ। ई विशाल मुगल साम्राज्यक अन्तिम वर्ष थिक। मुगल शासनक अवसानोपरान्त ब्रिटिश शासन कालमे जाहि सामाजिक चेतनाक उदय भेल ओहिमे सन् 1857 ई. पश्चात् क्षिप्रता अबैत अछि। एहि सामाजिक चेतनाक प्रतिनिधित्व नवीन शिक्षित बुद्धि जीवी वर्ग कयलक जे एक भाग अपन प्राचीन संस्कृतिक सुरक्षाक प्रति उत्सुकताा देखौलक आ दोसर भाग युगक नव आलोकक स्वागत कयलक। एहि सांस्कृतिक अनुष्ठानमे भारतीय भाषादिक विकास भेल आ ओकर साहित्य सम्पन्न आ समृद्ध होइत अछि।

पश्चिमी शिक्षाक प्रचार, रेल-तारक व्यवहार, स्वायत्त शासनक व्यवस्था, मुद्रण कलाक आविष्कार आ सामाजिक चेतनाक प्रभाव साहित्यपर पड़ल आ ओ रुढ़परम्परादिकेँ तोडि क' नव दिशाक दिस चलि पड़ल। मैथिली साहित्यक इतिहासमे नव-युगक निर्माणमे कमीश्वर चन्दा झा (1831-1907) आ पण्डित लालदास (1856-1921) अवदान सर्वाधिक महत्वपूर्ण अछि। हुनक राजनीतिक, सामाजिक, रचनादिक आधारपर अनुमान कयल जा सकैछ जे सन् 1857 ई. क पश्चात् परिवर्त्तित परिस्थितिक सहज प्रक्रिया छल। वस्तुत: चन्दा झा आ लालदास मैथिली साहित्यमे नवयुग अनबामे समर्थ भेलाह। अपन गद्य रचनादि द्वारा ओ लोकनि आधुनिकताक द्वार खोललनि। फेर जहिना-जहिना मिथिलाञ्चलमे नव आलोक पसरल साहित्य सेहो नव-नूतन किसलयक संग पल्लवित भेल।

आदिकालक अंतर्गत मिथिलाञ्चलक भाषा मैथिलीमे प्रतारंभिक साहित्य लोकप्रिय कविताक अछि। एकर रचना कहिया भेल छल, कहब कठिन अछि। तथापि तीन प्रकारक रचनादि उपलब्ध भ' रहल अछि, जकरा मैथिलीक आम्भिक साहित्य कहब।

सर्वप्रथम साहित्य तँ ओ रहस्यवादी गीत एवं कवितादिक थिक जकर अन्वेषण नेपालमे तथा प्रकाशन बंगालमे भेल। एकर रचयिता सिद्ध लोकनि छथि। एहि सिद्ध लोकनिक सम्बन्ध बौद्ध लोकनिक महायान शाखासँ छलनि। एहि रचना-संग्रहक नाम *बौद्ध गान ओ दोहा* देल गेल अछि। सन् 1323 बंगाब्द अर्थात् सन् 1916 ई.मे महामहोपाध्याय डा. हरप्रसाद शास्त्री (1853-1931) सर्वप्रथम एकर प्रकाशन करौने छलाह। एहिमे संग्रहीत कविता सभक भाषा अति प्राचीन अछि तथा एहिमे ओ विशेषतादि अछि जे बाङला, मैथिली, मगही आदि पूर्वीय भाषादिमे अछि। एहि कारणसँ एहि भाषादिक प्रारम्भिक रूपक उदाहरणमे राखल जाइत अछि। वस्तुत: ई कवितादि तहिया लिखल गेल जखन आधुनिक पूर्वीय भाषादि

अपन प्रारम्भिक अवस्थामे छल। भाषा वैज्ञानिक लोकनि एहि विषयमे एकमत छथि। अत: एहि कवितादिक भाषा पूर्वीय अथवा मागधी अपभ्रंशक पूर्वीय रूप थिक। यद्यपि एहिपर शौरसेनी अपभ्रंशक सेहो प्रभाव संक्षिप्त अछि। तथापि ई स्वाभाविक अछि जे एहिमे ओ सभ तत्व उपलबध अछि जे मागधी अपभ्रंशक पूर्वीय रूप थिक। यद्यपि एहिपर शौरसेनी अपभ्रंशक सेहो प्रभाव संक्षिप्त अछि। तथापि ई स्वाभाविक अछि जे एहिमे ओ सभ तत्व उपलब्ध अछि जे मागधी अपभ्रंशसँ विकसित वर्त्तमान भाषादिमे सेहो पाओल जाइत अछि। एकरा संगहि ई मानबाक लेल प्रचुर साधन अछि। ई संग्रह प्राचीन मैथिलीक रूप थिक। एकर रचयिता अधिकांश मिथिलाक निवासी रहल हैताह।

बौद्ध गान ओ दोहामे तीन प्रकारक साहित्य उपलब्ध भ' रहल आछि, जकरा मैथिलीक प्रारम्भिक रूप कहल जा सकैछ। ओ अछि: दोहा कोश, चर्याचर्य-विनिश्चय आ डाकार्णव। एकर रचयिता बौद्ध सिद्ध आ तान्त्रिक रहथि। हिनक भाषा मिथिलाक पूर्वी भागक प्राचीन रूप थिक। एहि सामग्री आदिक आधारपर एकर रचयिता लोकनिक समय आठम शताब्दीसँ तेरहम शताब्दी धरि निश्चय कयल जाइत अछि। विषयक दृष्टिसँ एहि रचनादिक ओतेक महत्व नहि जतेक की भाषाक दृष्टिएँ अछि। एकर भाषा एहन अछि जकरा आधारपर एकरा मैथिली, बाङला, असमिया, हिन्दी, मगही आ भोजपुरी आदि प्रत्येक भाषा-भाषी अपन सम्पत्ति घोषित करैत छथि। एहि समय भारतीय आर्य भाषा निर्माणक स्थितिमे छल। इएह कारण अछि जे भाषा-वैज्ञानिक लोकनि एहि रचना-समूहमे भारतीय पूर्वाञ्चलक सभ भाषादिक रूप भेटैत अछि। संगहि-संग ई मानबाक लेल सेहो प्रचुर साधन अछि जे एहि संग्रहकेँ प्रधानत: मैथिलीक रूप थिक। ज्योतिरीश्वर (1280-1340) वर्णरत्नाकर (1940)मे एकर सम्पूर्ण नामावली द' देलनि अछि। पूर्वीय भाषादिमे सर्वप्रथम मैथिलीक प्रयोग गम्भीर साहित्यक रूपमे कयल गेल छल। बाङला आ आसामीमे तँ साहित्य-रचनाक प्रयास एक शताब्दी पाछाँ जा क' प्रारम्भ भेल तथा एकरा लेल मैथिलीक महान कवि विद्यापति प्रेरक सिद्ध भेलाह।

एकर अतिरिक्त प्राचीन अपभ्रंशमे कविता लिखबाक परम्परा मात्र मिथिलामे छल आ ई परम्परा चौदहम शताब्दी धरि चलैत रहल। विद्यापति अपन दू पुस्तक- *कीर्तिलता* (1924) आ *कीर्तिपताका* (1960) तथा अनेक छोट कवितादिक रचनामे कयलनि जे देश्य-मिश्रित अपभ्रंश थिक। प्राकृतपैङ्गलम टीकाकार वंशीधर एहिमे संगृहीत अपभ्रंश कवितादिक भाषाकेँ अवहट्ठ कहलनि। डा. सुभद्र झा एकरा आदिकालीन मैथिली कहलनि। ओ लिखैत छथि, *प्राकृतपैङ्गलम मे उदाहरण स्वरूप अनेक शब्द एवं पद देल गेल अछि जकरा विषयमे कहल जा सकैछ जे ओ प्राक् मैथिलीमे रचित थिक ----- ओहिमे एहन किछु नहि अछि जकरा आदिकालीन*

मैथिली कहबासँ वंचित क' सकी। राधाकृष्ण चौधरी (1924-1984) *मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास* (1961) क परिशिष्ट-गमे प्राकृतपैङ्गलममे व्यवहृत 115 शब्दादिक सूची देलनि अछि तथा एकरा आदिकालीन मैथिलीक ग्रन्थ मानलनि अछि। तथापि एहि प्राचीन भाषाक विषयमे सुनिश्चित एवं अन्तिम रूपसँ विचार करब आवश्यक अछि। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे एकरा प्राक् मैथिली मानव तर्क संगत अछि।

दोसर प्रकारक साहित्य जे उपलब्ध भ' रहल अछि ओ थिक *डाकवचनावली*। एहि वचनावलीमे स्थानीय लोक प्रसिद्ध विज्ञाता, ज्योतिष एवं कृषि सम्बन्धी वचन, जीवन आ विविध विषयक समालोचना भेटैत अछि। ई जनसामान्यमे प्रचलित अछि तथा एकर विस्तार आसामसँ ल' कए राजस्थान धरि सम्पूर्ण आर्यावर्त्तमे विस्तृत अछि। एकर रचयिताक सम्बन्धमे विद्वान लोकनिमे मतैक्य नहि अछि तथा अनेक जनश्रुति आदि प्रचलित अछि। देशक भिन्न-भिन्न भाग सबमे एकर रचयिता लोकनिक भिन्न-भिन्न नाम अछि। मिथिलामे डाक, घाघ, भण्डरी एवं डंक आदि प्रचलित अछि। एम्हर आबि क' देशक विभिन्न भागसँ एहि वचनावलीक कतिपय संग्रह प्रकाशमे आयल अछि,परन्तु एहिमेसँ कोनो, कोनो प्राचीन हस्तलिखित प्रतिपर आधारित नहि भ' कए ओहि भू-भागमे प्रचलित अनेक मौखिक रूपपर अछि। एकर फलस्वरूप प्रत्येक संस्करणक भाषा आधुनिक भ' गेल अछि। मैथिलीक हेतु ई सौभाग्यक बात थिक जे डाकक नामपर प्रचलित अनेक वचन मैथिल विद्वान द्वारा रचित ज्योतिषक प्राचीन ग्रन्थादिमे उद्धृत अछि जाहिमे किछु तँ चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीक थिक। एहि उद्धरणादिक भाषा अत्यन्त प्राचीन अछि तथा *बौद्ध गान ओ दोहा* क भाषासँ साम्य रखैत अछि। ओना तँ मिथिलासँ जे वचनावली प्रकाशित भेल अछि ओकर भाषा आधुनिकताक छाप नेने अछि। मात्र मिथिलाक आचार्यगण कोनो महान आचार्यक वचन सदृश प्रमाणक हेतु डाक वचनादिकेँ जे उद्धृत कयलनि अछि, ओहिसँ ओकर मैथिल उद्भव आ प्राचीनता सिद्ध होइत अछि। अत: ई कहब पूर्णत: युक्ति संगत सिद्ध होइत अछि जे डाक मैथिल रहथि आ हुनक लोक प्रसिद्ध साखी आदिक भाषा प्राचीन मैथिली थिक। कालान्तरमे ई सम्पूर्ण भारतमे प्रचलित भ' गेल तथा अपन मौखिक परम्परामे नूतन रूप धारण क' लेलक अछि।

मात्र डाके एहन व्यक्ति नहि रहथि जे एहि प्रकारक लोक प्रसिद्ध वर्णनक रचना प्राचीन मैथिलीमे कयलनि। एतबा तँ निश्चित अछि जे सबसँ विख्यात इएह छथि। सप्तरत्नाकर कर्त्ता महामहोपाध्याय चण्डेश्वर अपन *कृतचिन्तामणि नामक* ज्योतिष निबन्धक प्रधान ग्रन्थमे अवहट्ठ भाषाक अनेक पद प्रमाण रूपमे उद्धृत कयलनि अछि, जकरा क्षपणक जातक भृगुसंहिता तथा कापलिक जातक प्रभृत ग्रन्थसँ उद्धृत कयलनि अछि। यद्यपि ई ग्रन्थ आब अनुपलब्ध अछि, अतएव ई

निश्चित रूपसँ नहि कहल जा सकैछ जे उक्त ग्रन्थ ओही भाषामे लिखल गेल अथवा ओहिमे कतहुसँ उद्धृत कयल गेल अछि। परन्तु डाकवचनावलीक रचनाक समानहि ई सब सेहो जनसाधारणकेँ प्रभावित कयनिहार प्रतीत होइत अछि आ एहिसँ एकर रचना जनभाषामे भेल अछि। अतः ई एहि प्रकारक परम्पराक अकाट्य प्रमाण थिक जे जनसाधारणकेँ प्रभावित करबाक लेल विद्वान लोकनि हुनके भाषाक आश्रय लैत रहथि आ चण्डेश्वर सदृश विद्वान् सेहो प्रमाण स्वरूप ओकरा उद्धृत करबामे कनेको कुण्ठित नहि भेलाह।

तेसर प्रकारक जे साहित्य उपलब्ध अछि ओ लोक प्रसिद्ध आख्यान आ गीतक थिक। एहिमे किछु तँ साहित्यिक थिक। गोपीचन्दक गीत एही श्रेणीमे अबैत अछि। ई गीत ओही समयक थिक जाहि समयक डाकक वचन थिक। ई गीत भीख माँगनिहारक एक वर्ग द्वारा गाओल जाइत अछि जकरा गुदरिया गोसांईक नाम देल गेल अछि। एहि गीतक अतिरिक्त लोरिक, सलहेस, बिहुला, मरसिया आदिक गीत कथादि एही वर्गक थिक। ई सभ रचनादि प्राचीन कालक थिक। एहि कथादिक विशेषता इहो अछि जे एकर कथानायक कोनो अवतारी देवता वा अंशी पुरुष नहि छथि। डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन एकर संकलनक प्रयास कयने रहथि। युग-युगसँ ई जनकण्ठमे पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुंजित होइत आबि रहल अछि। एकर भाषाक परिशुद्धताक विषयमे क्यो दावा नहि क' सकैछ। अपन मौखिक परम्परासँ एकर भाषामे निश्चित रूपेण परिवर्त्तन भेल हैत। एहि रचनादिकेँ देखि क' ई स्पष्ट प्रमाण भेटैत अछि जे मैथिली अपभ्रंश भाषाकेँ लोकप्रिय रचनाक लेल प्रयोग करबाक परम्परा मात्र उपयोगी साहित्यक लेल नहि, प्रत्युत मनोरंजनक लेल सेहो-मिथिलामे पूर्व भारतीय अपभ्रंश भाषाक आम्भिक स्थितिमे जकर समय भाषा वैज्ञानिक एक हजार ई. निधारित करैत छथि।

डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन सर्वप्रथम एहन गीतादिकेँ *इण्डियन एण्टीक्वेटी* खण्ड-10 मे प्रकाशित करौलनि। एकर अतिरिक्त *सम बिहारी फोक सॉंग्स* (1884), *टू भरसन्स ऑफ द सांग्स आफ गोपीचन्द (जे. ए. एस. बी. खण्ड–54, भाग-1 आ द वर्थ आफ लोरिक* (कैम्ब्रिज 1929) आदिमे प्रकाशित अछि जे उल्लेखनीय अछि। एम्हर आबि क' लोकगीतक कतिपय संग्रह प्रकाशमे आयल अछि जाहिसँ एकर विकासमे गति आयल अछि। मिथिलाञ्चलक विभिन्न जनपदमे मैथिलीक करीब तीस लोक नाट्यक प्रस्तुति हम देखल अछि जाहिमे लोक जीवनक स्वाभाविक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि लोक-नाट्यादिमे गीत, संगीत आ नृत्यक त्रिवेणी प्रवाहित भेल अछि जाहिमे लोक जीवनक स्वाभाविक अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि लोक-नाट्यादिमे गीत, संगीत आ नृत्यक त्रिवेणी प्रवाहित भेल अछि जाहिमे लोक-जीवनक सार-गर्वित भावसँ सम्पन्न, तत्कालीन युगक प्रवृत्तिक

मनोरंजकता प्रदान करबाक हेतु नव-नव आयामक व्यवस्था कयलक। कालन्तरमे इएह साहित्यिक विद्यादिक रूपमे विकसित भेल। विविध मांगलिक अवसर जेना व्रत-त्यौहार, धार्मिक, सांस्कृतिक लोकोत्सव इत्यादिक विशेष परिस्थितिमे विभिन्न प्रक्रियादिसँ उद्भूत सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आ साहित्यिक चेतनाक परिणाम थिक मैथिली लोक-नाट्य।

मिथिला और मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक ग्रंथादिक अवगाहनसँ ज्ञात होइछ जे मिथिलापर अनेक राजवंश शासन कयलक जाहिमे तीन राजवंशक शासक लोकनिमे कर्णाट राजवंश (1097-1324), ओइनवार राजवंश (1353-1526) आ खण्डवला राजवंश (1556-1947) प्रमुख छथि। कर्णाटवंशीय राजा लोकनिक छत्र-छायामे मैथिली साहित्यक साहित्यकार लोकनिकेँ प्रोत्साहन भेटबाक प्रक्रिया प्रारम्भ भेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर एही राजवंशक छठम राजा महाराज हरिसिंह देव (1443–1444) क सभासद रहथि। ओइनवार वंशक शासनकालमे मैथिली साहित्यक विकास अत्यन्त दुतगतिएँ भेल, कारण एहि राजवंशक राजा लोकनिकेँ साहित्यक प्रति अधिक अभिरुचि छलनि जकर फलस्वरूप साहित्य मनीषी लोकनिकेँ कतेक राजा लोकनि प्रोत्साहित कयलनि जाहिमे उल्लेखनीय छथि विद्यापति जनिक सरस पदावली मैथिली साहित्यक अमरत्वक सबसँ पैघ सेतु बनल। महाकवि जयदेवक अनुकरण क' कए ओ राधा कृष्णक श्रृंगारपूर्ण लीलाक गुणगान कयलनि। हिनक विविध रचनादिक अवगाहनसँ ज्ञात होइत अछि जे एहि राजवंशक कतिपय राजा लोकनिक संग हिनक सम्पर्क रहल। ओइनवार वंशक पतनोपरान्त मिथिलामे खण्डवला कुलक स्थापना भेल जे आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासक लेल अपन पूर्ववर्त्ती शासक लोकनिक समानहि साहित्य मनीषी लोकनिकेँ प्रोत्साहित करब प्रारम्भ कयलनि जाहिमे उल्लेखनीय छथि कवीश्वर चन्दा झा आ महाकवि लालदास आ साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास (1860-1945)। ई. साहित्य मनीषी लोकनिक रचनादिमे सर्वथा आधुनिकताक शुभारम्भ होइत अछि।

सर्वप्रथम प्रामाणिक पुस्तक जे खाँटी मैथिलीमे अछि आ थिक ज्योतिरीश्वर ठाकुरक *वर्णरत्नाकर (1940) आ धूर्त्तसमागम* (1960)। ई दुनू पुस्तक चौदहम शताब्दीक आम्भमे लिखल गेल छल। वर्णरत्नाकरक विषयमे सन् 1901 ई.मे बंगाल एशियाटिक सोसायटीक सचिवकेँ महामहोपाध्याय डा. हरप्रसाद शास्त्री सूचना देने रहथि। प्रथमे प्रथम एकर प्रकाशन डा. सुनीति कुमार चटर्जी (1890-1977) आ पण्डित बबुआजी मिश्रक संयुक्त सम्पादकत्वमे एकर प्रकाशन भेल छल। अपन रिपोर्टमे महामहोपाध्याय डा. हरप्रसाद शास्त्री कहने रहथि, ई ग्रन्थ काव्य नहि, काव्योपयोगी ग्रन्थ कहि सकैत छी। यदि ज्योतिरीश्वर वास्तवमे इच्छापूर्वक काव्य ग्रन्थ लिखितथि तँ एकर स्वरूप आन रूपक रहैत, मुदा वर्णनक अवसर पाबि

ग्रन्थकारक सहज कवित्व प्राय: नहि मानलक आ लाख रोकनहुँपर सेहो कस्तुरी मोदक समान प्रकट भ' गेल। स्थल-स्थलक वर्णनकेँ देखि क' कादम्बरी प्रभृति संस्कृत गद्य-काव्यक स्मरण भ' जाइत अछि। एहि प्रकारक उन्नत गद्य-साहित्यकेँ देखि क' अनुमान होइत अछि जे एहिसँ चारि-पाँच शताब्दी पूर्व मिथिला भाषामे निश्चये साहित्य रचना प्रारम्भ भ' गेल छल। अनेक अनुच्छिट उपमादिक संग्रह, भाषा-उपभाषाक उल्लेख द्वारा भाषा-विज्ञान सम्बन्धी अनेक सामग्री, ओहि समयक सामाजिक तथा साहित्यिक विचारक भण्डार, ओहि समयक वर्णन-शैली इत्यादि विशेषताक विशद रूप एहि ग्रन्थमे उपलब्ध अछि।

प्रतिपाद्य गद्य ग्रन्थ भावी कवि आ कत्थक लोकनिकक हेतु एक पथ-प्रदर्शक ग्रन्थ बनायब छल जेना जँ नायकक वर्णन करबाक हो तँ कोन-कोन विषयक उल्लेख करब उचित, जँ नायिका वर्णन करबाक हो तँ कोन-कोन विषयक निरूपण करब आवश्यक अछि।ई ग्रन्थ सात कल्लोलमे विभाजित अछि जेना नगर–वर्णन, नायिका–वर्णन,आस्थान–वर्णन,ॠतु–वर्णन, प्रयानक–वर्णन, भट्टादि–वर्णन आ श्मशान–वर्णन।सबसँ महत्वक बात ई थिक जे ई पुस्तक गद्यमे अछि तथा उत्तर भारतक कोनो भाषा साहित्यमे एतेक प्राचीन ग्रन्थ नहि भेटैत अछि। जखन दोसर-दोसर प्रान्त अपन भाव प्रकाशनक लेल कोनो साहित्यिक माध्यमक अभावमे अन्धकारमे टापर-टोइया द' रहल छल, तखन मैथिली एक पूर्ण भाषाक रूपमे विकसित भ' गेल छल जाहिसँ समाजक स्वरूपकेँ प्रकट कयल जाय सकय। ई कोनो लोकप्रिय भाषाक प्रधान विशेषता थिक। वर्णरत्नाकर एकर सटीक उदाहरण थिक।

ज्योतिरीश्वरक दोसर रचना संस्कृत–प्राकृत–मैथिली मिश्रित त्रिभाषिक नाटकक थिक *धूर्तसमागम*।ई नाटकक जतय मैथिली कविता आ नाटकीय परम्पराक द्योतक थिक, ओतहि तत्कालीन समाजक चित्र प्रस्तुत करैत अछि।एहिमे लेखक एक सम्पन्न गृहस्थक चित्र अंकित कयलनि अछि जनिक चतु:शालक चारू भाग कतहु महींस बान्हल अछि, कतहु बाछा-बाछीक संग पुष्ट थन वाली गाय एम्हर-ओम्हर जा रहल अछि, कतहु दासी सुन्दर भवनक प्रागंणमे मन्द-मन्द गतिसँ अवगाहन क रहल अछि।

वर्णरत्नाकर आ धूर्त्तसमागमक रचना लोकभाषाक आलोकमय भविष्यक सूचक छल। भाषा-साहित्यक एहि अभ्युदय आ विकासक कोनो साहित्यिक प्रेरणाक परिणाम नहि कहल जा सकैछ, प्रत्युत ई तँ साहित्यिक जड़वादसँ असन्तुष्ट जनताक स्वाभाविक प्रवृत्तिक प्रकाशन छल। भाषामे फूटैत कवि-प्रतिभा जखन राजा लोकनिकेँ चमत्कृत कयलक तखन हुनक संरक्षण एवं प्रोत्साहनक फलस्वरूप भाषा-काव्यक विकास भेल। ई विकास एहि बातक द्योतक थिक जे लोक भाषाकेँ

साहित्यिक गौरवसँ विशेष अवधि धरि वंचित नहि कयल जा सकैछ। जे सामान्य जन मानसक व्यापक भाषा बनि गेल ओहिमे व्यवहारोपयोगी एवं ललित दुनू प्रकारक साहित्यिक सृष्टि अवश्य हैत। मैथिली साहित्यक इतिहासक अवलोकन कयलासँ एकर स्पष्ट बोध होइछ। वस्तुत: ज्योतिरीश्‌वरक रचनादि मैथिली गंगाक *हरद्वार* थिक जतय ओ लोक भाषाक सामान्य धरातलपर उतरि क' पूर्ण वेगसँ प्रवाहित होमय लागल। एकर पश्चात् उमापति उपाघ्याय सर्वाधिक लोकप्रिय नाटकककार भेलाह जनिक *पारिजात हरण* नाटककसँ असमक वैष्णव संत शंकरदेव (1449-1568) अत्यधिक प्रभावित भेलाह।

मैथिली साहित्यकेँ ई सौभाग्य अछि जे ओइनवार वंशक शासनकालमे एक एहन प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्वक प्रादुर्भाव भेल जनिक काव्य प्रतिभा अमर भ' गेल आ ओ मात्र मिथिला धरि सीमित नहि रहल; प्रत्युत पूर्वाञ्चलमे बंगाल, आसाम आ ओड़िसा धरि ख्याति अर्जित कयलक आ समस्त भारतवर्षमे लोकप्रियता अर्जित कयलनि ओ रहथि विद्यापति। हिनक ग्रन्थक विषय–वैविघ्यकेँ देखलासँ ज्ञात होइत अछि जे ओ केवल कविए नहि, प्रत्युत सर्वतोमुखी प्रतिभासँ समलंकृत सच्चिन्तक रहथि।ओ एकहि संग शास्त्रकार, राजनीति-विशारद, इतिहासकार, भूवृतान्त लेखक, अर्थशास्त्रविद्, नीतिशास्त्रविचक्षण, धर्म-व्यवस्थापक, निबन्धकार, शिक्षक, कथाकार, संगीतज्ञ आ पुरुषार्थक पुजारी रहथि। ओ निम्नस्थ संस्कृत ग्रन्थादिक रचना कयलनि यथा, *भूपरिक्रमण* (1976), *पुरुषपरीक्षा* (1815), *लिखनावली* (1969), *दुर्गाभक्तिरङ्गिणी* (1902), *शैवसर्वस्वसार* (1980), *शैवसर्वस्वसार पुराण-भूतसंग्रह* (1981), *गंगावाक्यावली* (अप्रकाशित), *दानवाक्यावली* (1981), *विभागसार* (1976), *व्याडीभक्तितरङ्गिणी* (2008), *गया पत्तलक* (अप्रकाशित) एवं *वर्षकृत्य* (अप्रकाशित)।संस्कृत–प्राकृत–मैथिली मिश्रित रचनादिमे त्रिभाषिक नाटकक *गोरक्षविजय* (1960) आ *मणिमञ्जरी* (1966) आ अवहट्ठ रचनादिमे *कीर्तिलता* (1924) एवं *कीर्तिपताका* (1960) थिक। विशुद्ध मैथिलीमे ई पदावलीक रचना कयलनि जकर उपलब्धताक स्त्रोत थिक नेपाल, मिथिलाञ्चलक अन्तर्गत रामभद्रपुर, तरौनी एवं रागतरङ्गिणी आ बंगालक अन्तर्गत क्षणदागीतचिंतामणि, पदामृतसमुद्र, पदकल्पतरु, कीर्त्तनानन्द आ संकीर्त्तानामृत तथा लोककण्ठक पद। एहि पदक संख्या एक हजार पाँच सयक लगधक अछि। यद्यपि हिनक अधिकांश रचनादि प्रकाशमे आबि गेल अछि तथापि गंगावाक्यावली, गयापतलक आ वर्षकृत्य पुस्तकाकार प्रकाशन नहि भ' पाओल अछि। ई पीड़ादायक स्थिति अछि जे हिनक रचनादि एतेक लोकप्रिय भेल तथापि हिनक समग्र रचनादिक प्रकाशन ग्रन्थावली वा रचनावलीक रूपमे अद्यापि प्रकाशित नहि भ' पाओल अछि।

वस्तुत: एहन प्रतिभा सम्पन्न महाकविक कृतिकेँ घ्यानमे राखि अद्यापि साहित्य

चिन्तक लोकनि जतेक अनुसन्धान आ आलोचना प्रस्तुत कयलनि अछि ओकरा एकांगी कहल जा सकैछ जे ओ पुरुषार्थ कवि रहथि जे अपन कृति आदिमे कोनो-ने-कोनो रूप सँ *पुरुषार्थ चतुष्टयक* प्रतिपादन कयलनि अछि। हिनक सम्पूर्ण कृतिक मुख्य उद्देश्य अछि पौरुष।

विद्यापति अपन कृति सभमे मानवक उदारता, वीरता, धीरता, साहसिकता, निर्भीकता, स्पष्टता, कर्तव्यपरायणता, बुद्धि आ ज्ञानवर्द्धक सभ साधनपर बल देलनि अछि जे सामाजिक आ सांस्कृतिक वातावरणक निर्माणमे समान रूपसँ सहयोग प्रदान क' सकय। जाहि मानवमे उपर्युक्त गुणक अभाव अछि जे हुनका दृष्टिमे अयलनि तकर ओ उपहास कयलनि। पुरुषार्थ चतुष्टयक दृष्टिएँ हिनक समग्र कृति हिनक नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाक विपुल-वैदुष्यक परिचय दैत अछि। लोकमे स्वधर्म आ राष्ट्रधर्मक सुरक्षाक भावना ओ संचारित आ ओकरा पल्लवित पुष्पित करय चाहैत रहथि। अपन समग्र पदावलीमे ओ अतीव मृदुलता, जनजीवनमे सुसुप्त मधुर-भावकेँ जगयबाक क्षमता मिथिलाक जन मानसमे अभिहित हैबाक कारणेँ ई सर्वाधिक लोकप्रिय भेल।

विद्यापति अपन साहित्य–साधनाक माध्यमे मैथिली–साहित्य भंडारकेँ भरबाक लेल अनेक विधाक रचना कयलनि। हिनक एक-एक रचना मैथिलीक अमूल्य-निधि थिक जाहिमे एक भाग श्रृंगारिकताक आभास भेटैछ तँ दोसर भाग भक्तिक, मुदा विद्यापतिक समग्र कृतिपर जखन प्रत्यक्ष रूपसँ विचार करैत छी तखन स्पष्ट भ' जाइछ जे भारतीय-चिन्तन-धारासँ प्रभावित भ' कए ओ पुरुषार्थ–चतुष्टयक उद्देश्यसँ समग्र रचनादि कयने रहथि।

एहि प्रकारेँ विद्यापति मैथिली–साहित्यमे जे परम्पराक शुभारम्भ कयलनि ओकरा परवर्त्ती कवि लोकनि अपना क' रचना कयलनि। विद्यापतिक समसायिक एवं परवर्त्ती कवि लोकनि एहि साहित्यक बहुमूल्य सेवा कयलनि। हिनक समसामयिक कवि लोकनिमे भवानीनाथ (1375-1450), अमृतकर (1400-1460), गजसिंह (1450-1500), सिंह भूपति, नृपसिंह (1450-1500), चन्द्रकला (1400-1475), कंसनारायण (1475-1528), गोविन्द कवि (1450-1530), लक्ष्मी नराञेन (1500-1550), नवकवि यशोधर (1500-1550), जीवनाथ (1500), दस-अवधान (1500), सदानन्द (1550), चतुर्भुज (1575-1640), श्यामसुन्दर (1500), भीषम (1609-1650), गंगाधर (1600) श्रीनिवास मल्ल (1640) इत्यादि उल्लेखनीय छथि।

विद्यापतिक परवर्त्ती मैथिलीक कवि लोकनिक रचनादिकेँ प्रोत्साहित कयनिहार नरेश लोकनिमे कंसनारायणक नाम अग्रगण्य अछि जनिक दरबारमे जतेक कवि लोकनि रहथि ओ सभ विद्यापति द्वारा चलाओल गेलशैलीकेँ सर्वाधिक प्रश्रय देलनि जाहिमे उल्लेखनीय छथि महाकवि गोविन्ददास (1663-64-1670-71)। हिनक एकमात्र

रचना *श्रृंगारभजनावली* (1938) प्रकाशित अछि। हिनक कवितादिसँ श्रृंगारिकताक बोध होइछ, किन्तु ओ भक्ति विषयक रचना थिक। बंगालक वैष्णव भक्त कवि हिनका बंगाली बनयबाक प्रयास कयलनि, किन्तु ई मिथिलाक रहथि जनिक रचनाक अर्थक दुरूहताक कारणेँ प्रसिद्ध अछि। विद्यापतिक पश्चात् ई मैथिलीक दोसर प्रसिद्ध कवि छथि। महाराज कंसनारायणक संग हुनका ओही रूपक सम्बन्ध छलनि जे विद्यापतिकेँ महाराज शिवसिंहक संग छल। मैथिलीक हिनक पदावली साहित्य समस्त पूर्वाञ्चलमे एहि नवीन पद्धतिक पोषक सिद्ध भेल।

विद्यापतिक उत्तराधिकारी कवि लोकनिमे महाकवि लोचन (1650-1725)क नाम अग्रगण्य अछि। यद्यपि मैथिलीमे हिनक अधिकांश रचनादि नहि उपलब्ध भ' रहल अछि तथापि जे उपलब्ध भ' रहल अछि ओ कलाक दृष्टिसँ उच्च कोटिक थिक। किन्तु एकमात्र *रागतरङ्गिणी* (1924) उपलब्ध भ' रहल अछि। हिनक हाथक लिखल *नैषधीय चरित* क एक प्रति *ललितनारायण* मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक पुस्तकालयमे सुरक्षित अछि। लोचन संस्कृतक निष्णात विद्वान, संगीतक मर्मज्ञ आ कवि रहथि। हिनक कवितावली *रागतरङ्गिणी* मे उपलब्ध अछि।

ओइनवार वंशक पतनोपरान्त अनेक वर्ष धरि मिथिलामे अराजकता आ अस्थिरताक स्थिति बनल रहल। पुन: मिथिलाक विद्वान, कवि, संगीतज्ञ आश्रयक अन्वेषणमे अपन समीपवर्ती राष्ट्र नेपाल चल गेलाह। एम्हर दिल्लीक सिंहासनपर अकबरकेँ बैसलाक पश्चात् उत्तर भारतक राजनीतिक स्थितिमे परिवर्त्तन भेल। एही समयमे मिथिलाक शासन-सूत्र खण्डवला कुलक महेश ठाकुर (1556-1569)केँ भेटलनि आ दिल्ली केन्द्रसँ मिथिलाक निकट सम्पर्क स्थापित भेल। महेश ठाकुरक अधिकांश समय पश्चिममे व्यतीत भेल छलनि, अत: पश्चिमक भाषा-साहित्यक एतय प्रचार-प्रसार नहि भेल, प्रत्युत स्थानीय साहित्य सेहो प्रभावित भेल। इएह कारण थिक जे लोचन रागतरङ्गिणीमे राग-रागिणीक उदाहरण स्वरूप ब्रजभाषाक अनेक स्वनिर्मित पद उद्धृत कयलनि अछि।

मैथिली साहित्यक मध्यकालीन साहित्यिक रचनाक दृष्टिएँ स्वर्णकाल कहल जा सकैछ। यद्यपि एहि समयक राजनैतिक दृष्टिसँ उथल-पुथल भेल, किन्तु साहित्यपर एकर कोनो प्रभाव नहि पड़ल। एहि राजनैतिक उथल-पुथलक कारणेँ मैथिल विद्वत-वर्ग एतयसँ पड़ा क' नेपाल चल गेलाह। ओ सभ ओहि ठामक राजदरबारमे संरक्षण आ प्रोत्साहनक हेतु गेलाह। नेपाल सुसंस्कृत शिक्षा-प्रेमी लोकनिक द्वारा मैथिलीक नेपालमे साहित्यिक भाषाक रूपमे स्वीकार कयल गेल। ओहि समयमे मल्लवंशक शासल छल। मल्ल शासक लोकनि काव्य आ नाटकक अत्यधिक प्रेमी रहथि। मल्ल राजवंशक द्वारा मैथिल साहित्यकार लोकनिकेँ प्रोत्साहित कयल गेल जकर फलस्वरूप मैथिलीक प्रारम्भिक नाट्य-साहित्यक रचना

नेपालमे प्रारम्भ भेल। विद्यापतिक परिपाटीपर रचल गेनिहार स्वतंत्र पदक अतिरिक्त एहि कालावधिक अधिकांश पद नाटककमे गुम्फित अछि। मैथिली गीतसँ गुम्फित संस्कृत-प्राकृत नाटकक रचनाक श्रीगणेश ज्योतिरीश्वर कयने रहथि जकरा उमापति उपाध्याय आगाँ बढ़ौलनि जे एहि कालावधिमे विशेष प्रचलित भेल। क्रमश: संस्कृत प्राकृतक व्यवहार कम होमय लागल आ मैथिलीमे सम्पूर्ण नाटकक लिखल जाय लागल। पदावली-साहित्यक समान मध्यकालीन नाटकक नेपाल आ आसाम धरि व्यापक भ' गेल। एहि एकारेँ मैथिली नाटकक विकास तीन केन्द्रमे विभक्त भेल- *मिथिला, नेपाल* आ *आसाम।*

नेपालक मैथिली नाटकककार लोकनिक कार्य भूमि भातगाँव, काठमाण्डू आ ललितपुर पाटनमे रहल। नेपालमे मैथिली नाटकक संस्कृत नाटकक परम्पराक स्थानपर मैथिली नाटकक सूत्रपात भेल। एहि समयमे मुसलमानक प्रभावसँ नेपाल मुक्त छल जकर फलस्वरूप सांस्कृतिक आ साहित्यिक क्रिया-कलापमे कोनो तरहक व्यवधान नहि भेल। एहि प्रकारेँ नेपालमे मैथिली नाटकक सूत्रपात भेल जे एक भाग अपन नव-शिल्पक उत्थानमे लागल रहल आ दोसर भाग प्राचीन संस्कृत-प्राकृत-मैथिली मिश्रित त्रिभाषिक नाट्य कलाक स्वरूपकेँ किछु दिन धरि अपन पूर्ववर्त्ती स्वरूपकेँ सुरक्षित रखलक। नेपालमे मैथिली नाटकक जे श्रृंखला स्थापित भेल ओकर सब श्रेय मल्ल राजवंशकेँ छैक। भातगाँवमे प्रचुर परिमाणमे नाटकक लिखल गेल आ उल्लेखनीय नाटकककारमे जगज्योतिर्मल्ल (1613-1633), जगत्प्रकाशमल्ल (1637-1672), सुमतिजितामित्रमल्ल (1672-1696), रणजीतमल्ल (1722-1772), भूपतीन्द्रमल्ल (1696-1722) आ श्रीनिवासमल्ल (1658-1685) छथि। रणजीतमल्ल सबसँ बेसी नाटकक रचना कयलनि। काठमाण्डू आ पाटनक उल्लेखनीय नाटकककारमे वंशमणि आ सिद्ध नरसिंह देव (1622-1657)क नाम लेल जाइत अछि। ई नाटकककार लोकनि प्रचुर परिमाणमे नाटकक रचना कयलनि जाहिमे जगज्योतिर्मल्लक *हर गौरी विवाह* (1970). विश्वमल्लक *विद्याविलाप* (1965) आ जगत्प्रकाश मल्लक *प्रभावती हरण* (1972) नाटकक अद्यापि प्रकाशित भ' पाओल अछि। शेष अन्य नाटकककार लोकनिक नाटकक प्रकाशन अद्यापि नहि भ' पाओल अछि जे नेपाल दरबार लाईब्रेरीमे संरक्षित अछि। शेष अन्य नाटकादिक प्रकाशनसँ मैथिली नाटकक उदय आ विकासपर नव प्रकाश पड़ि सकैछ। एहि नाटकादिमे गीतक प्रधानता अछि, कथानक पौराणिक अछि, नाटकककार क्यो होथु, किन्तु ओहिमे प्रयुक्त गीतादि अन्य कवि लोकनिक उपलब्ध होइछ। सभ नाटकक अभिनीयतासँ पूर्ण अछि आ ओकर भाषा मानक मैथिलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि। महाराज पृथ्वीनारायण साह (1768-1775) क आक्रमणक फलस्वरूप मल्ल राजवंश द्वारा स्थापित परम्परा समाप्त भ' गेल आ ओकरा स्थानपर गोरखा

राजवंशक स्थापना भेल। एकर फलस्वरूप काठमाण्डू आ पाटनमे नाटकक परम्पराक समाप्ति भ' गेल, किन्तु भातगाँवमे अद्यापि ई परम्परा सुरक्षित अछि।

नेपालक उपर्युक्त परम्पराक क्षीण आलोक मिथिलामे सेहो भेटैत अछि। मिथिलामे जे नाटकक लिखल गेल ओकर नामकेँ ल' कए विद्वान लोकनिमे मतैक्यक अभाव अछि। डा. जयकान्त मिश्र (1922-2009) एकरा *कीर्त्तिनियाँ नाटकक* रमानाथ झा (1906-1971) *कीर्त्तनियाँ नाच* आ डा. प्रेमशंकर सिंह (1942) *लीला नाटकक* नामसँ अभिहित कयलनि अछि। एहि नाटकककादिमे मूलरूपसँ शिव तथा विष्णुक लीला प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि नाटककदिकेँ नाट्य मण्डली आदि कृष्ण आ शिवसम्बन्धी विविध कथादिकेँ आधार बना क' प्रदर्शन करैत छल। एहि कोटिक नाटककमे उपलब्ध सामग्री सभकेँ तीन काल खण्डमे बाँटल जा सकैछ, प्रथम उत्थान, द्वितीय उत्थान आ तृतीय उत्थान। प्रथम उत्थानक नाटकककारमे गोविन्दक *नलचरितनाटकक* रामदास (1644-1671)क *आनन्द विजय नाटकक*, देवानन्दक *उषाहरण* आ रमापतिक *रुक्मिणीहरण* इत्यादिक नामोलेख कयल जा सकैछ। द्वितीय उत्थानक उल्लेखनीय नाटकककार लोकनिमे लाल कविक *गौरी स्वयंवर* (1960), नन्दीपतिक *कृष्णकेलि माला नाटकक* (1960), गोकुलानन्द क *मानचरित नाटकक*, शिवदतक *पारिजात हरण*, कर्णजयानन्दक *रुक्मागद नाटकक* श्रीकान्त गणक *श्रीकृष्ण जन्म रहस्य*, कान्हा रामदासक *गौरी स्वयंवर नाटकक*, रत्नपाणिक *उषाहरण नाटिका*, भानुनाथक *प्रभावती हरण* आ हर्षनाथ झा (1847-1898)क *उषाहरण, माधवानन्द* एवं *राधाकृष्ण मिलन लीला* (1962) आदि साहित्यिक दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि।तृतीय उत्थानक नाटकककारमे विश्वनाथ झाक *रमेश्वरचन्द्रिका,* चन्दा झाक *अहिल्या चरित नाटकक* महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक *महिषासुर मर्दनी* आ राज पण्डित बलदेव मिश्र (1897-1975)क *राजराजेश्वरी* एवं *रमेशोदय* नाटकक उल्लेखनीय थिक। एहिमे सँ किछु नाटकक अनुसंधाता लोकनिक अथक प्रयाससँ प्रकाशमे आयल अछि, किन्तु अधिकांश अद्यापि अप्रकाशित अछि। एहि नाटकककार लोकनिक नाटकादिमे नाटकीयताक अभाव परिलक्षित होइत अछि तथापि एहि कालक नाटकक बुझैत दीपक क्षीण आलोकक अभास भेटैत अछि।

मैथिली नाटकक विकसित आ सुव्यवस्थित स्वरूप हमरा असममे उपलब्ध होइत अछि। महाप्रभु चैतन्यक वैष्णव धर्मक समस्त पूर्वाञ्चलक भारतीय साहित्यपर यथेष्ट परिमाणमे पड़ल जकर परिणाम भेल जे साहित्य पूर्णत: भक्तिमय भ' गेल। फलत: साहित्यमे रसक दृष्टिसँ विशेषत: कृष्णक अवतार लीला कथाकेँ अधिक प्रश्रय देल गेल। वैष्णव कवि लोकनिक अभिव्यक्तिक भाषा अन्धकारमय छल। विद्यापतिक श्रृंगार रसक पदावलीमे राधाकृष्णक उल्लेख रहलाक कारणेँ

चैतन्यदेव ओकरा भक्तिरसक कविता बुझलनि। ओ वैष्णव धर्मक प्रचारार्थ विद्यापतिक कविताकेँ माघ्यम बनौलनि। जखन विद्यापतिक भाषा आसाम पहुँचल तखन युगपुरुष शंकरदेव (1449-1568) आ हुनक शिष्य माधवदेव (1489-1556) विद्यापतिक भाषाक अनुकरण क' कए ओकरा संग असमियाकेँ मिश्रित क' कए एक नूतन भाषा व्रजबुलिक जन्म देलनि। आसामाक व्रजबुलि असमिया साहित्यक मेरूदण्ड थिक। एकरा माघ्यमसँ असमिया-साहित्य रस-समृद्ध भेल अछि। एक दू रूप थिक: वरगीत आ अङ्कीयानाट। युगपुरुष शंकरदेव वैष्णव धर्मक प्रचारार्थ नाटककर्कें माघ्यम बनौलनि। अङ्कीयानाटमे गद्य आ पद्यक समविभाग थिक। सबसँ आश्चर्यक बात थिक जे महापुरुष शंकरदेव विशुद्ध आसमियामे रचना कयलनि, मुदा विद्यापतिक भाषासँ ओ एतेक अधिक प्रभावित भेलाह जे मैथिली-मिश्रित असमियामे वरगीत आ नाटकक रचना कयलनि। असमी साहित्यमे एकर एहि विशिष्टतापर प्रकाश दैत अछि। डा. वाणीकान्त कातकीक कथन छनि, *जाहि प्रकारेँ प्रचण्ड वात्या वनमे लागल दावाग्निकेँ प्रज्वलित करबामे सहायक होइत अछि ओहि प्रकारेँ साहित्य जातीय एवं महाजातीय आन्दोलनकेँ प्रेरित करैछ। नाटकक, गीत एवं पद ई तीनू शंकरदेवक वैष्णव-आन्दोलनकेँ शाक्त प्रदेशमे एतेक व्यापक आ लोकप्रिय बनौलक। जाहि प्रकारे मरुभूमिक ऊँट जलक गन्ध-सूत्र पकड़ि क' जलाशयक खोजमे चलि पड़ैछ ओही प्रकारेँ तृषित जनता वरगीतक सौरभसँ आकृष्ट भ' कए शंकर माधवक शरणापन्न* भेलाह (असमिया साहित्य, डा. वाणीकान्त काकती)।

युगपुरुष शंकरदेव अपन तीर्थ-यात्राक क्रममे विद्यापतिक वैष्णव-सम्प्रदायक गुरु मानि मिथिला अयलाह। ओहि समय मैथिली-काव्य आ नाट्य-साहित्य विकासक अपन चरमपर छल। उमापति उपाघ्याय रचित *पारिजातहरण* क अभिनय अत्यधिक भ' रहल छल। एकर विषय-वस्तु सेहो राधाकृष्ण छल। पारिजात हरण अभिनीत होइत देखि क' प्रयोक्ता शंकरदेव अत्यधिक प्रभावित भेलाह। एस. के. भूइयाँक मतानुसार, *अङ्कीयानाटकक भाषा मैथिलीक तथा आसमियाक मिश्रणक विलक्षण उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि*। (On Ankia Nat, S.K. Bhuyan, Page–288–289) शंकरदेव अपन अद्वितीय प्रतिभा आ अप्रतिम वैदुष्यक बलपर असमिया साहित्यमे अङ्कीया नाटकक जनकक रूपमे प्रख्यात छथि। नाटककार लोकनि पुराणादिसँ उपादानक चयन कयलनि आ एहि सन्दर्भमे भागवत पुराण, हरिवंश पुराण एवं रामायण हुनक प्रधान उपजीव्य रहल। शंकरदेवक निम्नांकित नाटकक *कालिदमन* (1518), *पत्नीप्रसाद* (1521), *केलिगोपाल* (1540), *रामविजय* (1568), *रुक्मिणी हरण* (1568) एवं *पारिजात हरण* (1568) आ माधवदेवक *भोजनविहार*, *भूमि लोटावा*, *अर्जुन भंजन* (1538), *पिम्परा-गुचोबा*, *रासझुमरा*, *चोरधरा*, *कटोरा-खेलोबा*, *भूषण हेरोवा* एवं *ब्रह्मा-मोहन* आदि प्रकाशित आछि। एकर अतिरिक्त *गोपाल अता*

(1533-1688), द्विजराजभूषण (1507-1571), रामचरन ठाकुर (1521-1600) आ दैत्यारि ठाकुर (1564-1622) आदि नाटकककार उल्लेखनीय छथि। यद्यपि एहि नाटकक सभक कथा-वस्तु पौराणिक रहल, किन्तु संस्कृत ओ प्राकृतक स्थानपर मैथिली-असमिया-मिश्रित गद्यक प्रयोग भेल। गीतक स्थिति यथावत रहल, किन्तु संस्कृत-प्राकृतक प्रयोग नहि कयल गेल जतय ओ अनिवार्य छल। एहि नाटकादिक उद्देश्य मनोविनोद नहि, प्रत्युत वैष्णव धर्म प्रचार करब छल। एहि लेल अधिकांश नाटकादिमे कृष्णक वात्सल्यमय आ दासत्व भावक पूर्ण लीलाक रूपमे वर्णन कयल गेल। रंगमंचक दृष्टिसँ ई अधिक सुव्यवस्थित अछि।

एहि नाटकादि विषय-वस्तु, रूप-रचना, भाषा आदि विशिष्टताकेँ देखलासँ प्रतिभाषित होइत अछि जे युगपुरुष शंकरदेव असमक लोक मनोरंजनक विधापर मैथिली आ व्रज क्षेत्रमे प्रचलित रंग-शैलीक आरोपन ओहिना कयलनि जेना संस्कृत नाटकक शास्त्रोक्त परम्परा छल, कारण नाटकक माध्यमसँ ओ वैष्णव धर्मक प्रचार-प्रसार करय चाहैत छलाह।

मध्यकालीन अन्य उल्लेखनीय सामग्री सभमे मैथिली गद्यक प्राचीन परम्पराकेँ जोड़बाक निमित प्राचीन दस्तावेजादिमे एक एकरारनामा, गौरीवचाटिका, बहिखत, अजातपत्र, एकरारपत्र, निस्तारपत्र, दानपत्र, फैसलापत्र आ चिट्ठी-पत्री उपलब्ध होइत अछि। एहि अभिलेखादिमे शायदे कतहु साहित्यिक सौन्दर्य भेटैछ। मैथिली साहित्यमे एकर महत्व एहि बातकेँ ल' कए अछि जे सब मैथिली गद्यक विकास-क्रम विच्छिन्न परम्पराक पूर्ति करैत अछि।

पद्य-काव्यक परम्परा तँ पूर्णवते रहल, किन्तु एहि युगमे महाकाव्य, चरित-काव्य, सस्मर आदि लिखबाक परम्पराक शुभारम्भ भेल। नव राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आ साहित्यिक स्वरूपक जन्म भेल आ मैथिलीमे नवयुगक प्रारम्भ भेल। एहि समयमे डा. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा संकलित एवं सम्पादित रचनादिमे *मैथिली कस्टोमैथी* (1882) तथा *ट्वेन्टी वन वैष्णव हिम्स* (1884), भोल झा द्वारा सम्पादित *मैथिली गीत संग्रह* (चारि खण्ड) (1917), ललितेश्वर सिंह द्वारा सम्पादित मैथिली संस्कृत भक्ति गीतादिक संग्रह, *मैथिल भक्त प्रकाश* (1920) आ जितेन्द्र नारायण झा द्वारा संकलित आ कविशेखर बदरीनाथ झा (1893-1974) द्वारा सम्पादित *मैथिली गीतरत्नावली* उल्लेखनीय अछि। एहि काल खण्डमे गीतिकाव्यक परम्पराक विकास भेल। विद्यापतिक परम्पराक अतिरिक्त गीति-काव्यक काव्यकार भेलाह ओहिमे भञ्जन कवि, लालकवि, कर्णश्याम आदि प्रमुख छथि।

परवर्त्ती मध्यकालमे एक नव-धारा चलल जकरा सन्त काव्यक नामसँ सम्बोधित कयल जाइछ जकर आधार स्तम्भमे साहेबराम दास (लगधक 1746),

महात्मा रोहिणीदत्त गोंसाई, महात्मा तारादत्त गोंसाई, महात्मा रामरूपदास, महात्मा लक्ष्मीनाथ गोंसाई (1787-1872) महात्मा हरिकिंकर दास, महात्मा रामरूपदास, महात्मा हकरू गोंसाई, महात्मापरमानन्द दास आ रघुवर गोंसाई प्रमुख छथि। लक्ष्मीनाथ गोंसाई क गीतावली (1969)मे प्रकाशमे आयल अछि।

विद्यापतिक श्रृंगार-प्रधान गीतपरम्पराक विपरीत मनबोध (निधन 1788) कथा काव्यक माध्यमे *कृष्णजन्म* (1934) क रचना कयलनि। हिनक लोक प्रियताक प्रमुख कारण थिक जे ई ग्राम्य-शब्दादिक स्वच्छन्द भ' कए प्रयोग कयलनि। इएह कारण अछि जे मैथिली साहित्यमे हिनक महत्वपूर्ण स्थान अछि।

अनेक दृष्टिएँ मैथिली साहित्यक आधुनिक कालमे अत्यधिक आधुनिकताक आभास भेटैत अछि। सन् 1857 ई. क सिपाही विद्रोहक पश्चात् भारत वर्षक राजनैतिक क्षेत्रमे बड़ पैध परिवर्त्तन भेल जाहिसँ साहित्य सेहो अछूत नहि रहल। जतय अन्यान्य भारतीय भाषादिमे साहित्यमे गद्यक दिशामे अत्यधिक प्रगति भेल ततय मैथिली उपेक्षित रहल। एकर प्रमुख तत्व छल फोर्ट विलियम कालेजक द्वारा उपेक्षा, मिशीनरी द्वारा उदासीनता, लिथो आ टाइप प्रेसक अभाव, समाज सुधार सम्बन्धी आन्दोलनक अभाव, नव-शिक्षा योजना आ कचहरीक भाषामे मैथिलीक उपेक्षा, मैथिल पण्डित लोकनिक संकीर्ण दृष्टिकोण तथा मैथिली भाषा-भाषीमे जनजागरणक अभाव। एहि दिशामे उपर्युक्त उपेक्षा नीतिक फलस्वरूप मैथिली भाषा-भाषी जतय रहथि ततय एहि गेलाह। आधुनिक युगमे एहि साहित्यक जे प्रगति भेल अछि ओकर एवं श्रेय कवीश्वर चन्दा झा, लालदास आ साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासकँ छनि जे मौलिक, अनूदित रचनाक द्वारा मैथिली साहित्यक श्रृंगार कयलनि।

मैथिलीमे पत्र-पत्रिकादिक प्रकाशनक फलस्वरूप गद्य-साहित्यक विकास भेल जकरा माध्यमे सुन्दर भाषाक निर्माण भेल, शब्द-भंडारमे श्रीवृद्धि भेल आ विश्वविद्यालय स्तरपर मैथिलीकेँ पाठ्य-विषयक रूपमे स्वीकार कयल गेल। बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक दशकमे मैथिलीमे पत्र-पत्रकादिक प्रकाशनक शुभारम्भ भेल जकर फलस्वरूप आधुनिक गद्य-साहित्यिक विकासमे तीव्रता आयल। मुद्रण कलाक नवीन वैज्ञानिक प्रगतिक फलस्वरूप पत्रिकादिक प्रकाशनमे जोरदार प्रगति भेल। मैथिली पत्रकारिताक प्रारम्भिक अवस्था तप, उत्सर्ग आ पीड़ादायक रहल अछि। मैथिलीक सर्वप्रथम पत्रिका मिथिलेतर क्षेत्र जयपुरसँ प्रकाशित भेल *मैथिल हित साधन* (1905)। एकर प्रकाशनक दोसर वर्ष काशीसँ *मिथिलामोद* (1906)क प्रकाशन भेल। मिथिलामोद मातृभाषाक जागरणक जे शंखनाद कयलक ओकरा निरर्थक नहि कहल जा सकैछ, कारण मैथिलीक आङ्गनमे वैह शंखनाद क्रान्तिक स्वर बनल। निर्भीकता, व्यंग्य, मैथिलीत्वक समर्थन, मैथिली भाषाक ओजस्विता एहि

पत्रिकाक प्रधान गुण छल। मिथिलासँ *मिथिला मिहिर* (1907) उदित भेल। प्रारम्भमे एकर स्वरूप मासिक रहल आ पाछाँ जा क' ई साप्ताहिक भ' गेल। मैथिलीमे ई पत्रिका दीर्घजीवी रहल। सन् 1960 ई सँ 1989 धरि ई प्रकाशित होइत रहल। जतय धरि मैथिली सेवाक प्रश्न अछि एकर योगदान सराहणीय रहल। एकरा द्वारा गद्यकेँ अभिवर्द्धित करबाक उद्देश्यसँ उत्प्रेरित भ' कए वर्त्तमान गद्य-गंगा विविध रूपसँ समलंकृत भेल अछि। स्वातन्त्र्योत्तर कालमे मैथिली गद्य-साहित्यक विकास विभिन्न विधा यथा उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना, यात्रा, संस्मरण, साक्षात्कार आदि गद्यक संभावित विधादिक विकासमे एकर बहुमूल्य योगदान रहल।

प्रथम विश्व युद्धक पश्चात् मैथिली पत्रिकादिक प्रकाशनमे तीव्रताक संचार भेल। एहि कालावधिमे अनेक पत्रिकादि प्रकाशित भेल जे साहित्यिक जागरणमे सहयोग दैत रहल। ई पत्रिकादि मातृभाषाक प्रति जे शिक्षित जनमानसक घ्यान आकृष्ट होइत रहल जकर प्रतिफल तँ एकरा अवश्ये कहब। *मैथिल प्रभा* (1920-1926), *मैथिली प्रभाकर* (1929-1930), *श्री मैथिली* (1925-1927), *मिथिला* (1929-1931), *मिथिलामित्र* (1931-1932), *मैथिल बन्धु* (1935), *मैथिलयुवक* (1931-1941), *जीवन-प्रभा* (1940-1950), *भारती* (1937), *विभूति* (1936-1938), *मैथिली साहित्यपत्र* (1937-1938) आदि अनेक पत्रिकादि साहित्यक जागरणमे सहयोग दैत रहल अछि।

देशक स्वाधीनताक पश्चात् तँ मातृभाषादिक महत्व आ बेसी बढ़ि गेल अछि। जनसाधारणक घ्यान मातृभाषाक दिस गेल आ सचेष्ट एवं जागरूक भ' कए एकर विकासमे संलग्न भेलाह। स्वतंत्रताक प्रभातमे *स्वदेश* (1948)क अभ्युदय भेल। पटनासँ *मिथिला ज्योति* (1949) प्रकाशित भेल। सीतामढ़ीसँ *वैदेही* (1950) प्रकट भेल। मातृभाषाक एहि नवोत्थाानमे *मिथिला दर्शन* (1952), *पल्लव* (1948), *मिथिलासेवक* (1954), *निर्माण* (1955), *इजोत* (1960), *मिथिला दूत* (1954), *बटुक* (1949) *धीयापूता* (1957), *कर्णामृत* (1981), *अन्तिका* (1998), *पूर्वोत्तर मैथिल* (2000) एवं *घर बाहर* (2001), *मिथिला दर्शन* (2009) इत्यादि सब पत्रिकादिक योगदान अछि।

मैथिलीमे एहि पत्रिकादिक महत्व समाचार पत्रक रूपमे नहि अछि। साप्ताहिक पत्रिकादिमे देश-विदेशक थोड़ बहुत समाचार छपैत छल तथापि ई समाचार पत्र कहयबाक अधिकारी नहि। यद्यपि ई समाचार पत्र स्थाई रूपेँ नहि चलि सकल, तथापि ई प्रमाणित क' देलक जे जँ समुचित व्यवस्थाक संग समाचार पत्र चलाओल जाय तँ मैथिली प्रेमी जनमानसक सहयोग निश्चये भेटत।

ई पत्रिकादि मैथिलीक विकासमे अति महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक। एहि पत्रिकादिक साहित्यिक महत्व अछि। पत्रिकादिसँ मैथिली साहित्यक विकासमे

अपेक्षित सहायता भेटल। ई गद्यक प्रवर्द्धन कयलक, ज्ञानक प्रचार कयलक, मातृभाषामे मनोरंजक साहित्यकेँ प्रोत्साहित कयलक तथा मातृभाषानुरागी पाठक वर्गक निर्माण कयलक। एकरा संगहि प्रेरणा आ प्रोत्साहनक फलस्वरूप नव लेखकक दल तैयार भेल जे मैथिलीक श्रृंगार-विन्यासमे लगनसँ संग देलनि।

मिथिला पत्रिकादिपर ई एक नव दायित्व छल जे ओ मैथिलीकेँ न्यायोचित स्थान दियबामे संघर्ष करय। एहि दिशामे सफलता सेहो भेटल। सरकारी काजमे तँ नहि परन्तु शिक्षा-विभागमे मैथिलीकेँ स्थान भेटि गेल। देशक स्वाधीन भेलाक पश्चात् उपर्युक्त पत्रिकादिपर आरो दायित्व आबि गेल अछि। मैथिलीक संग मिथिला आ मैथिलक स्वर सेहो उग्र रूप धारण क' रहल अछि। मातृभाषाक प्रति ममत्वक संगहि-संग राजनीतिक आ आर्थिक दृष्टिकोण सेहो व्यापक भ' गेल अछि। मैथिली पत्रिकादि एकर सफल नेतृत्व करैत अछि। एहि पत्रिकादिक माध्यमसँ एकर शैलीक यथार्थ स्वरूपक निर्धारण कयल गेल आ गद्यकेँ व्याकरणक कठोर नियमादिसँ बान्हल गेल। एतबा स्वीकार करय पड़त जे एहि पत्रिकादिक माध्यमे गद्यकेँ एक अभिनव दिशा भेटल।

सामाजिक जागृति, राजनीतिक असन्तोष आ पत्रिकादिक प्रकाशनक फलस्वरूप निबन्ध महत्वपूर्ण साहित्यिक विधाक उदय भेल। विचार आ विषयक बन्धन नहि रहबाक कारणेँ आत्म-प्रदर्शन, ज्ञान-गरिमा, बहुश्रुतता तथा सूक्ष्म पर्यवेक्षणक झलक रहबाक कारणेँ ई साहित्यिक महत्व प्राप्त क' सकल। वास्तवमे आधुनिक मैथिली गद्यमे निबन्ध प्रारम्भिक युगसँ उपलब्ध भ' रहल अछि, मुदा एकर समुचित विकास बीसम शताब्दीमे आबि क' भेल अछि। मैथिल हित साधन, मिथिलामोद, मिथिलामिहिर, श्रीमैथिली, मिथिला, भारती, विभूति, कर्णामृत, वैदेही, मिथिला दर्शन आ *विदेह ई पत्रिका* आदि पत्रिकादिक प्रकाशनक फलस्वरूप ई विधा आ पुष्टत्तर भेल अछि। आम्भमे सामयिक, सामाजिक एवं साहित्यिक आदि विविध विधादिक संगहि-संग अनेक उपदेशात्मक निबन्ध लिखल गेल। एकरा संगहि-संग अनेक विषयादिपर पाण्डित्वपूर्ण आ गम्भीर निबन्धक रचना भेल। पत्रिकादिक सम्पादकीयक माध्यमे निबन्धक विषय, शैली कथ्य आ प्रभाव सभ रूपमे एकर परिधिक विस्तार कयल गेल, गद्यकेँ परिमार्जित कयल गेल, लोकरुचि जगाओल गेल आ भाषाकेँ जनोन्मुख बनाओल गेल। मिथिला मोदक सम्पादक महामहोपाध्याय मुरलीधर झा (1869-1929) आ मिथिला मिहिर सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरी (1920-1990) तथा अन्य पत्रिकादिक सम्पादक जे प्रख्यात साहित्यकार रहथि, विशिष्ट गद्यकार रहथि जनिका द्वारा लिखल गेल सम्पादकीय निबन्धादिकेँ पुस्तकाकार संकलित नहि कयल गेल अछि जे प्रमाणिक इतिहास, साहित्यक इतिहास, समाजिक इतिहासपर प्रकाश पड़ि सकय। ओहि सम्पादकीय

निबन्धादिक दुइ संग्रह प्रकाशमे आयल अछि जाहिमे लक्ष्मण झा (1916-2000)क *विचार चिन्तामणि* (2002) एवं भीमनाथ झा (1945)क *लघूतरीय* (2003)।

सम्पूर्ण मैथिली निबन्ध-साहित्यकेँ चारि भागमे विभाजित कयल जा सकैछ:

i. अभ्युत्थान युग 1906-1920 ई.
ii. परिमार्जन युग 1921-1947 ई.
iii. उत्कर्ष युग 1947-1960 ई.
iv. प्रसरण युग 1960 ई. क पश्चात्।

मैथिली निबन्ध साहित्यक विकास क्रम उद्भव आ अभ्यास, प्रयत्न आ निर्माण, उत्कर्ष आ परिष्कार तथा प्रसार आ प्रसाधनक अवस्थामे निरन्तर गतिशील आ विकासोन्मुख रहल अछि। विषय आ शैलीक दृष्टिसँ एहिमे विविधता भेटैत अछि। मैथिलीमे अद्यापि प्रकाशित निबन्धादिक वर्गीकरण आ निबन्धकारक पैघ सूची प्रस्तुत करब कठिन अछि, मुदा ओकरा विचारात्मक, वर्णनात्मक, भावनात्मक, आलोचनात्मक अवश्य कहि सकैत छी। वर्त्तमान सन्दर्भमे आत्म-चरित, जीवनी, संस्मरण, इतिहास, भूगोल, दर्शन, धर्म आदि विषयादिकेँ घ्यानमे राखि क' अनेक निबंध लिखल गेल अछि। एहि रचनादिक विशिष्टता एहि विषयकेँ ल' कए अछि जे एहिमे निबन्ध शैलीमे नवीनताक आभास भेटैत अछि। एहिमे युग चेतनाक प्राणवत्ता नियोजित अछि। ई वैयक्तिक, सामाजिक, साहित्यिक आ शास्त्रीय भूमिपर संवरण करैत स्वच्छन्दता आ कलात्मकता एवं भौतिकता यथार्थोन्मुखताक दिशामे अग्रसर भ' रहल अछि। व्यक्ति आ विषय, कला आ शास्त्र, संवेदन आ चिन्तनक स्वर एहिमे संप्रयुक्त आ आस्वाद्य अछि। मैथिली निबंध व्यक्ति आ विषय तटक बीच प्रवाहित भ' रहल अछि। अद्यतन परिणति एहन अछि जे मूलधारासँ विकसित भ' विषय आ व्यक्ति विषयक प्रवाहमे दू नहरक समान पृथक्-पृथक् सौन्दर्य उद्घाटित क' सकल अछि जेना प्रगतिवादी आ आत्म-केन्द्रित निबंध।

मैथिली निबंध क्रम विकास स्वरापूर्ण आ समृद्ध युक्त अछि। ओहिमे प्रौढ़ता, परिवर्त्तनक अतिरिक्त वस्तु, दृष्टिकोण, रूप-शैली आ भाषा-प्रयोग क वैविध्य अर्जित कयलक अछि। एहि विधाक एक अपन पहचान अछि जे कालान्तरमे मैथिली साहित्यिक गौरव मानल जायत। एहि प्रकार निबन्धकारक भाव-प्रवणता, हार्दिकता, कल्पनाशीलता एवं स्वच्छन्द प्रवृत्तिक परिणाम स्वरूप मैथिली निबन्ध साहित्य अपन नव पल्लवसँ पल्लवित कयलक अछि। *खट्टर ककाक तरंग (1948)*क नामसँ प्रकाशित हरिमोहन झा (1908-1984)क कृति हुनका विशिष्ट निबन्धकारक परिचय दैत अछि। एहिमे लेखक अत्यन्त कुशलतापूर्वक व्यक्ति, समाज, धर्म, दर्शन आदि सभक आलोचना प्रस्तुत कयलनि अछि। थैकरे जकरा

राउण्ड एबाउट पेपर्स, कहलनि वैह विशिष्टता हुनक निबन्धादिमे परिलक्षित होइत अछि। एहिमे संग्रहीत प्रत्येक निबन्ध वार्त्तालाप रूपमे अछि जाहिमे वाक् विलासक चातुर्य्यक संगहि वस्तु-विन्यासक अद्भुत कुशलता देखबाक हेतु भेटैछ। हास्य-व्यंग्य एवं उक्तिक दृष्टिसँ ई निबन्ध लेखकक मैलिक प्रतिभाक परिचायक थिक।

हमर निबन्ध साहित्यक परिसरमे स्केच, रिपार्ताज, संस्मरण सदृश विषयकेँ सम्मिलित क' लेल जाइत अछि। किन्तु सत्य बात तँ ई थिक जे ई सभ विधादि हमरा ओतय प्रारम्भिकावस्थहिमे रहल अछि। मैथिली निबन्ध साहित्य मैथिली गद्यक विकासमे अत्यधिक सहायता कयलक अछि। प्रत्येक क्षेत्रमे निबन्ध पहुँचि रहल अछि, फलत: गद्यकेँ विविध प्रकारक विचारदिक अभिव्यक्ति माध्यम बनय पड़ल जकर फलस्वरुप एहि विधामे पण्डित लाल दासक *स्त्रीधर्म शिक्षा* (1910), राधाकृष्ण चौधरीक *साहित्यिक निबन्धावली* (1950) एवं *शारान्तिधा* (1968), रमानाथ झाक *निबंधमाला* (1370साल) एवं *प्रबन्ध संग्रह* (1371 साल) शैलेन्द्र मोहन झा (1929-1994)क *पथहेरथि राधा* (1963), उमेश मिश्र (1895-1967)क *मैथिल संस्कृति ओ सभ्यता* (1960), बलदेव मिश्रक *शिशुशिक्षा* (1952), *गपशप विवेक* (1954), *भारत शिक्षा* (1955), *रामायण शिक्षा* (1965), *संस्कृति* (2006संवत्) अमरनाथ झा (1937)क *द्रुतविलम्बित ओ अन्य निबन्ध* (1979) इत्यादि उल्लेख्य योग्य प्रकाशन जनमानसक समक्ष आयल अछि।

ओना तँ मैथिली कथा बीज रुपमे कीर्तिलतामे उपलब्ध अछि, किन्तु गद्यक विकासक दृष्टिसँ आधुनिक मैथिली कथा सहित्यिक विधादिमे सर्वथा नवीनतम अछि। एकर क्षेत्र विस्तृत अछि। यद्यपि प्रारम्भिक कथादिमे सुधारवादी प्रवृत्तिक परिचय भेटैत अछि तथापि आगाँ जा क' कथाकार लोकनिक ध्यान वातावरणक निर्माण आ चरित्र-चित्रण दिस गेल आ शिल्पक दृष्टिसँ सेहो महत्वपूर्ण परिवर्त्तन भेल। वस्तुत: एहि साहित्यिक विधाक उन्नैसम शताब्दीसँ मानल जाइत अछि। अधुनातन सन्दर्भमे एकर विस्तृत रूप पबैत छी, ओकर विकास ई सर्वमान्य तथ्य अछि जे ओहिमे मानव जातिक आधुनिक आ नव संवेनादिकेँ व्यक्त करबाक शक्ति अन्य सब साहित्यिक विधादिक तुलनामे सर्वाधिक अछि। मैथिली साहित्यमे कथा विकास बीसम शताब्दीक तृतीय दशकसँ पहिने नहि भ' सकल। तइयो ई मान्य पड़त जे एकरा लेल भूमि निर्माण पहिनहि भ' गेल छल। आधुनिक मैथिली साहित्यक नव जागरणक जे इतिहास प्रारम्भ होइत अछि, ओहिमे संस्कृतक विद्वान् लोकनिक हाथ छल, जनिका अंग्रेजी शिक्षासँ कोनो सम्बन्ध नहि छल, तथापि अन्यान्य भारतीय भाषाक नव विकासक प्रेरणा पाबि क' मैथिली कथाकेँ नव रूप देबाक लेल प्रवृत्त भेलाह। उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम दशकमे कवीश्वर चन्दा झा द्वारा पुरुष-परीक्षाक अनुवादसँ ल' कए बीसम शताब्दीक प्रथम तीन दशकक

अधिकांश कथा साहित्य अनुवाद अछि अथवा उपाख्यान मात्रपर आधारित अछि, जाहिमे भौतिकताक अभाव, गतिहीनता एवं चरित्र-चित्रणक नव दृष्टिकोणक अभाव अछि, तथापि जतय धरि साहित्यमे चैतन्य अनबाक प्रश्न अछि, कथाक विकासक दृष्टिसँ पृष्ठभूमिक प्रश्न अछि, ओकर स्थायी मूल्य छैक।

मैथिली कथाक विकासकेँ लक्ष्य क' कए 1920 ई. क कालकेँ भूमिका काल कहि सकैत छी। एहि समय धरि कथा स्वस्थ नहि भ' सकल। एहि अवधिमे संस्कृत उपाख्यानकेँ ग्रहण क' कए लिखबाक प्रचुरता रहल। एहि भूमिका कालक कतिपय घटना महत्वपूर्ण अछि। सुधारवादी आन्दोलन, स्वदेशी आन्दोलन, सदृश आन्दोलन बुद्धिजीवी मानसकेँ प्रभावित क' रहल छल। वस्तुत: मैथिली कथा साहित्यक विकासपर विचार करैत एकर –

i. प्रारम्भ युग 1920-1935 ई.
ii. प्रगति युग 1935-1946 ई.
iii. प्रयोग युग 1947-1960 ई.
iv. विस्तार युग 1960-2000 ई.

मैथिली कथाक विकास क्रममे दू कथाक चर्चा करब विशेष रूपसँ आवश्यक भ' जाइत अछि। ओ रहथि काली कुमार दास लिखित *भीषण अन्याय* (1923) तथा भोल झा रचित *मनुष्यक मोल* (1924)। एहि दूनू कथामे आधुनिक शिल्प तथा वस्तुक प्रति संचेतना देखल जाइत अछि। एकर पश्चात् मैथिली गद्यक विकास तीव्र गतिसँ होमय लागल।

ई कहब कठिन अछि जे *मिथिला मोद*, *मिथिला मिहिर* आ *मैथिली प्रभाक* नीति एहि नव कथा शिल्पक प्रति केहन छल। सन् 1920 ई.क पश्चात् विभिन्न समयादिपर कथाकार साहित्यक क्षेत्रमे प्रवेश करैत रहलाह।परन्तु एकरा संगहि-संग तरुण प्रतिभाशाली कथाकार लोकनिक दोसर दल सेहो प्रस्तुत भ' रहल छल जनिक प्रतिभा, चेतना एवं कथा-शिल्पक चमत्कार विशेष रूपसँ सन् 1935 ई.क पश्चात् देखबाक हेतु भेटैछ। पूर्व स्वतंत्रता युगमे अनेक प्रशस्त कथाकार साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि, किन्तु हुनक परिपक्व शैली कथादि स्वाधीनता प्राप्तिक पश्चाते प्रकाशमे आयल।

मैथिली कथाकेँ लोकप्रिय बनयबाक श्रेय हरिमोहन झाकेँ छनि। *प्रणम्य देवता* (1945)क कथादि जकरा कथाकार कटाक्षपूर्ण रेखाचित्र कहलनि, प्रधानत: सामाजिक जीवनक आलोचनादि प्रस्तुत करैत अछि। सबसँ पैघ विलक्षणता तँ हुनक उपस्थापन शैली सम्बन्धी मौलिकतादि छनि। प्राचीन कथा-पद्धतिकेँ ग्रहण क' कए गम्भीरसँ गम्भीर विषयादिकेँ सरस सुस्वाद बना क' जन-मन-रंजनक संगहि

रूढ़िग्रस्त, जीर्ण-शीर्ण विचारधारापर कशाधात क' कए नव प्रगतिक प्रेरणा दैत छथि। ने तँ हुनका प्राचीन अन्ध-विश्वासक प्रति निष्ठा छलनि आ ने तँ नवीन अन्धानुकरणक प्रति आसक्तिए। प्रणम्य देवताक कथादिमे छोट पैघ अनेक रास समस्यादिक दिस पाठकक घ्यान आकर्षित कयलनि जाहिमे सामाजिक व्यंग्यक अत्यंत भव्य रूप भटैत अछि।

आगाँ चलि क' कथाकार लोकनि व्यक्तिक ऐकांतिक जीवन आ हुनक व्यक्तिगत वैशिष्ट्यकेँ ध्यानमे राखि क' कथा रचना कयलनि। एहन कथामे मानव मनोविज्ञानक पूर्ण घ्यान राखल गेल आ पात्रक बाह्य प्रवृत्तिक संगहि-संग ओकर अन्तर्मनक झाँकी देखबामे आयल। मानव-मनक उद्घाटनमे कलात्मकता तखनहि अबैत अछि जखन ओ द्वन्द्व आ संघर्षमे पड़ल रहैछ। एहि दृष्टिसँ उपेन्द्रनाथ झा व्यास (1917-2002)क कथा *रुसल जमाय* (1949) तथा सुधांशु शेखर चौधरीक *भारती* (1948)मे एक पुरुष तथा एक नारीक प्रतिक्रियादि ओकर अन्त: संघर्षक रूपमे स्फुट अछि। उमानाथ झा (1923-2009) रचित *आध घण्टा* तथा *माधवजी* मे अन्त: संर्घषक चित्रण अत्यन्त मार्मिक अछि। एहि प्रकारेँ योगानन्द झा (1922-1986)क कथा *ककर कोन दोष* तथा *लिखलाहा* (1946)मे मानव मनोविज्ञानक मधुर विन्यास अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर कालमे मैथिली कथाक विकास अत्यंत द्रुतगतिएँ भेल अछि। बौद्धिकताक समावेश आ मनोविज्ञाान दू एहन तत्व रहल अछि जे मैथिली कथा-रूपक विकासमे अपेक्षित सहायता देलक अछि। किन्तु स्वतन्त्रताक पूर्व जतय ई परिवर्त्तनक सूचक रहल, आब ओ विकासक प्रतिमान भ' गेल अछि। रूढ़िवाद तँ हमर धर्मान्धतापर जबर्दस्त आघात कयलक अछि तथा एकर प्रभावसँ प्राचीन पोषित संस्कार निष्प्रभ भ' गेल अछि। ओहिना बौद्धिक विकाससँ समाजवादी विचारधाराकेँ बल भेटल अछि आ मानव व्यक्तित्वक प्रति आदरक भाव जागल अछि। एहि सभक गम्भीर असर नव कथाक विषय आ उपादानपर पड़ल अछि तथा रूढ़िवादी परम्परा, सामाजिक शोषण, वर्ग-संघर्ष आ नारीक असहाय जीवनकेँ स्पर्श कयनिहार अनेक रास कथादि लिखल गेल अछि। परिणाम स्वरूप समकालीन सत्य यथार्थक चित्रण कयनिहार प्रभाववादी कथाक जन्म भेल अछि।

जीवनक एहि यथार्थ चित्रणकेँ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण निश्चये गम्भीरता देलक अछि। जतय पूर्वक कथामे बाह्य जीवनक वर्णनक प्राचूर्य्य रहैत छल ओतय कथाकार लोकनिक दृष्टि अन्तर्मुखी भ' गेल अछि। सत्यता तँ ई अछि जे मनोविज्ञान कथाकार लोकनिकेँ सूक्ष्म दृष्टिसँ समृद्ध कयलक अछि। फलत: चरित्र-चित्रण विशेष स्वाभाविक आ विश्वसनीय जँचय लागल। हठात् एहन कथाकार लोकनिपर टाइपक आरोप नहि लगाओल जा सकैछ। उदाहरणक लेल अनमेल विवाहपर प्रकाश देनिहार ललित (1932-1983) लिखित *कलकतिया पेटी*

(1953)केँ देखल जा सकैछ। मानव मनोविज्ञानक मानवीय अन्त: प्रवृत्तिक पकड़ मायानन्द मिश्र (1934)मे अत्यधिक अछि। अपन कहानी *आगि मोम आ पाथर* (1956)मे ओ दृश्यक गहराईमे उतरि क' ओहि तुफानकेँ देखबाक प्रयास कयलनि जकर साधारणत: उपरका सतहपर अनुभव नहि होइछ। हिनक अन्य कथादिमे सेहो ई विशेषता समन्वित अछि। वस्तुत: मनोविज्ञान नव कथाकेँ सजि धजि क' आकर्षक बना देलक अछि। एहन कथादिमे घटनाक बाहुल्य नहि अछि, प्रत्युत एक छोट सन साधारण सन घटना रहैत अछि जकर छाप एक मूड एवं भाव स्थितिक रूपमे मनपर शेष रहि जाइत अछि।

फ्रायडक मनोविज्ञान सम्बन्धी अध्ययनमे अवचेतन मनक प्रसंगमे जे निष्कर्ष प्रस्तुत कयल गेल अछि ओकरा कतिपय मैथिली कथाकार लोकनि पात्रक व्यक्तित्वक मानदण्ड बनौलनि अछि। परन्तु अत्याधुनिक कथादिक प्रति तीव्र प्रतिक्रिया कयल जाय लागल अछि। एहि कथादिमे जीवनक प्रति अनास्था, मानवीय चेतनाक उपेक्षा एवं सेक्सक क्षेत्रमे उच्छृंखलताक आरोप लगाओल जाइत अछि। ई सत्य अछि जे अवचेतन मानसमे चक्कर काटैत विभिन्न क्रिया-प्रतिक्रियादिक ताना-बानासँ नीकसँ नीक कथाक रचना कयल जा सकैछ जे साहित्यक नव्यतम उपलब्धि हैत। फ्रायड, युंग, एडलर आदि मनोवैज्ञानिक लोकनिक कथन छनि जे मनुष्य सत्यताक विकास क्रममे भाव प्रकृतिक अनेक रास आदिम प्रवृत्ति आदिकेँ दूषित कहि क' ओकरा दबा देलनि अछि जकर फलस्वरूप आजुक कृत्रिम जीवनमे अनेक रास विकृति आदि आबि गेल अछि। हुनक मतानुसार मानवक समस्त क्रिया कलापक मूल प्रेरणा-स्त्रोत ओकर यौन-आकांक्षा थिक आ ओकर परितृप्तिकेँ मानि क' जीवन व्यापार चलबैत अछि। ई तथ्य जेना सेक्सक क्षेत्रमे विद्रोह क' देलक आ नारीक तथा कामुकताक नग्न चित्रणपर प्रगतिवादक मोहर लागि गेल। राजकमल चौधरी (1929-1967) आ कल्पना शरण (1933) आदिक सम्मुख आइ मनोविज्ञानक इएह रूप अछि। राजकमल चौधरीक हालक लिखल गेल बड़ कम कथा एहन अछि जाहिमे शारीरिक सीमाकेँ स्पर्श कयनिहार काम-वासनाक चर्चा नहि हो। परीक्षाक लेल हिनक *किरतनियाँ* (1956), *चन्नरदास* (1956), *हरिद्वारवास* (1957) आदि कथादिकेँ देखल जा सकैछ। कल्पनाशरण तँ *रंगीन पर्दा* (1956)मे सासु आ जमायक यौन सम्बन्धक चित्रण क' कए अद्भुत साहसिकताक परिचय देलनि अछि। ललित अपन कथा *मुक्ति* (1956)मे अस्वस्थ मन आ मस्तिष्कक परीक्षा क' कए ओकार निदानक प्रयास कयलनि अछि। उपर्युक्त कथाकार लोकनिक विषयमे एकहि संग अनास्थावादी, अस्तित्ववादी, वीभत्सवादी कहि क' लांक्षण लगाओल जाय लागल अछि।

सम्प्रति कथाक क्षेत्रमे यथार्थवादीक एक दल बहार भेल अछि। एहि श्रेणीक कथाकार लोकनिक रचनादिमे जीवनक प्रति गहन अनुभूति पाओल जाइत अछि। महान कलाक सम्बन्ध धरातलसँ हैबाक चाही आ ओहिसँ एहन वस्तु प्रकट हो जाहिमे मानव वास्तवमे मानव बनि सकय। फ्रायड वा मार्क्सक सिद्धान्त एहन कथाकारकेँ अवश्य प्रभावित कयलक अछि, परन्तु ओ सभ अनुभव कयलनि जे कला यथार्थसँ ऊपर अछि। अति आधुनिक कथा साहित्यपर जाहि कथाकार लोकनिक हाथ अछि, ओ विश्वक गल्प वाङ्मयक विकासक मानदण्ड छथि, जाहिमे सम्यक् परिचय रखैत गप्प रचनामे संलग्न छथि। नव कथाकारमे सोमदेव (1934), प्रभास कुमार चौधरी (1941-1998), मायानन्द मिश्र, रामदेव झा (1936), गोविन्द झा (1923), गंगेश गुंजन (1942), रमानन्द रेणु (1934), जीवकान्त (1936), नीरजारेणु (1945), ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्य (1918-1986) घूमकेतु (1932-2000) शैलेन्द्रमोहन झा, (1929-1994) नगेन्द्र कुमार आदि-आदि उल्लेखनीय छथि। एकर अतिरिक्त शताधिक कथाकार एहि विधाक विकासक दिशामे सचेष्ट छथि।

स्वाधीनता पूर्व जतय अत्यन्त कठिनताक संग कहानी प्रकाशित होइत छल ओतय स्वातन्त्र्योत्तर कालमे बड़ बेसी संख्यामे कथा-संग्रहक प्रकाशन होमय लागल अछि। उत्तर स्वतन्त्रता युगमे मैथिली कथाक विकासमे पत्रिकादिक योगदान सर्वाधिक रहल अछि। प्रत्येक पत्रिकादिक झुकाव साधारणतया कथाक दिस रहल अछि। अतएव नव कथाक रचनाक संगहि-संग नव-नव कथाकारक अविर्भाव अत्यन्त द्रुत गतिसँ भेल अछि। जतय धरि लघु कथाक प्रश्न अछि एकर परिवेश अत्यन्त छोट होइत अछि। एहन कथा सूक्तिक विशेषतासँ समन्वित होइत अछि अथवा कोनो छोट घटनाकेँ अपना क’ कोनो महान सत्यक उद्घाटनक प्रयास रहल अछि। मैथिलीमे व्यंग्य कथाक साहित्य सुसम्पन्न अछि। किछु व्यंग्य-कथादि अपन शिल्पगत वैशिष्ट्यक आधारपर लघु कथाक कोटिमे गनल जायत। लोक-कथा एवं बाल-कथाक रूपमे हमर कथा-साहित्यक विकास भ’ रहल अछि। मैथिली कथादिमे राजनीति, धर्मनीति. समाज सुधार सम्बन्धी तत्वकेँ आधार बना क’ कथाकार लोकनि एहि विधाकेँ सम्पुष्ट करबाक प्रयासमे लागल छथि जे एकर आलोकमय भविष्यक सूचक कहल जा सकैछ।

आधुनिक भारतीय भाषा साहित्यादिमे उपन्यास एक नव विधा अछि जाहिमे मैथिली उपन्सासक इतिहास तँ आरो नव थिक। बाङला साहित्यक समीपवर्त्ती हैबाक कारणेँ मैथिली उपन्यासदि विकासमे एकर यथेष्ट प्रभाव पड़ल अछि। मैथिलीमे उपन्यास लेखकक आम्भ अनुवादसँ भेल। मिथिला मिहिरमे तुलापति सिंह (1859-1914) रचित, धारावाहिक रूपमे प्रकाशित *मदनराज चरित* (1908) मनोरंजनक दृष्टिसँ एकर जे महत्व हो, परन्तु एहिमे यथार्थ जीवनक चित्रण

लेशमात्र नहि छल। मैथिलीमे मौलिक उपन्यास-लेखन जीवछ मिश्र (1864-1923)क *रमेश्वर* (1915)सँ होइत अछि। एहि कड़ीकेँ आगाँ बढ़यबामे जनार्दन झा जनसीदन (1872-1951) रचित *निर्दयी सासु (1916), शशिकला (1915)* उल्लेखनीय अछि। ई दूनू उपन्यास मिथिला मिहिरमे धारावहिक रूपेँ प्रकाशित भेल। हिनक अन्य उपन्यासमे *पुनर्विवाह (1926), कलियुगी सन्यासी (1929)* आ, *द्विरागमन रहस्य* (1945)क चर्चा कयल जा सकैछ। फेर रासविहारी लाल दास कृत *सुमति (1918)* आ पुण्यानन्द झा (1898-1967) लिखित *मिथिला दर्पण (1925)* क प्रकाशन होइत अछि। मिथिला दर्पणक प्रकाशनोपरान्त मैथिली उपन्सास लेखनमे एक नव संचेतनाक विकास भेल जकर फलस्वरूप मिथिला नामक पत्रिकामे प्रकाशित हरिमोहन झाक *कन्यादान (1929)* धारावाहिक रूपसँ प्रकाशित होमय लागल। स्त्री-शिक्षाक आवश्यकता तथा नव-पुरान विचारक संघर्षकेँ देखयबाक उद्देश्यसँ एकर रचना कयल गेल छल। पुस्तकाकार रूपमे एकर प्रकाशन 1933 ई.मे भेल। एकर प्रभाव मुख्यतः तीन रूपेँ पड़ल-पहिल समाजक मनोवृत्तिपर, दोसर कन्या लोकनिक व्यक्तिगत जीवनपर आ तेसर मैथिली लेखक समुदायपर। एकर प्रकाशनक फलस्वरूप मैथिली उपन्यास पढ़निहारक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल आ एहिसँ मैथिली लेखक लोकनिकेँ प्रोत्साहन भेटलनि। एही बीचमे काञ्चीनाथ झा किरण (1906-1989)क *चन्द्रग्रहण (1932)* क प्रकाशन भेल। यद्यपि एकर स्वरूप अत्यन्त लघु अछि तथापि एकर स्थायी महत्व अछि। परिपक्वता आ परिमार्जनक दृष्टिसँ कुमार गंगानन्द सिंह (1898-1970)क *अगिलही* (1935) सर्वोत्कृष्ट अछि।

सामाजिक आवेष्टनमे जतेक उपन्यास लिखल गेल ओकर संख्या पर्याप्त अछि। गंगापति सिंह (1881-1973)क विधवा करूणक चित्र *सुशीला (1943)* मे प्रस्तुत कयल गेल। योगानन्द झा *भलमानुस (1944)* मिथिलामे प्रचलित कुलीन प्रथाक निस्सारतापर लिखल गेल उपन्यास अछि। वैद्यनाथ मिश्र यात्री (1911-1998) वृद्ध-विवाहकेँ ल' कए *पारो (1946)* क रचना कयलनि। एही समस्याकेँ ल' कए फेर हुनक दोसर उपन्यास *नवतुरिया (1954)* प्रकाशित भेल। फेर चतुरानन मिश्रक *कला (1947)* एहि प्रवृत्तिक प्रसंगमे क्रान्तिकारी प्रवृत्तिकेँ ल' कए उपस्थित होइत अछि। विधवाक जीवनसँ उपन्यास एखन धरि लिखल जा रहल अछि। मायानन्द मिश्र अपन उपन्यास *बिहाड़ि-पात-पाथर* (1960) नारी समस्याक संगहि-संग वैद्यव्यक करुणिक रूप प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिली उपन्यासक सामाजिक परिसरमे आ अनेक नाम अछि जाहिमे छोट-पैघ सामाजिक समस्यादिक वर्णन भेल अछि। बदरीनारायण दास लिखित *चन्द्रकला (1948)*मे चन्द्रग्रहणमे वर्णित कथाकेँ नवरूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि प्रकारेँ तारानन्द कंठ रचित दुवक्षित (1957)मे नवतुरियाक कथाकेँ नव प्रकारसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। सामाजिक

जीवनक चित्रण जतेक कुशलतासँ ब्रजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* रचित *अनलपथ (1953)*मे पबैत छी ओ शायदे अन्यत्र उपलब्ध हो।

मैथिलीमे व्यक्तिपरक उपन्यासादिक चर्चा भेल अछि। एहन उपन्यासादिमे सामाजिकता जतेक रहैत अछि ओतेक प्राय: सामान्य व्यक्तिक जीवनमे नहि। ई दोसर बात थिक जे कखनो-कखनो व्यक्तिक सामाजिक चेतना विशेष जागरूक भ' जाइत अछि। मैथिलीमे नर नारीक आकर्षणक चित्रण कयनिहार प्रथम उपन्यास हरिनन्दन ठाकुर सरोज (1908-1945) लिखित *माधवी-माधव (1935)* थिक, परन्तु मनोवैज्ञानिक स्वाभाविकताक न्यूनतासँ ओहिमे कृत्रिमताक मात्रा विशेष अछि। उपेन्द्रनाथ झा *व्यासक* उपन्यास *कुमार (1946)* एहि दृष्टिसँ विशेष महत्व रखैत अछि जाहिमे देओर-भाउजक आदर्श प्रेम कथाकेँ अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ढंगसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। नर-नारीक एहि सहज आकर्षण वृत्तिपर शैलेन्द्रमोहन झाक *प्रतिमा (1948)*क कथा-वस्तु आधारित अछि। फेर हुनक *मधुश्रावणी* (1956)क कथा-वस्तुक निर्माण सेहो व्यक्तिक एही आकर्षण-प्रत्याकर्षणपर भेल अछि।

एहन उपन्यासमे यौन-आकर्षणक सत्यताकेँ प्रमाणित करबाक लेल सामाजिक नैतिकताकेँ खुजल चुनौती देल जाय लागल अछि आ लेखक दृष्टिकोण एहन लगैछ जेना वंशगत संस्कार बेसी दिन धरि एकर रक्षा नहि क' सकत। एहन उपन्यासादिमे जतय व्यक्तिक वाह्याडम्बरक पर्दाफाश भेल अछि, संगहि-संग आन्तरिक जगतक वीभत्स नग्नताकेँ निर्ममता पूर्वक देखल गेल अछि। राजकमल चौधरी रचित *पाथर फूल (1957)* एवं *आदि कथा (1958)मे* इएह प्रवृत्ति पबैत छी।

उपन्यासक एहि विकासोन्मुख परम्परामे किछु जासूसी उपन्यास सेहो लिखल गेल अछि। एहि वर्गक अग्रगण उपन्यासकारमे छथि गणेशचन्द्र चौधरी जनिक *कृष्णक हत्या (1957)* एवं *रत्नहार (1957)* क नामसँ हिनक दू जासूसी उपन्यास प्रकाशमे आयल अछि। एहि कड़ीकेँ आगाँ बढ़यबाक परम्परामे ब्रजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* क *कोब्रागर्ल* (1970) एवं सोमदेवक *ब्रह्मपिशाच* (1972)क गणना सेहो गणना कयल जा सकैछ।

मैथिली उपन्यासक प्रगतिक सामान्य विवेचन कयलाक पश्चात् हम देखैत छी जे ओकर वर्ण्य-विषयक दृष्टिसँ मैथिलीमे अनेक प्रकारक उपन्यास लिखल गेल अछि। आइ हमरा पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, लोक गाथात्मक जासूसी सभ प्रकारक उपन्यास भेटैत अछि। सामान्य दृष्टिमे ओकरा वस्तुपरक आ व्यक्तिपरक एहि दू कोटिमे राखि सकैत छी। वस्तुपरक उपन्यासक श्रेणीमे ओहि सब उपन्यासक गणना करब जे हमर जीवनक बाह्य अंगक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। एकर विपरीत व्यक्तिपरक उपन्यास सभमे मनुष्यक अन्तर्मनक अध्ययनक प्रयास पबैत छी। एहिमे मनुष्यक प्रवृत्ति सबपर, रहस्यमय भावनादिपर गुत्थी सबपर

कुण्ठादि एवं दुर्बलतादिपर प्रकाश देल गेल अछि। एहि दृष्टिसँ हमर साहित्यमे वस्तुपरक उपन्यासादिक संख्या पर्याप्त अछि। शिक्षा-प्रधान आ पौराणिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, समस्या प्रधान सामाजिक उपन्यास घटना प्रधान जासूसी उपन्यासक एही कोटिमे अबैत अछि।

मैथिली उपन्यासक उर्वर उपन्यासकारमे ब्रजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* क नाम अन्यतम अछि। ई मिथिलाक लोक साहित्यक अध्ययन-अनुशीलन, चिन्तन-मनन क' कए हुनक व्यक्तित्व आ वाग्भंगिमाकेँ एहन परिचालित कयलनि अछि जे मैथिलीक अन्य उपन्यासकार लोकनिमे नहि उपलब्ध होइत अछि। ई छोट-पैघ पन्द्रह उपन्यासक रचना कयलनि जे अछि यथा *अनलपथ(1953), विद्यापति (1960), लोरिक विजय (1970), रायरणपाल (1976) लवहरि-कुशहरि (1976), फुटपाथ (1978), अर्द्धनारीश्वर (1981) दुलरा दयाल (1984), नागभूमि (1985), आदिम गुलाम (2003), कनकी (2003), भारतीक* बिलाड़ि (1978) एवं *सोना रूपा हीरा* (2010)। ई अपन अधिकांश उपन्यासादिमे लोकगाथाक वाग्भंगिमाक चासनी द' कए विलक्षण गद्यक निर्माण कयलनि अछि। हिनक उपन्यासादिक सफलताक मूल तत्व अछि हिनक दृष्टिक महनता आ अन्तर्वेधकता।

मैथिली चर्चित उपन्यासकार लोकनिमे राजकमल चौधरी, मायानन्द मिश्र, सुधांशु शेखर चौधरी, प्रभास कुमार चौधरी, धीरेन्द्र, ललित, जीवकान्त, रमानन्द रेणु, लिली रे, उषाकिरण खाँ आदि अनेक उपन्यासकार लोकनि वर्त्तमान सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमिक आधारपर उपन्यासादिक रचना कयलनि अछि। उपर्युक्त उपन्यासकार लोकनिक कृति एहि प्रकारक अछि। राजकमल चौधरी *आदि कथा (1958), पाथर फूल (1967) आ आन्दोलन (1968)* क रचना कयलनि जाहिमे ओ काम-वासनाक सम्बन्धमे नि:संकोच आ स्वछन्द विवेचन कयलनि अछि। मायानन्द मिश्र मिथिलाक जन-जीवनक अनुरूप *बिहाड़ि पात पाथर (1960), खोंता आ चिड़ै (1922) आ ऐतिहासिक उपन्यास मंत्रपुत्र* (1986)क रचना कयलनि। सोमदेव *चानोदाइ (1959) आ ब्रह्मपिशाचमे* समकालीन समाजमे व्याप्त समस्यादिकेँ उठयबाक प्रयास कयलनि अछि। मैथिलीक सशक्त उपन्यासकार छथि सुधांशु शेखर चौधरी जे *ई बतहा संसार (1979), निवेदिता (1996), तरपट्टा ऊपर पट्टा (2003), दरिद्र छिम्मड़ि (1987) आ अंग्रेजी फूलक चिट्ठी (2003)* क रचना कयलनि जाहिमे सामाजिक सन्दर्भमे विविध समस्यादिकेँ उद्घाटित कयलनि अछि।

मिथिलाक ग्रामीण परिवेशमे निम्न वर्गीयकेँ दिशा-निर्देश आ गम्भीर चिन्तन देलनि अछि ललित *पृथ्वीपुत्र (1965)मे*। मैथिलीमे रमानन्द रेणु *दूध फूल* (1967) आ *उत्तर जनपद (2003)* मे मिथिलाक आंचलिक परिवेशकेँ आधार बना क' कए मार्मिक चित्रण कयलनि अछि। जीवकान्तक *दू कुहेसक बाट (1968), पनिपत*

(1967), अग्निवान (1969), पीअर गुलाब(1970) एवं कतहु नहि कतहु (1971) उल्लेख योग्य औपन्यासिक कृति थिक। हिनक उपन्यासादिमे किंकर्तव्य विमूढ़ आ क्षुब्ध, असफल युवकक राम कहानी थिक, जकरा जीवनमे पल-पलमे निराशा झलकैत अछि आ भूख, निराशा आ वेरोजगारीक अग्नि आधुनिक समाजकेँ कोना तबाह करैत अछि ओकर मार्मिक रेखाकंन भेल अछि। मैथिलीक नवोदित उपन्यासकारमे प्रभास कुमार चौधरी अन्यतम छथि जे *अभिशप्त (1970), युगपुरुष (1971), हमरा लग रहब (1977), नवारम्भ (1979) आ राजा पोखरिमे कतेक मछरी (1981)* क रचना कयलनि। एहि क्षेत्रमे धीरेन्द्रक दुइ उपन्यास *भोरुकबा* (1965) एवं *कादो आ कोयला* (1982) उल्लेखनीय अछि।

मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे उपेन्द्रनाथ झा व्यासक लघु उपन्यास *दू पत्र (1969)* क विशेष महत्व अछि, कारण पत्रात्मक शैलीमे नव प्रयोग आ नव-विषय वस्तुक कारण ई अभिनव प्रयोग भेल अछि। मैथिली उपन्यासमे लिली रे क आगमनक फलस्वरूप एक नव क्रान्ति आयल। ओ *पटाक्षेप (1979), मरीचिका प्रथम खंड (1981), मरीचिका द्वितीय खंड (1981), उपसंहार (1991)* क रचना कयलनि। नव कथानक पृष्ठभूमिमे ओ अपन उपन्यासक कथानककेँ विन्यस्त क' ई जतयबाक उपक्रम कयलनि जे मैथिली उपन्यासकार लोकनिकेँ नव दिशा भेटल।

इतिहास प्रयोगक सन्दर्भमे मौलिक उपन्यासकार रचना भेल अछि जे किंवदन्तीपर आधारित अछि यथा केदारनाथ ठाकुरक *सौन्दर्योपासनाक पुरस्कार (1914)*, ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक *विद्यापति (1960)*, रवीन्द्रनाथ ठाकुरक *गोनू झा* (1968) आ मार्कण्डेय प्रवासीक *हम कालिदास (1982)*। लोकगाथापर आधारित उपन्यासक अन्तर्गत लक्ष्मीपति सिंह (1907-1979)क *चामुण्डा (1933)* आ ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक *लोरिक विजय, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, लवहरि कुशहरि, रायरणपाल एवं दुलरा दयालमे* अज्ञात इतिहासक समावेशक लेल लोकतत्वक आश्रय लेल गेल अछि। ऐतिहासिक तथ्यकेँ आधार बना क' जे उपन्यास लिखल गेल अछि ओहिमे इतिहास तथ्योपलब्ध सूत्रकेँ पकड़ि क' तत्कालीन समयक राजनीतिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक पर्यावरण आ परिवेशकेँ सजीव रूपसँ प्रतिष्ठित करबामे समर्थ भेल अछि ओहिमे चन्द्रनारायण मिश्र (1928-1982)क *बालदित्य (1980)* तथा *वैशाखी पूर्णिमा (1982)*, ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक *आदिम गुलाम (2003)* आ मायानन्द मिश्रक *मन्त्रपुत्र (1985)* आ गोविन्द झाक *विद्यापतिक आत्मकथा (1993)* कयल जाइत अछि।

आधुनिक भारतीय भाषादिमे मैथिली नाट्य-सम्पादक गौरवशाली परम्परा आ ओकर विशाल पृष्ठभूमि एहि साहित्यक प्रारम्भिकावस्थासँ अविच्छिन्न रूपसँ चलैत आबि रहल अछि, मुदा बीसम शताब्दीक आम्भिक चरणमे मैथिली नाटकक, एकांकी

आ रंगमंचक दिशामे साहित्यिक अन्यान्य विधादिक अपेक्षा अत्यन्त तीव्रगतिसँ प्रगतिक पथपर अग्रसर भेल अछि जाहिमे सन्देह नहि। मैथिली नाटकक प्राचीन परम्पराक टिमटिमाइत लौकेँ एहि युगमे नव ज्योति भेटल। पश्चिमी आदर्शक जाहि दीप वर्तिकाकेँ सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन मिथिला अनने रहथि ओकर क्षीण प्रकाश आधुनिक मैथिली नाटकक आदि प्रवर्त्तक जीवन झा (1848-1912)पर यथेष्ट परिमाणमे पड़ल। जाहि समय ओ नाट्य-निर्माणक दिशामे उन्मुख भेलाह ओहि समय संस्कृत नाट्य-परम्परा, कीर्ततियाँ नाटकक वा कीर्त्तनिआँ नाच वा लीला नाट्य परम्परा आ पारसी थियेटरसँ लोक ऊवि चुकल रहथि। जीवन झाक समक्ष एक चौराहा छल। कोन मार्गक अनुसारण कयल जाय जे एक समस्या आ परीक्षा दुनू छल। जीवन झा मध्यम मार्गक अनुसरण कयलनि। ई सभ प्रवृत्तिकेँ समन्वित क' कए एह एक नव प्रवृत्तिक जन्म देलनि जकर आलोक मैथिली नाटकक प्रगतिक दिस उन्मुख भेल। ई चारि नाटकक रचना कयलनि जे थिक *सुन्दर संयोग, (1904), मैथिली सट्टक (1906), नर्मदा सागर* सट्टक *(1906) आ सामवती पुनर्जन्म (1908)*। हिनका पश्चात् जे नाटकादि लिखल गेल ओकर दू श्रेणी अछि- एकांकी आ अनेकांकी।

एहि कालावधिमे जे नाटकक लिखल गेल अछि ओकरा दुइ श्रेणीमे विभाजित क' सकैत छी- विषय-वस्तुक दृष्टिसँ आ रचना-शिल्पक दृष्टिसँ। विषय वस्तुक दृष्टिसँ पौराणिक, ऐतिहासिक आ सामाजिक। एहि श्रेणीक अन्तर्गत मैथिलीमे प्रचुर परिमाणमे नाटकक लिखल गेल अछि। पौराणिक नाटकादिमे लालदासक *सावित्री-सत्यवान (1908)*, आनन्द झाक सीता स्वयंवर (1938) महावीर झा वीरक *शम्भू वध (1936)*, दामोदर झाक *गन्धर्व विवाह (1953)* आ जीवनाथ झाक *दुर्गाविजय (संवत् 2015)* आदि नाटकादिक गणना कयल जा सकैछ। हमर ऐतिहासिक कहल जाय वला नाटकक इतिहाससँ प्राप्त सामान्य विवरणादि आ सुनल सुनाओल विषयादि एवं जनश्रित आदिपर आधारित अछि। ऐतिहासिक पुरुष विद्यापतिक जीवनसँ सम्वद्ध रहबाक, कारणेँ एकरा ऐतिहासिक नाटकक नहि कहल जा सकैछ। ईशनाथ झा (1907-1965) रचित *उगना (1956)*, विद्यानाथ रायक *विद्यापति (1959)* आ *ब्रजकि*शोर बर्माक *कण्ठहार* एवं जीवनाथ झा रचित *वीरनरेन्द्र (1956)* क चर्चा कयल जाइत अछि।

सामाजिक नाटकक तेसर कोटि सामाजिक नाटकादि थिक। एहि नाटकक सभक कथा सर्वथा वर्त्तमान युगक थिक। एहि श्रेणीक नाटकक दू रूप अछि- प्रतीक नाटकक आ समस्या नाटकक। प्रतीक नाटकक शशिनाथ झा रचित *कलिधर्म प्रकाशिका (1911-12)* तथा साहित्य रत्नाकर मुंशीधुनन्दन दास रचित *मिथिला नाटकक (1920-22)* अबैत अछि। एहि नाटकादिमे वर्त्तमान युगीन कतिपय

समस्यादिपर विचार कयल गेल अछि। सामाजिक नाटकक दोसर रूप थिक समस्या नाटकक। एहिमे नाटकादिक अन्तर्गत कतिपय सामाजिक समस्यादिकेँ उठाओल गेल अछि। एहिमे समाजमे फैलल विभिन्न विरूपता, रूढ़ि, सामाजिक अपराध विषमता, राष्ट्रीय चेतना, सत्याग्रह आन्दोलन आदिकेँ मुख्य आधार बनाओल गेल अछि। एहन नाटकादिमे ईशनाथ झाक *चीनीक लड्डू (1937-39)*, शारदानन्द झाक *फेरार (1950)*, गोविन्द झाक *बसात (शाके 1820), राजा शिव सिंह (1976), अन्तिम प्रणाम (1982) एवं रुक्मिणी हरण (1989)*, सुधांशु शेखर चौधरीक *भफाइत चाहक जिनगी (1975) ढ़हैत देवाल / लेटाइत आँचर (1976), पहिल साँझ (1982) एवं लगक दूरी (1992)*, महेन्द्र मलंगियाक *लक्ष्मण रेखा खण्डित (1970), एक कमल नोरमे (1970), जुआयल कनकनी (1972), ओकरा आङनक बारहमासा (1980), कमला कातक राम लक्ष्मण ओ सीता (1981), काठक लोक (1987), गाम नई सुतैए (1993) एवं ओरिजनल काम (2000)*, सोमदेवक *चरैवेति (1982)*, *उदयनारायण सिंह* नचिकेताक *नाटकक नाम जीवन (1971), एक छल राजा (1973), नाटकक लेल (1974), रामलीला (1974), प्रत्यावर्त्तन (1976) एवं नो इन्ट्री मा प्रविश (2008)* अरविन्द अक्कूक *तालमुट्ठी (1982), आगि धधकि रहल छै (1981) एना कते दिन? (1985), अन्हारजंगल (1987), रक्त (1992), आतंक (1994), के ककर ? (1996) पढ़ुआ कक्का अएला गाम (1998) बाह रे हम आ बाह रे हमर नाटकक (1998), गुलाब छड़ी (1999), राज्याभिषेक (2004)*, अलख निरंजन (2008), ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्यक *झुमकी (1977) एवं तेसर कनियाँ (1986)* मन्त्रेश्वर झाक *प्रायश्चित (1994) एवं सौभाग्यवती भव (1994)*, उदयचन्द्र झा *विनोदक उदास गाछक वसन्त* (1992) रामभरोस *कापड़ि* भ्रमरक *एकटा आ वसन्त (2001)*, रोहिणी रमण झाक *अन्तिम गहना (1989) राजा सलहेस (1990)*, कुमार शैलेन्द्रक *अग्निपथक सामा (2000)*, वनदेवी पुत्र भवनाथक *लीडर (1994)*, कुमार गगनक *शपथग्रहण (2003)*, कमल मोहल चुन्नूक *नव घर उठे (2002)*, विनोद कुमार मिश्र वन्धुक *एकटा चिनमा* (2006), छत्रानन्द सिंह झाक *सुनू जानकी (2008)*, गजेन्द्र ठाकुरक *कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक* अन्तर्गत *संकर्षण (2009)* इत्यादि आधुनिक कालक चर्चित नाटकककार छथि। एहि कालावधिमे अनेक नाटकककार लोकनि नाट्य-साहित्यक विकासमे अपन योगदान देलनि।

स्वातन्त्र्योत्तर कालमे मैथिली-नाट्य-लेखनमे एहन सभ प्रश्नकेँ नाटकीय रूप देबाक हेतु तत्पर भ' उठलाह जकर सम्बन्ध युगसँ अछि जाहिमे ओ जीव रहल अछि आ एहि लेल आदर्शादिक काल्पनिक एवं वायवीय जगतसँ सम्बन्ध विच्छेद क' कए वास्तविकताक धरातलपर पैर जमयबाक लेल मैथिली-नाटकककारकेँ पूर्ण वेगसँ गतिमान हैबामे नवीनता, ताजगी, प्रौढ़ता आ कलात्मकताक मौलिक व्यक्तित्व

प्राप्त करबाक लेल संघर्ष करय पड़ल। अतएव दासतासँ मुक्त भ' कए आधुनिक नाट्य-लेखनक स्वर अपन सम्पूर्ण सृजन प्रक्रियामे सामूहिक भारतीय मनक नव सन्दर्भ अछि। सामाजिक यथार्थकँ अभिव्यक्ति देनिहार नाट्य–लेखनक क्षेत्रमे एहन औरो नाटकककार छथि जे नाट्य कृतिक सफलताक संगहि रंगमंचपर किछु सर्वथा नव क' देखयबाक दृष्टिसँ साहित्यिकतासँ अधिक जनरुचिक आकर्षणपर विश्वास रखैत छथि। आइ जे नाटकक लिखल जा रहल अछि, ओहिमे नाटकक कथ्य आ शिल्पक अन्तर प्राचीन नाटकक तुलनामे व्यापक भ' गेल अछि आ एहि लेल ई नाटकक समकालीन सामाजिक यथार्थकँ जनता धरि ल' जाय चाहैत अछि, अत: कथाहीन नाटकक दर्शककँ अधिकतम निकट अछि, कारण दर्शके होइछ जकर स्वीकृति रंगमंचीय आलोचनाक मानदण्ड बनैत अछि। दर्शक ओही स्थितिक दृश्य रूपमे ग्रहण करैछ जे ओकर रंगमंचीय जीवनक लगपास घटैत अछि आ स्थिति सभक दृश्य बनययबामे नाट्यकारक सम्मुख रंगमंच पूर्णत: परिकल्पित रहैत अछि। कथाहीन नाटकक रंगमंचीय असफलता प्रस्तुतिकरणक आधुनिकतासँ सम्वद्ध अछि।

मैथिलीमे विशुद्ध एंकाकी-प्रहसन आ रेडियो रूपकक लेखनक सूत्रपात बीसम शताब्दीक चतुर्थ दशकसँ प्रारम्भ होइत अछि। साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दनदास *दूतांगद व्यायोग (1933)*क रचना क' कए एकांकी-लेखनक परम्पराक सूत्रपात कयलनि जे आइ एक स्वतन्त्र विधाक रूपमे विकसित भेल अछि। वर्त्तमान युग एकर विकासक लेल अधिक उर्वर सिद्ध भेल अछि। मैथिलीमे अनेक एकांकीकार लोकनि एकांकी प्रहसन आ रेडिया रूपकक रचना कए एहि विधाकँ सम्पुष्ट करबाक दिशामे सहभागी बनलाह अछि। वस्तुत: ई नवयुगक उपज थिक, अतएव एहिमे संस्कृत एकांकीक विधान कम भेटैत अछि। एकांकी, प्रहसन आ रेडियो रूपकक लोकप्रियताक फलस्वरूप अधिकाधिक संख्यामे साहित्य-मनीषी एहि विधाक अन्तर्गत कतिपय संग्रह प्रकाशमे आयल अछि यथा तन्त्रनाथ झा (1909-1994)क *एकांकी चयनिका (1949)* परमेश्वर मिश्रक *त्रिवेणी* (1950) चन्द्रनाथ मिश्र अमर (1925)क *खजबा टोपी (2006)*, बाल गोविन्द झा व्यथित, (1932-2002)क *त्रिपथगा (1968)*, भाग्यनारायण झा (1937)क *सोनक ममता (1969)*, दिनेश कुमार झा (1941-2004)क *सप्तरश्मि (1971)*, उदयनारायण सिंह नचिकेताक *जनक एवं अन्य एकांकी (1978)*, रामदेव झा (1936)क *पसिझैत पाथर (1989)*, रवीन्द्र राकेशक *अन्तर्ज्वाल (1991)*, सुधांशु शेखर चौधरीक *हथटुट्टा कुरसी (1992)*, महेन्द्र मलंगियाक *टूटल तागक एकटा ओर* (1983), मन्त्रेश्वर झाक *समारोह* (1991), *धूर्त्तनगरी (1993)*, *बहुरूपिया (1993)* एवं *पराजय (1994)* आ ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्यक *अनमिल आखर (2000)* इत्यादि।

एकांकी, प्रहसन आ रेडियो रूपकक प्रणेतादिक मानसिक क्षितिजक विस्तार भेलनि, जनिका नव चेतना भेटलनि, नव दिशामे अग्रसर हैबाक प्रेरणा भेटलनि, नव दृष्टि भेटलनि तनिका हम प्रतिनिधि एकांकीकारक रूपमे उद्घोषित कयलहुँ अछि। एहन रचनाकारक कृतिमे नव प्रवृत्तिक प्रति आग्रह अछि। मैथिलीक साहित्यकार लोकनिक मानसिक क्षितिजक विस्तार भेलानि आ हुनक नाट्य-कला सम्बन्धी मान्यतादिमे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन भेल। मैथिलीक ई सौभाग्य रहल अछि जे अधिकांश साहित्य चिन्तक एकहि संग एकांकीकार, रेडियो रूपककार आ प्रहसनकार सेहो छथि। अतएव एहि विधाक अन्तर्गत प्रतिनिधि रचनाकार भेलहि कुमार गंगानन्द सिंह (1878-1770) हरिमोहन झा, तन्त्रनाथ झा, ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्य, सुधांशु शेखर चौधरी, गोविन्द झा, चन्द्रनाथ मिश्र अमर, रामदेव झा, मन्त्रेश्वर झा आ महेन्द्र मलंगिया आदि उल्लेखनीय छथि।

मैथिली एकांकी, रेडियो रूपक आ प्रहसनक उदयकेँ ल' कए अद्यतन प्रकाशनसँ प्रतीत होइत अछि जे ई विधा अपन उन्नतिक शिखरपर पहुँचि गेल अछि। रचनाकार सामाजिक, राजनीतिक आ मनोवैज्ञानिक समस्यादिकेँ ल' कए सोझरयबाक संगहि-संग नव विचार, समसामयिक जीवनक समस्या आ ओकर समाधान एवं जीवन-मूल्यक आलोचना, राष्ट्र, मातृभूमि तथा मातृभाषाक प्रति सम्मान आ नव राष्ट्रक निर्माणक प्रेरणा रचनाकार लोकनि देलनि अछि। एहि विधामे वर्त्तमान युगक आशा आकांक्षा, कुंठा-संत्रास, द्वन्द्व एवं जिजीविषाकेँ अभिव्यक्ति देल गेल अछि। वैचारिक आ विषय-वस्तुक नवीनताक कारणेँ नव-नव शिल्पक एकांकी, रेडियो रूपक आ प्रहसन दृष्टिगत भ' रहल अछि।

नाटकक क्षेत्रमे नव आन्दोलनक फलस्वरूप मैथिली रंगमंचक विकासमे गति आयल अछि। स्वातन्त्र्योत्तर युगमे रंगमंचक सम्बन्धमे चिन्तन-मननक नव आभासक स्त्रोत प्रवाहित होमय लागल अिछ। नाटककेँ मंचोपयोगी बनयबाक लेल रंगमंचीयताक अपेक्षित तत्व जेना दृश्य-विधानक संक्षिप्त आ सन्तुलित स्वरूप, संक्षिप्त सरल जीवन, स्वाभाविक एवं पात्रोचित संवाद, रंग-संकेत, संगीत एवं काव्य-तत्वक संतुलित प्रयोग मैथिली नाटकादिमे भेल अछि। यद्यपि मैथिलीमे व्यावसायिक रंगमंचक अभाव रहल अछि, तथापि अव्यावसायिक रंगमंचक कलाकार लोकनि एकरा प्राणवन्त बना देलनि अछि। एहि दिशामे कोलकाता स्थित संस्थादिमे मिथिला कला केन्द्र (1960), मैथिली रंगमंच (1966), अखिल भारतीय मिथिला संघ (1963), कूर्मि-क्षत्रिय-छात्र-वृत्तिकोष (1968), मिथि यात्रिक (1971), आल इण्डिया मैथिल संघ (1973), मिथिला-मित्र-संघ (1974), कर्ण गोष्ठीक जयन्त लोक मंच (1983) आ कोकिल मंच (1990) सदृश रंगकर्मी संस्थादि नव नाट्य आन्दोलनमे अनेक नाटककारकेँ एहि दिशामे प्रेरित कयलक। रंगमंचक क्षेत्रमे

चेतना समिति पटनाक नाट्यमंच (1972), अरिपन (1987), भंगिमा (1984), आङन, नवतरंग, कला समिति आदि रंगकर्मी लोकनिक सहयोगक फलस्वरूप एकर विकास तेजीसँ भ' रहल अछि। रंगमंचक क्षेत्रमे एकर विकास मात्र मिथिलांचले धरि सीमित नहि रहल, प्रत्युत पड़ोसी राष्ट्र नेपालमे सेहो एकर विकास भेल जाहिमे चित्रगुप्त सांस्कृतिक केन्द्र जनकपुर धाम, मिथिला नाट्य कला परिषद नेपाल, भानु कला केन्द्र विराट नगर इत्यादि रंगकर्मी संस्थादिक सहयोग रहल अछि। मिथिलांचलक पड़ोसी प्रदेश झारखण्डमे सेहो एकर विकसित स्वरूपक अवलोकन होइत अछि जाहिमे मिथिलाक्षर जमशेदपुर, मैथिली कलामंच बोकारो स्टील सिटी. मिथिला सांस्कृतिक परिषद् बोकारो स्टील सिटी इत्यादि उल्लेखनीय अछि।

मैथिलीमे आदिकालमे काव्य-धाराक जे बीजारोपण भेल छल ओकर वास्तविक विकास आधुनिक कालमे भेल अछि। जतय धरि आदिकालीन काव्य-धारा राधा-कृष्ण आ हरगौरीकेँ ध्यानमे राखि क' कवि लोकनि काव्य-रचना कयलनि ततय आधुनिक कालमे विविध रूपा काव्य-धाराक प्रश्न अछि ओहिमे मुख्य रूपसँ दू प्रवृत्ति भेटैत अछि। एक भाग जतय विषय-वस्तु, भाव-भाषा इत्यादि दृष्टिसँ अनेक कवि लोकनि अपनाकेँ सर्वथा प्राचीन परम्परावादी रहबाक प्रयास कयलनि ओतय दोसर भाग अनेक कवि लोकनि अपनाकेँ सर्वथा नवीनतासँ सम्वद्ध रखलनि। परम्परावादी काव्यमे महाकाव्य, खण्डकाव्य, प्रबन्ध-काव्य, परम्परावादी गीति-काव्य आ मुक्तकाव्य आदिक रचनादिसँ मैथिली काव्य-काननक श्रृंगार कयलनि। एहि दिशामे एक नवीनता ई भेटैत अछि जे मैथिली साहित्यमे सर्वप्रथम राम-काव्यक परम्परा स्थापित कयलनि आ ओहिमे कवीश्वर झा *मिथिला भाषा रामायण (मधुश्रावणी 1984)* आ लालदास *रमेश्वर चरित मिथिला भाषा रामायण (संवत् 2011)* क रचना क' कए महाकाव्य लेखनक सूत्रपात कयलनि। तत्पश्चात एहि कालक कवि लोकनिक दृष्टि काव्यक एहि प्रवृत्तिक दिशामे गेल जकर परिणाम भेल जे एहि साहित्यमे पचाससँ बेसी महाकाव्य प्रकाशमे आयल अछि जाहिमे उल्लेखनीय छथि कविशेखर बदरीनाथ झाक *एकावली परिणय (1938-40)*, मुंशी रघुनन्दन दासक *सुभद्राहरण (1937-44)* तन्त्रनाथ झाक *कीचक बध (1938-61)*, *सीताराम* झा (1991-1975)क *अम्बचरित (संवत 2013)*, जीवनाथ झाक *रावणवध (2012 संवत्)* दीनानाथ पाठक बन्धु (1928-1962)क *चाणक्य (1959-61)*, *काशीकान्त* मिश्र मधुप (1906-1987)क *राधाविरह* (1969), वैद्यनाथ मल्लिक विधु (1912-1987)क *सीतायन (1973)*, सुरेन्द्र झा सुमन (1910-2002)क *दत्तवती (1987)*, मतिनाथ मिश्रक *राजा सलहेस (1986)*, बौआजी झा अज्ञातक *रुक्मिणी परिणय (1990) आ प्रतिज्ञा पाण्डव (1995)*, विश्वनाथ झा विषपायीक *रामसुजश सागर (1978)*, मार्कण्डे प्रवासीक *अगस्त्यायनी (1980)*, ईशनाथ झाक *महाभारत (1987)* उपेन्द्रनाथ झा

व्यासक *मैथिली महाभारत आदि पर्व (1994)* काञ्चीनाथ झा किरणक *पराशर (1984)* आ चन्द्रभानु सिंहक *शकुन्तला (2002)* इत्यादि।

खण्ड काव्य सेहो आधुनिक कालक देन थिक जाहिमे कवि लोकनि एहि दिशामे अपन प्रतिभाक प्रस्फुटन कयलनि जकर परिणाम भेल अछि जे अनेक कवि लोकनिक प्रयास एहि विधाक श्रीवृद्धिमे अपन योगदान देलनि जाहिमे उल्लेखनीय छथि उपेन्द्रनाथ झा व्यासक *संन्यासी (1947)* एवं *पतन (1969)*, केदारनाथ लाभ (1932)क *लखिमा रानी (1960)* एवं *भारती (1964)*, अमरेन्द्र मिश्रक *एकलव्य (1970)* एवं *सत्यकेतु (1977)*, लक्षमण झाक *उत्सर्ग (1975)*, रवीन्द्रनाथ ठाकुरक *पंचकन्या (1977)*, योगेश्वर झाक *नोर (1979)*, सुरेन्द्र झा सुमनक *उत्तरा (1980)* लोकपति सिंहक द्रोहाग्नि (1969), बुद्धिधारी सिंह रमाकर (1919-1991)क *समाधि (1983)* इत्यादि।

कवीश्वर चन्दा झाक मैथिली कवितामे नवोत्थानक प्रेरक शक्ति छथि। ई काव्यक बहिरंग आ अन्तरंग दुनू क्षेत्रमे परिवर्त्तन अनबामे समर्थ भेलाह। जतय पहिने श्रृंगार आ भक्ति विषयक रचनादिक प्रचुरता छल ततय ओ सामाजिक आ राजनीतिक विषयक समावेश प्रथमे प्रथम काव्यमे कयलनि। चन्दा झा एक नव सामाजिक प्रेरणासँ अनुप्राणित रहथि। जँ ओ एक भाग प्राचीन परम्पराक विशिष्ट कवि सिद्ध होइत छथि तँ दोसर भाग नवीन परम्पराक सूत्रधार सेहो। मैथिली काव्य-धाराक इतिहासमे सन् 1929 ई.क अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि। *मैथिली गीताञ्जलिक* नामसँ राष्ट्रीय कवितादिक प्रथम महत्वपूर्ण संकलन एही समयमे प्रकाशित भेल छल। वस्तुत: एहि कवितादिसँ मैथिलीमे देशप्रेमक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक कविता धाराक सूत्रपात होइत अछि। देशप्रेमक अतिरिक्त समाज कल्याणक जतेक साधन भ' सकैछ ओहि दिस एहि कालक कवि लोकनि निर्देश देलनि। मैथिली कवितामे प्रगतिवादक एक विशिष्ट काव्य-प्रवृत्तिक रूपमे मान्य भ' गेल अछि। मैथिली काव्यमे एहि प्रवृत्ति विकास भेल।

मैथिली कवितामे प्रगतिवादी काव्यक प्रारम्भ ओतयसँ मानि सकैत छी जखन कवि लोकनि मानवताक प्रति सहानुभूति प्रकट करय लगैत छथि। एही मानवतावादी भावनाक कारणेँ रमानाथ झा भुवनेश्वर सिंह भुवन (1907-1944)केँ प्रगतिवादक प्रवर्त्तक मानैत छथि। किन्तु हिनकासँ पूर्व वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक रचनादिमे ई प्रवृत्ति प्रकट भ' गेल छल। युग-युगसँ सामन्ती शिक्षाक नीचाँ दबायल कविक वाणी जँ एक भाग अपन मनक उद्गार व्यक्त करैत अछि तँ पुन: तत्काले जनमनक भावादिकेँ प्रकट करबाक हेतु मचलि उठल। वस्तुत: प्रगतिशील साहित्यमे कवि लोकनिक क्रान्तिकारी आत्मा ज्वालामुखीक समान स्फुलिंग फेकैत प्रतीत होइत छथि। प्रगतिवादी कवि लोकनि मानवकेँ सर्वोपरि सत्ताक रूपमे

स्वीकार कयलनि। एहि प्रकारेँ मैथिली कवितामे अधिकाधिक कवि लोकनि प्रगतिवादी कविताक निर्माण स्वस्थ आ व्यापक रूपेँ कयलनि अछि। प्रगतिवादी काव्य प्रधानत: बुद्धि प्रधान अछि। वैयक्तिक कवितादिमे जाहि मसृण भावुकता एवं कल्पना प्रवण अर्न्तदृष्टि दर्शन होइत अछि। प्रस्तुत काव्य-प्रवृत्तिमे ओहि दिस आसक्तिक अभाव अछि। वस्तुत: परिस्थिति कवि लोकनिक दृष्टि परिवर्तित क' देलकनि। बुद्धिवादी दृष्टिकोणेक परिणाम थिक, जाहिमे वर्त्तमान समयमे कवि लोकनिक व्यंग्य प्रधान कविता लिखबाक प्रेरणा देलक। जखन सोझ आङुरसँ घी नहि बहराइछ तँ टेढ़ आङुरक आश्रय लेमय पड़ैछ। ई व्यंग्य साहित्यिक टेढ़ आङुर व्यंग्य-प्रधान कवितादिक माघ्यमे समाज आ व्यक्तिक दुर्लबतापर मार्मिक चुटकी लेल गेल अछि। कवि लोकनि वर्त्तमान समाजमे प्रचलित मिथ्याचार, रूढ़िवादिता, पाखण्ड, आडम्बरक संगहि राजनीतिक विरूपता, अवसरवादिता आदिपर तीव्र व्यंग्य कयलनि अछि।

साम्प्रतिक मैथिली कवितामे एकहि संगहि विभिन्न प्रवृत्ति आदिक विकास देखि रहल छी। अतएव एकरा कोनो विशेष नामसँ अभिहित करबाक ओकर सुस्पष्ट रूप-परिचय नहि भेटैछ। सुविधाक दृष्टिसँ एकरा नवगीतिवादक नाम कहि सकैत छी। विशेषत: तरुण कवि लोकनि एकरा लोकप्रिय बनौलनि अछि। ओना तँ परम्परावादी धाराक कवि लोकनि एहि धारामे दिलचस्पी देखाबय लगलाह आ अपन रचनादिसँ योगदान देलनि। नवगीतिवादमे ने तँ परम्परावादी लोकनिक इतिवृत्तात्मकता अछि आ ने व्यक्तिवादीक निरपेक्षता। वस्तुत: नवगीतिवाद काव्य-धाराक ई नव मोड़ थिक जाहिमे वैयक्तिक प्रतिभा नवयुगक नव-काव्य-चेतनाक नूतन-स्वर माधुरीसँ समन्वित क' कए प्रकट भेल अछि।

आधुनिक मैथिली कवितामे गीति-काव्यक विकास एक नव-रूपसँ सेहो भेल अछि। ई वस्तुत: हमर साहित्यपर नव प्रभावक परिणाम थिक मुदा नव गीतिकाव्य पाश्चात्य लिरिकक उपजीवी थिक। ई पूर्णत: आघ्यान्तरित काव्य थिक जाहिमे हमरा अनुभूतिक सहज अभिव्यक्तिक बोध होइत अछि। प्रारम्भिक एवं मघ्यकालीन मैथिली गीत निश्चित रूपसँ संगीतसँ सम्वद्ध छल। सभ गीत कवि संगीतक विशेषज्ञ बुझल जाइत छलाह तथा प्रत्येक गीति-कविता कोनो-ने-कोनो राग-रागिणीसँ बान्हल रहैत छल। आधुनिक कालमे नव गीति-काव्यकेँ विकासक पथपर अग्रसर पाबि रहल छी। गीति-काव्यक कविक अन्तर्गतक ओ स्वत: प्रेरित तीव्रतम भावात्मक अभिव्यक्ति थिक जाहिमे विशिष्ट पदावलीक सौन्दर्य अनुभूतिक एक्य एवं संगीतात्मकताक योगसँ द्विगुणित होइत अछि। नव गीति काव्यक विकास राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यादिमे भेटैत अछि, ओना तँ एकर परिष्कृत रूपक दर्शन वैयक्ति कवितादिमे आबि क' होइत अछि। राष्ट्रीय-सांस्कृतिक धाराक कवितादि विशेषत:

उपदेश काव्य थिक वा विचारात्मक कोटिक रचनादि थिक। फलत: ई वर्णन प्रधान भ' गेल अछि आ इतिवृत्तात्मक थिक जाहिमे भावाभिव्यञ्जनाक दृष्टिसँ सरलता एवं भावात्मकताक अभाव पबैत छी। आलोच्य कालमे विभिन्न विषयादिसँ सम्बन्धित रचनादि भ' रहल अछि। प्रधानत: एकरा प्रेमगीत, भावपरक गीत, प्रकृति सम्बन्धी गीत, विचारात्मक गीत एवं बुद्धि प्रधान गीत आदि वर्गादिमे बाँटि सकैत छी। मैथिली काव्यमे गीतादिक विकासोन्मुख परम्परामे अनेक कवि छथि। एहि कवि गीतकार लोकनिक विस्तृत नामावली प्रस्तुत करब कोनो विशेष अर्थ नहि रखैछ।

मैथिली गीति-काव्यक दोसर प्रचलित रूप थिक सम्बोध-गीति। वस्तुत: गीति काव्यक एहि स्वरूपक विकास अंग्रेजी काव्य ओडक अनुकरणपर भेल अछि। सम्बोध-गीति काव्यादिमे कविक भावना कोनो वस्तु विशेषकँ सम्बोधित क' कए प्रकट होइत अछि। मैथिली सम्बोध गीति काव्यादिमे विषयक वैविध्य एवं शैलीगत अनेक रूपताक दर्शन होइत अछि। सत्यता तँ ई अछि जे आलोच्य कालीन मैथिली गीति काव्यमे सम्बोध-गीति अपन समृद्ध परम्परा स्थापित क' लेलक अछि आ आइ हम ओकरा परिष्कृत रूपमे पबैत छी। आधुनिक गीति काव्यक एक रूप चतुर्दशपदी कविताक थिक। एकर विकास अंग्रेजीक सॉनेटक अनुकरणपर भेल अछि। चौदह पंक्तिमे रचित गीति-काव्यक एहि रूपकक महत्व एकर स्वरूपकँ ल' कए अछि जाहि आधारपर एकर नामांकन कयल गेल अछि। मैथिलीमे एकर रचना अत्यल्प भेल अछि।

गीति काव्यक अतिरिक्त अनिवद्ध वर्गक दोसर काव्य-रूप मुक्तक थिक। मैथिलीमे सेहो पथान्तर निरपेक्ष कवितेकँ मुक्तक कहल गेल अछि। मैथिलीमे मुक्तक काव्यक विकास आलोच्यकालमे आबि क' भेल अछि। आधुनिक युगक पूर्व काव्यक कवि लोकनिक घ्यान नहि गेल। चन्दा झा पहिल कवि रहथि जे तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक जीवनकँ लक्ष्य क' कए मुक्तकक रचना कयलनि। मैथिलीमे मुक्तक काव्यक विषयक दृष्टिसँ विविधताक दर्शन होइत अछि। श्रृंगार, भक्ति, नीति वा उपदेश एहि सम्पूर्ण विषयादिसँ सम्वद्ध मुक्तक काव्य लिखल गेल अछि। मुक्तक एक कला प्रधान काव्य-रूप थिक आ एकर कलात्मकता उक्ति-वैचित्र्यकँ ल' कए अछि। एहीसँ चन्दा झाक इतिवृत्तात्मक शैलीक आगाँ जा क' परिष्कार पबैत छी। आब कविगण उक्ति कौशलक अनुरूप मुक्तकक विकासमे सहायक भेलाह।

एम्हर आबि क' मैथिली काव्य क्षेत्रमे नव कविताक घ्वनि प्रतिघ्वनित होइत अछि। एहि काव्यकँ ल' कए विद्वान लोकनिमे मतैक्यक अभाव अछि। किछुक कथन छनि जे नव कविताक स्वर सार्वभौम स्वर थिक। किछुक कथन छनि जे

मैथिलीक नव कविताक आजुक जे स्वरूप दृष्टिगत भ' रहल अछि ओकर निर्माणमे अन्य भाषा साहित्यादिक प्रवृत्ति प्रेरक भूमिकाक निर्वाह कयलक। मायानन्द मिश्रक अनुसारेँ मैथिलीमे नव कविताक उन्मेष 1960 ई.क लगपासमे भेल। एहि काव्यमे प्रगतिशील मूल्यक आशा, अखिल मानवता, सौन्दर्य क्षेत्रक विस्तार, बौद्धिकताक प्रतिष्ठा, कटु ययार्थक अभिव्यक्ति, धार्मिक कर्मकाण्डपर अनास्था, अविश्वास, अनास्था, असन्तोषक प्रति विद्रोहक अभिव्यक्ति भेल अछि। जतय धरि शिल्पक प्रश्न अछि ओ साघ्य नहि साधन थिक।

मैथिली काव्य-धाराक अन्यतम नव प्रवृत्ति गीत, नवगीत आ गजल दिस उन्मुख भ' रहल अछि। यद्यपि मैथिलीमे गीत रचनाक प्राचीनतम परम्परा रहल अछि, तथापि गीत, नवगीत आ गजल लिखबाक नव परम्परा चलल अछि। एहिमे मिथिलाक परम्परागत लोक धुनकेँ अपना क' कवि लोकनि एकरा अग्रसर कयलनि अछि। मैथिलीमे नव गीतक स्वतंत्र काव्य-विधा स्थापित हैबाक प्रिक्रयामे अछि। अरबी या उर्दू काव्य-परम्परासँ प्रभावित भ' कए मैथिलीक कवि लोकनि गजल लिखबाक परम्परा अष्टदशकोत्तर कालमे भेल अछि, तथापि काव्यक ई नव प्रवृत्ति दिस कवि लोकनिक घ्यान गेलनि जकर उत्तरोत्तर स्वरूप सोझाँ आबि रहल अछि। एहि प्रकारेँ आधुनिक मैथिली काव्य विविध वस्तु-विन्यास आ शैलीसँ समन्वित भ' कए दिन प्रतिदिन उन्नति क' रहल अछि।

समालोचना आधुनिक साहित्यक विशिष्ट अंग थिक। पाश्चात्य साहित्यक सम्पर्कक माघ्यमे समालोचनाक शुभारम्भ भेल जकरा मैथिलीक साहित्यकार लोकनि चिन्हलनि। एहि प्रकारेँ साहित्यक अघ्ययन सेहो समालोचना साहित्यक अन्तर्गत अपेक्षित भ' जाइत अछि। भाषा आ साहित्यक रूपमे मैथिलीपर विचार करबाक प्रारम्भ विदेशी विद्वान लोकनि कयलनि। एहि विदेशी विद्वान लोकनिक समानहि बंगाली विद्वान् लोकनिक सेहो मैथिलीक प्रति अपन रुचि प्रदर्शित कयलनि। प्राचीन साहित्यक कृति सभक अन्वेषणक दिशामे चन्दा झाक महत्व अक्षुण्ण अछि। कवीश्वर चन्दा झा अनुसन्धानक क्षेत्रमे नव गति भरि देलनि आ ओकरे परिणाम भेल जे प्राचीन साहित्यक कृति सभक सम्पादन होमय लागल। प्राचीन कवि लोकनिक काल आ परिचयकेँ ल' कए विद्वान लोकनिमे मत भिन्नता रहल जकर परिणाम रूपमे उपलब्ध सामग्री समक अनुशीलन क' कए उक्ति संगत निष्कर्ष उपस्थित कयल गेल।

मैथिलीमे आलोचना साहित्यक वास्तविक विकास नहि भ' पौलक अछि। ओकर भव्य स्वरूपक निर्माण बीसम शताब्दीमे आबि क' भेल अछि। मैथिली पत्रकारिताक अग्रदूत महामहोपाघ्याय मुरलीधर झा आलोचनाक क्षेत्रमे नव भाषा, नव-शैली एवं विविध आलोच्य वस्तुक संग अयलाह। ओ आलोचनाक लेल विविध

प्रकारक साधन, साहित्य-निर्माण, भाषा-परिमार्जन, समाज-सुधार एवं राष्ट्रीय आन्दोलन आदि अनेक विषय सुझौलनि। किन्तु एहि काल अर्थात् सन् 1906 ई. धरि आलोचना आ निबन्ध दुनू एहि प्रकारेँ सम्वद्ध रहल जे ओकर बीच कोनो स्पष्ट विभाजक रेखाकंन करब सम्भव नहि भ' सकल। एहि कालमे मोद-मण्डल तथा ओकरा बाहरक लेखक लोकनि निबन्ध आ आलोचनाक सम्मिलित रूपहि रहल।

साहित्यक क्षेत्रमे दू महारथीक योगदान अत्यन्त महत्वक थिक। विशेषत: प्रस्तुत सन्दर्भमे उक्त दूनू महारथीक गरु-गम्भीर व्यक्तित्व, विवेक एवं विलक्षणता, अध्ययन एवं मनन सब मिल क' आलोचनाकेँ नव रूप देबाक चेष्टा कयलनि। बाबू भोलालाल दास (1897-1977) आ सुरेन्द्र झा सुमन दूनू अपन विशेषतादिक संग साहित्यक क्षेत्रमे आयल रहथि। भोलालाल दास एक अध्ययनशील विद्वान्, समाज सुधारक आ मातृभाषाक अनयन्य अनुरागी रूपमे प्रकट भेलाह। सुरेन्द्र झा सुमन संस्कृत साहित्यक गहन अध्ययन एवं पाण्डित्य, बाङला साहित्यक प्रति अभिरुचि, अंग्रेजी एवं हिन्दी साहित्यक निकटतम परिचय, भावुक कवि हृदय एवं विलक्षण कवि प्रतिभासँ समन्वित रहथि। भोलालाल दास मिथिला आ भारतीक सम्पादन कयलनि आ सुरेन्द्र झा सुमन मिथिला मिहिरक सम्पादन क' रहल रहथि।

मैथिली आलोचनाक ऐतिहासिक विकास क्रममे, आरम्भमे वैह आलोचक अबैत छथि जे संस्कृत साहित्यमे निष्ठा रखैत रहथि। उमेश मिश्र एवं बलदेव मिश्र सदृश वयोवृद्ध आलोचक एही वर्गक प्रतिनिधत्व क' रहल रहथि। किन्तु आलोचना साहित्यमे जे नव रूप प्राप्त कयलक अछि अथवा ओकर विकासक जे गति देखबामे आबि रहल अछि, ओकर सब श्रेय अध्ययन क्षेत्रसँ व्यक्ति सभकेँ छनि जे आलोचनाक लेल एक सुव्यवस्थित मानदण्डक निर्माणमे व्यस्त रहलाह। एहन आलोचकक पंक्तिमे नरेन्द्रनाथ दास (1904-1993), रमानाथ झा, काञ्चीनाथ झा किरण, ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्य, शैलेन्द्र मोहन झा, दुर्गानाथ झा श्रीश (1929-2000) आदिक नाम लेल जाइत अछि।

दोसर पीढ़ीक आलोचक लोकनि सामंजस्य स्थिति निर्माण कयलनि। हिनका सभक उद्देश्यक समुचित विवेचन एवं मूल्याकंन करब छनि। ई सभ आलोच्यक अन्तर्निहित सौन्दर्यकेँ प्रकाशमे अनलनि जे साहित्यक अन्तर्गत जे सौष्ठव अछि तकर बोध अपन पाठककेँ करा देब अपन कर्त्तव्य बुझैत छथि। नव पीढ़ीक आलोचक साहित्यमे सामाजिक मर्यादाक व्यास नहि करैत होथि, एहन बात नहि अछि, परन्तु एहन स्थिति जँ उत्पन्न भ' जाय तँ ओकरा अपराध नहि मानैत छथि। आलोचकक ई दोसर पीढ़ीसँ सम्बन्ध एक नव दल सेहो फूटैत दृष्टिगत होइत अछि। एहन नव आलोचकक प्रतिभामे व्यक्ति चिन्तन एवं समाज मंगलक

अद्भुत सामंजस्यक प्रतिफलन भेटैत अछि। वस्तुत: हिनका सभ क' द्वारा निर्मित आलोचना विभिन्न युगक सांस्कृतिक एवं दार्शनिक आदर्शक आकलनक संगहि रचनाक मनोवैज्ञानिक आ साहित्यिक विशेषादिक अध्ययन उपक्रम थिक।

मैथिली आलोचनाक व्यावहारिक पक्ष अपेक्षाकृत पुष्ट आ सबल अछि, तकर मूल कारण थिक जे सिद्धान्त पक्षसँ व्यवहार पक्षकेँ सरल मानल जायत अछि। दोसर बात थिक जे सतत रचनात्मक साहित्यक पर्यालोचन होइत रहैत अछि आ अध्यापनक क्षेत्रमे सेहो साहित्यालोचनक व्यावहारिक पक्षक आवश्यकता अधिक होइत अछि। हमरा ओतय व्यावहारिक आलोचनाक सामान्यत: चारि रूप अछि भाषण, भूमिका, पुस्तक परिचय आ समीक्षात्मक साहित्य।

मैथिलीमे आलोचनाक एक अर्थ दोषविष्करण होइत अछि। निस्सन्देह समालोचनाक एहि रूपमे प्रयोग ओकर योगरूढ़ि अर्थमे अछि। तथापि एहिसँ थोड़ बहुत मात्रामे हमर साहित्यकेँ सेहो आक्रान्त क' रहल अछि। परन्तु ई रूप विशेषत: साम्प्रतिक साहित्यमे सेहो पाओल जाइल अछि आ स्वस्थ आलोचनाक विकासक संगहि-संग एहि प्रवृत्तिक अवसान सेहो भेल जा रहल अछि। आधुनिक समयमे मनोविज्ञान एवं समाजविज्ञान आलोचककेँ नव दृष्टि देलक अछि आ विज्ञाानक नव आलोकमे आलोचनाक स्वस्थ परम्पराक विकास भ' रहल अछि। मैथिली साहित्य सेहो एहिसँ असम्पृक्त नहि अछि आ ओकरा एकर शुभ भविष्यक सूचक मानल जायत। साठोत्तर मैथिली साहित्यमे शोधक दिशामे सन्तोष जनक प्रगति भेल अछि। अनेक शोधकर्ता लोकनि विशालकाय शोधप्रबन्धकेँ प्रस्तुत क' कए विभिन्न उपाधि प्राप्त कयलनि अछि आ मैथिली आलोचनाक भण्डारकेँ शोधक विषय बना क' शोधप्रबन्ध प्रस्तुत कयलनि अछि। एहिमे अधिकांश शोध-प्रबन्ध अप्रकाशित अछि अतएव एहि प्रसंगमे टिप्पणी नहि कयल जा सकैछ। प्राचीन आलोचनाक गति जतय मन्थर छल ततय आधुनिक समयमे एकर विकास द्रुतगतिएँ भ' रहल अछि।

मैथिली साहित्यक लेल यात्रा-साहित्य नव्यतम विधा थिक जकरा अन्तर्गत तीर्थ-दर्शन ऐतिहासिक स्थलक परिभ्रमण आ विदेश-यात्रा अबैत अछि। जतय धरि मैथिली साहित्यक प्रश्न अछि, यद्यपि एहन रचनाक सूत्रपात बीसम शताब्दीक प्रथम दशकमे भेल आ चेतनाथ झा (1866-1921)क *जगन्नाथपुरीक यात्रा* (1910) पुस्तककार रूपमे प्रकाशित धार्मिक कट्टरताक कारणेँ मिथिलावासी विदेश भ्रमण नहि करय चाहैत रहथि आ जे सभ यात्रा सेहो कयलनि ओकर विवरण नहि प्रस्तुत कयलनि। सर्वप्रथम सुभद्र झा (1910-2000) अपन विदेश यात्राकेँ *प्रवास (1950)* नामे प्रकाशित करौलनि। विदेश यात्रासँ सम्बन्धित हिनक दोसर पुस्तक आयल यात्रा *प्रकरण शतक (1981)*। डा. जगदीशचन्द्र झाक विदेश यात्रा सात समुद्र पार (1969), नगेन्द्र कुमारक आयरलैण्डक यात्रा *शामली (1981)* उपेन्द्रनाथ

झा व्यासक अमेरिका यात्रा *विदेशभ्रमण (1978)*, आ डॉ. चेतकर झाक विदेशयात्रा *पृथ्वी परिक्रमा (1992)* प्रकाशित भेल। भारत भ्रमणसँ सम्बन्धित रचनादिमे जीवानन्द ठाकुरक *बदरीनाथक यात्रा,* जयन्ती देवीक *गया यात्रा (1969)*, सीताराम झाक *भारतभ्रमण* (1979) आ शेफालिका वर्माक *यायावदी (1995)* तथा ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्यक *ओहिठाम गेल छलहुँ (2004) प्रकाशित अछि।* मैथिलीक विभिन्न प्राचीन आ आर्वाचीन पत्रिकादिक अवगाहनोपरान्त ई जानकारी भेटैत अछि किछु यात्रा प्रेमी लोकनि अपन व्यक्तिगत यात्रादिकेँ मूर्त्त रूप अवश्य प्रदान कयलनि, मुदा पुस्तकाकार रूपमे नहि प्रकाशित नहि भ' सकल अछि। अन्य विधादिक तुलनामे ई विधा अद्यापि सशक्त नहि पाओल अछि।

आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, साक्षात्कार आ इन्टरव्यू साहित्यमे नगण्य अछि। एहि दिशामे महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झा (1872-1941)क अंग्रेजीमे लिखित आत्मकथा (1980) मैथिलीमे अनूदित भ' कए प्रकाशमे आयल अछि। एहि दिशामे मौलिक आत्मकथा हरिमोहन झाक *जीवनयात्रा (1984)*, लक्ष्मी पतिसिंहक अतीतक स्मृति पटल (1980), काशीकान्त मिश्रम धुपक *प्रेरणापुन्ज* (1980), तुलिका झा (1930)क *राजलक्ष्मी एक भाव-चित्र* (1972), सुरेन्द्र झा सुमनक *मोन पड़ैत अछि (2000),* भीमनाथ झाक मोन *आङनमे ठाढ़ (2000)* आ गोविन्द झाक *आत्मालाप* (2002) तशा *स्मृति सन्ध्या* (1984) एवं जीवन चरित साहित्यिक दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि। एहि दिशामे ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्य *हुनकासँ भेट भेल छल (2004)* अद्भूत संस्मरण लिखलनि जकरा डा. प्रेमशंकर सिंह सम्पादित कयलनि जकरा पढ़ि क' पाठककेँ प्रेरणा भेटैत छनि। आत्कथा आ संस्मरणक अदभुत स्वरूपक दिग्दर्शन होइत अछि। गिरीन्द्र मोहन मिश्र (1890-1993)क *किछु देखल किछु सुनलमे जे* मिथिलाक राजनीतिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक पक्षादिपर प्रमाणिक विवरण प्रस्तुत करैत अछि।

मैथिली लोक साहित्यक विपुल सामग्री लोक कण्ठमे व्याप्त अिछ, मुदा एहि दिशामे जतेक प्रकाशन होमक चाही ओ अद्यापि नहि भ' सकल अछि। आइ धरि एहि साहित्यमे एहि विधाक अन्तर्गत *मैथिली लोककोक्ति। कोशक* सम्पादन डा. प्रेमशंकर सिंह कयलनि अछि। अनुसन्धानोत्तर लोक गीतक अनेक संग्रह प्रकाशमे आयल अछि जाहिमे उल्लेखनीय अछि अणिमा सिंहक *मैथिली लोकगीत* (1970), कामेश्वरी देवीक *मैथिलीक संस्कार गीत* (1980), लोकनाथ मिश्रक *मैथिलीक व्यवहार* गीत (1970) आ बालगोविन्द झा व्यथितक मैथिली ग्राम्य-गीत दू खण्ड।

मैथिली बाल-साहित्यक स्थिति सन्तोष जनक नहि। एकर प्रमुख कारण थिक जे मैथिलीक प्रारम्भिक शिक्षाक रूपमे अंगीकार नहि कयल गेल अछि। तथापि साहित्यक एहि प्रभागकेँ विकसित करबाक दिशामे साहित्य-चिन्तक देखबामे आबि रहल छथि। विगत शताब्दीक अन्तिम दशकमे किछु बाल साहित्य अवश्य प्रकाशमे

आयल अछि जकर संस्था नगण्य अछि।

अनुवादसँ साहित्यक श्रीवृद्धि होइत अछि। बीसम शताब्दीक आम्भिक चरणमे अनेक संस्कृत आख्यायिकादि, कथादिक अनुवाद मैथिलीमे भेल जकर फलस्वरूप एहि विधाक दिस लेखक लोकनिक घ्यान देलनि। साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिलीक मान्यता भेटल विभिन्न शताब्दी षष्ठ दशकोत्तर कालमे जकर फलस्वरूप विभिन्न भारतीय भाषादिसँ स्तरीय ग्रंन्थक अनुवाद मैथिलीमे सम्भव भ' सकल। कतिपय विदेशी भाषादिक ग्रन्थादिक अनुवाद भेल। एहि दिशामे लोकक घ्यानाकर्षित भेल अछि।

मिथिला आ मैथिलीक प्राची इतिहासक प्रसंगमे महत्वपूर्ण कार्य भेल अछि। एहि दिशामे श्यामनारायण सिंहक *History of Tirhut* (1922), महामहोपाघ्याय परमेश्वर झा (1886-1924)क *मिथिला तत्व विमर्श (1949)*, महामहोपाघ्याय मुकुन्द झा वक्शी (1860-1938)क *मिथिलाभाषामय इतिहास*, जयकान्त मिश्रक *A History Of Maithili Literature Volume I* एवं *II* (1949-1950), राधाकृष्ण चौधरीक *A Survey Of Maithili Literature* (*1976*) आ *Mithila In The Age Of Vidyapati* (*1976*) आ रामप्रकाश शर्माक *मिथिलाक इतिहास (1979)*, दुर्गानाथ झा श्रीश (1929-2000) एवं बालगोविंद झा व्यथित (1932-2000)क इत्यादि कृति प्रकाशित अछि, किन्तु दुर्योगक विषय थिक जे अद्यापि मैथिलीक सांगोपांग इतिहास नहि लिखल गेल अछि जे सभ वर्गक समुचित प्रतिनिधित्व करैत हो। अतएव जे ऐतिहासिक कृति उपलब्ध अछि ओ एकांगी अछि।

आलोच्यकालीन भाषा आ साहित्यक स्वरूप ओकर विकासोन्मुख प्रवृत्तिक द्योतक थिक। देशक परिवर्त्तित परिस्थितिमे साहित्यकेँ नवशिरासँ विकसित हैबाक हेतु प्रेरित कयलक अछि। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे हमर साहित्यकार भगीरथ सदृश साधना द्वारा मैथिली साहित्यमे भाव-मन्दाकिनीक अवतारणा मातृभाषाक प्रति जे जनरुचि जागल अछि ओकर प्रचार-प्रसारक हेतु सन्नद्ध छथि। वर्त्तमान सन्दर्भमे एहि साहित्यक इतिहास नव जागरण, नवीन शिक्षा प्रचार एवं पाश्चात्य सम्पर्कक समन्वित परिणाम थिक। जतय प्राचीन आ मध्यकालमे ई गीतात्मक रूपसँ गतिशील छल तथा ओहिमे विषय वा रूपक विविधादिक अभाव छल ओतय आधुनिक आ स्वातन्त्र्योत्तर कालमे साहित्यक विकास विविध विधादि प्रचलित भेल अछि। देशक स्वाधीनता साहित्यिक विकासमे जेना नव रूपसँ योगदान देलक अछि। भाषाक प्रचारक संगहि आइ साहित्यक विभिन्न विधादि रचनात्मक कृति सभसँ भरल जा रहल अछि। तथापि मैथिलीकेँ एखन बड़ पैघ मैदान पार करबाक छैक।

* * *

लोकगाथा

अक्षरक आविष्कारसँ दीर्घ कालावधि धारि मिथिलांचलमे मौखिक लोक साहित्यक परम्परा अनुवर्त्तमान छल जकरा आधुनिक सन्दर्भमे हमरा लोकनि मात्र कल्पनाक आँखिएँ देखि सकैत छी, कारण काल क्रमेण लोक साहित्यक बहुलांश विलुप्त भेल जा रहल अछि। तथापि सुसंस्कृत रूपमे लिपिवद्ध साहित्यक संग-संग गीत, कविता, कथा, गाथा, उपाख्यान, लोकोक्ति एवं मुहावराक विशाल भण्डार विद्यमान अछि आ ई परम्परा अनेकानेक शतकक लोक साहित्यकेँ आगाँ ससारैत-पसारैत होइत रहल, भनहि काल क्रमेण एहिमे किछु परिवर्त्तन होइत रहल अछि। मैथिलीक साहित्य चिन्तक आगवेषक एहि अनुवंशिक सम्पदाक संकलन-परितुलन काजमे लागल छथि। वास्तवमे ई परम्परा कतेक समृद्ध अछि तकर वास्तविकताक जानकारी हुनके होयतनि जनिका एकर अध्ययनमे रुचि छनि वा ग्रामीण परिवेशमे जनसाधारणक जीवनसँ निकट सम्पर्की छथि। पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्मृतिक परम्परामे प्रवाहमान विविध विधाक लोक साहित्य मनोरंजन करैत शिक्षा दैत अछि आ पाठक वा श्रोताकेँ कनबैत, हँसबैत आ चेतबैत रहल अछि।

मैथिली लोक साहित्य अपन आन्तरिक गुण एवं वैविध्यमे अत्यन्त समृद्धशाली अछि। मिथिलांचल वासी जहिना-जहिना संचरित भेल अछि से एकर लोक साहित्यक विविधताकेँ नव आयाम देलक अछि। मिथिलांचल वासीक उद्भवकेँ क्रममे, विविध आर्य भाषाक रीति-नीति, कथा, गाथा आ राग रंगक जे अवदान अछि से एहि साहित्यकेँ आ समृद्धतर बना देलक अछि। स्वभावत: एहि साहित्यमे एहन-एहन बात कहल गेल अहि जे दोसराकेँ अनसोहाँत, जाति विशेषक वैचित्र्यपर प्रहार करैत अछि, परन्तु एहिमे निन्दासँ बेसी परिहासक पुट अछि आ जकरापर कोनो कहबी, कोनो गीत वा कोनो किंवदन्ती चोट करैत अछि ओ सभ एकरा विनोदमय मात्र बूझैत अछि।

साहित्यक सर्वाधिक प्राचीनतम विधा लोकसाहित्य थिक जाहिमे लोकगीत, लोकगाथा, लोकोक्ति, लोकनाट्य, लोकनृत्य, लोक अपवाय, लोकज्ञान, लोकयात्रा, लोकपरम्परा, लोकप्रवाह, लोकमानस, लोकप्रतिभा, लोक वाङमय, लोकवार्त्ता इत्यादि समाहित अछि। जहिना नदीक प्रवाहमान धारामे पाथरक छोट-छोट टुकड़ी सभ घसा क' गोल आ सुन्दर आकार प्राप्त करैत अछि जे ककरो द्वारा प्रारम्भ भेल ओ लोक कंठमे युग-युग धरि प्रवाहित होइत नित नवीन रूप धारण करैत गेल आ

ता धरि विकसित होइत रहैछ जा धारि पढ़ल-गुनल व्यक्ति ओकरा संकलित क' छापि क' ओकर रूप स्थिर नहि क' सकैछ।

लोकगाथा लोककंठसँ उत्पन्न आ विकसित होइत अछि। लोकगाथाक सामान्य रूप-विधानकेँ ल' कए कोनो विशेष कवि क' द्वारा रचित होइछ जाहिमे गीतात्मकता *(लिरिकल क्वालिटी)* आ कथात्मकता दुनूक मिश्रण होइछ जकर प्रचार जनसाधारणमे मौखिक रूपसँ एक पीढ़ी दोसर पीढ़ीमे होइत अछि। लोकगाथा मानव समाजक आदिम साहित्यिक रूप अछि। एकर उत्पत्ति तखन भेल जखन समाज अविभक्त आ एक इकाईक रूपमे छल। अतएव लोकगाथा प्रारम्भमे सम्पूर्ण समाजक सम्पत्ति छल, सब एकरा गबैत छल आ अपना दिससँ किछु-ने-किछु जोड़ैत-घटबैत छल। एहि प्रकारेँ एक स्थानसँ दोसर स्थान आ एक पुश्तसँ दोसर पुश्त कंठानुकंठ यात्रा करबाक कारणेँ ओकर स्वरूप परिवर्त्तित होइत गेल।

लोकगाथाक उत्पत्तिक सम्बन्धमे लोक साहित्यक विशेषज्ञ लोकनिक अनुसारेँ लोकनिर्मित्तवाद (*कम्यूनल ऑथरशिप*), व्यक्ति निर्मित्तवाद (*इनडिविजुअल ऑथरशिप*) आ विकासवाद (*इभोलुसन*)क मुख्य हाथ थिक। एकर प्रचार-प्रसार मुख्यत: ग्राम्यजीवनक क्षेत्रमे भेल अछि। एहिमे आत्मव्यंजक तत्वक (*सब्जेक्टिभ एलीमेंट*) अभाव आ अनिवार्यतः वस्तुव्यंजक (*आब्जेक्टिभ एलीमेंट*)क प्रमुखता होइत अछि तथा श्रम साध्य कलात्मकता नहि, प्रत्युत यथार्थ चित्रणक प्रवृत्तिक प्रधानता रहैछ। एहिमे अनावश्यक वाग्जाल नहि, परम्परा-प्रेम भावना, सहजोच्छवास, भावात्मकता आ सरल कल्पनाक मात्रा अधिक होइछ जाहिमे बौद्धिकता, कल्पनाशीलता आ श्रमसाध्य कलात्मकताक नहि। एहिमे भाषा आ विचारक सरलता एवं नैसर्गिकता एहन रहैछ जे आरंभिक समाजमे उपलब्ध होइछ। एहि रूढ़, अस्वाभाविक आ श्रमसाध्य अलंकारक आ शब्दक अभाव होइछ। एहिमे प्रयुक्त अलंकार आ लोकाक्ति एवं मुहावराक बारम्बार आवृत होइछ। छन्द विन्यास सरल तथा तुकपर कोनो घ्यान नहि देल जाइछ। ओकर गेयता शास्त्रीय संगीतसँ भिन्न होइछ।

मैथिली लोक साहित्यानार्गत लोकगाथाक वास्तविक संख्या कतेक अछि एहि प्रसंगमे निर्विवाद रूपेँ किछु कहब वर्त्तमान सन्दर्भमे अप्रासंगिक प्रतीत होयत, कारण ने तँ इतिहासकार आ ने लोक साहित्यक विशेषज्ञ लोकनि एहि सन्दर्भमे सुनिश्चित आ ने सुविचारित मनतव्य देलनि अछि। जयकान्त मिश्र (1922) *Introduction To The Folk Literature Of Mithila* (1950)मे लोरिक, सलहेस, दीनाभदरी एवं कमला मैया गीतक चर्चा कयलनि। ओ जकरा कमला मैयाक गीत कहलनि ओ वस्तुत: दुलरा दयाल लोकगाथा थिक जे नाम सम्भवतः हुनका ज्ञान नहि छलनि, कारण एहि लोकगाथान्तर्गत कमला नदी जे मिथिलाक मुख्य नदी थिक ताहिपर केन्द्रित

अछि तथा एकर गाथा नायक छथि महान साहसी वीर दुलरा दयाल। जँ कमला नदीक आख्यान हुनका एहिमे उपलब्ध भेलनि तँ ओ एकरा कमला मैयाक गीतक नामे अभिहित कयलनि।

मैथिली साहित्यमे ई श्रेय डॉ. व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म (1918-1986)कें छनि जे लोकगाथाक वास्तविक स्वरूपक संकलनार्थ गहन भावें डुब्बी मारि क' एहि दुर्लभ मोती सभक संग्रह कयलनि तथा हुनका अनुसारेँ लोरिक, सलहेस, नैका बनिजारा, दीनाभदरी, दुलरा दयाल, अनंग कुसुमा, रायरणपाल एवं लवहरि-कुशहरि अिछ। परवर्त्ती कालमे कतिपय लोकगाथाक चर्चा भेल अछि, किन्तु ओकर ऐतिहासिकता एवं प्रामाणिकतापर प्रश्न-चिन्ह अछि।

उपर्युक्त लोकगाथान्तर्गत द्विजेतर जातिपर केन्द्रित रहलाक कारणेँ मैथिली साहित्यक अनुसंधाता लोकिन एहि गाथा सभक संकलनार्थ उन्मुख नहि भेलाह, कारण एहि साहित्यक अधिष्ठाता लोकनिक मान्यता छलनि जे मैथिली मात्र ब्राह्मणक भाषा थिक। किन्तु मैथिली आइ जीवित अछि ओही ग्रामीण परिवेशमे रहनिहार द्विजेत्तर जातिमे जनिक बोली-चालीमे पुश्त-दर-पुश्त एकरा अपना हृदयमे अद्यापि संयोगि क' रखने अछि। अन्यथा मैथिली तँ कहिया ने मरि गेल रहैत। द्विजेत्तर जातिसँ अभिप्राय थिक लोरिक गाथामे गोप समाजक, सलहेस गाथामे दुसाध समाजक, दुलरा दयाल गाथामे मलाह समाजक, दीनाभदरी गाथामे दलित मुसहर समाजक नैका बनिजारा गाथामे वैश्य समाजक, छेछन गाथामे डोम समाजक, रायरणपाल एवं लवहरि-कुशहरि गाथामे क्षत्रिय समाजक चित्रण अिछ। एहि ऐतिहासिक विभूति लोकनिकेँ प्रकाशमे आनि मणिपद्म मैथिली भाषा आ साहित्यक आ मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक संगहि भारतीय साहित्य एवं समाजक एहन प्रकाश स्तम्भ आलोकित कयलनि जे कोटि-कोटि जनमानसक अन्धकारमे टापर-टोइया द' रहल छल। वस्तुत: मिथिलाक ई लोक महाकाव्यक ऐश्वर्य भारतीय लोकगाथाक अन्तर्गत अपन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा साहित्यिक वैभवक गरिमा ओ दीपित छटाक कारणेँ अतुलनीय अछि।

ई निर्विवाद सत्य थिक जे व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म जतेक गहनता एवं तन्मयताक संग लोकगाथा अध्ययन-अनुशीलन, चिन्तन-मनन आ संचयन क' कए ओहिमे हेरायल भुतिआयल मणि माणिक्यकेँ जनसाधारण पाठकक हेतु सर्व सुलभ करौलनि तकर श्रेय ओ प्रेय हुनकहि छनि। हुनक मान्यता छलनि जे जा धरि लोकगाथा सभहिक मूल पाठ जे मिथिलांचलक विभिन्न क्षेत्रमे जनकंठमे परिव्याप्त अछि तकर संकलन, सम्पादन आ प्रकाशनक पथ प्रशस्त नहि हैत ता धरि मिथिलांचलक लोक जीवनक इतिहासक रचना असंभव अछि। मैथिली लोकगाथाक प्रति मणिपद्म अपन जीवनकेँ समर्पित कयने रहथि तँ मिथिलांचलक दिव्य विभूतिक

बिसरभोर भेल जीवन गाथाकेँ ओ अपन श्रम आ कलमसँ जन सामान्यकेँ सुबोध करौलनि। ओ एक-एक विलुप्त, भुतिआयल गाथा सभकेँ ताकि हेरि क' जीवन्त कयलनि ताहिसँ अनुमान कयल जा एकैछ जे हुनक हृदय जेना प्रेम आ सुषमाक रम्य वाटिका छलनि। हुनक रचनाक प्रधान उत्स थिक असीम मानवतावाद, पवित्र-प्रेम आ शीतल सौन्दर्य। हुनक भावनाक केन्द्रमे अधिष्ठित छल परम-पुरुषार्थी, लोक परायण, निरंहकार आ कर्तव्यनिष्ठ आदर्शपुरुष आ सतत साधिका, लोकसेविका, प्रेरणा आ गरिमामयी आदर्श नारी। यद्यपि सौन्दर्यक प्रति ओ अत्यन्त संवेदनशील रहथि तथापि हुनक कल्पना, भावना आ विचारक परिधि कतहु अतिक्रमण नहि कयलक।

मणिपद्मक भावना सौंदर्यकेँ स्पर्श क' चेतनाक अन्तःपुर रहस्यमय आवरणकेँ अनावृत क' विश्व प्रेमक उन्मुक्त वातायनकेँ खोलि देलनि। हिनक रचनादिमे जीवनक यथार्थ परिप्रेक्ष्यमे मानव प्रेमक अनिवार्यताक सहज आ निश्छल स्वीकृति थिक। हिंसामे प्रेम आ विप्लवमे शान्तिक रश्मि विकीर्ण करबामे ओ सफल रहथि। प्रवुद्ध चेतना, कोमल भावना, चित्रमयी कल्पनाक संगहि जननी जन्मभूमिक मर्यादा, प्रतिष्ठा, एवं गरिमा तथा महिमाक प्रति सतत जागरूकता हुनकामे वर्त्तमान छलनि। हिनका नदी, पहाड़, तुषार, शिकार, जंगल-झाड़, चौर-चाँचर, बाध-वोन, गामघरमे अशेष रुचि छलनि। ऐतिहासिक भग्नावशेष, देवस्थल, मूर्ति, चित्र, नृत्य, संगीत, तन्त्रमंत्र, रत्न, पक्षी आ लोक साहित्यक हेरायल भुतिआयल अन्वेषण, सशक्त वक्ता, विसरल उपेक्षित मिथिलांचलक जन-जीवन तथा सामाजिक ओ सांस्कृतिक परम्पराकेँ युग-युगसँ प्रवाहित करैत आयल अछि तकरा ताकि होरि क' अपन सरस, सरल ओ प्रवाहमय शैलीमे लिपिवद्ध क' मैथिली भाषा आ साहित्यिक श्रृंगार कयलनि। ई श्रेय वस्तुत: मणिपद्मकेँ छनि जे मिथिलाक कंठ साहित्यमे युगयुगान्तरसँ रचल-बसल गाथा सबकेँ जगजियार करबाक स्तुत्य प्रयास कयलनि।

मानवताक मणि आ लोकगाथाक पाण्डित्यक पद्मराग मणिपद्म मैथिली लोकगाथाकेँ अमर बनवबाक दिशामे ओ एक एहन महापुरुष रहथि जनिक चिरचिरन्तनसँ ई विधा-विनय हिनक पोर-पोरमे भरल छलनि। ओ लहराइत गाँधीवादी, उद्भट साहित्य-चिन्तक आ चतुर चिकित्सक रहथि। हिनक अन्वेषी प्रवृत्ति लोकभाषा, लोककवि, लोकगाथा, लोकगीत कोन प्रकारेँ भारतक उत्तरीय खण्डमे भूखपियास त्यागि, वन प्रान्तक जतय-ततय लौह लैत, बनैया जीव-जन्तुक आक्रमणसँ निरापद, कखनो-कखनो सामना करैत लोक साहित्यक प्रचुर संग्रह कयलनि। एहि विधाक प्रति हुनकामे एतेक बेसी लगनशीलता छलनि जकर परिणाम भेल जे ओ अपन औपन्यासिक कृति सभक कथा-संयोजनमे ओकरे आश्रय लेलनि। एहि प्रसंगमे हुनक पिताक कथन छलनि, कनकिरबा व्यर्थ सोचि रहलाह

अछि। यदि ओ सेवा बुद्धया करथि तँ वेश, उपार्जन क' परिवारक भरण-पोषण ले हमरा जीवैत कनेको चिन्ता नहि करथु, एतेक परिश्रम आ साहससँ लोक साहित्यक सामग्री ओ जे एक्ठा कयलनि अछि, तकर सर्जनात्मक कार्य करथु जे अक्षुण्ण रहि जयतनि।

एहिसँ प्रतिभाषित होइछ जे मणिपद्म लोकसाहित्यक वास्तविक महत्वसँ अपन युवावस्थहिसँ परिचित रहथि तँ ओ एकर अनवरत संग्रह कयलनि। हुनक मान्यता छलनि जे लोकसाहित्यक अपरिमित भण्डार छैक उपेक्षित जनजातिक कंठमे। ठेंठ मैथिली ओही चौर-चाँचरमे, वन्य जातिक करेजमे जीवित छैक। ओहि वन पहाड़क टोला-टप्परक स्त्री समाजमे, निर्गम्य स्थानमे ई निधि छैक जतयसँ साहसिक तपस्या क' कए मणि आ पद्म बहरयलैक। तँ ओ एकर उत्खनन कयलनि। संभवत: तँ अपन उपनाम मणिपद्म रखलनि आ साहित्य जगतमे प्रख्यात भेलाह। मैथिलीक ई वरद पुत्र मानवताक मणि रहथि आ प्रतिभाक पद्म रागकेँ प्रफुल्लित आ सुरभित कयलनि। हिनक वैशिष्ट्य थिक जे ओ साधना कयलनि लोककंठमे रचल-बसल साहित्यक, किन्तु जे हिनका संग वार्त्तालाप कयने होयताह तनिका ई अनुभव अवश्ये होयतनि जे ओ संस्कृत शब्दक प्रचुरताक संग प्रयोग करथि; किन्तु जखन ओ कलम धरथि तँ लोककंठमे व्याप्त भाषा-प्रयोगक अवसर नहि चुकथि। यथार्थत: मैथिलीकेँ हिनका सदृश किछुओ साहित्य चिन्तक आ भेल रहितथि तँ एकर भण्डार आ पूर्ण आ समृद्धशाली बनैत।

मणिपद्म जाहि मनस्विता, तेजस्विता, गम्भीरता. तन्मयताक संग मैथिली लोकगाथा ओकर संस्कृति, ओकर सभ्यताक अध्ययन कयलनि ताहि गम्भीरताक संग मैथिलीक क्यो अनुसन्धाता अद्यापि नहि क' पौलनि। प्रस्तुत प्रकाश्य ग्रन्थ एहि विषयक पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करैछ जे एहि कृतिक अध्ययनसँ स्पष्ट भ' जाइछ जे मिथिलाक संस्कृति आ सभ्यता कतय धरि विस्तृत छल। महाप्राण राहुल सांकृत्यायन (1890-1963) सदृश हिनको घुमक्कड़ीमे अत्यधिक रुचि छलनि जकर पुष्ट प्रमाण उपलब्ध होइछ हुनक प्रिय सिरीज *ओहिठाम गेल छलहुँ* जकरा सभकेँ एकत्रित क' कए हम *हुनका सँ भेट भेल छल* (2004)मे प्रस्तुत कयल अछि जाहिमे हुनक एहि प्रवृत्तिक परिचायक थिक जे ओ जन-जीवनकेँ अत्यंत समीप जाय लोक जीवनमे व्याप्त साहित्यकेँ संकलित क' अमूल्य निधिक रहस्योद्घाटन क' कए साहित्य प्रेमीकेँ ओकर स्वरूपक रसास्वादन करौलनि। वस्तुतः ई मणिपद्मक देन थिक जे मैथिली भाषा साहित्यकेँ एक नव विशेषण भेटलैक।

मणिपद्म मैथिली जनकंठ साहित्यक अन्तर्गत लेरिकाइन, नैकाबनिजारा, दुलरा दयाल एवं लवहरि-कुशहरिक अनुसंधान वृहत् रूपेँ कयलनि। ओ लोक साहित्यक पाछाँ तपस्यामे दिवारात्रि लागल रहलाह जकर फलस्वरूप ओ अपन अन्वेषी

प्रवृत्तिक परिचय देलनि। प्रस्तुत लोकगाथाक इतिहासक अन्तर्गत ओ अपन अभिमत प्रकट कयलनि ओ निश्चये मैथिली साहित्यक हेतु एक अविस्मरणीय घटना थिक। समयाभावक फलस्वरूप ओ अन्य गाथादिक प्रसंगमे नहि लिखि पौलनि।

लोक-संस्कृतिक सुविख्यात शिल्पी व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म अपन मधुस्त्राविणी भाषामे मैथिलीक एहि अमर गाथाक सुमनकेँ लोकगाथाक इतिहासमे गाँथलनि अछि। एहि मणिमालामे कतिपय पुष्प-गुच्छक स्वरूप आ मौलिकताक पृष्ठभूमि ओ कथाक प्रगतिक आभास पाठककेँ अनायासहि उपलब्ध होयतनि। प्रतिपाद्य कृति हुनक माँजल कलमक चमत्कार थिक जाहि दृष्टिकोणसँ विवेचन कयल जाय तँ मैथिली लोकगाथा इतिहास मैथिलीक अमूल्य निधि थिक।

प्रतिपाद्य लोकगाथाक इतिहासमे लोरिक गाथापर सोलह, दुलरा दयाल गाथापर दस, नैका बनिजारा गाथापर सात एवं लवहरि-कुशहरि गाथापर पाँच लोकगाथाक इतिहासपर मणिपद्मक अनुसंधानात्मक आलेख एहिमे संग्रहीत जे विभिन्न पत्रिकादिमे आइसँ तीन दशक पूर्व प्रकाशित भेल छल। एहि गाथा सभक वैशिष्ट्य छैक जे मिथिलामे परम्परासँ अबैत ग्रामीण लोकनि अत्यंत मनोयोग पूर्वक एकर श्रवण, रसास्वादन युग-युगान्तरसँ करैत आबि रहल छथि तकर ई एकमात्र प्रामाणिक एलबम थिक। एहि कंठ गाथा सभहिक अमूल्य उपलब्धि थिक जे एकरा मिथिलांचल वासी अपन कंठमे हजार-हजार वर्षसँ संयोगने आबि रहल छथि।

लोरिकाइन कंठ महाकाव्यकेँ लोक जागरणक प्रथम लोकगाथा कहब अधिक समीचीन होयत आ एकर वास्तविक मूल्यांकन तखने सम्भव भ' सकैछ जखन एकरा ब्राह्मणक देवोन्मुख साहित्य आ बौद्धक संसार त्यागक साहित्यिक पृष्ठभूमिमे नहि मूल्यांकन क' एकरा भारतीय जन समाजक लोक-चेतनाक विकास क्रममे देखबाक उपक्रम कयल जाय तखन स्पष्ट प्रतिभाषित हैत जे ई गाथा लोक क्रान्तिक प्रथम उन्मेषक एक सशक्त कलात्मक आ प्रवाहमान रचना थिक जकर ऐतिहासिक महत्व छैक। एहि महाप्राण कंठ काव्यमे षष्ठ सप्तम शताब्दक मिथिलाक एहन सप्राण वर्णन अन्यत्र कतहु नहि उपलब्ध भ' रहल अछि। एहिमे मिथिलाक आध्यात्मिक, भौगलिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, सामाजिक स्थितिक अत्यन्त सशक्त विवरण उपलब्ध होइत अछि।

एहि महाप्राण कंठमहागाथामे साहित्यक रंग आ भासक अनुपम आयोजन छैक जकरा विश्लेषण कयलासँ सहजेँ स्पष्ट भ' जाइछ जे कोन अमृत्वक बलेँ ई एतेक चिर नवीन आ एतेक चिरजीवी बनल रहि सकल अछि। एहिमे साहित्यिक, वैचारिक आ घटनात्मक एकात्मकताक एतेक सुधड़ संयोजन छैक जे मानवक आधारभूत संवेदनाकेँ ताल लयसँ झंकृत करैत आबि रहल अछि। एकरा संगहि

अपन भूमिज मौलिकता प्रदान करैत अछि। एकर भाषा मैथिलीक उषाकालीन रूप थिकैक। एकर रचना काल धरि मैथिलीक स्वरूप एतेक सुदृढ़ भ' गेल छलैक जाहिमे एकटा सशक्त, प्रवाहमान, प्राञ्जल, रससिद्ध अभिव्यक्तिवला महाकाव्य रचल जा सकलैक जे हजार-हजार शताब्दीक झमार सहितो अद्यापि झमान नहि भेलैक आ लोरिकक खण्डा सदृश एखनो लह-लह, धह-धह क' रहल छैक।

प्रतिपाद्य महागाथामे सती मांजरि, चनैन, सुनयना, रणचण्डी, लुरकी, योगिनी कोसामालिन, महादेवी कोहराँस, महासुन्दरी दुहबी-सुहबी आ राजकुमारी संझा प्रमुख नायिका छथि। जतय मांजरि परिस्थितिक भोगनिहारि छथि ततय चनैन परिस्थिति सृजननिहारि छथि। करुणामयी मांजरि भक्ति, शक्ति आ आत्मदृष्टि वाली छथि ततय भगवती चनैन प्रेरणा, स्फुरण आ ऊहिवाली छथि। मांजरि अपन सतीत्वक महिमासँ मण्डित छथि तँ चनैन अपन सौन्दर्य-गरिमासँ ओतप्रोत। नैराश्यक क्षणमे मांजरि भगवतीसँ खण्डाक याचना करैत छथि तँ चनैन रत्ना बनिजारिनक संग षड्यंत्रमे सहायता प्रदान करैत छथि। एकर रचयिता अपन नायककेँ प्रत्येक स्थितिमे मानवे रखलनि जकर सुघड़ताक फलस्वरूप ई महागाथा जनकंठमे अजर, अमर एवं अक्षुण्ण रहि सकलाह। लोरिक गाछ तर वा गह्वरमे कोनो समाङक लाथे अपन सेवा-पूजा नहि लेलनि आ कोनो भगता वा वाहन नहि तकलनि जखन कि अधिकांश लोकगाथाक नायक मनुष्य देवा बनि क' खीर-खाँड़ आ बलिक भोग स्वादैत भगता सभक देहपर खेलाइत छथि। एहि महागाथाक पात्र चरित्र अपना-अपना स्थानपर सुदृढ़ता, सौन्दर्य आ कलात्मक रूपैँ सुसज्जित अछि। एहिमे पात्रक समन्वय अत्यन्त मोहक छैक आ उच्च कोटिक साहित्यिक परिस्थिति प्रकार आ वातावरणक सृजन करैत अछि।

लोरिकाइनक पशु-पक्षी यथा हाथी-घोड़ा आ कौआ आदिम कालसँ मनुष्यक सानिध्यमे रहैत आयल अछि। एहि महागाथाक महाप्राण होयबाक कारणेँ कज्जल गिरि आ रणहुलास सन हाथी, कटरा आ बछेड़बा सन सन घोड़ा आ बाजिल कौआ सन पक्षीसँ मानवकेँ अत्यंत एकात्मकता स्थापित भ' सकल अछि आ मनुष्यक संग अत्यंत सूक्ष्म संवेदना राखि सकल अछि। एकर वैशिष्ट्य थिक जे एहिमे युद्ध आ अखाड़ाक विशद् वर्णन भेल अछि। शान्तिकालीन एकान्तिकता आ समाजकेँ दैत अछि। लोरिक खण्डा जेना हुनका सतत कहैत रहैत छनि रक्त दे, रक्त दे। एहिमे एहन आकर्षक स्थल अछि जतय मनकेँ चकित, विमुग्ध आ विमोर क' देनिहार मनोवैज्ञानिक तथ्य सभकेँ अत्यंत सहजता आ स्वाभाविकताक एहिमे संयोगने अछि। एकर कतिपय कथान्तर्गत मानव अन्तरमे त्रिगुणक सन्तुलन-असन्तुलनक तत्व कथा अथवा मनक बुद्धिक संग रमण करैत विलास आ युद्ध एवं हृदय संग रमण करैत शान्ति, पाश मुक्तिक कथा अछि जकरा सहज

लोक वातावरणमे शक्ति पट भूमिपर अत्यन्त सूक्ष्मताक संग, मनोहारी शैलीमे इन्द्रधनुषी तान्त्रिक रंगसँ चित्रित कयल गेल अछि। एहिमे वर्णित नृत्य ओहिना सुशोभित अछि जेना विभिन्न वर्णक उत्फुल्ल कमलसँ सरोवर।

लोरिकाइन मैथिली कंठ गाथाक एक अमूल्य उपलब्धि थिक जकरा मिथिलाक लोक अपना कंठमे हजार वर्षसँ अधिक समयसँ जोगौने आयल अछि। एहि लोक महाकाव्यक काव्य ओ कथा प्रबन्ध स्वयं पूर्ण अछि आ एहि बातक ज्वलन्त प्रमाण अछि जे मैथिली जनसाहित्य कतेक सप्राण, सशक्त आ समृद्धशाली अछि। ई महागाथा विश्वक कोनो लिखित आ अलिखित महाकाव्यसँ टक्कर ल' सकैत अछि। प्रयोजन एहि बातक अछि जे एकर मूल्याकंन नवयुगक आलोकमे सेहो संगे मैथिली भाषीक ई पुनीत कर्तव्य भ' जाइछ जे एहि महागाथाक सांगोपांग प्रकाशन हो। मिथिलाक उज्ज्वल अतीतक एक ज्योति स्तम्भ, शौर्य, शील आ त्यागक प्रतिमूर्ति एक जनप्रिय नायक लोरिक कीर्तिगाथा वस्तुतः अमरत्व प्राप्त करबामे सफल भ' सकल अछि।

मिथिलामे परम्परासँ चल अबैत लोरिक कथा ग्रामीण जन समुदाय अत्यन्त मनोयोग पूर्वक रुचिसँ श्रवण करैत छथि। ई एक एहन लोक काव्य थिक जे लोरिकाइन नामसँ सात खण्डमे विभक्त अछि आ अनेक रातिमे जागि क' समाप्त होइत अछि। एहि लोकगाथाक वैशिष्ट्य थिक ई एगारह विभिन्न भाषामे लोककंठसँ गाओल जाइत अछि। एकर सात खण्डमे जनम खण्ड, सतीमाँजरि-खण्ड, चनैन-खण्ड, रण-खण्ड, सावर-खण्ड, बाजलि-खण्ड आ सझौती राजा खण्डक चर्चा कयल जाइछ। नेपाली-मैथिली स्वरूपमे आठम खण्ड उपलब्ध होइछ जकरा भैरवी-खण्ड कहल जाइछ। एहि लोकगाथामे एक भाग वीर रसक छटा छैक तँ दोसर भाग श्रृंगार रसक इन्द्रधनुष सेहो दृष्टिगत होइत अछि। एकर श्रृंगारिक वातावरण मधुमय सुषमासँ परिपूर्ण अछि। एहिमे नारी एवं नायक अपहरणक वृतान्तसँ ओतप्रोत अछि। एकर सभ पात्र अपन - अपन क्षेत्रमे अद्वितीय अछि तथा मूक पात्र सभ सेहो मनुष्यक वाणीमे नहि बजाओल गेल अछि तथापि एकरा सभक आचार, अपनैती आ अभिव्यक्ति अत्यन्त मनोवैज्ञानिक सौन्दर्यसँ सफलतापूर्वक अभिव्यक्त भेल अछि। एहिमे साहित्यक गंगा आ काव्य-सौन्दर्यक यमुना हिलोर ल' रहल छैक ओही ठाम तान्त्रिक भावधाराक अन्त: सलिला सरस्वती सेहो प्रवाहित भेल अछि।

मिथिलाक लोकगाथामे दुलरा दयाल एक प्राणवन्त लोकगाथा थिक। भारतीय भीकिंग (जलयोद्धा) क एहन स्वर्णिम गाथा सम्भवत: अन्यान्य साहित्यान्तर्गत नहि उपलब्ध होइछ। एहि लोकगाथामे जल-जीवनक ऐश्वर्य पूर्ण विवरण उपलब्ध होइछ। एहि लोकगाथाक वैशिष्ट्य थिक जे मिथिलासँ कामरूप आ बंगालक

तान्त्रिक साधनाकेँ उजागर करैत अछि। ई महागाथा मानवक एक दुर्लभ आन्तरिक शक्तिक महिमाक आख्यान करैत अछि। एकर नायक राजा वा योद्धा नहि; प्रत्युत सिद्ध नर्त्तक आ साहसिक सार्थवाह रहथि। एहि गाथाक घटना काल दोसर-तेसर शताब्दी भ' सकैछ, किन्तु रचनाकाल अनुमानतः छठम-सातम शताब्दीक थिक। जतेक दूर धरि एकर भाषा-शैलीक प्रश्न अछि ओ अत्यन्त प्रांजल अछि जे मैथिलीक आदिम स्वरूपकेँ उद्घाटित करैत अछि। एकर भाषापर सिद्ध कालीन मैथिलीक आदिम स्वरूपकेँ उद्घाटित करैत अछि। एकर भाषा पर सिद्ध कालीन मैथिलीक वेसी रंग आ एकरा आघ्यात्मिक पट भूमिपर बौद्ध महायानक वेसी प्रभाव। एहिमे वर्णित नृत्य सभ ठाम गम्भीर तान्त्रिक रूप ल' लैत अछि। एहि महागाथाक विशेष वैशिष्ट्य छैक एकर प्रकृति वर्णन। हिमागिरिसँ ल' कए गंगा आ गंगासँ ल' कए सागर धरिक माछ-संस्कृतिक एतेक विशाल परिसर जे मिथिला, असम, बंग, आ ओड़िसा धरिकेँ समेटने छैक। विभिन्न परिस्थितिमे एहन मोहक आ एतेक सूक्ष्म वर्णन-विन्यास एकरा उच्चकोटिक क्लासिकक प्रभा प्रदान करैत छैक।

एहि महागाथाक कथा-प्रवाह अत्यधिक क्रमवद्ध अछि जे तत्कालीन नौकाश्रय, घाट-बाट आ बजारक वर्णनसँ एकर छटा अपूर्व भ' गेलैक। एहि महागाथाक पृष्ठभूमि मिथिलाक जल-जीवन छैक जकर नाभि भूमिमे प्रवाहित होइत छथि महाकाली कोसी, हदय भूमिमे प्रवाहित होइत महालक्ष्मी कमला आ मस्तक भूमिमे प्रवाहित होइत छथि महासरस्वती बागमती। इएह कमला मलाह जातिक कुलदेवी छथि जनिक गाथात्मक परिचय एहिमे देल गेल अछि। एहि महागाथाक नायक छथि नृत्य-निपुण दुलरा दयाल जे एक दिव्य नर्त्तक, एक धीर सार्थवाह, एक साहसी सागर यात्री अथक अन्वेषी रहथि। कमला शक्तिदा, धनदा, आ बुद्धिदाक रूपमे विख्यात छथि। दुलरा अपन सिद्धि प्राप्तिक निमित्त बड़-बड़ तपस्या कयलनि जकर परिणाम भेल जे हुनक यशपताका हंसालय अर्थात् हिमालय, कमलालय अर्थात् मिथिलासँ ल' कए महाशंखालय अर्थात् सागर धरि द्वीप-द्वीपान्तर धरि फहरा गेलनि। एहिमे मिथिलाक संगहि भारतक ओहि कालक दृश्याकंन अछि जे भारतकेँ सुवर्णद्वीप, वालीद्वीप. जावा. सुमत्रासँ सागर व्यापार चलैत छल तकर मलाही शौर्य आ सार्ववाह सभहक चमत्कार पूर्ण क्रिया-कलाप आ नदी व्यापारिक अनुपम वर्णन एहिमे भेल अछि। ई महागाथा मानवक एक दुर्लभ, अजेय आन्तरिक शक्तिक महिमाक आख्यान करैत अछि जकरा विकसित करबाक वर्त्तमान सन्दर्भमे लुप्त होइत-होइत अधिक गुप्त भ' गेल अछि।

दुलरा दयाल महागाथाक एक-एक पात्र जलजीवी समाजक एक-एक विद्वानक सफल प्रतिनिधित्व करैत अछि संगहि ई गाथा तत्कालीन युगधाराकेँ काव्यक रस

धारामे परिणत क' कए युग-युगसँ तकरा लोक मानसमे प्रवाहित करबामे सफल रहल अछि। एहि गाथामे जलजीवी. जलपथ, घाट, जलशासन ओ सुरक्षाक काव्यात्मक विवरणक संगहि-संग तुलालक्ष्मी, तरुआरिक विद्युताम छटा आ करुआरिक अभियानक चित्र सभ अत्यन्त सम्मोहक रूपैं उभरैत चल आयल अछि जे इतिहासकारकैं सौन्दर्यानन्दक विपुल अवसर प्रदान करैत अछि। एहि लोकगाथामे कमल ज्योति मिथिलाक बाध-बोन, चौर-चाँचर, गाम-घर, पशु-पक्षी आ नर-नारीक कलात्मक आ सौन्दर्यमय छवि हंस शिखरसँ ल' कए भागीरथी धरि मिलनक सौन्दर्यक विवरणसँ ओतप्रोत अछि। मिथिलाक लोकजीवनक अत्यन्त प्राणवन्त चित्र अछि जकर स्पष्ट प्रमाण एहि गाथामे उपलब्ध अछि। हंसालय हिमालय, कमलालय मिथिला आ शंखालय सागरक अनुपम आ कलात्मक साहित्यिक सौन्दर्य निखरि आयल अछि। एहि महागाथामे मिथिला जल-जीवनकैं आलोकित कयनिहार विख्यात मैथिली लोकमहाकाव्यक नृत्यमयी महायोगिनी डाइन बहुरा ठहुराइनक व्यक्तित्व चन्द्रलेखा, अमीनार्त्ता, मंगला, शेबारानी आ अपना वक्षोज मे सर्पदंश ल' कए मृत्यु आलिंगन कयनिहार क्लियोपैट्राक व्यक्तित्वसँ बहुत अधिक शक्तिशाली, रोमांटिक, रहस्यमय अभिमानी आ ज्योर्तिमय छैक। एहि महागाथाक नारी पात्र सभ डाकिनीसँ ल' कए याकनि धरिक योगिनक चरित्रक आधारपर प्रतीक रूपमे अपन सम्पूर्ण छवि-छटाक संग उपस्थित अछि। एहि लोकगाथा महाकाव्यक सार्थवाहक लोकनिमे उल्लेखनीय छथि दुलरा दयाल, विजयमल्ल, गोहिलमल्ल, कोयलावीर, रन्नूवीरक संकट ओ साहसिक क्षणक विवरणसँ ओतप्रोत अछि। एहि लोक महाकाव्यक साहित्यिक सौन्दर्य आ कलात्मक शिल्प रहि-रहि क' जेना सोर पाड़ैत छैक मैथिलीक सांस्कृतिक वैभवसँ उल्लसित होयबा लेल। एकरा जँ नदी हाक कही तँ अतिश्योक्ति नहि। हंसालयसँ गंगाधारिक कमलाक धारा-प्रवाहक यात्राक एक अत्यन्त भव्य आ कलात्मक साहित्यिक उपलब्धि अछि।

एहि महागाथामे सार्थ शब्दक प्रयोग तृअर्थक अछि - जलपोतक बेड़ा, थलपथक व्यापारीक गाडी-बड़द् आ लोकक हैंजक अर्थमे तथा सैनिक गुल्मक अर्थमे तथा साहसिक नाविकक अर्थमे। सार्थ सर्वतन्त्र स्वतन्त्र होइत रहथि जे शक्ति, साहस, शौर्य, सहिष्णुता आ शीलक आगर होइत छलाह। एहि महागाथामे सार्थ आ सार्थवाहक लोकनिक साहसक अत्यन्त मनोहारी विवरण उपलब्ध होइत अछि। भारतीय जलयोद्धाक एहन स्वर्णगाथा अन्यत्र कतहु नहि उपलब्ध होइछ। एहिमे जल जीवनक बहुछवि दर्शी साहित्यिक छटाक प्रवाहमान क्रमसँ साक्षात्कार होइत अछि। एकर सार्थवाह लोकनिमे दुलरा दयाल, विजयमाला, गोहिलमल्ल कोयलावीर आ रन्नूवीरक संकट ओ साहसिक क्षणक सभ विख्यात ग्रीक महकविक काव्य ओड़ेसीक महानायक युलीयसक एक कलात्मक उल्लास मैथिली परिवेशमे

पसारि क' गौरवान्वित क' दैत अछि। एकर सार्थवाहकेँ सागरक संघर्ष, शैर्य, अभियान, अनुभव, महाकाव्यक गाथा थिक जकरा सुनलापर मनुष्यकेँ दिव्य, चेतावनी, चरित्र, चौँकि, प्रेरणा आ विम्ब द' कए ओकरा अपना व्यक्तित्वकेँ गढ़ि क' जीवनक दिशा निर्देश करबामे सहायक होइत छैक। दुलरा दयाल महिमावान, शौर्यशाली, तेजस्वी आ यशस्वी सार्थवाह रहथि। ओ देश देशान्तरक विजय कयलनि। देशान्तरमे ओ मिथिलेक नहि, प्रत्युत भारतक विजय अध्यात्मिक विजय घ्वज लहरौलनि आ अपन देश मिथिलाक यश सौरभ प्रसारलनि। तरुआरिक विजय कोनो विजय नहि होइछ कारण हिंसा, आतंक आ रक्तलिप्त विजय क्षणिक होइछ। दुलरा दयाल महागाथा अत्यन्त कलात्मक रूपेँ सप्तकमलक सप्तयोगिनी नृत्यपर आधारित अछि। एहिमे मिथिलाक पशु-पक्षी, पुष्पलता, ऋतुचक्र, तन्त्र-मंत्र, रीति-नीति, संगीत-नृत्य, देवी-देवता आ नर-नारीक एतेक आलोकित विवरण अन्यत्र नहि उपलब्ध होइछ। ई गाथा एक प्रवाहमान महाकाव्य थिक जे तन्त्र-विद्याक आधार नेने जल जीवनक पृष्ठभमिमे युगयुगान्तरसँ प्रवाहमान आ द्युतमान अछि।

प्रतिपाद्य लोकगाथा ऐतिहासिक रससँ परिपूर्ण अछि, कारण दुलरा दयाल द्वारा निमित्त हिमगिरिसँ ल' कए गंगाधार धरि सात मण्डप मूलाधार, स्वाधिस्थान, मणिपुर, अनाहत, आज्ञाचक्र, सहस कमल आ सम्पूर्ण नृत्यक निमित्त कतोक मण्डपक अवशेष अद्यापि वर्त्तमान अछि। एहि महागाथाक सर्वोपरि वैशिष्ट्य थिक जे एहिमे मिथिला, कामरूप आ बंगालक तान्त्रिक साधनाक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि जाहिमे मानवक आन्तरिक शक्तिक महिमाक आख्यान कयल गेल अछि जे वैश्वीकरणक फलस्वरूप आब लुप्त भेल जा रहल अछि। तन्त्रक एक अत्यन्त शक्तिशाली विद्या थिक डायन विद्या। ई विद्या एक एहन विद्या थिक जे विश्वक प्रत्येक देशमे विद्यमान अछि। एहि विद्याक लेखनक क्रममे आङल साहित्यक सर्वाधिक प्रभावशाली उपन्यास *सी* (SHE)क लेखक राइडर डेगर्ड, विश्वक प्रख्यात नाटकककार शेक्सपियर (1564-1616)क *टेमपेस्ट* (Tempest) (1611-1612)क गणना कयल जा सकैछ। पाल व्रूंटनक *ए सर्च इन सिक्रेट इजिप्ट* (A Search in Secret Egypt) एवं *ए सर्च इन सिक्रेट इण्डिया* (A Search in Secret India) तँ तन्त्रक रहस्यमय अन्वेषणक हेतु विख्यात अछि। ब्राजीलक भुवन विख्यात लेखक चिक्को-जेवियरक भूत सभहक लिखौल शताधिक उपन्यास प्रकाशित छनि। प्लाइ माउथक एक मिस्त्रीक शरीरमे एक तिब्बती लामा प्रवेश क' गेलनि, जाहि देशक भाषा एवं विद्याक नाम ओ सुनने छलाह तकर तिब्बत, तिब्बती भाषाक टर्म सभ आ लामाक विद्यापर एक पुस्तकक रचना कयलनि *थर्ड आइ* (Third Eye)। ओहि आत्माक नाम छलैक लोव सांगरप्पा। प्रतिपाद्य गाथामे काया परिवर्त्तनक कतोक स्थल अछि। एहिमे डाइन विद्याक विलक्षण वर्णन भेल अछि। स्वेनहेण्डिन *ट्रान्स*

हिमालया (Trans Himalaya) मे जाहि मानसरोवर आ राक्षस तालक विवरण देलनि अछि तकर यथार्थ प्रतिरूप एहि लोकगाथामे इजोरिया सरोवर आ आन्हरिया सरोवर कहि क' सम्बोधित कयल गेल अछि। तन्त्र गाथाक वैशिष्ट्य थिक जे प्रत्येक पात्रक चाहे ओ स्त्री होथि वा पुरुष अपन क्षेत्रमे अद्वितीय एवं अप्रतिम छथि जे अपन चमत्कारक बलपर जनसामान्यकेँ सतत चमत्कृत करैत रहैत छथि।

एहि महगाथाक अनुशीलनसँ अवबोध होइछ जे दुलरा दयालक साहसिक क्षण विख्यात ग्रीक महाकवि होमरक महाकाव्य ओडेसी (odyssey) क महानायक युलीयसक अभियान, आपत्ति, धैर्य, शौर्य आ आनन्दक कलात्मक उल्लास मैथिली परिवेशमे पसारि क' गौरवन्वित क' दैत अछि। नोबेल पुरस्कार विजेता मिखाइल सोलोखव (Mikhail Solokovh)क नदी जीवनपर आधारित उपन्यास *एण्ड क्वाइट फलोज द डॉन* (And quite Flows the Don) तथा बाङला साहित्यक उपन्यास शिल्पी माणिक वदोपाध्याय (1906-1956) क *पद्मानदीर मांझी* (1936) सेहो जल जीवनक एतेक ऐश्वर्य युक्त विवरण देबामे असमर्थ भ' गेल छथि।

मैथिली लोकगाथान्तर्गत प्राचीनकालीन मिथिलाक समाज व्यवस्था, राजव्यवस्था आ व्यापार व्यवस्थाक मर्मकेँ उद्घाटित करैत अछि नैका बनिजारा। ई मिथिलाक परम्परागत स्वर्ण संस्कृतिक महान सम्पदा थिक जकरा अन्तर्गत तत्कालीन मिथिलाक इतिहास-संस्कृति, सामाजिक स्थिति, व्यापारिक व्यवस्था ओ लोक भावनाक मणिमुक्ताक समान द्युतमान अछि। जाहि कालमे एहि महागाथाक रचना भेल होयत ओहि समय साहित्य, युद्ध, रोमांस, स्टंट, चलाकी देवी-देवताक अलौकिक चरित्रसँ भरल अछि। एहि महागाथाक वैशिष्ट्य थिक जे बौद्ध कालीन मिथिलाक समाजक कलात्मक अभिव्यक्ति देनिहार आ लोक जीवनकेँ उद्भाषित कयनिहार साहित्य शायदे अन्याय भारतीय भाषा साहित्यमे उपलब्ध हो। एहिमे जे चित्र उपलब्ध होइछ ओ पाँचम शताब्दीक थिक। नैकाक व्यक्तित्वमे अनेक प्रकारक विद्या आ कला सन्निहित छलनि। एक जीवनमे अनेक जीवनमे जीवैत छलाह ओ। एहि गाथामे ने तँ रोमांसक छटा अछि आ ने शस्त्र अलंकृत शौर्यक घटा।

नैका बनिजारा एक एहन सामाजिक लोक गाथा थिक जकर रूमानियत अभियान आ मानवीय संवदेनाक सौरभक सुगन्धि जकाँ चिरस्थायी छैक। सहस्त्रवर्षसँ अधिक प्राचीन रहितहुँ ई महागाथा मिथिलांचलक वर्णिक समाज आ संस्कृतिक एक एहन भव्य छटा उपस्थित करैत अछि जे मूल्यवान मणि सदृश अद्यापि ओहिना द्युतमान अछि। मैथिली साहित्यक एहि महान धरोहरिमे सात भाषाक ऐश्वर्यकेँ म्लान कयनिहार आ सात महाकाव्यक विभूतिकेँ झमान कयनिहार लोक महाकाव्य नैका बनिजारा एक दिव्य मणिमाला थिक आ बाछा तिलंगाक

मनोहारी चरित्रक छटा ओकर जाज्वलमान सुमेरू सदृश द्युतमान अछि। गोधन लोक जीवनक अत्यन्त ज्वलन्त आधार छल तथा ओकर चेतना अधिक विकसित रहैत छलैक तथा अपन पालकक प्रति ओकरा असीम आत्मीयता रहैत छल। बाछा तिलंगाक क्रिया कलाप अत्यन्त विश्वसनीय अछि।

एहिमे एक धीर, वीर आ साहसिक व्यापारी नैका बनिजाराक वर्णन भेल अछि जे देश देशान्तरक मिथिलाक व्यापार व्यवस्थाकेँ उद्घाटित करैत अछि। ई मिथिलाक सामाजिक एवं सांस्कृतिक ऐश्वर्यसँ परिपूर्ण पृष्ठभूमिक बनिजारा समाजक अलौकिक गाथा थिक। एहिमे मिथिलांचलक सांस्कृतिक ऐश्वर्यसँ परिपूर्ण पृष्ठभूमिक बनिजारा समाजक एक एहन सामाजिक लोक महाकाव्य थिक जकर रूमानियत अभियान आ मानवीय संवेदनाक सौरभक सुगन्धिसँ जकाँ चिरस्थायी छैक। सहस्त्र वर्षसँ अधिक प्राचीन रहितहुँ ई महाकाव्य मिथिलांचलक वणिक समाज आ संस्कृतिक एक अनुपास छटा उपस्थित करैत अछि जे मूल्यवान मणि सदृश ओहिना द्युतमान अछि। ई महागाथा नैकाक व्यापारिक अभियानक गाथा थिक जे मैथिली साहित्यक एहि महान धरोहरिमे सात भाषाक ऐश्वर्यकेँ म्लान कयनिहार लोक महाकाव्य दिव्य मणिमाला थिक।

नैका बनिजारा जतय उच्च सभ्यताक उद्यमी, उच्च निष्ठाक कर्तव्य-परायण, धीर, वीर गम्भीर रहथि ततय हुनक विहौता पत्नी फुलेश्वरी अपन कुलमर्यादा, शालीनता एवं सतीत्वक रक्षा सती सीता-सावित्री सदृश कयलनि। नैकाक व्यक्तित्वमे अनेक प्रकारक विद्या आ कला सन्निहित छलनि। हुनक व्यक्तित्वमे एक महान महायात्री, ज्योतिषी, वैद्य, अभियानी, खान-खोजी, संधि-विग्रहत्राता, सार्थवाह, वादक, रत्न-परखी आ पक्षीक वाणीक विशेषज्ञ रहथि। ओ कतोक खानक अन्वेषण कयलनि। हुनक व्यक्तित्व निरापद छलनि। ई मानवीय स्तरपर एक सतरंगी मोहक छटा उपस्थित करैत एक अमर रचना थिक जे मैथिली कंठ साहित्यक एक जाज्वलमान मुकुट मणि बनि गेल अछि।

एकर मुख्य नायिका छथि चम्पा देशक राजाक एकमात्र सन्तान नैका बनिजाराक धर्म-पत्नी रानी फुलेश्वरी जे अभावमे सुभाव, विपन्नतामे सम्पन्नता आ विपतिमे धैर्य रखैत छथि। हुनकामे सृजनात्मक प्रतिभा छलनि जकरा द्वारा ओ द्रोण नगरक महाकुबेरनीसँ प्रार्थित भेलीह। ओ द्रोणेश्वरीकेँ पुत्र प्राप्तिक दिशा संकेत कयलनि। फुलेश्वरीकेँ प्राप्त क’ कए बनिजारा कुल तरि गेलैक। एहि प्रकारेँ तिलकेश्वरी सन दुष्टा आ तुलेश्वरी सन धर्म परायण दू ननदि आ फलेश्वरी सन एक महिमामयी भाउजक चित्रण एक कलात्मक त्रिकोण बनि गेल अछि एहि महागाथामे। निस्सन्देह एहि महागाथाक अनमोल तीनू नारी चरित्र मिथिलांचल एवं मैथिली साहित्यक जाज्वलयमान धरोहरि थिक।

समकालीन समाजमे नारीक स्थिति अत्यन्त दयनीय छल जकरा मात्र भोग्या बुझल जाइत छलैक। समकालीन सामाजिक परिवेशमे महिलाक क्रय-विक्रयक व्यापार अवाध गतिएँ चलैत छल तथा नारीक हाट लगैत छल जकरा देखतहि लोकक ऑखिकेँ चकचोन्ही लागि जाइत छलैक। एहिमे वर्णित कुम्भा डोम द्वारा सुन्दरी-व्यापार तत्कालीन भारतीय नारीक हीन स्थिति आ नैराश्य पूर्ण जीवनक अति यथार्थपूर्ण चित्र प्रस्तुत करैत अछि। डोमराज कुम्भा नारीक क्रय-विक्रय कयनिहार वेश्या हाट लगौनिहार महादल छल। नारी समूहक जघन्य, बर्बर आ पाश्विक उपयोगक ई एक विलक्षण दस्तावेज थिक जे एहि ठामक सामाजिक इतिहासक अमिट दग्ध पृष्ठ कहल जा सकैछ। एहि हाटमे राजा लोकनिक रूपसी रानी राजकुमारी, अपहृता, उढ़रल, हता, परित्यक्ता, निर्वासिता, भ्रष्टा एवं पीड़िता ललना सभ रहैत छलीह। कुम्भा उदण्ड, अवण्ड आ प्रमृत्त छल। एहि महागाथामे वर्णित कुम्भा डोम द्वारा सुन्दरीक व्यापार, तत्कालीन भारतीय नारीक हीन स्थिति आ निराश जीवनक व्यथापूर्ण चित्र उपस्थित करैत अछि। डोमिन सभ पुरुषक प्रिय होइत छलीह आ अपना जुड़ामे फूलक गुच्छा गुम्फित करैत छलीह। ई सभ मसान भैरव आ योगिनीक पूजक होइत छलीह। एकरा सभक बीचमे किछु तान्त्रिक साधनाक प्रचलन छलैक। वामाचार सिद्धि लेल डोमिनक उपयोग कापालिक भैरव द्वारा कयल जाइत छल।

नैका बनिजारा कालीन सामाजिक पृष्ठभूमिमे डोमक अतिरिक्त चाण्डाल एवं धाङड़क सेहो विशेष चलती छलैक। चाण्डाल सतत अमानुषिक कार्यक लेल विख्यात छल। ओ ककरो हत्या सुपारी जकाँ कतरि क' करैत छल। धाङड़ सभ युद्ध प्रिय होइत छल आ निपुण अश्वारोही सेहो। समकालीन समाजक राजा लोकनि अपन विपुल धन राशि द' कए एकरा सभ शौर्यक उपयोग करैत छलाह। ओ सभ दस्युक काज करैत छल। ओहि कालक नागमणि बिछौटा धाङड़ प्रख्यात छल।

अनादि कालसँ मिथिलाक लोककंठमे लवहरि-कुशहरिक गाथा प्रचलित अछि। एहि गाथाक प्रसंग विविध पुराण एवं रामायणमे सेहो वर्णित अछि, किन्तु एहि गाथामे वर्णित वैदेहीक जे स्वरूप विधान अछि तकरा अन्तर्गत लवकुशक उत्पत्ति कथाक जे स्वरूप विधान अछि, से मिथिलाक एहि अमर लोकगाथाक तुलनामे झूस-झमान अछि। भारतीय आदर्शक श्रेष्ठतम नारीक व्यक्तित्वक एहन दिव्य उत्कर्ष जाहि उज्ज्वलताक संग एहिमे देदीप्यमान अछि ओकर स्वरूपक मौलिकता अन्यान्य अनगनितो इतिहास वा पुराणमे नहि उपलब्ध होइछ। एहि जनकंठ गाथामे जे उज्ज्वल आ अत्युच नारीक सृजन कयल गेल अछि ओ अन्यान्य वाङमयमे दुर्लभ अछि। एहि गाथाक पृष्ठभूमिमे सीमा अपन मातृभूमि मिथिलाक स्वर्णिम

साधना, परम्परागत सांस्कृतिक एश्वर्य आ लोकजीवनक सहज सौन्दर्य नेने विकसित भेल अछि। एहिमे मिथिलाक महान बेटीक अदम्य, सृजनात्मक प्रवृत्ति आ प्रभामय आध्यात्मिक व्यक्तित्व आलोकित भेल अछि। एहि लोकगाथाक स्वरूपक मौलिकता अछि जे सहस्त्रमुख रावण-वध ओ वनवासक प्रसंग सीताकेँ देल गेल अदण्ड-दण्ड सेहो एक विचारणीय विषय थिक। सीता द्वारा सहस्त्रमुख रावण वध जेना सीता चरितकेँ सहसा मुख्य रामायणसँ फराक क' अप्रत्याशित रूपेँ हुनका बहुत आगाँ आनि दैत छनि। सीताक जाहि जाज्ज्वलमान राममुक्त आ ऐश्वर्य मुक्त वैदेहीक व्यक्तित्वक विकास वाल्मीकि आश्रममे भेल, सहस्त्रमुख रावणवध आ वनवासक प्रसंग ओहि सशक्त कथाक पूर्वाभास वातावरणक रूपमे कलात्मक भावेँ चित्रित भेल अछि। एहिसँ आगू जे वैदेही-स्वरूप छविमय भेल, तकरा पाबि क' संसारक कोनो साहित्य आ इतिहासक पन्ना अनायासहि स्वार्णिम भ' सकैछ। सीताक जीवन-संघर्षक कथाक गर्भकेँ उद्घाटित करबाक क्रममे सीताक लेल वाल्मीकिक आश्रमक अत्यधिक महत्व अछि। सीताक जीवन-संघर्ष शारीरिक ओ मानसिक दुनू छनि। एहिमे लवकुशक जन्मक कथाक परिप्रेक्ष्यमे जगत जननीक जीवन संघर्षकेँ एहिमे पुनर्जीवित करबाक उपक्रम कयल गेल अछि।

लवहरि-कुशहरि लोक गाथामे सीताक ज्यार्तिमय आलम्बनसँ ई मिथिलाक स्वर्णिम परम्पराक महात्म्य गाथा थिक। ई लोक गाथा मिथिलाक अनुसंधानक एक अभिनव क्षितिजकेँ आलोकित करैत अछि। मिथिलामे वैदेही साधनाक अधिक प्रचार-प्रसार छलैक जकरा अन्तर्गत दुइ सम्प्रदाय विकसित भेल-ब्रह्मवादिनी सम्प्रदाय एवं भैरवी सम्प्रदाय। एहि गाथाक स्वरूप अद्भुत छैक। किछु गीत पुनः कथा, पुनः गीत तखन कथा। एकर विषय आ क्रम अत्यन्त स्पष्ट अछि। राम कथाश्रित सीता आ लवहरि-कुशहरि लोक गाथाश्रित सीताक मौलिकतामे अन्तर छैक। जतय राम कथाश्रित सीता सतत अश्रुमयी छथि ततय लवहरि-कुशहरि कथाश्रित सीता एक साधारण नारी छथि। राम कथामे सम्पूर्ण कथा रामाश्रित अछि, किन्तु एहि गाथामे सीताश्रित अछि। ई गाथा तीन खण्डमे विभाजित अछि- आयोघ्या खण्ड, वन खण्ड एवं कमल खण्ड।

लवहरि-कुशहरिमे मिथिलाक लोक मानस, अपन माटि-पानि, आघ्यात्मिक चिन्तन, परम्परा आ आचारक अनुकूल एक शक्तिमयी सीताक आराधना जे विदेह भूमि, विदेह जनक, विदेह गरिमा आ वैदेही दर्शनक पूर्ण प्रतिनिधित्व करैत शक्ति-साधनाकेँ उद्घाटित करैत अछि। एहिमे वर्णित सीता, लोक सीता छथि राज राजेश्वरी नहि। एहि गाथामे मिथिलाक स्वर्णिम साधना, परम्परागत सांस्कृतिक ऐश्वर्य तथा लोक जीवनक सहज सौन्दर्य विकसित भेल अछि। एहिमे मिथिलाक एहि महान बेटीक ज्वलन्त जीवन-संघर्षसँ शक्ति, अदम्य सृजनात्मक प्रवृत्ति

आध्यात्मिक व्यक्तित्व आलोकित भ' उठत अछि। मिथिलाक लोक जीवनक आ लोक-संस्कारक अपूर्व छवि एहिमे उपलब्ध अछि। ई गाथा मिथिलाक स्वर्णिम साधना, परम्परागत, सांस्कृतिक ऐश्वर्य आ लोक जीवनक सहज सौन्दर्य विकसित भेल अछि।

विश्व साहित्यमे एक साधारण नारी, राजा-रानीक अनेक गाथा उपलब्ध होइछ, किन्तु एक राज राजेश्वरीकेँ सहसा एक साधारण नारी बनि क' त्याग, चेतनामयी, ओजस्वी स्वाभिमान पूर्ण ओ सफल जीवनयापन करब एकमात्र एहि लोकगाथाक वैशिष्ट्य थिक। प्रतिकूल परिस्थितिकेँ धैर्यक संग अनुकूल बना लेबाक क्षमता एहि लोकगाथाक वैश्ष्ट्यि थिक।

मणिपद्म मैथिली लोकगाथाकेँ अमर बनयबाक दिशामे जे हुनक अवदान अछि ओ निश्चये एहि साहित्यमे हुनका अमरत्व प्रदान कयलक ताहिमे संदेह नहि। लोकगाथाक विवरणात्मक वर्णनक बिनु पारायण कयने एहिपर आधृत उपन्यासादिक अध्ययन हमरा जनैत अपूर्ण हैत। ओ जाहि अंशक निवेश अपन उपन्यासदिमे नहि क' फैलनि तकरा ओ लोकगाथाक इतिहासमे सन्निवेश कयलनि। प्रयोजन अछि एहि विषयक जे एहि लोकगाथा सभहिक सम्यक् रूपैँ संकलन, सम्पादन आ तकर प्रकाशन हो। किन्तु अद्यापि मैथिलीमे एहि दिशामे ने तँ अनुसन्धान भेल अछि आ ने अनुसंधित्सु एहि दिस उन्मुख भेलाह जे चिन्तनीय विषय थिक। मिथिलाक स्वर्णिम परम्परामे जटिल एहि गर्व रत्नी धरोहरिक अधिकाधिक अन्वेषण आ संकलन हो।

* * *

लोकनाट्य

जीवनमे लोक आ साहित्यक सर्वातिशायी महत्व अछि। लोक शब्द अत्यन्त प्राचीन अछि। आधुनिक सभ्यतासँ दूर, अपन प्राकृतिक परिवेशमे निवास कयनिहार तथाकथित अशिक्षित एवं असंस्कृत जनताकेँ लोक कहल जाइछ जकर आचार विचार एवं जीवन परम्परायुक्त नियमसँ नियंत्रित होइछ। लोक समाजक ओ वर्ग थिक जे अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता, पांडित्यक चेतना आ पांडित्यक अंधकारसँ शून्य अछि जे एक परम्पराक प्रवाहमे जीवित अछि। एहन लोकक अभिव्यक्तिमे जीवनक जे तत्व भेटैत अछि ओ हमर साहित्यक विकासक अवरूद्ध मार्गमे नव गति प्रदान करैत ओकरा संवर्द्धित करबामे अहं भूमिकाक निर्वाह करैत अछि। एहिमे जनजीवनक वर्त्तमान स्वरूपक उपस्थापन अत्यन्त मूलत: एकर पात्र समकालीन स्थितिक संकेत करैत अछि।

लोकायतनक समस्त विधा समवेतमे लोक नाट्यक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि जे अनेक रूपमे लोकजीवनक स्वस्थ मनोरंजन करैत आयल अछि। मिथिलांचलक लोकनाट्य एहि साहित्यक अमूल्य निधि थिक जाहिमे हमर सांस्कृतिक जीवनक आंचलिकता प्रचुर परिणामे उपलब्ध अछि। वस्तुत: लोकजीवनसँ स्वत: उद्भाषित लोकनाट्य ओहि क्षेत्रक सांस्कृतिक चेतनाक धरोहरि थिक। एहि सांस्कृतिक चेतनासँ निष्पन्न मैथिली लोकनाट्य हमर जीवन आ साहित्यक अविभाज्य अंग अछि।

लोक जीवनक स्वाभाविक अभिव्यक्ति लोकनाट्यमे भेल अछि। लोकनाट्यमे गीत, संगीत एवं नृत्यक त्रिवेणी प्रवाहित भेल अछि। गीतक संग संगीतक योजना अत्यधिक आनन्द प्रदान करैत अछि; किन्तु एकरा संग नृत्य सेहो हो तँ आनन्दक सीमा अनन्त भ' जाइछ। कालिदासक अनुसारेँ नाट्य जनमनक अनुरंजनक सर्वोत्कृष्ट साधन थिक। लोक जीवनमे एहि नाट्यक सर्वातिशायी महत्व अछि जकरा देखि क' प्रसन्नताक अनुभव करैछ। जहिना भोजपुरीक *विदेशिया*, गुजरातक *गर्वा* एवं *भवाई*, मालवाक *माच* बंगालक *यात्रा* एवं *गंभीरा*, महाराष्ट्रक *तमाशा* आदि लोकनाट्यमे गीत, संगीत एवं नृत्यक त्रिवेणी प्रवाहित भेल ताहिना मिथिलांचलक लोकनाट्यमे सेहो उपर्युक्त त्रिवेणीक अद्भूत समन्वय भेल अछि।

लोकनाट्य लोकजीवनक सारगर्भित भावसँ सम्पन्न तत्कालीन युगक प्रवृत्तिक मौलिक आख्यान करैत अछि। जीवनक कोनो परिस्थितिमे एकर सभक अभावमे क्यो जीवित नहि रहि सकैछ। लोक मानस अपन प्रवृत्तिकेँ मनोरंजकता प्रदान करबाक हेतु एक नव आयामक व्यवस्था कयलक जे कालान्तरमे साहित्य-विधाक रूपमे विकसित भेल। लोक जीवनसँ संबंधित विविध मांगलिक अवसर यथा पावनि-तिहार, धार्मिक, सांस्कृतिक लोकोत्सव आदिक विशेष परिस्थितिजन्य प्रक्रियासँ उद्भूत सामाजिक, धार्मिक एवं सास्कृतिक चेतनाक परिणाम थिक मैथिली लोकनाट्यक लोकधर्मी वैशिष्ट्य।

लोक महत्व:

नाट्यशास्त्रक टीकाकार अभिनवगुप्ताचार्य *धर्मी* शब्दकें व्याख्यायित करैत अपन मतक स्पष्टीकरण कयलनि जे अभिनय लोकधर्म वा लोकमूलक लोकोपयोगी सामयिक तत्वक अनुकरण करैछ।[1] नाट्याचार्य भरतक मान्यता छनि जे अभिनयमे मात्र अभिनेतेक प्रमुखता नहि रहैछ, प्रत्युत श्रोता एवं दर्शककेँ लोकशास्त्रक ज्ञान अपेक्षित अछि। लोकाचार, लोकभाषा तथा लोक-शिल्पक ज्ञाता दर्शक नाटकक वा अभिनयक वास्तविक आनन्द प्राप्त क' सकैछ। एहि प्रकारेँ नाटकमे वेद, आध्यात्म, व्याकरण, शास्त्र एवं छन्दशास्त्रक समन्वित दर्शन होइत अछि जाहिमे लोक मान्यताकेँ जीवन एवं साहित्यसँ अन्योन्याश्रय सम्बन्ध स्थापित भ' जाइत अछि। अतएव नाटकक सफलता वा विफलतामे लोकरुचि अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह करैछ।[2] एहि प्रसंगमे नाट्याचार्य भरतक मत छनि जे शास्त्र, धर्म, शिल्प तथा लोक-क्रिया, लोक धर्म प्रवृत्त रहैछ तकरे नाटकक कहल जाइछ। नाटकक लोकवृत्तिक अनुकरण करैत चलैछ। भरत लोक वृतान्तक अनुकरण क' कए नाटकक निर्माण कयलनि।[3]

लोक सब कार्यक अनुदर्शक अछि। वस्तुत: लोक जीवनसँ सम्वद्ध नाट्य एवं शास्त्र सम्मत नाट्यमे कोनो अन्तर नहि अछि। आदि आचार्य भरत एवं हुनक व्याख्याकार अभिनव गुप्तक कथन छनि जे लोकातीत अनुभवसँ नाट्य रसक प्राप्ति होइछ। भरत कालीन भारतमे साहित्य वा नागरिक नाट्य एवं ग्रामीण नाट्यमे कोनो अन्तर नहि छल। ई अन्तर तखन आयल जखन नाटकक राजदरबारमे संरक्षित भेल। नाटकक सर्व संग्रही नाट्य परम्पराकेँ गतिशील रखबाक हेतु गुप्त कालक पश्चात् प्रयोक्ता एवं नाट्याचार्यक प्रयाससँ आंचलिक एवं अनौपचारिक नाट्य-शैलीक उद्भावना भेल। एहि प्रकारेँ नाट्य-सिद्धान्तक प्रतिपादक एवं नाट्य लेखनक एक एहन श्रेणी बनल हैत जाहिमे नाट्याचार्य, निर्देशक तथा प्रयोक्ताक एक स्वतन्त्र वर्ग रहल होयतैक। लोक जनसाधारणक रुचि एवं

नाट्यकेँ लोक मानसक प्रतिपादक रहल होयतैक। तत्पश्चात लोकनाट्य अपन वास्तविक रूपमे सोझाँ आयल।[4]

लोकधर्मी नाट्यक स्रोत एवं क्षेत्र:

लोक जीवनक सहज संस्कार लोकधर्मी नाट्यक सहस स्रोत थिक। एहिमे आपसी प्रेम भाव, धार्मिक अनुष्ठान, मेला-ठेला, व्रत-त्यौहार तथा विविध सुख देनिहार लोकानुरंजनक मूलभूत विन्दु थिक। एहीसँ लोकधर्मी नाट्यक अन्त: सलिला प्रवाहित भेल। एकर स्रोत सामूहिक जीवन, टुटैत-जुटैत आ विकसित होइत अपन रूढ़ि परम्परा तथा प्रवृत्तिकेँ सुरक्षित रखने अछि तथा ई वाह्य वातावरण क' कोनो प्रभाव नहि पड़य देलक। एकर सृजन, प्रणयन प्रयोग एवं प्रवर्त्तनमे लोकजीवनक योगदान अछि जे सहित्यिक विशिष्ट अंग अछि। एकर प्रणयनमे प्रकृतिक विशाल कोरासँ अनायासहि एकर उत्पत्ति भेल। मेघक गर्जन, बिजलीक चमकब एवं गर्जब, प्रलयंकारी स्वरूप, मेघ बरसब, मोर नाचब, पतझड़, वसंत, हेमन्त आदि ऋतु प्रकृतिक अनन्त असीम लोकनाट्यक उद्गम एवं विकासक मूलाधार अछि जे लोक जीवनसँ नि:सृत भ' साहित्यक विशिष्ट अंग बनल।[5]

लोकनाट्यमे एखनो अवशिष्ट अछि तत्कालीन परिस्थितिक सुकुमारता एवं सुग्राह्यता। ओहिमे लोक जीवनक महत्वक प्रतिपादन भेल अछि तेँ एकरा लोकप्रिय होयब सवर्था स्वाभाविके। एकर काव्य भाग एवं प्रयोग भाग लोकधर्माश्रित अछि। लोकनाट्यमे जनसामान्यक अर्थात, लोक मनोरंजनमे हमर जीवनक, प्रतिबिम्ब भेटैछ जे साहित्यक अविभाज्य अंग अछि। एहि नाट्यक उत्पत्ति लोक-विश्वास, लोक प्रचलन, धार्मिक रूढ़ि, जन परंपरा वीर पूजा, मनोरंजन, उत्सव, मांगलिक पर्व एवं लोकादि अवसरक धारणाक बीचमे भेल। अतएव लोकनाट्यसँ तात्पर्य नाटकक ओहि स्वरूपसँ अछि जकर सम्बन्ध विशिष्ट शिक्षित समाजसँ भिन्न सर्वसाधारणक जीवनसँ अछि जे परंपरा अपन क्षेत्रक जनसमुदायक मनोरंजनक साधन रहल अछि।[6] एहिमे जनसामान्यक चाहे गामक होथु वा शहरक एतबे विशेषता अछि जे ओ शिक्षा-दीक्षा, पहिरब-ओढ़ब, खान-पान, आचार-विचार, संस्कार तथा व्यवहारमे ओहि क्षेत्रमे प्रतिनिधि संस्कृतिक प्रतीक रहथु एवं देशक जनसाधरणक मूर्त्त रूपमे स्पष्ट अछि।[7]

लोक-नाट्य कोनो जाति विशेषक संपत्ति नहि, प्रत्युत एकर क्षेत्र, जाति, समूह, गाँव, जिला, प्रान्तव्यापी प्रभाव थिक। एहि प्रकारेँ साहित्यकेँ परिपोषणक हेतु एहि नाट्य-परम्परामे अपन जनपदीय संस्कृति, अनुश्रुति, प्रचलित परंपरा, रूढ़ि किंवदन्ती, विश्वास, मान्यता एवं धारणाक सांगोपांग रूपमे परिवेष्ठित अछि। अतएव

ई एक क्षेत्र अपन जनपद विशेष धरि सीमित रहैत अछि। एहिमे भौगोलिक स्थिति, नृत्य,संगीत तथा कथा बीज सेहो अपन-अपन क्षेत्रक रहैत अछि। वस्तुत: लोकनाट्य समाजक सभ्य एवं सुसंस्कृत कहोनिहार लोकसँ सर्वथा भिन्न सभ्यताकेँ चोरौनिहार वाह्य आडम्बर एवं उपचारसँ अनभिज्ञ अपन रूढ़ि अर्थमे पूर्ण तथा शिक्षित एवं सुसंस्कृत होइत अछि।[8] लोक जीवनक परंपरा युगक अभीप्सा, अभिरुचि आ मान्यताक अनुसारेँ ई निरन्तर प्रवहमान रहल अछि।[9]

लोकनाट्य हमर परम्परापक धरोहर थिक। मुसलमानक आक्रमणक फलस्वरूप एहि परम्पराक शनै:-शनै: ह्रास होमय लागल। एहना स्थितिमे ग्रामीण परिवेशमे ई परम्परा सुरक्षित रहल।[10] एकर क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि। लोकधर्मी नाट्य जाति विशेषक संपत्ति थिक जे समुदाय विशेषक प्रतिनिधित्व करैछ। एहि प्रकारेँ ई नाट्य-विधा हमर गामक संपत्ति थिक जे अपन जनपदीय, संस्कृति, रूढ़ि, विश्वास, मान्यता एवं धारणाक सांगोपांग रूपमे परिवेशिष्ठित कयने एकर क्षेत्र जनपदे धरि सीमित रहि गेल।[11] भौगोलिक स्थितिमे नृत्य, संगीत तथा कथा बीज सेहो अपन विशिष्ट क्षेत्रमे प्रचलित अछि।

रचना–विधान :

लोकनाट्यक रचना-विधान शास्त्रीय नियमानुसार नहि होइछ। एहिमे लोक परंपरा तथा चिर विकसित नाट्य-रूढ़िक सर्वाधिक महत्व अछि। तात्विक दृष्टिएँ गीत, नृत्य, पुराण तथा यथार्थ जीवनक प्रसंग लोक-जीवनक कथानक प्रधानता अछि। एहिमे जीवन एवं प्रकृतिक सहज प्रति छवि होइछ। जीवनक विविध आनन्ददायक तत्वक सर्वाधिक महत्ता एकर प्रमुख स्वर थिक।[12] एकर वेशभूषा एवं श्रृंगार प्रसाधनमे कोनो प्रकारक तामझामक आयोजन नहि कयल जाइछ।

सामाजिक मान्यता :

लोकनाट्यक सामाजिक मान्यता अछि। एहिमे अनेक समस्याक विविध स्वरूपक विश्लेषण कयल गेल अछि। ई हमर सामाजिक इतिहासपर महत्वपूर्ण प्रकाश दैत अछि, कारण धर्म, नियम एवं सामाजिक परंपराक कठोरताक विरूद्ध नाट्य-कलाक संघर्ष चलि रहल छल।[13] लोक स्वभाव एवं लोक-व्यवहारक सुख-दु:खक अभिव्यक्ति एहिमे भेल अछि। वस्तुत: मनुष्यक सहज भावक अभिप्राय विशेषसँ एकर अभिनय प्राणवन्त भ' गेल अछि। एहिमे सामाजिक जीवनक सारगर्भित अभ्युदयक युगानुरूप विकासक यथार्थता प्रस्तुत कयल गेल अछि। एकर सुदीर्घ परम्परा आ क्षेत्रीय सरलताक कारणेँ ई जनजीवनक अत्यधिक सन्निकट रहल अछि। ई समाजक जीवन-शैलीमे सामूहिकता तथा

लोकानुरंजकताक प्रति पूर्ण प्रतिवद्ध अछि। ई लोकजीवनसँ समूहगत दायित्वसँ परिपूरित मनोरंजनक उत्सवकें ल' कए अबैत अछि जे लोकजीवनक सम्पर्कमे पल्लवित-पुष्पित भेल अछि। मिथिलांचलक लोकनाट्य समाजशास्त्रक दृष्टिएँ, अन्त: संबंधक अध्ययनक दृष्टिएँ अत्यधिक महत्वपूर्ण अछि। सामाजिक ओ सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे प्रदर्शनक रूपमे ई सभ नाट्य अधिक जनरुचिसँ सम्पोषित जनकल्याणक भावनाक हेतु पूर्ण प्रतिबद्ध अछि। मानव जातिक विकासक क्रमिकतामे लोकनाट्य रहि नर-नारीक आत्मानुभूतिकेँ स्पष्टतासँ मुखरित करैत रहल अछि।

मिथिलांचलक लोकनाट्य :

सम्पूर्ण मिथिलांचल ग्रामीण क्षेत्र अछि। ग्राम्य जीवनक प्रमुखताक कारणेँ लोकजीवनक जतेक भव्य स्वरूप एहिमे उपलब्ध अछि ततेक अन्यत्र दुर्लभ अछि। वस्तुत: मिथिलांचलक ग्रामीण जीवन सभ्यतासँ पृथक अछि तकर परिणाम एतबा अवश्य भेलैक जे ओ अपन प्राचीन स्वरूपकेँ तद्वत सुरक्षित रखने रहल। एकर, रूप, रंग एवं रसमे अद्यावधि कोनो परिवर्त्तन नहि भेल अछि। भौगोलिक दृष्टिसँ मिथिलाक बनाबटि एहन अछि जे एकर उर्वर भूमि हमर संस्कृतिकेँ यथावत सुरक्षित रखने अछि। एहन बनाबटि लोकनाट्यक हेतु सर्वथा अनुकूल अछि। इएह कारण अछि जे एतय अनेक लोकनाट्य सुरक्षित रहल। एहि भूमिमे लोकनाट्यक विविधताक दर्शन नहि होइछ। एक समान भूमि नाट्य रूपकेँ सीमित एवं संकीर्ण बनबैत अछि। नाट्य विविधता तथा विकासशीलताक हेतु भूमिक विविध रूपता आवश्यक प्रतीत होइछ। हमर लोकनाट्यक विशाल, सुदृढ़ ऐतिहासिक परम्परा अछि।

लोकमंच आ लोकनृत्य :

मिथिलांचलक विकास कहिया भेलक ई एक अहं प्रश्न अछि। मिथिलांचलक ई सौभाग्य रहल अछि जे लोकमंचक माध्यमे पृथक्-पृथक् क्षेत्रमे लोकारंजनक रूपमे ई जीवित रहल। लोक जीवनमे सुरक्षित ई रंगमंच ने तँ मात्र विशाल भूभागमे रंगमंचीय निरन्तरता बनौने रहल, प्रत्युत संस्कृत रंगमंच तथा सहज स्वाभाविक स्थानीय लोकनाट्य परंपराक एक मिश्रित समन्वित रूपकेँ शताब्दी धरि अक्षुण्ण राखलक। मैथिली रंगमंचक अध्ययनक ई एक पक्ष अछि जे मैथिलीक प्राचीन महत्वपूर्ण कला रूपमे पुनरूद्धार एवं पुनरूज्जीवन प्राप्त कयलक।

लोक मंचक दृष्टिएँ मिथिलांचक प्रचलित लोकनृत्यक महत्वपूर्ण स्थान अछि। लोकनृत्य वस्तुत: प्राकृतिक नृत्य थिक। लोक जीवनमे जतय कतहु भावुकताक क्षण अबैछ ततय ओकर अनुकूल कोनो–ने–कोनो नृत्यक रूप प्रकट होमय

लगैछ।[14] लोकनृत्यमे मिथिलांचलक सांस्कृतिक अन्तरात्माक प्रतिध्वनि गुंजित होइत अछि तथा एकरा माध्यमे लोक जीवनक दृश्य हमरा समक्ष अबैत रहल। एहन नृत्यक कथानकमे नैसर्गिक सुन्दरता एवं उल्लास एवं जीवनमे परिव्याप्त व्यापक दरिद्रतापर आधारित होयबाक कारणेँ अत्यधिक मर्मस्पर्शी, भाव-पूर्ण आकर्षक अछि। वस्तुत: लोकनृत्य हमर दुखमय जीवनकेँ सुखमय बनयबाक प्रयास करैछ। विशेषत: मिथिलांचलक लोकनृत्य एतेक प्राणवन्त अछि जे सतत हमर जीवनकेँ सुखमय बनौने रहल अछि।

अति प्राचीन कालहिसँ मिथिलांचलमे एहन लोकनाट्यक प्रचलन रहल जे समय-समयपर ओहिमे परिवर्त्तन, परिवर्द्धन आ परिमार्जन होइत रहलैक। एहि नाट्य प्रदर्शनमे वेशभूषा एवं श्रृंगार प्रसाधनक कोनो प्रयोजनक नहि पड़ैछ। पमरिया एवं नटुआक नाचमे घघरा अचकन एवं मुलतानी पगड़ीक प्रयोग कयल गेल अछि वर्त्तमान शताब्दीमे।[15]

यद्यपि मैथिली लोकमंचक स्वरूपक प्रसंगमे कोनो ठोस प्रमाणक अभाव अछि, किन्तु एतबा निर्विवाद अछि जे मिथिलामे गीत काव्यक उद्भव मनुष्यक वाणीक संगहि भेल। एतदर्थ मनुष्य जीवनसँ संबद्ध जीवनक प्रत्येक सुख दु:खक अवसर पर एकरा माध्यमे जीवनक चरम उद्देश्यक पूर्त्तिक प्रयास कयल गेल जकर दिग्दर्शन मिथिलांचल गोसाउनिक एवं पितरक गीतमे उपलब्ध अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे रागात्मक प्रवृत्तिक व्यापक संबंध मात्र उपनयन, विवाह आदिमे नहि रहि, कन्याक विदागरी कालक रागात्मक रूदन एवं मृत्यूपरान्त क्रन्दनमे सेहो परिलक्षित होइछ।

मैथिली लोकनाट्यक प्रकार :

मिथिलामे निम्नस्थ लोक नाट्यक अनुष्ठानगत परंपरा प्रचालित अछि जहिमे लोकमंचक स्वरूपक दिग्दर्शन होइछ यथा दसौत, सामा-चकेवा, झिझिया, जट-जटिन, झुम्मिर, रमखेलिया, डोमकछ, लोरिक, सलहेस, गोपीचन्द, विदापत, हरिलता एवं बिहुला आदिक उल्लेख लोकनाट्यान्तर्गत कयल जाइछ। एतदिरिक्त एतय अन्य प्रचलित लोकनाट्य अछि यथा चौपहरा, नारदी, नयना-योगिन, भाव, झड़नी, पमरिया आदिक उल्लेख सेहो भेल अछि जाहि दिशामे अनुसंधानक प्रयोजन अछि।

दसौत :

दसौतमे वर-कनियाकेँ लोक-जीवनसँ सम्वद्ध माया, मोह, आदिसँ अवगत करबाक हेतु एकर नाट्यायोजन कयल जाइछ। मानव जीवनक कटु दिग्दर्शन एवं

लोक जीवनसँ सम्वद्ध ज्ञानक अर्जन एहि नाट्यक उद्देश्य अछि जकर स्वरूप लोकगीतमे सुरक्षित अछि।

सामा-चकेवा :

सामा चकेवा-लोक नाट्यक संबंध मूलत: कृषिसँ अछि। एहि लोक नाट्याभिनयक द्वारा बहिन अपन भायक धनक अभ्युदयक कामना एवं हुनका घरमे धनधान्यक कल्पनाकेँ साकार करैत लक्ष्मीक आह्वान करैत अछि। आनुभाविक बुद्धिक आकुल चेष्टासँ सामाजिक अंकुश दग्ध होइछ। यौवनमे सौन्दर्यक पूर्ण विकास होइछ, आत्माक चिरन्तनक ध्वनि बनि जाइछ जे पतिहीना नारीक हेतु अभिशाप थिक। एकर कथोपकथनमे नारीक वास्तविक रूपक दिग्दर्शन होइछ।बहिनिक प्रति भायक अवलम्बन तँ रहितहि छैक, मुदा नारीक त्यागक भावना, पिताक सम्पत्तिमे भातीजक अधिकार तथा मात्र मोटरीक अंशपर संतोषमे आसक्तिक विरोध तथा विरिक्त भोगक विशिष्ट विचारक अभिव्यक्ति *सिनुर केर आसमे* सन्निहित अछि।[17] एहि नाट्याभिनयक परिपाटी मिथिलांचलक प्रत्येक वर्गमे प्रचालित अछि जे एकर सर्वव्यापकताक द्योतक थिक। एकर स्वरूप गीतात्मक अछि।

झिझिया :

झिझिया लोक नाट्याभिनयक रूप आन लोकनाट्याभिनयसँ सर्वथा भिन्न अछि। एहि लोक नाट्याभिनय द्वारा डाइन-योगिनक साधनामे व्यवधान उपस्थित कयल जाइछ। एकर स्वरूप सेहो गीतात्मक अछि।

जटजटिन :

जट-जटिन पद्यबद्य लोकनाट्य थिक। एहि लोक नाट्यक कथानक लोकजीवनक वैवाहिक जीवनक विविध समस्या, सुख-दु:ख पुरुषक पाशविक बलात्कारी प्रवृत्तिक बर्बरता, यौवनक विषम समस्याक अन्तर्ध्वनि एवं जीवनक विविध अनुभूति एहिमे स्वाभविक रूपेँ चित्रित भेल अछि। एहि लोकनाट्यमे अन्तर्द्वन्द्वक प्रमुखता अछि।[18] एकर प्रस्तावनामे सहगान एवं नृत्य सहित संवाद गीत द्वारा उत्सवक उल्लासक हेतु उद्दीपनक भावक प्रमुखता अछि। एहिमे उत्सवक लालसाक संग जीवनक अन्तक आशंकाक शाश्वत संयोगक मार्मिक उल्लेख अछि जे दाम्पत्य जीवनसँ सम्वद्ध घटनाक क्रमिक परिचय भेटैछ। एकर कथानक विवाहसँ प्रारंभ होइछ। एहिमे नारी स्वान्त्रताक ध्वनि अनुगुंजित होइत अछि। लोक मानसक माध्यमे एहि लोकनाट्यमे हमर जीवनक झाँकी भेटैत अछि।

एहि लोक नाट्याभिनयोपरान्त महिला द्वारा हर जोतबाक परम्परा अछि। अनावृष्टि भेलापर नग्न स्त्री द्वारा हर जोतबाक तथा बेंग कूटिक अपन पड़ोसिक आंगनमे फेकबाक परम्परा सेहो अछि।[19] वर्षाक अभावमे अकालक सांगोपांग चित्रण एहिमे उपलब्ध अछि। स्त्री द्वारा हर जोतब, ब्राहमण द्वारा दैनिक कर्मक अवहेलना तथा सामन्तवादक विरोधी प्रवृत्तिक मार्मिक चित्रण एहिमे भेल अछि। एहिमे पतिक प्रति पत्नीक शिष्टता, व्यवहार कुशलता एवं नम्रताक शिक्षा भेटैछ; किन्तु मुक्त, स्वतंत्र स्वावलंविनी तथा श्रमशीला सहचरीक चित्रांकन सेहो भेल अछि। अतएव जटिनक व्यावहारिक जीवन वेसी स्वाधीनता तथा समानाधिकार प्रिय अछि।[20] जट स्वाभावत: पत्नीपर अधिकार जमायब चाहैछ तथा पत्नीकेँ मनोनुकूल बनाबय चाहैछ जे मुग्धाक आचरणक सर्वथा प्रतिकूल अछि। एकर नाट्याभिनयकेँ अत्यन्त मनोरंजक बनयबाक हेतु रोहिदास एवं खोदपाड़नीक गीत गाओल जाइछ। एहि लोक नाट्याभिनयक आयोजन हमर जीवनकेँ मुखमय एवं समृद्धिमय बनयाबाक निमित्त कयल जाइछ।एहि प्रकार नाट्याभिनय मात्र मिथिलांचलेमे सीमित नहि, प्रत्युत तमिलनाडु एवं मध्यप्रदेशक संगहि विदेशमे ब्रिटिश कोलम्बियाक डॉमसन इन्डियनक बीच यूरोपमे सेहो प्रचालित अछि जकर चर्चा प्रेजर *द गोल्डेन वाउ* मे कयने छथि।[21]

झुम्मिर :

मिथिलांचलमे झुम्मरि लोकनाट्याभिनय प्रचलित अछि जे लोकजीवनक माध्यमे भाय-बहिनक उमड़ल स्नेहमे परलक्षित होइछ। एहिमे नि:स्वार्थ वात्सल्य रस पूरित हृदयक, जे अपन बाल गोपालक मंगल कामनाक हेतु पैघसँ पैघ प्रलोभनकेँ लात मारि सकैछ। एहिमे बहु विवाहक धमकी, खाद्यान्नक अभाव, अनमेल विवाह, श्रृंगार प्रसाधन, मनोरंजन, आभूषण आदि विविध पक्षपर प्रकाश देल गेल अछि जे मानव जीवनमे स्थायी महत्व रखैछ जाहिसँ स्पष्ट होइछ जे प्राचीन कालहिसँ अद्यावधि एहि लोकनाट्याभिनयक महत्व अछि। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे एहि लोकनाट्यमे कतिपय परिवर्त्तन भेल अछि। एकर भाषा, भाव, शैली आ विषय समसामयिकताक कोमल साँचामे परिष्कृत एवं परिवर्द्धित भेल जा रहल अछि।

रमखेलिया :

नेपाल तराई थारू एवं अहीरमे रमखेलिया सर्वाधिक प्रचालित लोकनाट्य अछि। एहि लोकनाट्यपर बंगलाक कृतिवासक रामायणक अधिक प्रभाव अछि। नेपालक उपत्यकामे देवीनाथ, ज्वापूनाच, महाकाली नाच आदिक अतिरिक्त सराय केलाक छाउ नाचमे सेहो मुखौटाक प्रयोग होइत अछि। रमखेलियामे सेहो मुखौटा

ओ अनेक उपकरणादिक प्रयोगसँ एकर प्राचीनता एवं समृद्धि परंपरा प्रतिभाषित होइत अछि। एकर संवाद गीतात्मक ओ गद्यात्मक अछि।

डोमकछ :

डोमकछक शाब्दिक अर्थ होइछ डोमक स्वांग। एकर अभिनय महिलाक द्वारा कयल जाइछ। एहिमे पुरुषक प्रवेश निषेध रहैछ। पुत्र विवाहक अवसरपर जखन घरक पुरुष वर्ग वरियात चल जाइत छथि तखन ओहि राति घर आंगनक ओ अड़ोस-पड़ोसक स्त्रीगण राति भरि खेल-खेल (डोमकछ)मे जागि जाइछ तथा चोरीक भयसँ समाजक रक्षा करैछ। डोमकछमे विवाहक सामाजिक आवश्यकतापर बल देल जाइछ। एकर कथोपकथन गीतात्मक ओ गद्यात्मक दुनू संवाद मैथिलीमे उपलब्ध अछि। एहिमे विवाहक सामाजिक आवश्यकताक संकेत भेटैत अछि।

लोरिक :

लोरिक वा लोरिकायन मैथिली लोक कंठक अनमोल रत्न थिक। एकर कथा पूर्वमे पूर्णियाँ उत्तरमे हिमपर्वत, दक्षिणमे गंगा तथा पश्चिमतमे ओदन्तपुर बिहारमे चर्चित अछि। एहि लोक नाट्यक चर्चा वर्णरत्नाकरमे सेहो उपलब्ध होइछ।

सलहेस :

मिथिलांचल एवं पूर्वी नेपाल तराइक जनजीवनमे ई नाट्य अत्यन्त प्रिय अछि। किन्तु मोरंगिया सलहेस एवं मिथिलांचल परिसरमे प्रचलित सलहेसमे किछु भिन्नता अछि। एकरो कथानक गद्य ओ पद्य दुनूमे उपलब्ध अछि। कतहु-कतहु कथोपकथन ओ दृश्यविधान मिश्रित गेल अछि। एहि लोकनाट्यमे विदूषकक चर्चा भेल अछि। सलहेसक संग सूरमा शब्दक प्रयोग भेल अछि जे ओकर वीरताक थिक।

गोपीचन्द :

प्रस्तुत लोकनाट्य भारतक विभिन्न भूभागमे प्रचलित अछि, किन्तु एकर उद्‌गमक श्रेय बंगालकेँ छैक। एकर कथानायक गोपीचन्द छथि। एहिमे मैनावतीक कार्यक्षमता ओ दीक्षित जीवनक प्रवाहपूर्ण वर्णन भेटैत अछि। एकर कथानकक सम्बन्ध नाथ सम्प्रदायसँ अछि जे सर्वशून्यकेँ परम तत्व मानैत छथि। एकर कथानक मिथिलांचल धरि सीमित नहि अछि, प्रत्युत आसामी, पंजाबी, गुजराती, मराठी एवं नेपालीमे सेहो उपलब्ध होइछ जाहिपर बंगालक स्पष्ट प्रभाव अछि। मिथिलांचलमे एहि लोकनाट्यक प्रस्तोता रूपमे गुदरिया बाबाजी जानल जाइछ।

विदापत :

पूर्णियाँ जिलामे विदापद नाट्यक आंचलिक परम्परा अछि। एकर प्रदर्शन मुक्त रंगभूमिमे नृत्य, संगीत ओ अभिनयक माध्यमे होइत अछि जकर मूलाधार अछि लोकधर्मिता जे पूर्वांचल समाजमे अपन अस्तित्व अक्षुण्ण रखने अछि। कृष्ण लीलाक साभिनय प्रदर्शनक कारणेँ विदापतमे एखनो अपूर्व भाव सौन्दर्य, श्रुति माधुर्य, लोकानुरंजन एवं प्रभावोत्पादकता अद्यावधि सुरक्षित अछि। एहि लोकनाट्यमे शास्त्रीय एवं लोक परंपराक अद्भूत सामंजस्य भेल अछि। एहिमे लोकधर्म, लोकाचार तथा लोक आदर्शक प्रमुखता अछि।

हरिलता :

एहि लोकनाट्यमे चित्रसेन, बुद्धसेन ओ धर्माविलोकक प्रेम कथाकेँ अभिनय द्वारा प्रस्तुत कयल जाइछ। लोकधर्मी नाट्यक सभ तत्व एहिमे मुखर अछि। एकर संवाद पद्यमय ओ गद्यमय दुनू अछि। एकर भाषामे प्रवाह, शैलीमे सरलता तथा कथोपकथनमे सशक्तता अछि। प्रेम गाथाक समायोजन तथा प्रस्तुतीकरणक उत्स जेना लगैछ जे ओ संभवत: मध्यकालीन प्रेम कथाक विश्रृंखलित कड़ीक संकेत करैछ जे कालान्तरमे लोकनाट्यक रूपमे प्रसिद्ध भेल।

बिहुला :

बिहुला महादेवक बेटी छलीह जे बारह वर्षक अवस्थामे वासुकी नागसँ परिणीता भेलीह। ओ गौरीकेँ काटैत छलीह आ पुन: मृत्यु मुक्तक दैत छलीह। एहिसँ महादेव प्रसन्न भ' हुनका वरदान देलथिन जे चान्दो बनियाँ द्वारा अहाँक पूजा हैत। किन्तु चान्दो बिहुलाक पूजामे अपन असमर्थता प्रगट कयलक जकर परिणाम भेलैक जे विषहरी चान्दोकेँ चेतावनी देलथिन तथा ओकर पुत्र सर्प दंशसँ मरि गेल। अन्तमे बाला कुमरक विहुलाक संग विवाहल गेल जे सर्प दंशसँ मृत प्राय छल; बिहुला अपन पतिव्रत धर्मसँ अपन पतिकेँ बचा लेलनि। विषहरी बिहुलाक पतिकेँ दंशक हेतु तैयार नहि भेल। विषहरी शेषनागक आराधना कयलक। ओ जादू-टोना, जड़ी-बुटीसँ बिज्जीक द्वारा ओकरा गंभीर निद्रामे राखलनि। किन्तु बिहुला आ बालाकुमार सुतल छलाह ओतय ओ गेल आ बाला कुमारकें दंश मारि देलक। बिहुला अपन मृत पतिकेँ जीवित करबाक हेतु इन्द्र, सूर्य आदि देवताक सान्निध्यमे गेल तथा ओकर पति पुन: जीवित भ' गेल। राय बहादुर दिनेश चन्द्र सेन बंगालमे जखन बिहुलाक कथा लिखलनि तत्पश्चात् एकर प्रचार अत्यधिक भेलैक। भागलपुर परिसरमे ई कथा एवं पूजाक विधान सेहो प्रचलित अछि। एक कथानक सोद्देश्यतासँ भरल नारीक आदर्श ओ पतिव्रताक अभिनयक रूपमे प्रख्यात अछि।

सीमांकन :

उपर्युक्त विश्लेषणसँ स्पष्ट भ' जाइछ जे प्रागैतिहासिक एवं ऐतिहासिक एहि कृतिमे लोक जीवनक चित्रांकन भेल अछि जे मैथिली साहित्यक अमूल्य निधिक चित्रांकन भेल अछि जे मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। एहिमे लोक जीवनक परम्परा, लोक विश्वास एवं अनुश्रुति रूपमे सुरक्षित रहल जे समयक गतिमे शनैः- शनैः हमर साहित्यकेँ प्रभावित कयलक। ई परम्परा चिरन्तनसँ विकसित होइत रहल तथा ओकर मान्यता ओकर प्रतिमान युगक अभिरुचिक अनुकूल परिवर्त्तित होइत गेल। एहि परंपराक चित्र, संगीत एवं अभिनयक वास्तविक विश्लेषण कयल जाय तँ ओहिमे लोक जीवनक स्पष्ट छाप परिलक्षित हैत। उपर्युक्त परम्पराक पृष्ठभूमिमे भरत, धनंजय, अभिनवगुप्त, नन्दिकेश्वर तथा रामचन्द्र गुणचन्द्र आदि नाट्याचार्य लोक जीवनसँ प्रेरणा ग्रहण क' कए नाट्यधर्मी नाटकक रचना करबाक प्रेरणा देलनि।

उपर्युक्त परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे मिथिलांचलक लोकमंच विभिन्न आख्यानपर आधारित भ' विकसित भेल जकर दिग्दर्शन उपलब्ध होइछ जाहिमे मिथिलांचलक लोकजीवनक विभिन्न समस्याकेँ प्रतिपादित कयल गेल जे हमर साहित्यक अक्षय भंडार थिक। सभ्यता एवं विकासक नामपर नागरिक जीवन लोक जीवनकेँ अनेक क्षेत्रमे प्रभावित कयने जा रहल अछि। एहना स्थितिमे प्रयोजन अछि मैथिली लोक अनुरंजक साधनकेँ यथावत संग्रहीत कयल जाय। मैथिली लोकनाट्यक अध्ययन मात्र मौलिक एवं ज्ञान विस्तारकेँ नहि, प्रत्युत लोक जीवनक सांस्कृतिक स्वरूपक संरक्षणक दृष्टिएँ हमर साहित्यक हेतु उपयोगी हैत।

आलोच्य नाट्य सभक अतिरिक्तो मिथिलांचलमे अनेक एहन लोकनाट्य अछि जे जीवन्त कथा तत्वसँ भरल, प्रदर्शन सार्वभौम सत्ताक अनुकूल अछि। एहिमे अल्लाह रुदल, रायरणपाल, गुगली घटवार, दुलरादयाल, दीनाभदरी, भगता, लुखेसरी, ढ़ोला कुँवर, काली विलास, विषहारा, अघोरी आदि विशिष्ट अछि जकर कथानक, कथोपकथन, अभिनय परम्परा, रंगमंच, रूप-योजना, भाषा-शैली लोकानुरंजन आदि हमर साहित्यक अति महत्वपूर्ण अंग अछि। मिथिलांचलक उपर्युक्त नाट्य रूप सभमे आधारभूत तत्वक अतिरिक्त स्थानीय विशिष्टता उपलब्ध होइत अछि जाहिमे हमर जीवनक अभिव्यक्ति भेल अछि जे साहित्यक अविभाज्य अंग थिक। ई लोकनाट्य लोकोनुरंजनक संगिह-संग लोकाभिव्यक्तिक सरल माध्यमक रूपमे प्रचलित अछि, तकरा आजुक परिस्थितिमे आवश्यकतानुसार उपयोगी बनाओल जा सकैछ। आधुनिक परिवेशमे संदेश प्रचारक हेतु मिथिलाक लोकमंच सर्वाधिक उपयोगी सिद्ध भ' सकैछ। मिथिलामे उपलब्ध कतिपय लोकनाट्यक गतिशील परम्पराकेँ विश्लेषण गवेषणा ओ अनुशीलन सौविध्यक दृष्टिएँ

उपयोगी अछि।

मैथिली लोकनाट्य हमर प्राचीन जीवन, जीवन प्रकृति ओ प्रवृत्तिक साक्षात स्वरूपकेँ स्थिर करबामे सहायक भेल आ तत्कालीन युगक लोक मानसक दशा-दिशाक अभिज्ञान अद्यावधि करबैत अपन युगधर्मक प्रति प्रतिवद्ध अछि। एहि संदर्भमे अद्यावधि प्रकाशित एवं विवेचित लोकनाट्यक सर्वेक्षणसँ ई तथ्य स्पष्ट भ' जाइत अछि जे सभक मूल आत्मा आ उद्देश्य समाने छैक जकरा नगरीय मंचपर समुचित रीतिएँ उपस्थापनसँ एकर भविष्य आ विकासमय, उज्ज्वलमय प्रमाणित भ' सकैछ। लोकनाट्य लोकजीवनक प्रागैतिहासिक जीवनक मौलिक दस्तावेज सदृश विश्लेषणक निष्कर्षपर गवेषणाक प्रयोजन अछि। ई हमर सांस्कृतिक जीवनक धरोहर थिक। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे आवश्यकता अछि जे एहि दिशामे अनुसंधान क' कए एकर समुचित प्रकाशनक योजना बनाओल जाय जे हमर संस्कृति सभ्यता, जीवनक लौकिक पक्ष साहित्य जगतक समक्ष आओत जे हमर जीवनकेँ प्रकाशित क' नवरश्मिसँ आलोकित क' सकत। मिथिलांचलक लोकनाट्य जनजीवनक दृष्टिसँ अलिक्षत भ' रहल अछि तकरा सभक समक्ष अनबाक आवश्यकता अछि जाहिसँ ओकर नवीनीकरणक प्रक्रिया द्वारा वैज्ञानिक आधार प्रदान कयल जा सकैछ।

संदर्भ :

1. हिन्दी अभिनव भारती, संपादक एवं भाष्यकार आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1960, पृष्ठ-435
2. मैथिली नाटकक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, मैथिली अकादमी, पटना, 1978 पृष्ठ-102
3. यानि शास्त्राणि ये धर्मायानि शिल्पानिया: क्रिया:। लोक धर्म प्रवृत्तान तानि नाट्ये प्रकीर्तितम्। नाट्यशास्त्र, संपादन - डॉ. मनमोहन घोष, मनीषा ग्रंथालय प्रा. लि., 4/3 बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता, 1967, अध्याय-26, श्लोक-124-125, पृष्ठ.221
4. मैथिली नाटकक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-103
5. परम्पराशील नाट्य, जगदीशचन्द्र माथुर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, 1969
6. लोक धर्मी नाट्य परंपरा, डॉ. श्याम परमार, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1958, पृष्ठ-30
7. भारतीय लोक नृत्य एवं सैद्धान्तिक अध्ययन, देवीलाल सामर, भारतीय लोक कला मंडल उदयपुर, 1976, पृष्ठ-1
8. लोक-नाट्य-परंपरा और प्रवृत्तियाँ, डॉ. महेन्द्र भावना, बाफना प्रकाशन जयपुर, 1971 पृष्ठ-4
9. मैथिली नाटकक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-109

10. आधुनिक हिन्दी साहित्य, डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद युनिवर्सिटी, संशोधित आ परिवर्द्धित संस्करण 1948, पृष्ठ-224
11. मैथिली नाटकक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-114
12. तथैव, पृष्ठ-114-115
13. तथैव, पृष्ठ-117
14. हिन्दी साहित्य कोष भाग-1. प्रधान संपादक-धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, द्वितीय संस्करण वसंत पंचमी 2020 पृष्ठ-751
15. मैथिली नाटकक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-127
16. तथैव, पृष्ठ-131
17. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, मैथिली अकादमी पटना, 1981, पृ-131
18. जट-जटिन, राजेश्वर झा, मैथिली साहित्य संस्थान पटना, 1971, पृष्ठ-4
19. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-47
20. Golden Bough, J. E. Frazer, Abridged Edition, 1960, Page-96
21. पूर्वांचलीय लोक साहित्य, चेतना समिति पटना, 1974, पृष्ठ-7

* * *

बीसम शताब्दी : स्वर्णयुग

अतीत आ भविष्यक संग सम्बन्ध स्थापित क' कए साहित्य अपन अस्तित्वक सत्यताक उद्घोषणा करैछ। विश्व-मानव अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक साहित्यक गवाक्षसँ अतीतक गिरिगह्वरक गुफामे प्रवाहित जीवन-धाराक अवलोकन करैछ आ अपन गम्भीरतम उद्देश्यक विविध प्रकारक साधन भूल आ संशोधन द्वारा प्राप्त करैत अपन भावी जीवनकेँ सिंचित होइत देखबाक उत्कट अभिलाषा रखैछ। अतीतक प्रेरणा आ भविष्यक चेतना नहि तँ साहित्य नहि। अतीत, वर्त्तमान आ भविष्यक कड़ीक अनन्त श्रृंखलाक रूपमे भावक सृष्टि होइत चल जाइछ आ मानव अपन प्रगतिक नियमादि, सिद्धान्तादिकेँ अपन वास्तविक सत्ताक विकासक मंगल कंगन पहिरि क' अपन दुनू हाथसँ आवृत्त कयने रहैछ। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर (1861-1941) क कथन छनि जे विश्व-मानवक विराट जीवन साहित्य द्वारा आत्मप्रकाश करैछ। एहन साहित्यक आकलनक तात्पर्य काव्यकार एवं गद्यकारक जीवनी, भाषा तथा पाठ सम्बन्धी अध्ययन तथा साहित्यक विविध विधादिक अध्ययन करब मात्र नहि, प्रत्युत ओकर सम्बन्ध संस्कृतिक इतिहाससँ अछि, मानव मनसँ, सभ्यताक इतिहासमे साहित्य द्वारा सुरक्षित मनसँ अछि।

उन्नैसम शताब्दीमे भारतवर्षमे नवजागरणक प्रबल ज्वार उठल। तकर कोनो प्रभाव मिथिलांचलपर नहि पड़ल, कारण मिथिलावासी प्राचीन परम्पराक पृष्ठपोषक रहलाक कारणेँ संस्कृत शिक्षामे लागल रहलाह आ अंग्रेजी शिक्षा तथा पाश्चात्य विचारधाराक महत्वकेँ नहि स्वीकारलनि। नवजागरणक फलस्वरूप षष्ठ दशकमे भारतीय परतन्त्रताक बेड़ीसँ मुक्त होएबाक निमित्त सन् 1857 ई.मे सिपाही विद्रोह कएलक। मिथिलाक नव शासक मैथिलीकेँ कोनो स्थान नहि देलनि। एहि दशकक अन्तिम बेलामे मिथिलाक प्रशासन *कोर्ट ऑफ वाड्‌र्स क अधीन* चल गेल जकर प्रभाव मिथिलापर पड़लैक जे एहिठामक निवासीकेँ प्रथमे-प्रथम पश्चिमक स्पर्शानुभूति भेलनि। किन्तु दुर्भाग्य भेलैक जे कोर्ट ऑफ वाड्‌र्स द्वारा मिथिलाक भाषा मैथिली आ ओकर लिपिकेँ बहिष्कृत क' कए ओकरा स्थानापन्न कयलक उर्दू आ फारसी तथा देवनागरी। मिथिलेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (1858-1898)क गद्दीनशीन भेलापर उन्नैसम शताब्दीक अष्टदशकोत्तर कालमे मिथिलावासीक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे नव चेतनाक संचार भेलैक। हुनक चुम्बकीय व्यक्तित्व, कृपापूर्ण व्यवहार, विद्या व्यसन आ असीम देशभक्ति एवं दानशीलताक

फलस्वरूप विद्वान साहित्य सर्जककेँ आकृष्ट कयलक। हुनक उत्तराधिकारी मिथिलेश महाराज रमेश्वर सिंह (1898-1929) सेहो उक्त परम्पराकेँ कायम रखलनि।

उन्नैसम शताब्दीक अष्टदशकोत्तर कालमे भारतीयमे अभूतपूर्व जनजागरण भेलैक, जकर फलस्वरूप स्वतन्त्रता संग्रामक नव स्फुलिंग जागृत भेल आ ओ सभ स्वतन्त्रताक निमित्त अत्यधिक सचेष्टताक संग सन्नद्ध भेलाह, जकर प्रभाव साहित्य सृजनिहारपर पड़लनि। यद्यपि शताब्दीक अन्तिम वर्ष धरि धार्मिक आ सांस्कृतिक चिन्तनपर रूढ़िवादिताक पुनः प्रकोपक विस्तृत छायासँ बौद्धिक आ साहित्यिक प्रगतिक समक्ष अवसादपूर्ण वातावरणक परिव्याप्त भ' गेलैक। तथापि मैथिली साहित्य जगतमे उत्कर्ष अनबाक निमित्त अपन परम्परागत परिधानक परित्याग क' नव प्रवृत्तिक रचनाकारक प्रादुर्भाव भेल जाहिमे मातृभाषानुरागी आ प्रकाशनक सौविध्यसँ साहित्य नव रूप धारण करय लागल जकर नेतृत्व कयलनि कवीश्वर चन्दा झा (1830-1907), कविवर जीवन झा (1848-1912), पण्डित लालदास (1856-1921), परमेश्वर झा (1856-1924), तुलापति सिंह (1859-1914), साहित्यरत्नाकर मुन्शी रघुनन्दन दास (1868-1945), मुकुन्द झा बक्शी (1860-1938), जीवछ मिश्र (1864-1923), चेतनाथ झा (1866-1921), खुद्दी झा (1866-1927), मुरलीधर झा (1868-1929), जनार्दन झा *जनसीदन* (1872-1951), सर गंगानाथ झा (1872-1941), दीनबन्धु झा (1873-1955), रामचन्द्र मिश्र (1873-1938), बबुआजी मिश्र (1878-1959), गुणवन्तलाल दास (1880-1943), कुशेश्वर कुमर (1881-1943), विद्यानन्द ठाकुर (1890-1950), कविशेखर बदरीनाथ झा (1893-1974), पुलकितलाल दास (1893-1943), गंगापति सिंह (1894-1969), उमेश मिश्र (1896-1967), धनुषधारीलाल दास (1896-1965), भोलालाल दास (1897-1977), अमरनाथ झा (1897-1955), राजपण्डित बलदेव मिश्र (1897-1965), कुमार गंगानन्द सिंह (1898-1970), ब्रजमोहन ठाकुर (1899-1970) एवं रासबिहारीलाल दास आदि-आदि जे विविध साहित्यिक विधादिक जन्म देलनि आ एकरा सम्वर्द्धित करबाक दृढ़ संकल्प कयलनि।

वस्तुतः विगत शताब्दी मैथिली साहित्यक हेतु एक क्रान्तिकारी युगक रूपमे प्रस्तुत भेल। अंग्रेजी राज्यक स्थापना देशक साहित्यिक, वैज्ञानिक, राजनैतिक, आर्थिक आ सामाजिक क्षेत्रमे एक नव स्फूर्ति प्रदान क' कए मिथिलांचलक जीवन-शैली आ सोचक पुनसंस्कार कयलक। एहि शताब्दीमे आधुनिक शिक्षा, छापाखाना आ सरल यातायातक सुविधाक अभाव रहितहुँ मैथिलीमे साहित्य सृजनक परम्परा वर्त्तमान रहल। बहुतो दिन धरि मैथिली साहित्य, संस्कृत साहित्यक प्रतिछाया सदृश रहल। एहिमे साहित्यिक एवं अन्य प्रकारक लेखन निरन्तर होइत रहल।

दुइ विश्व युद्धक बीचक कालमे मैथिली साहित्यक सर्वांगीन समुद्धारक चेतना अनलक। एहि कालक लेखनमे ई नव मनोदशा प्रतिफलित भेल आ साहित्यक विभिन्न विधामे उल्लेख्य योग्य परिवर्तन भेल।

यथार्थतः मैथिली सहित्य अपन परम्परावादी प्रशस्त मार्गक परित्याग क' कए गद्यक आश्रय ग्रहण क' नवीन मार्गपर डेग राखि शनैः-शनैः अग्रसर भेल तकर श्रेय आ प्रेय दुनू विगत शताब्दीकेँ छैक जे साहित्य सरिताक प्रवहमान धारा सदृश कलकल छलछल करैत अग्रसर भेल, तकर साक्षी थिक विभिन्न विधादिक साहित्येतिहासक प्रकाशन। एहि स्वर्णिम कालक सहस्राब्दीक सम्पूर्ण साहित्यकेँ स्थूल रूपेँ दू धारामे विभाजित कयल जा सकैछ - काव्य-धारा आ गद्य-धारा। युगसंधिक उत्कर्ष बेलामे साहित्यिक गतिविधिक क्षेत्र काव्यसँ बेसी गद्यकेँ प्रधानता भेटल। लोकक ध्यान राजनीति आ सामाजिक सुधार दिस गेलैक आ काव्यक विकासक लेल अनुकूल आराम वा पलखतिक वातावरण आब नहि रहलैक। नवोदित रचनाकारकेँ कविता सदृश विलास-वस्तुक लेल साधन आ समय नहि रहलनि। युगसन्धिक उत्कर्ष बेलामे उद्भूत विभिन्न साहित्यिक विधादि भीतिपर दृष्टि निक्षेप अकारान्त क्रमसँ कयल जाइत अछि, जे विगत शताब्दी कोन रूपेँ एकरा स्वर्णकाल उद्घोषित करबाक दिशामे अवदान कयलक तकर संक्षिप्त रूपरेखा अपनेक समक्ष प्रस्तुत कयल जा रहल अछि।

काव्य-धारा :

कविता सकल जीवनकेँ अपनामे समाहित करैत अछि आ मैथिली कविता एकर अपवाद नहि। विगत शताब्दीक मैथिली काव्यधाराक सर्वेक्षणसँ ज्ञात होइछ जे काव्यकार दुइ भागमे विभक्त छथि - किछु तँ परम्परागत रूपक अनुयायी छथि तँ किछु नव प्रयोग कयनिहार सेहो। शताब्दीक सन्धि बेलामे मैथिली काव्यकेँ पारम्परिक एवं नवीन दुनू रूपमे अभिव्यक्ति भेटलैक। पारम्परिक एवं आधुनिक काव्य जटिल रूपेँ मिझरा गेल अछि। काव्यकार लोकनि लोकप्रिय धुन एवं शैलीपर आधारित गीतक रचनाक सामाजिक, राजनीतिक चेतना जगयबाक प्रयास कयलनि। स्वाधीनताक पश्चात् मैथिली काव्यकेँ आगू बढ़यबामे मैथिली पत्रिकादि महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक। स्वाधीनोत्तर काव्यक प्रवृत्ति सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितिक कारणेँ आ समाजवादी विचारधाराक प्रसादक कारणेँ प्रगतिशील कहल गेल अनेक काव्यक रचना भेल। चीनी आक्रमण तथा पाकिस्तानक संग भेल युद्धसँ राष्ट्रवादी जोश, एकताक भावना एवं देश-भक्तिक स्फुरण भेल। राष्ट्रीय जागरण एवं वीरताक चित्रण करैत कतोक काव्यक रचना भेल। मैथिली काव्य-धारा भारतीय भाषाक समकालीन प्रवृत्तिसँ सेहो प्रभावित भेल।

किछु कवि एहनो दृष्टिगोचर भ' रहल छथि जनिक रचनामे कोनो विशेष प्रवृत्तिक कारणेँ हुनका फराक कयल जा सकैछ। आलोच्य कालक काव्य-साहित्यकेँ निम्नस्थ वर्गमे विभाजित कयल जा सकैछ :

i. महाकाव्य, खण्डकाव्य, प्रबन्ध काव्य।
ii. पारम्परिक गीति काव्य।
iii. मुक्तक काव्य।
iv. नव रूप आ नव विषय एवं अन्यान्य जकरा अन्तर्गत पद्यवद्ध कथा, हास्य ओ व्यंग्य, प्रगतिशील, देशप्रेम, देशभक्तिपरक सम्बोधगीत एवं शोक गीत, प्रेम ओ श्रृंगार तथा नव कविता।

विगत शताब्दीक सत्तरिक दशकक मध्यमे किछु युवा कवि नवकविताक रचना करब प्रारम्भ कयलनि। जीवनक प्रति रुचि, मानवीय मूल्य आ वातावरणमे परिवर्त्तन तथा व्यक्तिवादी प्रवृत्ति एहन कविताक प्रमुख स्वर अछि। एहि आन्दोलनक फलस्वरूप काव्य साहित्यमे परिवर्त्तनक स्वर गुंजित होमय लागल जे सम्पूर्ण साहित्यमे दृष्टिगोचर होइछ।

विवेच्य शताब्दीमे कविक ध्यान आजुक मानव एवं ओकर बहुविध समस्या तथा ओकर बहुविध तत्व दिस विशेष रूपेँ आकृष्ट भेल अछि, तथापि प्राचीन विषय-वस्तु जेना सत्यता, वीरता, प्रेम, पराक्रम आदि तँ आदर्श रूपेँ रहबे करत। एहि प्रकारेँ आधुनिक काव्य-धारा विषय-वस्तुक क्षेत्रमे निस्संदेह समृद्ध भेल अछि, तथा नव-नव काव्य रूपक सेहो स्थापित भेल अछि। अभित्राक्षर वा मुक्तवृत्त तथा अनेक नव-नव लय तथा छन्द-बन्धनक सफल प्रयोग एहि युगक प्रवृत्ति भ' गेल अछि।

छन्दकेँ वर्त्तमान पीढ़ीक कवि पूर्णतः त्यागि देलनि मे एक ध्यानाकर्षक वैलक्षण्य थिक। स्वयं कोनो मौलिक छन्द उद्भाषित करबाक एकोगोट प्रयोग नहि देखि पड़ैछ। एहन काव्यकारक संदर्भ, संकेत, उपमा, प्रतीक सभ नव-नव आ पारम्परिक कविताक रसिक लोकनिकेँ काव्योपयुक्त शब्द राशि छलनि तँ ऐंस्ट (ANGST) युगक बहुतो कवि अपन नव शब्द भण्डार बनौलनि। एकर कारण थिक जे कवि लोकनि कृत्रिमताक कोनो खास दर्शन अपनौलनि। नव तूरक कोनो कविक विषयमे ई नहि कहल जा सकैछ, जे आयामिक वा अन्य प्रकारक कोनो खास वादक प्रभाव हुनकापर पड़लनि अछि। तथापि बहुतो दृष्टान्त, सन्दर्भ, संकेत, प्रतीक, मिथकक प्रयोग तथा शब्दावलीमे किछु प्रभाव ताकल जा सकैछ। काव्य-भाषा, विम्ब आ अलंकारक क्षेत्रमे हुनका सभकेँ नव-नव उद्भावना करबाक छनि।

गद्य-धारा :

आधुनिक भारतीय भाषामे गद्य-साहित्यक आविर्भाव भारतीय जीवनमे ओहि

मंजिलक द्योतक थिक, जखन मध्ययुगीन वातावरणसँ बहरा क' वैज्ञानिकताक प्रतीक बनल। हमर समग्र गद्य साहित्य जीवनक परिष्करण आ उत्थानक साहित्य थिक। आइ एकरा माध्यमे हम अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञानक सम्पर्कमे अयलहुँ। मुसलमानी शासन कालमे अरबी-फारसी साहित्यक सम्पर्क भेलासँ गद्य रचनाकेँ प्रोत्साहन नहि भेटि सकल। पूर्व आ पश्चिमक सम्पर्कक फलस्वरूप नव-चेतना उत्पन्न भेल, समाज अपन हेरायल शक्तिकेँ जमा क' गतिशील भेल, साहित्यमे गद्यक श्रीवृद्धि भेल। अतएव विगत शताब्दी मैथिली गद्यक स्वर्णकाल थिक। आब तँ ई साहित्यक प्रधान अंग बनि गेल अछि। एहि समयमे मिथिलांचल वासी पश्चिमक एक सजीव आ उन्नत्तिशील जातिक सम्पर्कमे अयलाह आ ओ जाति अपना संग यूरोपीय औद्योगिक क्रान्तिक पश्चात् सभ्यता ल' कए आयल। नवीन शिक्षा पद्धति, वैज्ञानिक आविष्कारादिक प्रवृत्तिसँ मैथिली साहित्य अछूत नहि रहल। शासन सम्बन्धी आवश्यकता तथा जीवन परिस्थितिक कारणेँ गद्य सदृश नवीन साहित्यक माध्यमक आवश्यकता भेल आ वास्तवमे गद्य द्वारा मैथिलीमे आधुनिकताक बीज वपन भेलैक। वस्तुतः नवयुगमे नव शिक्षा-पद्धतिमे पालित-पोषित शिक्षित समुदायक आविर्भावक कारणेँ मैथिली गद्य-परम्पराक क्रमवद्ध इतिहास विगत शताब्दीसँ उपलब्ध भ' रहल अछि। नवीनता जँ भेटैत अछि मात्र गद्यक रूपमे। नवीनता एहि अर्थमे जे ई साहित्यक प्रमुख आ स्थायी अंग बनि गेल अछि। गद्यक अटूट परम्परा भेटैछ जे एकर उज्ज्वल भविष्यक संकेत करैछ। मिथिलांचलमे आधुनिकताक बीज वपन गद्य रचनासँ मानल जयबाक चाही। वास्तवमे गद्यक इतिहास मिथिलांचलक जीवनमे बढ़ैत पाश्चात्य प्रभावक इतिहास कही तँ अनुचित नहि हैत।

गद्य-साहित्यक प्रसंगमे ई बात स्मरण रखबाक चाही जे विगत शताब्दीमे अधिकांश उपयोगी आ व्यावहारिक विषयसँ सम्बन्धित रचना भेल। वर्त्तमान समयमे गद्यमे अनुवाद, आलोचना, इतिहास, उपन्यास, कथा, नाटकक-एकांकी, निबन्ध, पत्रिका तथा विविध रूपमे रचित गद्य साहित्यक रचना भ' रहल, कारण जाहि-जाहि साधन द्वारा गद्यक विकास भेल अछि ओ सभ नवीन आवश्यकताक पूर्तिक लेल व्यावहारिक दृष्टिकोणमे सन्निहित अछि। साहित्यकार सभक द्वारा एकरा सजयबाक आ सवारबाक कार्य कयल गेल। मैथिली गद्यक गाथा मिथिलांचलक नवजीवनक प्रभातकालीन चेतना, स्फूर्ति, ग्राहिका शक्ति आ गतिशीलताक आशा भरल गाथा थिक। जाहि दिन गद्यक कोनो प्रथम पृष्ठ प्रेसमे मुद्रित भेल हैत से दिन निस्सन्देह साहित्यक क्रान्तिक दिन रहल हैत।

अनुवाद :

विगत शताब्दीक चतुर्थ दशकमे मैथिली साहित्यान्तर्गत अनुवादक सूत्रपात भेल। आम्भिक कालमे ओकर गति मन्थर रहलैक; किन्तु स्वाधीनताक पश्चात् एकर

विकासमे गति आयल आ वर्त्तमान समयमे ई एक अत्यन्त सशक्त विधाक रूपमे प्रतिफलित भेल अछि तथा एकर सर्वोपरि उपलब्धि थिक जे प्रचुर परिमाणमे गद्य आ पद्य प्रकाशमे आयल अछि। एहि प्रकारक साहित्यिक उपलब्धि अतीतमे नहि छल। आधुनिक, प्राचीन भारतीय भाषाक संगहि संग पाश्चात्य भाषा आ साहित्यक सहस्राधिक गद्य-पद्य मैथिली गद्य साहित्यक श्रीवृद्धिमे सहायक भेल अछि।

आलोचना :

साहित्यिक सृजन आ ओकर आलोचनाक धारा समानान्तर चलैछ। प्रत्येक युगक साहित्य एक एहन आलोचनाक उद्भावना करैछ जे ओकर अनुरूप होइछ। एहि प्रकारेँ प्रत्येक युगक आलोचना सेहो ओहि युगक रचनाकेँ अनुकूल स्वरूप प्रदान करैछ। वस्तुतः देश आ समाजक परिवर्त्तनशील प्रवृत्ति एक भाग साहित्य निर्माणकेँ दिशा दैछ आ समीक्षा ओकर स्वरूप निर्धारित करैछ। अतएव रचनात्मक साहित्यक इतिहास आ समीक्षाक इतिहासमे धारावाहिकताक समानता रहैछ।

मैथिलीमे आलोचनाक उदय विगत शताब्दीमे भेल आ एकर विचित्र स्थिति अछि तथा ई ओकर सभसँ दुर्बल अंग थिक। विवेच्य कालक मैथिली आलोचना विधाक सम्पूर्ण विकास यात्राकेँ दृष्टिमे राखि हम एकर तीन रूप निर्धारित कयल अछि। प्रथम रूप संस्कृत समालोचना सिद्धांत वा निर्णयात्मक अछि। एहि प्रणालीक अनुगमन कयनिहार संस्कृत आचार्य लोकनिक रूप थिक। द्वितीय अछि पाश्चात्य समालोचना सिद्धांत। तृतीय रूप अछि जाहिमे प्राचीन भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक समन्वय कयल गेल अछि। जीवनक नव परिस्थिति एवं नव सामाजिक चेतनाक कारणेँ विशुद्ध भारतीय दृष्टिकोण अपनायब तँ असम्भव थिक। किन्तु दुर्भाग्यवश अन्य दू रूपक कोनो विशिष्ट आ निश्चित परम्परा स्थापित नहि भ' सकल अछि। साहित्यक उत्कर्षक सन्धि-बेलामे आलोचना शास्त्र विभिन्न मत वादक अजायब घर बनि गेल अछि। ओकर प्रधान आधार वैयक्तिक रुचि-अरुचि अछि ने कि कोनो सिद्धान्तक आधार। एकहि आलोचकक समीक्षामे परस्पर विरोधी बात आ ओकर सुसंगत रूप नहि भेटैछ।

वर्त्तमानमे प्रवणता सभसँ बेसी देखल जाइछ जे भारत एवं पाश्चात्यक विभिन्न विश्वविद्यालयमे मैथिली विषयपर अनुसंधान भेल अछि आ भ' रहल अछि, जकर संख्या लगभग तीन सहस्रादिसँ अधिक अछि। किन्तु मैथिली अनुसंधानक जे स्थिति अछि ताहिपर कतिपय प्रश्न चिन्ह लागि गेल अछि। अधिकांशतः अनुसंधान अप्रकाशित अछि। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे ओकर प्रकाशनक प्रयोजन अछि, जाहिसँ यथार्थ स्थितिक रहस्योद्घाटन भ' सकय तथा ई विधा अभिवद्धिति भ' सकय।

इतिहास-लेखन :

साहित्येतिहासक लेखन तँ ओहि साहित्यक दर्पण समान होइछ जकर अवलोकनहिसँ साहित्यक यथार्थताक परिज्ञान पाठककेँ होइछ। विगत शताब्दीकेँ स्वर्णकाल उद्घोषित करबाक आ मातृभाषानुरागी प्रबुद्ध पाठककेँ अपन मातृभाषाक गौरव-गरिमाक आख्यान प्रस्तुत करबाक लेल कतिपय इतिहासकार एकर साहित्यिक परम्पराक पुनराख्यान निमित्त साहित्येतिहासिक ग्रन्थक रचना आ ओकर प्रकाशन कयलनि। किन्तु एहि साहित्येतिहासक ग्रन्थक अवलोकनोपरान्त निराश होमय पड़ैछ, कारण निष्पक्ष भावेँ मैथिलीक वैज्ञानिक पद्धतिक अनुसरण क' कए अद्यापि इतिहास नहि लिखल गेल अछि जे चिन्तनीय विषय थिक। प्रत्येक इतिहासकार दलगत भावनासँ उत्प्रेरित छथि जाहि कारणेँ महत्वपूर्ण कृतिकारक चर्चा पर्यन्त नहि भ' सकल अछि। एहि सन्दर्भमे हम दुइ इतिहासक चर्चा करब। साहित्य अकादेमीक सत्प्रयाससँ *इण्डियन लिटरेचर सिन्स इण्डिपेनडेन्स* (1973) प्रकाशित भेल जकेर त्रुटिक विषयमे मिथिला मिहिरक कतोक अंकमे एकर भर्त्सना कयल गेल। युग-संधिक उत्कर्ष बेलामे *ए हिस्ट्री ऑफ मोडर्न मैथिली लिटेरेचर* (2004) प्रकाशमे आयल अछि जकरा कतिपय कारणेँ साहित्य जगतमे विवादास्पद ओ अपूर्ण सेहो अछि जकरा इतिहास कहबामे संकोचक अवबोध होइछ। वर्त्तमान संदर्भमे प्रयोजन अछि एक एहन साहित्येतिहासक जाहिमे साहित्यिक यथार्थ स्वरूपक उद्घाटन हो तथा उपेक्षित लेखक लोकनिक कृतित्वक सम्यक रूपेण उल्लेख प्रवृत्तिक अनुरूप हो।

उपन्यास :

आधुनिक भारतीय भाषा साहित्यक अन्तर्गत उपन्यास लेखनक प्रादुर्भाव पश्चिमक नव सभ्यता आ प्रिंटिंग प्रेसक देन थिक आ मानव जीवनकेँ समग्र रूपसँ देखबाक प्रयास मैथिली उपन्यासान्तर्गत विगत शताब्दीक प्रथम दशकमे भेल। ई.एम.फॉस्टर (1879-) क कथन छनि जे जीवनक गुप्त रहस्यकेँ समग्र रूपसँ अभिव्यक्तिक क्षमता जतेक उपन्यासमे अछि ओतेक अन्य कोनो विधामे नहि। इएह कारण अछि जे विगत शताब्दीमे उपन्यास अपन सीमाक कारणेँ महत्वपूर्ण विधाक रूपमे साहित्यमे प्रवेश पौलक तथा प्रधान साहित्यिक रूप बनि गेल जकरा द्वारा मानव अपन वाह्य एवं आन्तरिक समस्यादिकेँ सोझरयबाक प्रयासमे संलग्न अछि।

मिथिलांचलक नव-चेतना, आकांक्षा आ विषमता, राष्ट्रीय संग्रामक विभिन्न मतवाद सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक विषमता आदिक अभिव्यक्ति मैथिली उपन्यासक प्रमुख रूपेँ मुखरित भेल। विगत शताब्दीक चतुर्थ दशकक आम्भिक साल मैथिली उपन्यास जगतमे विशेष महत्व रखैत अछि। *मिथिला* (1929) मासिक पत्रमे

हरिमोहन झा (1908-1984)क *कन्यादान* धारावाहिक रूपेँ उपन्यास प्रकाशित होमय लागल। उपन्यास लिखबाक प्रेरणा हुनका जनार्दन झा जनसीदनसँ भेटलनि। स्त्री-शिक्षाक आवश्यकता तथा नव-पुरान सम्बन्धी विचारक संघर्ष देखयबाक लेल एकर रचना कयल गेल छल। पुस्तकाकार प्रकाशित होइतहि ई उपन्यास लोकप्रिय भ' गेल। सामाजिक जीवनक एतेक व्यापक चित्रण एहिसँ पूर्व नहि भेल छल। सामाजिक कुरीतिक पर्दाफाश होइत देखि क' रूढ़िवादी तिलमिला गेलाह, किन्तु नवयुवक वृन्द एकर स्वागत कयलनि। एहि उपन्यासक प्रभाव मुख्यतः तीन रूपमे पड़ल-प्रथम समाजक मनोवृत्तिपर, द्वितीय कन्या लोकनिक व्यक्तिगत जीवनपर तथा तृतीय मैथिली लेखक समुदायपर।

जतय स्वाधीनतापूर्व मैथिली उपन्यासक संख्या अत्यल्प छल ततय स्वाधीनोत्तर युगक प्रवेश एहि विधामे नव स्पन्दन आनि देलक आ एकर सहस्त्रमुखी धारा प्रवाहित भेल आ युगसंधिक उत्कर्ष बेलामे अनेक उपन्यासकार प्रादुर्भूत भ' अपन प्रतिभाक किरण बिखेरि क' एकरा समुन्नतशील बनौलनि तथा संदर्भमे बना रहल छथि। उपन्यास-लेखनक क्षेत्रमे एक कीर्तिमान स्थापित कयलनि विलक्षण प्रतिभासम्पन्न उपन्यासकार ब्रजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* (1918-1986) जे क्वालिटी आ क्वान्टिटीक दृष्टिएँ डेढ़ दर्जन उपन्यास एहि साहित्यकेँ भेट देलनि जे अद्यापि कोनो उपन्यासकार द्वारा सम्भव नहि भ' सकल अछि। हिनक एक नवतम् उपन्यास *सोना रूपा हीरा* प्रकाशनक पथपर अछि।

दुइ शताब्दीक संधि बेलामे उपन्यास साहित्यमे नव-नव मार्ग प्रशस्त भेल अछि, जाहिसँ ई एक सशक्त विधाक रूपमे चर्चित-अर्चित भ' रहल अछि। प्रथम विश्व-युद्धक पश्चात् कांग्रेसक नेतृत्वमे राजनीतिक चेतनाक जागरण भेल संगहि सामाजिक आ आर्थिक आन्दोलनक जन्म भेल। उपन्यासकार जमीन्दारीक अत्याचार, दरिद्र किसान, अंग्रेज शासक नीति, नागरिक जीवन, नारी समस्या, समाजमे व्याप्त कुसंस्कार, विवाह प्रथा, शिक्षा आदि अनेक विषयकेँ ल' कए उपन्यासक निर्माण कयलनि। मिथिलांचलक ग्रामीण जीवनक चित्रणक प्रमुखता आम्भिक कालमे अवश्य रहलैक, किन्तु आब ओहिमे शहरी मध्यवर्गक मजदूरक जीवनक आर्थिक, राजनैतिक आ मनोवैज्ञानिक समस्याक प्रमुखता भ' गेल अछि। एहि दृष्टिएँ उपन्यास क्षेत्रमे अनेक प्रयोग भेल अछि तथा पाश्चात्य विचारक प्रभाव साहित्यपर स्पष्ट लक्षित भ' रहल अछि। अधुनातन समयमे मैथिलीक अनेक आधुनिक जीवनक विसंगति, अनेक जटिल राजनीतिक, आर्थिक आ मनोवैज्ञानिक यथार्थताकेँ ल' कए अपन कृतिक निर्माण क' रहल छथि तथा शैली आ व्यक्तिवत्क दृष्टिसँ नवीनता उद्भासित क' रहल छथि।

कथा :

साहित्यिक विधानमे कथा नवीनतम अछि। मैथिली कथा-साहित्यक इतिहास पूर्णरूपेण बीसम शताब्दीक देन थिक, जकर विकास तृतीय दशकक पूर्व नहि भ' सकल छल। प्रारम्भमे संस्कृत कथाक रूपान्तरण प्रकाशित भेल। मैथिली कथा-साहित्यकेँ लोकप्रिय बनयबाक श्रेय अछि मैथिलीक पत्रिकादिकेँ। मैथिली कथामे परिवर्त्तनक सूत्रपात होइत अछि विगत शताब्दीक द्वितीय दशकक पश्चात् जा क'। मैथिली कथा साहित्यपर विचार करैत एकरा निम्नस्थ कालखण्डमे विभाजित कयल जा' सकैछ :

i. प्रारम्भ युग- 1920 ई.सँ 1935 ई.
ii. प्रगति युग 1936 ई. सँ 1946 ई.
iii. प्रयोग युग 1947 ई.क पश्चात्

स्वाधीनता पूर्वमे कतिपय कथाकार साहित्यमे प्रवेश कयलनि, किन्तु हुनक परिपक्व कथा स्वाधीनताक पश्चात् प्रकशमे आयल। देशक स्वाधीन भेलाक पश्चात् मैथिली कथामे तीव्र विकास भेल। मैथिली गल्प-साहित्यक विकासमे पत्रिकादिक योगदान सर्वाधिक रहल अछि। प्रत्येक पत्रिकाक रुझान साधारणतः कथा दिस रहल अछि। अतः नव-नव कथाक रचनाक संगहि-संग नव-नव कथाकारक आविर्भाव अत्यन्त द्रुत गतिएँ भेल। अति आधुनिक कथा-साहित्यमे जाहि नवयुवक कथाकारक अवदान अछि ओ गल्प वाङमयक जे मानदण्ड अछि ओकर सम्यक् परिचय रखैत गल्प रचनामे संलग्न भेलाह।

शनैः-शनैः सामाजिक जीवनमे घटित भेनिहार साधारण घटनाकेँ आधार बना क' कथाक रचना भेल तथा यथार्थवादी आ' कल्पना प्रसूत कथाक दुइ धारा जकर प्रवर्त्तक हरिमोहन झा एवं वृजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* कयलनि जाहिमे राजकमल (1929-1967), ललित (1932-1983), मायानन्द (1934), प्रभास कुमार चौधरी (1941-1998) आदि कतिपय कथाकार योगदान छलनि। उपर्युक्त कथाकार लोकनिमे सामाजिक चेतना छलनि आ हुनका सभक कथा-आदर्शपूर्ण संवेदनशीलताक विशेष गुण आ मनोविज्ञानक हल्लुक पुट अछि। परवर्त्ती कथाकार लोकनि रोमांसपूर्ण कथाक सर्जन कयलनि। युगसंधिक उत्कर्ष बेलाक कथाकार जीवनक कथानक चुनलनि, मध्यवर्गक जीर्ण-जीवनक वर्णन कयलनि, व्यक्तिक मनक विश्लेषण कयलनि, स्त्री-पुरुषक प्रेमक चित्रण कयलनि आ आधुनिक जीवनक मानसिक आ भौतिक विषमताक पार्श्वभूमिपर अपन कथाकेँ आधारित कयलनि।

मैथिली कथा साहित्यक क्षेत्र व्यापक भेल तथा मूल्य एवं दृष्टिकोणमे परिवर्त्तनक संग विषय-वस्तुमे अधिक वैविध्य आयल अछि। सत्तरिक दशकमे कथा

सभमे यथार्थवादी एवं व्यक्तिवादी स्वर तीक्ख आ सुस्पष्ट भेल। मैथिली कथाक प्रमुख भाग सामाजिक कथा थिक। सामाजिक जीवन एवं विचारधारामे परिवर्त्तनकेँ चित्रित कयनिहार कथाक रचना भेल। सामाजिक संरचना, परिवार एवं व्यक्तिगत जीवनक विभिन्न पक्षमे भ' रहल परिवर्त्तनक यथार्थ निष्ठ चित्रण कथाकार लोकनि कयलनि अछि। मैथिलीमे लघु कथा, व्यंग्य कथा, लोक कथा इत्यादि विविध रोचक रचना सेहो भेल अछि। सर्वविध मैथिली कथा साहित्यक सम्वर्द्धक कथाकार लोकनिक सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप ई एक सुविकसित विधाक रूपमे अपन स्थान सुरक्षित क' लेलक अछि।

नाटकक-एकांकी :

विगत शताब्दी मैथिली नाटकक-एकांकीक हेतु एक क्रान्तिकारी युगक रूपमे प्रस्तुत भेल। आधुनिक मैथिली नाट्य जगत जखन अन्धकारमे टापर-टोइया द' रहल छल तखन युगपुरुष जीवन झा गद्यक नव-ज्योतिसँ सम्पूर्ण मैथिली नाट्य-साहित्यकेँ आलोकित कयलनि। आधुनिक मैथिली नाटकक जन्म एही शताब्दीमे भेल जकरा प्रवर्त्तन कयलनि कीर्त्तिपुरुष जीवन झा। ई मैथिली गद्यक महान उन्नायक रहथि। ओ गद्यकेँ नवीन स्वरूप प्रदान कयलनि। अपन नाट्यादिक माध्यमे मैथिली गद्यक मंगल द्वारकेँ खोललनि तथा भविष्यक नाटकककारकेँ एक नव प्रेरणा देलनि। मैथिलीमे उच्च कोटिक नाट्य-साहित्यक निर्माण कार्य विगत शताब्दीक अनुपम उपहार एहि साहित्यकेँ भेटलैक। विगत शताब्दीक नाटकककार जीवनक विभिन्न क्षेत्रसँ सामग्री ग्रहण क' कए सामाजिक, धार्मिक, विशुद्ध साहित्यिक, पौराणिक आ राष्ट्रीय एवं राजनीतिक नाटकक परम्पराकेँ जन्म देलनि आ भारतीय नवोत्थानकालीन भावनाक प्रचार कयलनि। जीवन झाक पश्चात् मैथिलीक दोसर नाटकककार साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास आ पण्डित लालदास आ हुनका सभक पश्चातो नाटकक क्षेत्रमे एहि परम्पराक निर्वाह होइत रहल। देशक आवश्यकतानुसार विगत शताब्दीमे ऐतिहासिक नाटकक रचना भेल। पौराणिक कथाकेँ नव-ढंगे प्रतिपादित कयल जाय लागल। मैथिलीक किछु नाटकककार प्रतीकात्मक नाटकक रचना कयलनि, किन्तु ई परम्परा अधिक पुष्ट नहि भ' सकल। यद्यपि गीति-नाट्यक रचना सेहो विगत शताब्दीमे भेल तथापि मैथिलीमे सुन्दर गीति-नाट्यक रूपमे सोमदेव (1934) क *चरैवेति* (1982) एक प्रतिमान प्रस्तुत करैछ। विवेच्य कालावधिमे समस्या नाटकक रचना भेल अछि। यूरोपीय प्रभावक अन्तर्गत समस्या नाटककमे बुद्धिवादक आधारपर सामाजिक, व्यक्तिगत तथा जीवनक अन्य क्षेत्रमे व्यर्थक आडम्बर आ वाह्याचार तथा परम्परा पालनक विरोध कयल गेल अछि। किन्तु मैथिलीक समस्या नाटकक बुद्धिवाद कुंठित आ ओकर

क्षेत्र सीमित अछि, जाहिमे जार्ज बर्नाड शॉ आ हेनरिक इब्सनक तीक्ष्ण दृष्टिक अभाव अछि। ओहुना ई परम्परा मैथिलीमे विकसित नहि भेल।

आलोच्यकालमे रंगमंचक अभावक कारणेँ एकर प्रगतिमे बाधक सिद्ध भेल अछि। मैथिलीमे एक साधु अभिनयशाला नहि भेलासँ पाठ्य साहित्यक विकासक गति एक विशेष दिशामे झुकि गेल अर्थात् एहन नाटकक निर्माण होइत रहल जे साहित्यिक आनन्दक दृष्टिएँ सुन्दर रचना थिक, किन्तु रंगमंचीय विधानक दृष्टिएँ दोषपूर्ण अछि। विगत शताब्दीक नाट्य-साहित्यपर विवेचन करबाकाल मात्र रंगमंचपर ध्यान नहि देबाक चाही। जँ रंगमंचकेँ नाटकक कसौटी मानि लेल जाए तँ विश्वक अनेक प्रसिद्ध नाटकादिकेँ नाटकक श्रेणीसँ निष्कासित करए पड़त। शैलीक दृष्टिसँ मैथिली नाट्य साहित्य पूर्व आ पश्चिमकेँ ल' कए चलल छल, किन्तु शनैः-शनैः ओ पश्चिमाभिमुख अधिक भ' गेल अछि आ भारतीय तत्व नगण्य भेल जा रहल अछि।

विगत शताब्दीक चतुर्थ दशकमे साहित्य रत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासकेँ श्रेय आ प्रेय दुनू छनि जे मैथिलीमे एकांकी रचनाक शुभारम्भ कयलनि जे पश्चात् जा क' एक सबल प्राणवन्त विधाक रूपमे पल्लवित भेल। वर्त्तमान समयमे एकांकी लिखल जा रहल अछि अवश्य, किन्तु किछु अपवादकेँ छोड़ि क' एकांकीक वास्तविक कलाक कसौटीपर खरा रहनिहार एकांकीक अनुसंधान करबाकाल निराश होमय पड़ैछ। पृष्ठभूमि, वातावरण आ कार्य व्यापारक अभाव प्रायः सभ एकांकीमे भेटैछ। एकर उद्देश्यक परिधि विस्तृत अछि। ओ सामाजिक, ऐतिहासिक, राष्ट्रीय, मनोवैज्ञानिक, हास्य-व्यंग्यपूर्ण आदि अनेक उद्देश्यकेँ ल' कए लिखल गेल अछि। वैश्वीकरणक फलस्वरूप आधुनिक जीवनक विडम्बनापर गम्भीर प्रहार करब एकांकी कारक कर्त्तव्य भ' गेलनि अछि। रेडियो आ टेलीभीजनक कारणेँ नाटकक नवीनतम रूप ध्वनि रूपकमे भेटैछ, जकर टेकनिक एकांकीक टेकनिकसँ भिन्न होइछ। रंगमंचीय कलाक दृष्टिसँ एकांकीक ध्वनि रूपककेँ आघात पहुँचबाक पूर्ण सम्भावना अछि, ओहिना जेना फिल्मक प्रचारसँ नाट्यकलाकेँ क्षति पहुँचल अछि।

निबन्ध :

भारतीय समाजमे एक नव सांस्कृतिक आ राजनैतिक चेतनाक उदय, पत्रिकाक प्रकाशन, साधारण विषय, सामाजिक आन्दोलनक फलस्वरूप पत्रिकाक संग जाहि साहित्य रूपक जन्मक संगहि ओकर स्वाभाव पत्रकारिताक विशेषताक झलक भेटैछ। विषय वैविध्य, सामाजिक आ राजनैतिक, शैलीक रोचकता आ गांभीर्य, गौरवक अभाव आदि आम्भिक निबन्धक एहन गुण अछि जे पत्रकारितासँ सम्वद्ध अछि। निबन्ध तँ ज्ञान राशिक संचित कोश थिक।

निबन्धकार समाजक भाष्यकार आ आलोचक सेहो होइत छथि। अतएव सामाजिक परिस्थितिक जेहन प्रभाव निबन्धमे देखबामे अबैछ ओ साहित्यक अन्य रूपमे नहि। विवेच्य कालावधिमे निबन्धक विषय जीवनक अनेक क्षेत्रसँ लेल गेल तुच्छसँ तुच्छ तथा गम्भीरसँ गम्भीर विषयपर निबन्ध उपलब्ध होइछ। यद्यपि ओहिमे चिन्तन-मननक गम्भीरताक अभाव अछि तथापि ओकर सामाजिक चेतना व्यापक छल। समयानुकूल विविध विषयपर बिनु कोनो पूर्वाग्रहक स्वच्छन्द भ' कए निबन्धकार आत्मीयताक संग अपन हृदय पाठकक समक्ष रखलनि। बिनु कोनो संकोचक विदेशी शासक वा शोषककें डाँटि-फटकारि सकैत रहथि तँ अपना ओतयक पण्डित मुल्ला आ पुरान शास्त्रकार धरि हुनक कठहुज्जतिपर नीक अधलाह कहलनि। निबन्धकार एक भाग आतुर वा प्रवाह पतित परिवर्त्तनवादी अंग्रेजी सभ्यताक गुलामक खबरि लेलनि तँ दोसर भाग नूतनता भीरु रूढ़िवादीक भर्त्सना कयलनि।

विगत शताब्दीमे गद्य शैलीक निर्माण निबन्धकारक वैयक्तिक प्रयासक प्रतिफल थिक। भाषाक दृष्टिएँ तत्कालीन निबन्धकार लोकनिमे सामूहिक भाव–कॉरपोरेट सेन्सक अभाव छल। गद्यक कोनो स्वीकृत रूप नहि भेलाक कारणेँ ओकर भाषा सार्वजनिक रूप नहि प्राप्त क' सकल। आलोच्यकालक आम्भिक निबन्धमे विषय आ शैलीक दृष्टिएँ वैविध्य भेटैछ।

शनैः-शनैः निबन्धमे पत्रकारिताक स्वच्छन्दता क्षीण होमय लागल। पत्रिकाक संख्या बढ़लाक कारणेँ साप्ताहिक, मासिक एवं त्रैमासिक पत्रक दूरी बढ़ैत गेल आ निबन्धकार शनैः-शनैः शिक्षित आ शिष्ट समाजक समीप अबैत गेलाह। पश्चात् जा क' गम्भीर विषयपर निबन्ध लिखल जाय लागल जाहिसँ ओकर रूप-रंग गम्भीर भ' गेलैक। साहित्यिक समालोचनात्मक निबन्धक धारा जतेक पुष्ट भेल ओतेक रचना विषयक नियमानुवर्तिता छोड़ि क' नव ढ़ंगसँ कम अधिक स्वच्छन्दता पूर्वक शैलीमे निबन्ध नहि लिखल गेल।

हरिमोहन झा प्रचुर परिमाणमे व्यंग्य प्रधान निबन्धक रचना कयलनि जकर-विकास युगसन्धिक उत्कर्ष बेलामे भ' रहल अछि। व्यंग्यक मूल वृत्ति सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे आलोचना भ' रहल अछि। एकरा मूलमे नव सामाजिक चेतना आ ओहिसँ उत्पन्न आलोचना वृत्ति प्रखर व्यंग्यक रूप धारण क' कए एहन निबन्धमे अबैत अछि। एहन निबन्धकार लैंब आ लूकसक अपेक्षा, प्रवृत्तिक विचारसँ चेस्टरटन, प्रत्युत स्विफ्टक अधिक समीप छथि। मैथिली निबन्ध अपन अत्यल्प जीवनकालमे कोन प्रकारेँ विविध रूप-रंगमे विगत शताब्दीसँ विकसित होइत आयल जे आगाँ साहित्यमे विषय-वैविध्य जहिना-जहिना विकसित होइत जायत तहिना-तहिना भावी पीढ़ीक निबन्धकार बढ़ैत जयताह।

पठन-पाठनमे स्वीकृति :

एकर प्राचीन साहित्यक गौरव-गरिमासँ अवगत भ' कए विगत शताब्दीक द्वितीय दशकमे आधुनिक भारतक प्राचीनतम कलकत्ता विश्वविद्यालयमे प्रथमे-प्रथम मैथिली भाषा आ साहित्यक एम.ए. स्तर धरि पठन-पाठनक शुभारम्भ कएलनि सर आशुतोष मुखर्जी (1864-1924) आधुनिक भारतीय भाषा विभागक अन्तर्गत। तत्पश्चात् आलोच्य शताब्दीक षष्ठ दशकक पूर्वार्द्धमे पटना विश्वविद्यालयक संगहि संग बिहारक अन्यान्य विश्वविद्यालयमे सेहो एकर पठन-पाठनक व्यवस्था भेलैक। शिक्षण संस्थानमे मैथिलीक मान्यता भेटलाक पश्चात् साहित्यकार लोकनिक दायित्व बढ़लनि जे एहि निमित्त तदनुरूप पाठ्य-ग्रन्थक निर्माणार्थ ओ सभ सक्रिय भेलाह आ सहित्यान्तर्गत नव स्पन्दनक प्रादुर्भाव भेल।

पत्रिका :

पुनर्जागरणक एहि प्रवृत्तिक मैथिलीक सचेष्ट मनीषी तपः सपूत संघर्षरत भ' साहित्यक नव निर्माणक दिशामे उन्मुख भेलाह। एहिमे सन्देह नहि जे प्रगतिशील आ सामान्य पूर्वाग्रह मुक्त शिक्षित समाजकेँ वाणी देबाक निमित्त प्रवासी मातृभाषानुरागी लोकनिक सत्प्रयाससँ जयपुरसँ *मैथिल हितसाधन* (1905) तथा काशीसँ *मिथिला मोद* (1906)क प्रकाशनक शुभारम्भ भेलैक, जकरा एक क्रान्तिकारी डेग कहल जा सकैछ, जे गद्य साहित्यक गतिविधिसँ पाठककेँ परिचय करौलनि। एकरा माध्यमे सामयिक साहित्यिक परम्पराक अध्ययन, चिन्तन आ मननक क्रम स्वाभाविक आ वांछनीय नहि, प्रत्युत भविष्यक हेतु मार्ग निर्देश करबाक, रूढ़ि आ विश्वास, शास्त्रीय मान्यतादिक मूल्यांकन करबाक, युगक नवीन आवश्यकता आ परखबाक दृष्टिएँ अत्यावश्यक छ्ल। एहि दृष्टिएँ साहित्य निर्माता आ अध्येता एक दोसराक समीप आबि गेलाह आ कोनो ठोस वस्तु प्राप्ति करबाक प्रशस्त मार्गक निर्माण कयलनि। एक नव शक्ति उद्भाषित भेल, पयुषितक स्थान अपयूषितक जन्म भेल। एकर जोरदार प्रभाव पड़लैक मिथिलांचलक मैथिल समुदायपर जे ओ सभ एहिसँ अनुप्राणित भ' दरभंगासँ *मिथिला मिहिर* (1909-)क प्रकाशनक शुभारम्भ कयलनि जे विगत शताब्दीक नवम दशक धरि अनवरत चलैत रहल जे पाठकक संगहि लेखक वर्गक सबल दल तैयार कयलक आ ओकर नवीनतम अंक देखबाक निमित्त जहिना पाठकमे उत्सुकता रहैत छलनि तहिना लेखक लोकनिमे सेहो औत्सुक्य रहैत छलनि जे हुनक कोन रचना प्रकाशित भेल अछि।

मैथिली पत्रकारिताक दोसर चरणक प्रारम्भ प्रथम विश्वयुद्ध (1914-1918)क पश्चात् प्रारम्भ भेल। एहि समयमे सामाजिक, बौद्धिक आ औद्योगिक विकासक रचनात्मक कार्यक्रम हेतु मेधावी जनशक्तिक लोप भ' गेलैक। विश्व-युद्धक समाप्तिक पश्चात्

लोकक मोह भंग भ' गेलैक जे विदेशी आधिपत्यक चापसँ किछु आशा क' रहल रहथि। एहि निराशासँ 1920 ई. मे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा समाज सुधार आ असहयोग आन्दोलनक शुभारम्भ मिथिलांचलक चम्पारणसँ भेल। एहि आन्दोलनक हेतु परिस्थिति अनुकूल भेल अपन किछु गम्भीर मन, देशी लोकक विपरीत एहि आन्दोलनक स्वागत सोत्साह कयलनि आ मैथिली पत्रिका आलोच्य कालक तृतीय दशाब्दमे प्रकाशनक पथपर अग्रसर भेल।

मैथिली पत्रिकाक तेसर चरणक शुभारम्भ आलोच्य शताब्दीक चतुर्थ दशकमे गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया एक्ट (1935) द्वारा देशमे संवैधानिक परिवर्त्तनसँ भेल। एहि समयक अवसान बेलामे द्वितीय विश्व-युद्ध (1939-1945) प्रारम्भ भेलैक तथा कतिपय नव-नव पत्रिका साहित्य जगतमे प्रवेश कयलक। विगत शताब्दीक षष्ठ दशकमे अनेक पत्रिका प्रकाशित भेल जाहिमे वैदेही (1950) एवं *मिथिला दर्शन* (1953) मैथिली साहित्यक नव-निर्माण अहं भूमिकाक निर्माणे नहि कयलक प्रत्युत रचनाकारक संगहि पाठक वर्गक निर्माण कयलक। युगसन्धिक उत्कर्ष बेलामे गोर बीसेक पत्रिका चलि रहल अछि जाहिमे कोलकातासँ प्रकाशित कर्णामृत विगत छब्बीस वर्षसँ अनवरत चलि रहल अछि, किन्तु शेष पत्रिकादि कखन काल क्वलित भ' जायत ओ तँ भविष्यपर निर्भर करैछ।

प्रकाशन :

विगत एवं वर्त्तमान सहस्त्राब्दी मैथिलीक जे उत्कर्ष जनमानसक समक्ष प्रस्तुत अछि तकर ज्वलन्त साक्षी थिक जे साहित्य निर्माताक संगहि-संग प्रकाशनक सौविध्यक फलस्वरूप मैथिली साहित्यमे विपुल परिमाणमे गद्य-पद्य साहित्यक प्रकाशन भेल अछि, तकर श्रेय आ प्रेय मैथिली अकादमी आ साहित्य अकादेमीकेँ छैक। मैथिली अकादमी द्वारा विविध विधादिक स्तरीय ग्रंथ अद्यापि लगभग अढ़ाय सय तथा साहित्य अकादेमी द्वारा डेढ़ सय ग्रन्थक प्रकाशन भ' सकल अछि। एहि दृष्टिसँ कोलकाताक प्रवासी संस्थादिकेँ छैक जे ओतयसँ विविध-विधादिक सहस्त्राधिक मौलिक अनूदित पुस्तकक प्रकाशन संभव भ' सकल अछि जे एक प्रतिमान प्रस्तुत करैछ। एहि दिशामे चेतना समिति अर्द्ध शतकसँ बेसी पुस्तकक प्रकाशन कयलक अछि जे उल्लेख्य योग्य अछि। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे प्रयोजन अछि जे अन्यान्य संस्थादि जे पुस्तक प्रकाशनमे सक्रिय अछि तकर सिलसिलेवार ढ़ंगसँ पुस्तक-प्रकाशनमे सहयोग देथि। एहिसँ अतिरिक्त कतिपय साहित्यिक संस्था तथा लेखक लोकनि अपन रुचिक अनुकूल साहित्यिक प्रकाशन क' कए एकरा सम्वर्द्धित करबाक दिशामे संलग्न छथि जे एहि साहित्यक रीढ़केँ सुदृढ़ कयलक अछि। युगसन्धिक उत्कर्ष बेलामे जेना पुस्तक प्रकाशनक बाढ़ि आबि गेल अछि।

महिला साहित्यकारक प्रादुर्भाव :

स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यान्तर्गत जनजागरणक जे मन्त्र फूकल गेल तकर महिला साहित्यकारपर अत्यन्त तीव्र प्रभाव पड़ल। विगत शताब्दीमे पुरुष लेखकक समानहि महिला लेखक प्रचुर परिमाणमे साहित्यक प्रत्येक विधामे अपन उपस्थिति दर्ज करौलनि जकरा नहि अस्वीकारल जा सकैछ। शताब्दीक सन्धि-बेलामे महिला साहित्यकारक कृतित्वक अवगाहनोपरान्त स्पष्ट प्रतिभाषित होइत अछि, जे हुनकामे साहित्य-साधनाक अपरिमित सम्भावना छनि। हुनका सभक रचनाक क्षमता एवं गुणवत्ता दुनू दृष्टिएँ उल्लेखनीय अछि। साहित्यक क्षेत्रमे मिथिलांचलक नारी समाजक जागरण विगत शताब्दीक अर्द्धशतकक पश्चात् भेल जे सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक। महिलामे साहित्यिक अभिरुचि जगयबाक श्रेय छैक मैथिली पत्रिकादिकेँ जकर कतिपय उदाहरण अछि। साहित्यक कोनो एहन विधा बाकी नहि अछि जाहिमे ई लोकनि अपन हस्ताक्षर नहि कयलनि। हमरा दृष्टिएँ हुनका सभमे साहित्य-साधनाक अपरिमित सम्भावना युगसन्धिक उत्कर्षमे स्पष्ट परिलक्षित भ' रहल अछि।

विविध गद्य :

युगसन्धिक उत्कर्ष बेलामे मैथिलीमे आत्मकथा, जीवनी, यात्रा, संस्मरण, साक्षात्कार आ परिचर्चा विषयपर साहित्य पाठकक समक्ष आयल अछि। विभिन्न पत्रिकादिमे समय-समयपर एहन रचनादि अवश्य प्रकाशित भेल अछि, किन्तु ओ सभ प्रकाशनाभावक कारणेँ धूल-धूसरित भ' रहल अछि। वर्त्तमान शताब्दीक प्रथम दशाब्दमे वृजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* *क* एक अनमोल संस्मरण प्रकाशमे आयल अछि, *हुनकासँ भेट भेल छल* (2004) जकर सम्पादन कयलनि प्रेमशंकर सिंह एवं इन्द्रमोहनलाल दास, जे अत्यधिक चर्चित-अर्चित भेल अछि। एकरा माध्यमे मिथिलाक अनेक कीर्तिपुरुषक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक संगहि मिथिलाक सांस्कृतिक चेतना तथा गौरवमय परम्पराक चित्रण क' मैथिली पाठककेँ अनुप्राणित कयलनि अछि।

संस्थादिक सक्रिय सहभागिता :

मैथिली साहित्यक उत्कर्ष बेलामे विगत शताब्दीमे मातृभाषानुरागी लोकनिक सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप मैथिली भाषा आ साहित्यक उन्नयनार्थ भारतक विभिन्न क्षेत्रमे यथा - मैथिल महासभा (1910), मैथिल छात्र सम्मेलन (1910), मैथिली क्लब (1918), मैथिल शिक्षित समाज (1919), मैथिल सम्मेलन (1923), मैथिल युवक संघ (1930), मैथिली साहित्य परिषद (1930), मिथिला लोकसंघ

(1947), अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति (1950), चेतना समिति (1954), मिथिला सांस्कृतिक परिषद (1959) कर्णगोष्ठी (1974) आदि-आदि साहित्यिक संस्थादिक प्रादुर्भूत भेल जे योजना वद्ध रूपैँ मनसा -वाचा-कर्मणा दत्तचित्त भ' कार्यरत भेल, जकर फलस्वरूप एकर विकासक अवरुद्ध मार्ग शनैः-शनैः प्रशस्त होइत गेल। सन् 1947 ई.मे विश्व लेखक सम्मेलन पी.ई.एन.मे, 1960 ई. मे इलाहाबादमे एवं 1963 ई. मे दिल्लीमे पुस्तक प्रदर्शनीक फलस्वरूप 1965 ई. मे साहित्य अकादेमीमे आ वर्त्तमान शताब्दीमे भारतीय संविधानमे एहि भाषा आ साहित्यकेँ अष्टम अनुसूचीमे एक प्राचीन भाषाक रूपमे मान्यता भेटलाक तत्पश्चात् एकर विकासक गति तीव्रत्तर होइत गेल।

वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे प्रयोजन अछि जे समग्र संस्थादिक सिलसिलेवार ढ़गसँ अनुसंधान क' कए तथ्योपलब्ध ऐतिहासिक वृत्तिक लेखा-जोखा प्रस्तुत कयल जाय जे भावी पीढ़ीकेँ ई दिशा निर्देश करत। एहि प्रकारक संस्थादिक संख्या बड़ विशाल अछि तेँ ऐतिहासिक वृत्तिक लेखा-जोखा करब आवश्यक अछि।

निःसारण :

युगसन्धिक उत्कर्ष बेलामे बीसम शताब्दीकेँ स्वर्णिम काल उद्घोषित करबाक-पाछाँ कतिपय आर्थिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक तत्वक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली साहित्यक उन्नयनार्थ जे क्रिया-कलाप भेल तकर वास्तविक रूपैँ विवरण प्रस्तुत करब एक दुर्वह कार्य थिक तथापि साहित्यिक गवाक्षसँ उल्लेख योग्य परिस्थिति एवं परिवेशमे एकरा स्वर्णिम काल उद्घोषित करबाक उपक्रम कयल गेल अछि। विगत शताब्दीक मैथिली साहित्य जाहि सजीवता, प्रतिभा आ विभिन्न विचारादर्श आ गतिविधिक परिचय दैत अछि ओकर जड़िमे जाहि प्रकारेँ उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्धमे जमल ओहिना बीसम शताब्दीक उत्तरार्धक बौद्धिक क्रियाशीलताक पूर्वाभास हमरा भेटैछ।

वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे ई श्रेय आ प्रेय बीसम शताब्दीकेँ छैक जे आलोच्य कालक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक गद्य-साहित्य। जतय एक भाग परम्परागत मैथिली साहित्य अपन बन्धनमे बरोबरि बन्हने रहल आ अपनाकेँ मेटबैत रहल ओतय निश्चये अभूतपूर्व आ निस्सन्देह गद्यक रूपमे प्रतिष्ठित भेल। आलोच्य कालीन गद्य मैथिली साहित्यमे एक नव युगक अवतरण कयलक। साहित्येतिहासमे क्रमबद्ध परम्परा एहि शताब्दीक महत्वपूर्ण अवदान थिक जे अपन भविष्यक प्रति आशाक सम्बल लेने साहित्यमे प्रवेश कयलक आ ओकर शब्दकोशमे आश्चर्यजनक वृद्धि भेलैक। वस्तुतः आलोच्य शताब्दी गद्य-युग थिक जे अवतारणा आलोच्यकालीन गद्य थिक।

युगसन्धिक उन्मेष बेलामे गद्य जगतक संगहि संग काव्य जगतक अभूतपूर्व समागम एहि कालावधिमे भेल जे मैथिली साहित्यान्तर्गत कतिपय नव-नव विधादिक जन्म भेलैक, ओकर संस्कार भेलैक आ ओकर प्रचार-प्रसार द्रुतगतिएँ भेलैक आ भ' रहल अछि जे वर्त्तमान सन्दर्भमे ओ साहित्यक सर्वाधिक प्रमुख अंग बनि क' अपन अस्तित्वकेँ सुरक्षित कयलक आ लोकप्रिय भ' गेल अछि। वर्त्तमानमे साहित्यक कोनो एहन विधा नहि अछि जाहिमे तिल-तिल नूतनताक संचार नहि भ' रहल हो आ साहित्य नव स्पंदनसँ भरि गेल अछि। वर्त्तमान समयमे हमरा लोकनि अपन मातृभाषाक अत्यन्त समीपमे छी आ एहिमे कतिपय उलझन आ सन्देहपूर्ण स्थल अछि। तथापि निस्सन्देह कहल जा सकैछ जे मैथिली जीवनक सहस्त्राब्दीक कालावधि मानसिक उथल-पुथल आ बौद्धिक क्रान्तिक संधिस्थल थिक। विविध-धारा अन्तर्धाराक बीच वर्त्तमानमे हम मैथिली साहित्यक संधि स्थलपर स्थिर भ' नवयुगक आशा भरल प्रतीक्षा क' रहल छी। गेटेक कथन छनि *वी बिड यू होप* इतिहास हमरा एहिसँ नीक संदेश नहि द' सकैछ।

* * *

पारम्परिक नाटक

साहित्यक अन्य विधाक तुलनामे भारतक विभिन्न जन जनपदमे सर्वाधिक नाट्य रचना मिथिलाचंलमे भेल; इएह कारण अछि जे एकर इतिहास अति प्राचीन एवं प्रौढ़ अछि। शिष्टवर्ग ओ निरक्षर समाजमे साहित्यिक अभिरुचि उत्पन्न करबाक हेतु मैथिलीक साहित्य मनीषी नाट्य रचना दिस अत्यधिक उन्मुख भेलाह। देश कालक आधारपर मानव-मूल्य परिवर्त्तित होइत गेल, युगीन दड़ारिमे जतय ओकर जर्जर परम्परावादी सिद्धान्त अटकि गेलैक ओतय साहित्य सेहो समयक मांगक अनुसारेँ करोट फेरलक। मैथिली नाटकक अपन अत्यन्त पैघ यात्रा पार क' आइ एक चौबटिया पर ठाढ़ दृष्टिगोचर होइत अछि। आधुनिक नाटककार परम्परावादी मान्यतादिकेँ ध्वस्त नहि कयलनि, प्रत्युत नाटककेँ रंगमंचक दिशामे अभियान कयलनि। कथा-साहित्य सदृश अपन निश्चित कलेवरमे ओ अपनाकेँ चमका देबाक संकल्प कयलनि। नवीन मूल्यक अन्वेषणमे पारंपरिक नाट्कारक कथ्य एवं शिल्प दुनूमे युगान्तकारी परिवर्त्तनक श्रीगणेश कयलनि। मध्यकालकेँ छोडि क' परंपरावादी नाट्ककार स्वच्छन्दतावादी कम यथार्थवादी एवं बौद्धिक छथि। नाट्य-शिल्पमे भेल परिवर्त्तन नाटककेँ पठनक सीमित क्षेत्रसँ बहार क' कए रगंमंचक अत्यधिक समीप आनि देलक अछि।

वस्तुत: नाटकक एक एहन विधा थिक जे अपन परंपराक विरासतसँ अधिक लाभान्वित भेल अछि। कथा-विस्तारकेँ नाटकीय सौष्ठव प्रदान करबाक हेतु विषकंभक, प्रवेशक, अंकास्य, अंकावतार आदि जे परंपरागत मैथिली नाटकक शैली छल तथा नाट्य-शास्त्र प्रणालीक सम्मत आधुनिक नाटककारक प्रवृत्ति भेलनि। वस्तु-विधान, पात्र-परिकल्पना, चरित्र-चित्रण एवं संवाद योजनामे नव दृष्टिकेँ स्वीकारलनि। नाटकक रसोद्रेकक साधन नहि रहि क' देशक नव-निर्माणक प्रेरक शक्ति बनि गेल अछि। नैराश्यक अंधकारमे आशाक दीप जरयबाक प्रेरणा पारंपरिक नाटककार देलनि अछि। पारंपरिक मैथिली नाटकक बहिरंग संरचनाक संदर्भमे नाटककार समन्वकारी छथि अर्थात् भारतीय एवं पाश्चात्य रूढ़ि क' समाकलन ओ नाटकान्तर्गत कयलनि अछि। मैथिली नाटकक आधुनीकरण वा अंग्रेजीकरणक प्रवृत्ति स्पष्ट अछि। पाश्चात्य नाट्य-शैलीमे जे संघर्ष, द्वन्द्व, मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रणकेँ नाटककार अपन उद्देश्य बुझलनि। अनुकरणक ई प्रवृत्ति मैथिली भाषी क्षेत्रक नाटककारकेँ यथार्थोन्मुख एवं बौद्विक हैबाक हेतु बाध्य कयलक।

मैथिलीक पारंपरिक नाटकक किछु एहन अछि जकर सूचनामात्र साहित्येतिहासिक ग्रंथमे उपलब्ध होइत अछि; किन्तु दुर्योगक विषय थिक जे अद्यावधि ओकर प्रकाशनक दिशामे तँ ने कोनो अनुसंधाता आ ने कोनो संस्था एहि दिशामे प्रयास कयलक अछि। यद्यपि विभिन्न विश्वविद्यालयादिमे नाटकक पर अधिकाधिक संख्यामे प्रबंध प्रस्तुत कयल जा रहल अछि तथापि अनुसंधित्सु ओही सूचना मात्रकेँ दोहरेबाक प्रयत्न कयलनि, किन्तु अप्रकाशित पारंपरिक मैथिली नाटकक प्रकाशनक दिशामे कोनो सक्रिय प्रयास नहि कयलनि। एहि संदर्भमे डॉ. जयकान्त मिश्र विश्वनाथ झाक *रमेश्वर चन्द्रिका* आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक कवीश्वर चन्दा झाक (1831-1907) *अहिल्या चारित नाटकक* एवं बलदेव मिश्रक (1887-1946) *राज राजेश्वर नाटकक* (1920) एवं *रमेशोदय नाटकक* परंपरागत नाटकक सूचना देलनि जे अद्यावधि अप्रकाशित अछि।[1] एहि दिशामे प्रयासक प्रयोजन अछि जे उपर्युक्त नाटकादि मैथिली पाठकक सम्मुख आबय जाहिसँ नव ढ़ंगे मैथिलीक परंपरागत नाट्य शैलीक आलोचना भ' सकय।

मैथिली नाटकक अतिप्राचीन रहितहुँ ओ सतत अनुसंधेय अछि, कारण श्रृंखलावद्ध रूपेँ ओकर अन्वेषण अद्यावधि सुव्यवस्थित रूपसँ नहि भ' सकल अछि। जहिना-जहिना अनुसंधित्सु एहि दिशामे सचेष्टता देखौलनि तहिना-तहिना मैथिली नाट्य साहित्यपर प्रकाशक नव ज्योति पड़ि रहल अछि जे एकर आलोकमय भविष्यक सूचक कहल जा सकैछ। गहन अनुसंधानक फलस्वरूप एहि श्रृंखलान्तर्गत एक परंपरागत नाट्यकारक नाट्यकृति प्रकाशमे आयल अछि ओ छथि तेजनाथ झा (1854-1934) जनिक *सुरराज विजय नाटकक* (1919), किन्तु एहि नाटकक संबंधमे ने कोनो इतिहासकार वा ने कोनो अनुसंधता अद्यावधि सूचना देलनि जे अत्यधिक खेदक विषय थिक।[2] ई श्रेय छैक जिज्ञासा (1995) क' विद्वान संपादक वृन्दकेँ जे संपूर्ण नाटकककेँ अपन प्रवेशांकमे प्रकाशित कयलनि अछि। जहिना जीवन झा (1848-1912) परंपरागत नाट्य शैलीक अनुकरण क' कए पारंपरिक नाटकक रचना श्रीगणेश कयलनि तहिना तेजनाथ झा रचित सुरराज विजय नाटकक सेहो ओही शैलीकेँ आगाँ बढ़यबाक दिशामे एक अभिनव प्रयासक कयलनि। वस्तुतः सुरराजविजय नाटकक मैथिलीक पारंपरिक नाट्य साहित्यक इतिहासमे एक सेतुक काज करैछ जे जीवन झा एवं साहित्यरत्नाकर मुंशीरघुनन्दन दासक (1860-1945) बीच एक नव नाटकककारक सूचना मैथिली नाट्यालोचककेँ भेटलनि अछि। जतय जीवन झा, लालदास (1856-1921) एवं साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासक नाटकादिमे स्थल-स्थल पर पारंपरिक नेपाल, मिथिला, एवं आसामक अंकीया नाट सदृश धड़ल्लासँ संस्कृत श्लोकक माध्यमे मैथिली पदक भावकेँ व्यक्त कयल गेल ततय तेजनाथ झाक विशिष्टता

छनि जे ओ सुरराजविजय नाटककमे कतहु संस्कृत श्लोकक प्रयोग नहि कयलनि। विशुद्व मैथिली गद्यक अनुकरण ओ जीवन झासँ अवश्य ग्रहण कयलनि आ पारसी थियेरिकल कम्पनीक प्रभावक कारणेँ ओ मैथिली पद्यक प्रयोग नाटककमे कयलनि।

मैथिली नाटकक परिदृश्यमे किछु नाटकक निश्चित रूपेँ उपलब्ध होइत अछि जे विशुद्व रूपेँ मध्यकालक शैलीपर आधुनिक कालमे लिखल गेल अछि। हमरा लोकनिकेँ महामहोपाध्याय हर्षनाथ झाक (1844-1899) जतेक नाटकक उपलब्ध होइत अछि जकर प्रकाशन *हर्षनाथ काव्य ग्रंथावली* [3] मे भेल ओ तँ विशुद्ध रूपेँ पारंपरिक नाटकक थिक जाहिमे मैथिलीक प्रांरभिक नाट्ककेँ मध्यकालीन नाटकक वंशज कहबामे कोनो तारतम्य नहि। मध्यकालनीन नाटकक त्रैभाविषक छल, कथोपकथन संस्कृत प्राकृत तथा ओहिमे मात्र मैथिली गीतक समावेशक कारणेँ ओकरा मैथिली नाटकक कहल गेल। अतएव हर्षनाथ द्वारा लिखित जे नाटकक उपलब्ध अछि तकरा पारंपरिक परिप्रेक्ष्य विशलेषण कयल जायत। एहिसँ स्वत: स्पष्ट भ' जाइछ जे मध्यकालकेँ छोड़ि क' जे पारंपरिक नाटकक उपलब्ध अछि तकरा दुइ श्रेणीमे विभाजित कयल जा सकैछ। एक ओहन पारम्परिक नाटकक अछि जे मूलत: मध्यकालक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि आ दोसर ओ अछि जे आधुनिकताक परिप्रेक्ष्यमे लिखित पारंपरिक नाटकक थिक।

जतय परंपरागत मैथिली नाटककमे मैथिली गद्यक अभाव, पद्यक प्राचूर्य, संस्कृत श्लोकादिक अधिकताक संगहि कथोपकथन सेहो संस्कृत वा प्राकृतमे होइत छल ततय जीवन झा तेजनाथ झा लालदास एवं मुंशी रघुनन्दन दास नाटकक अनुशीलनसँ स्पष्ट भ' जाइछ जे वर्त्तमान युगमे परंपरागत मैथिली नाटककमे एक क्रान्तिकारी परिवर्त्तन भेल जे ओ मैथिली गीत एवं संस्कृतक श्लोकक सर्वथा परित्याग नहि क' कए विशुद्ध रूपेँ मैथिली गद्यकेँ कथोपकथनक साधन मानि ओकरा अपन अभिव्यक्तिक माध्यम बनौलनि। इएह प्रमुख कारण थिक जे मध्यकालकेँ छोड़ि क' जतेक पारंपरिक नाटकक उपलब्ध अछि गद्यक प्रचुरता परिलक्षित होइत अछि।

जीवन झाक प्रखर प्रतिभा किरण मैथिली नाट्य साहित्यक क्षितिजपर एक अद्भूत आलोकक संग प्रस्फुटित भेल। जीवन झा जखन नाट्य रचना आरंभ कयलनि तखन आधुनिक गद्यक न्योँ राखल जा चुकल छल; किन्तु ओकर कानो निश्चित एवं व्यवस्थित स्वरूप नहि निर्धारित भेल छलैक। मौलिक रूपसँ मैथिली नाट्य साहित्यक वास्तिवक विकास हिनकहिसँ होइत अछि। परंपरावादी आ नवीन विचारधाराक एहन संधर्ष कालमे जीवन झा सत्यत: मातृभूमि प्रेमी तथा भाषाप्रेमी कोना मौन रहि सकैत छलाह? अतएव ओ मातृभाषाक सेवाक हेतु दृढ़ संकल्प

कयलनि ओ गद्यक विधामे नाटकककेँ पहिने एहि हेतु चयन कयलनि जे ओकरा माध्यमे जनसामान्यमे श्रेष्ठ आ साधारण व्यक्ति धरि अपन उद्भावनाकेँ सुगमतापूर्वक पहुँचा सकथि। ओ मौलिक पारंपरिक नाटकक सृजनक मैथिली नाट्य भंडारकेँ समृद्व करबाक प्रयास कयलनि। जीवन झासँ प्रेरणा प्राप्त क' कए हुनक समकालीन अनेक लेखक नाटकक रचना कयलनि। जीवन झा कालीन लेखक लोकनि विविध भावनाक व्यापक प्रचार करबाक हेतु लगन एवं निष्ठासँ पारम्परिक मैथिली नाट्य साहित्यक रचनामे पर्याप्त योगदान देलनि। यद्यपि हिनक समकालीन मैथिली नाट्य साहित्य उपदेशात्मक छल तथा ओहिमे नाट्य कलात्मकता गौण छलैक। तत्कालीन परिस्थिति एवं समस्याकेँ ओ यथार्थ रीतिएँ प्रतिविम्बित कयलनि। परम्परागत मैथिली नाट्य साहित्य एवं संस्कृत नाटकक शास्त्रीयतासँ ओ प्रभावित भेलाह; किन्तु शनैः-शनैः हुनकापर तत्कालीन रुचिक प्रभाव सेहो यथेष्ट मात्रामे पड़लनि। नाट्य रचनाकेँ समयानुकूल बनयबाक दृष्टिएँ अग्रसर परंपरागत संस्कृत नाट्य शास्त्रकेँ ओ अपन आधार अवश्य बनौलनि; किन्तु यथासंभव आधुनिकताक प्रवेश करयबाक दिशामे यथेष्ट प्रयास कयलनि। तत्कालीन अभिनय व्यवस्था आ पारसी कम्पनीक क्रिया-कलापक प्रभाव एहि युगक नाटकककार लोकनिपर पर्याप्त पड़लनि। पारसी कंपनीक अभिनयमे उत्तेजना, भावोद्रवेग, प्रेमोद्गार आदि तथ्यक प्रभाव हुनक समकालीन नाट्य-साहित्यपर अवश्य पड़लनि। नाटकक वस्तु-विन्यासमे परंपरागत नाट्य प्रस्तुतिक सर्वथा परित्याग नहि कयल गेल। नाट्य रचनामे स्वाभाविकताक भूमिपर कथानकक विन्यास कयल गेल। यद्यपि एहि नाटकक भाषा अशास्त्रीय रहल तथापि ओकर प्रयोग पात्रक अनुकूलताक अनुसारेँ भेल तेँ भाषामे उन्मुतता तथा सरलताक दिग्दर्शन अनेक स्थलपर भेल जकर फलस्वरूप ओहिमे कृत्रिमताक समावेश भ' गेलैक।

जीवन झा मैथिली नाट्य गद्यक संस्थापके नहि छलाह; प्रत्युत विभिन्न नाट्य-शैलीक जनमदाता सेहो रहथि। हिनक भाषा-शैलीमे लोक प्रचालित शब्द, मुहावरा एवं लाकोक्तिक प्रयोग भेल जकर फलस्वरूप हिनक भाषामे एक अद्भूत सौन्दर्य आबि गेल संगहि स्वाभाविकताक रक्षा सेहो भेल। हिनक नाटकादिमे सरसता, सरलता, स्पष्टता एवं चित्रमयताक दिग्दर्शन होइत अछि। हिनक प्रत्येक नाटकक पद्य-गद्य मिश्रित नाटकक थिक। हिनक नाटकादिमे गद्यक प्रधानता रहितहुँ पद्यक प्रचुर प्रयोग भेटैछ। पद्य प्रयोगक अतिरिक्त ई गीतक अवतारणा सेहो कयलनि। काव्य-वैभवक दृष्टिएँ हिनक एक-एक पद्य अमूल्य निधिक समान अछि। पद्य एवं गीतक प्रयोग नीरवताक परिहार क' रसोत्पादन करबामे, वातावरणक सृष्टि करबामे तथा पात्रक मनोभाव एवं चरित्रगत विशेषताकेँ प्रगट करबामे सहायक भेल अछि। हिनक नाटकादिमे भावक अनुरूप विविध छन्दक विधान उपलब्ध होइछ।

अतएव प्रतिपाद्य प्रबन्धान्तर्गत हम मध्यकालकेँ छोडि क' मैथिलीक पारंपरिक नाटकक परिप्रेक्ष्यमे एहि आलेखकेँ केन्द्रित करबाक उपक्रम कयलहुँ अछि। प्रतिपाद्य प्रबंधकेँ विश्लेषणक क्रममे हम एकरा दुइ भागमे विभाजित करैत छी - मौलिक एवं अनूदित। मैथिलीमे वर्त्तमान कालमे किछु एहन नाटकक अवश्य उपलब्ध हाइछ जे वस्तुत: मध्य-कालक शैलीक अनुकरणपर लिखल गेल अछि आ अनूदित नाटकान्तर्गत ओहन नाटकक चर्चा कयल जायत जे संस्कृत वा अंग्रजी वा फ्रेंच वा बाङ्ला वा हिन्दी नाटकक यथावत् मैथिलीमे गद्य-पद्यानुवाद वा गद्यानुवाद कयल गेल अछि। मैथिलीक पारंपरिक नाटकककार विविध प्रवृत्तिक नाटकक रचना कयलनि। अतएव अहम विश्लेषणक सुविधाक दृष्टिएँ पारंपरिक नाटकककेँ विभिन्न वर्गमे विभाजित क' कए विश्लेषण करब।[4] विषय-वस्तुक आधारपर पारंपरिक नाटकक तीन प्रकार भ' सकैछ - पौराणिक, ऐतिहासिक एवं सामाजिक। सामाजिक नाटकककेँ हम पुन: दुइ खण्डमे विभाजित करैत छी - प्रतीक नाटकक एवं समस्या नाटकक। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे मैथिलीक पारंपरिक नाटककपर विचार कयल जा रहल अछि।

परंपरागत पौराणिक नाटकक :

मैथिलीक पारंपरिक पौराणिक नाटकक क्षेत्रमे हर्थनाथ झाक *उषाहरण*[5] (1962) *माधावानन्द* [6](1962) *राधाकृष्ण मिलन लीला* [7](1962) जीवन झाक *सामवती पुनर्जन्म* [8](1908), तेजनाथ झाक *सुरराज विजय नाटकक* [9](1995), लालदासक *सावित्री-सत्यवान* [10](1909), त्रिलोकनाथ मिश्रक (1889-1960) *जीमूतवाहन चरित* [11](1352 साल), आनन्द झाक (1913) *सीता स्वयंवर* [12](1995 संवत्) ठाकुरप्रसाद झाक *सीता परिणय* [13](1960) दामोदर झाक *गन्धर्व विवाह* [14](1210 संवत्), जीवनाथ झाक *दुर्गा विजय* [15](2015 साल), शंभुनाथ झाक पुत्रदान [16](1982) एवं शिवाकान्त ठाकुरक *कृष्ण विनु राधा* [17](1984) आदिक गणना कयल जाइछ। उपर्युक्त नाटकादिक कथानक पुराणाश्रित एवं महाभारताश्रित अछि, अत: तदयुगीन वातावरण, आकस्मिता आदिक पूर्ण समावेश अछि। एहि नाटकक पात्र सभ अलौकिक गुणसँ युक्त छथि। उपर्युक्त नाटकक पौराणिक परिवेशमे संस्कृत नाटकक गुणसँ अलंकृत अछि तँ ई सभ मैथिलीक पारंपरिक नाटकक थिक।

मध्यकालीन पारंपरिक नाटकक अन्तिम नक्षत्र छथि महामहोपाध्याय हर्षनाथ झा। हिनक उषाहरण, माधवानन्द नाटकक एवं राधाकृष्ण मिलन लीला थिक। एहि नाटकादिमे कथोपकथनक अपेक्षा गीतक प्रधानता अछि। गीतहिक माध्यमे कथा-विकास होइछ। संवादमे संस्कृत एवं प्राकृत तथा गीतमे मैथिलीक प्रयोग भेटैछ।

उषाहरण नाट्यशास्त्रीय लक्षणसँ युक्त अछि। एहिमे प्रख्यात पौराणिक कथा-वस्तु, धीरोदात्त अनिरुद्ध नायक अंगीरस श्रृंगार, अन्य रस अंग, पाँचो संधि ओ पाँच अंक अछि। एकर कथानक हरिवंश पुराणसँ लेल गेल अछि। एहिमे प्रयुक्त गीत संस्कृतनिष्ठ मैथिली आ संस्कृत एवं विद्यापतिक शैलीपर उपमा तथा उत्प्रेक्षा अलंकारक सरस एवं कौशलपूर्ण वर्णनक अतिरिक्त एहिमे नाटकीय विशेषताक अभाव अछि। ई नाटकक नाटकीयतासँ पूर्ण अछि। एहिमे नाट्यकारक कवित्वपूर्ण अभिव्यक्ति भेल अछि। एकर कलापक्ष अत्यन्त सबल अछि जे नाट्यकारक कलात्मक दृष्टिकोणक परिचायक थिक। ई संस्कृतनिष्ठ सुललित शब्दक प्रयोगक कए नाटकककेँ अत्यधिक प्राणवंत बनौलनि।[18]

माधवानन्द नाटकक (1962)मे नान्दीक पश्चात् सूत्रधार रंगमंचपर उपस्थित भ' कए नाट्यक अभिनयक प्रस्ताव प्रस्तावनामे करैत छथि। संपूर्ण नाटकक पाँच अंकमे विभाजित अछि। एकर कथा अत्यल्प एवं गीतक बाहुल्य अछि। एकहि भावकेँ व्यक्त करबाक हेतु अनेक गीतक प्रयोग भेल अछि। एहिमे संवाद नगण्य अछि। एहि नाटककमे प्रयुक्त गीतपर विद्यापतिक प्रभाव अछि तथापि कविक निजी मौलिकता सन्निहित अछि। ई नाटकक मध्यकालीन पारंपरिक नाटकक अनुकूल थिक। एकर कथोपकथन संस्कृत एवं प्राकृतमे तथा गीत मैथिलीमे अछि। गीतक भाषा संस्कृतनिष्ठ अछि। हिनक वैशिष्ट्य अछि जे जाहि रसक गीत ई लिखलनि ओकरे व्यंजक वर्णक प्रयोग कयलनि। कलापक्ष एवं भावपक्षक सुन्दर समन्वय एहिमे भेल अछि। पात्रक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करबामे ई असफल रहलाह अछि। गीतक आधिक्यक कारणेँ हिनक कवित्त्व शक्ति प्रकाशित भेल अछि। प्रांजल भाषा, वर्णन सौष्ठव, विभिन्न अलंकारक प्रयोग अति कुशलताक संग भेल अछि।[19]

राधाकृष्ण मिलना लीला (1962)मे मात्र गीत तत्वक प्रधानता अछि। एहि नाटककमे कथोपकथन एवं दृश्य-विधानक सर्वथा अभाव अछि। पात्रक प्रवेश एवं निष्क्रमण तथा रंग-निर्देश आदिक सूचना संस्कृत श्लोक माध्यमे देल गेल अछि। एहि नाटकक प्रसंगमे डॉ. जयकान्त मिश्रक कथन छनि जे व्रजक रासधारीक सुविधाक हेतु कालान्तरमे एहिमे व्रजभाषाक समावेश कयल गेल।[20] उपर्युक्त तीनू नाटककमे नाटकककार मध्यकालीन पारंपरिक नाटकक प्रवृत्तिकेँ यथावत अनुकरण कयलनि। जे एहि सभ नाटकककार रचना आधुनिक कालमे भेल अछि तैं एकर चर्चा एतय अपेक्षित अछि।

विशुद्ध मैथिलीमे पौराणिक नाटकक रचनाक श्रीगणेश कयलनि जीवन झा *सामवती पुनर्जन्म* (1908)क रचना क' कए। प्रतिपाद्य नाटककमे शास्त्रीय परम्परा समीपवर्त्ती युगसँ प्रचलित विभिन्न नाट्य रूपक समन्वय दृष्टिगत होइत अदि।

कथा-प्रवाह द्रुतगतिएँ अग्रसर होइछ; किन्तु नाटकककारक कुशलताक फलस्वरूप तारतम्य एवं रोचकता कतहु बाधित नहि भेल अछि। कथोपकथन गठित तथा प्रसंगानुकूल अछि। नाटकक संवादक प्रत्येक वाक्यमे नाटकीय गतिशीलता अछि आ एको अंश एहन नहि अछि जे अनावश्यक एवं शिथिल हो। बीच-बीचमे स्वगत भाषणक आयोजन अछि, जनान्तिकक अवश्यकतानुसार प्रयोग भेल अछि। एकर आरंभमे नान्दी पाठमे मैथिलीक आश्रयण अछि, ओहि प्रकारेँ भरतवाक्यमे नहि कयल गेल अछि। एहि प्रसंगमे नाट्यालोचक डॉ. प्रेमशंकर सिंहक कथन छनि, एकर कथानक पौराणिक पृष्ठभूमिमे अछि, किन्तु ई अस्वाभाविक प्रतीत होइछ। एकर कथामे रसक आभास मात्र होइछ जे नाटकीय समीक्षाक दृष्टिएँ दोषपूर्ण अछि। वैवाहिक प्रसंगमे अनेक स्थलपर असंगतिपूर्ण विषयक उल्लेख भेल अछि। नाट्यकार अपन प्रतिभाक बलपर अस्वाभाविक कथानककेँ स्वाभाविक बनयबाक प्रयास कयलनि अछि। मंगलाचरण, प्रस्तावना, भरत वाक्य, चामत्कारकि कथन, श्रृंगारिक कथन, श्रृंगारिक गीत, गजल, ठुमरी, पौराणिक कथानकमे समाजिकताक समावेश कथा- प्रवाहकेँ द्रुत गतिएँ आगाँ बढ़बैछ। एकर कथानक संस्कृत नाट्य परम्पराक समान परंपरागत अछि जे इतिहास एवं अनुरूप अछि।[21]

मैथिलीक पारांपरिक नाट्य साहित्यक अन्तर्गत एक नव आयामक श्रीगणेश करैछ तेजनाथ झाक सद्यः प्रकाशित सुरराज विजय नाटकक। एहि नाटकक रचना काल थिक(1919), किन्तु एकर प्रकाशन भेल अछि (1995)मे। एहि नाटकक मंचन महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक समक्ष इन्द्रपूजाक अवसरपर भेल छल। नाटकक मुख्यतः इन्द्र एवं वृत्रासुरक घटनापर आधृत अछि जाहिमे शचीक संयोग एवं वियोग तथा परंपरागत नाटकक विदूषकक हास-परिहासक रोचक वर्णन कयल गेल अछि। एहि नाटकक विशिष्टता अछि जे एहिमे लीला वा कीर्त्तनियाँ एवं पारसी थियेटरक शैलीक मिश्रित स्वरूपक परिचय भेटैत अछि। नाटकक परंपरागत नाटकक सदृश पाँच अंकमे विभाजित अछि। नाटकान्तमे भरत-वाक्यक परम्परापर *आशीर्वादी* गीतक नव प्रयोग कयलनि जे नाटकककारक मौलिकता छनि।

नाटकक भाषा अत्यन्त स्वाभाविक, जीवनपूर्ण, प्रवाहमयी एवं प्रभावोत्पादक अछि। भाषा-शैलीमे भावाचित शब्द-निर्माण एवं शब्द चयनमे नाटकककारकेँ अत्यधिक सफलता भेटलनि अछि। हिनक नाटकमे भाषा-प्रयोग प्राय: पात्रक प्रकृति एवं योग्यतानुरूप एवं विषयानुरूप आ परिस्थितिक अनुकूल भेल अछि। हिनक नाटकक भाषा विषयानुरूप सेहो परिवर्त्तित होइत अछि। भावाभिव्यक्तिक अनुरूप कोमल पुरुष भाषाक प्रयोग हिनक नाटकक वैशिष्ट्य थिक। प्रेमक प्रसंगमे भाषा मधुर आ रसपूर्ण दर्शकक हृदयकेँ स्पर्श करबामे समर्थ अछि। हिनक नाट्य-

रचनामे विषयानुसार भाषाक विभिन्न शैली भावात्मक, व्यंग्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक रूपक दर्शन होइत अछि। नाटकककार व्यंग्यात्मक रेखाचित्र अपन नाटककमे विदूषकक माध्यमे उतारलनि अछि। एहन स्थलपर व्यंग्यक गरिमा तथा लक्षण-व्यंजना आदि शब्द-शक्तिक प्रयोग स्पष्ट ध्वनित होइत अछि। हिनक गद्य ओ पद्य दुनू समान रूपेँ उच्चकोटिक थिक।[22]

पारंपरिक मैथिली नाटकक मजत्त्वपूर्ण कृति थिक लालदासक *सावित्री-सत्यवान* (1979) एकर रचना ओ कहिया कयलनि तकर निश्चित समय अद्यावधि अनुसंधेय अछि; किन्तु एकर किछु अंश *मिथिला मिहिर* (1909)क अंकमे प्रकाशित भेल छल जकर सूचना विविध साहित्येतिहासिक ग्रंथमे उपलब्ध होइछ। संस्कृत लक्षण ग्रन्थानुरूप प्रतिपाद्य नाटकक पारंपरिक शैलीक अनुकरणपर लिखल गेल अछि। एकर मंगल श्लोक संस्कृतमे अछि। नान्दीमे मंगल गीत, महाराजाधिराज रमेश्वर सिहंक विरूदावली गीत गाओल जाइछ तत्पश्चात प्रस्तावनान्तर्गत वीर, श्रृंगार, अद्भूत, करुण रस सम्मिलित संयुक्त शास्त्रोक्त नाटककमे सावित्री सत्यवान नाटककेँ अभिनीत करबाक उद्देश्यपर प्रकाश देल गेल अछि। नाटकक सम्पूर्ण कथावस्तु एक अंकसँ दस अंक धरि चलैत अछि। प्रथम अंकसँ पंचम अंक धरि नाटकक पूर्वार्द्ध थिक तथा षष्ठसँ दशम अंक धरि उत्तरार्द्ध। नाटकक कथानक पौराणक अछि तथा एहिमे नाटकारक अद्भूत कवित्व शक्तिक संगहि-संग मैथिलीक विलक्षण प्रौढ़ गद्यक प्रारूप उपलब्ध होइछ। मंचनक दृष्टिएँ ई नाटकक अभिनयोपयोगी नहि अछि; कारण संवाद एतेक पैघ-पैघ एवं पात्रक बाहुल्य अछि जे मंचोपयोगिताक हनन करैछ।[23] अन्तमे भरत वाक्य अछि जाहिमे *सर्वेभवन्तु सुखिन: सर्वेसन्तु निरामयाक* पावन उपदेश देल अछि।

भाषाक कसौटीपर जखन प्रतिपाद्य नाटकक विश्लेषण करैत छी तखन एहिमे दुइ संस्कृतक श्लोक प्रयोग भेल अछि प्रथम नाटकक आदिमे आ दोसर नाटकक अन्तमे। मैथिली गीतक प्रचुर प्रयोग एहिमे भेल अछि जे स्पष्ट करैछ जे हिनका संगीतमे विशेष अभिरुचि छलनि। राग-रागिणीक नीक ज्ञान तथा छन्दपर हुनका अद्भूत अधिकार छलनि। इएह कारण अछि जे अधिकांश गीतक संग ओकर रागक निर्देश कयलनि तथा ओकर स्वरक आरोह-अवरोहक विधिक सेहो उल्लेख कयलनि। एहि नाटककमे भाषागत दोष, शब्दक अधिकता, वाक्यविन्यासमे शिथिलता, व्याकरण सम्बन्धी कतिपय दोष दृष्टिगत होइछ जे मैथिलीक प्रारंभिक परम्परागत नाटकक हेबाक कारणेँ महत्त्व नहि रखैछ।

जीमूतवाहन चरित (1952) पौराणिक परिवेशमे रचित नाटकक थिक। इहो नाटकक पारंपरिक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल अछि संगहि नाटकीयताक दृष्टिसँ उपयुक्त प्राय: सभ तत्वक समावेश अछि। एहि नाटकक विचार - विन्दुमे सुरेन्द्र

झा सुमनक शब्दैँ स्पष्ट अछि-पुरान प्रसिद्व धीरोदात्त चारित जीमूतवाहन नायक छथि। कथावस्तु गन्धर्व - विद्याधर युगक आख्यान रहितहुँ आधुनिक रीति नीतिसँ अनुस्यूत रहने रोचिष्णु अदि। कवि अपन समयक संस्कार द्वारा पुराण युगहुकेँ अद्यतन ओ सजीव बनौने छधि। भाषामे यथायोग्य पात्र मुखे मैथिलीक केन्द्रीय ओ प्रान्तीय प्रयोग प्रचुर अछि जे रूपक रचनाक स्वभाविक स्त्रोत अछि।[24] किन्तु कखनहु अति भ' जयबासँ अस्वाभाविक भ' गेल अछि। जीमूतवाहनक सासुरक लोक सुनन्द द्वारा ओझा जीमूतवाहन कहा क' लेखक अति उत्साहमे आबि क' जेना पौराणिकताकेँ खंडित क' देने छथि।

संस्कृत लक्षण ग्रंथक प्रणालीपर नाटकक लिखलनि आनन्द झा सीता स्वयंवर (1995 सं.) क अन्तर्गत जाहिमे नान्दी, प्रस्तावना *नान्दी* एवं सूत्रधार पाचँ अंकमे - रामक वैवाहिक प्रसंगक कथानककेँ यथारीतिएँ अनुस्यूत कयलनि अछि। नाटकक कथानक पौराणिकतासँ ओतप्रोत अछि संगहि विविध भाषाक प्रयोग नाटकककार पात्रक योग्यतानुरूप क' कए एहिमे विशेष रोचकता अनबाक उपक्रम कयलनि अछि। खास क' परशुराम एवं लक्ष्मणक वार्त्तालाप अत्यन्त रोचक अछि। भारत वाक्यक रूपमे समदाउन गाओल गेल अछि। नाटकककार युगक बुद्धिवादसँ प्रभावित छथि तैं कथोपकथन चमत्कारक नहि भेल अछि। एहिमे पात्रोचित भाषाक प्रयोग स्वाभाविकताक उद्घाटनमे सहायक नहि होइछ, प्रत्युत मैथिलीक कतिपय उपभाषाक परिचय दैछ। नाटकक पारंपरिक शैलीक अनुरूप रहितहुँ स्थल-स्थलपर आधुनिकताक छाप नेने अछि। एहि नाटककमे पारंपरिक नाटकक सदृश संस्कृत श्लोकक प्रयोग नहि भेल अछि। जनकक शासन व्यवस्था, आचार-विचार, रहन-सहन एवं रीति-नीतिक वर्णन मिथिलाक अनुरूप भेल अछि जे सीता स्वयंवरक पृष्ठभूमिमे उचित प्रतीत होइछ।[25]

ठाकुरप्रसाद झाक *सीता परिणय* (1960) पाँच अंकमे विभक्त अछि। एहिमे नाटकीय लक्षणक यथासाध्य निवेश भेल अछि। नान्दी, प्रस्तावना एवं अंक-विभाजन एकर उपयुक्त अछि। एहि संबंधमे नाटककारक कथन छनि - एहिमे प्राचीन नाटकक छायासँ सूत्रधार, नटी कंचुकी आदि पात्रक प्रवेश कयल गेल अछि तथा मिथिलाक भावपूर्ण रीति, व्यवहार, सभ्यता तथा शक्तिक प्रधानता देखाओल गेल अछि।[26] एहि नाटककमे डेग-डेगपर गीतक प्रयोग भेल अछि। एकर पात्र कपोल-कल्पित अछि। सीता स्वंयवर एवं सीता परिणयक कथानकमे समानता अछि।

दामोदर झाक *गन्धर्व विवाह* (2010 संवत्) क कथानक यद्यपि महाभारताश्रित अिछ तथापि एहिमे सबसँ पैघ बात जे ध्यानकेँ आकर्षित करैत अछि ओ थिक आधुनिक मैथिल समाजक आचार-व्यवहारक निदर्शन। यद्यपि प्राचीन परम्पराक

परिप्रेक्ष्यमे ई नाटकक लिखल गेल अछि तथापि नवीनताक निदर्शन अनेक स्थलपर भेटैछ। विवाहोपरान्त चतुर्थीक भोज, दुर्वाक्षत तथा एतेक दूर धरि जे संबोधन पर्यन्तमे छोटकी भौजी, करिया भाई, छोटकी दाइ आदिक प्रयोग क' पूर्णतया मैथिल वातावरण उपस्थित कयल गेल अछि। प्रतिपाद्य नाटकक नाट्य शास्त्रानुकूल अछि जाहिमे नाटकककारक कौशलक परिचय भेटैछ। एहि प्रसंगमे त्रिलोकनाथ मिश्रक कथन छनि, विद्वान युवक कविक लेखनीक कृति स्वरूप ई नाटकक नवीन रहितहुँ प्राचीनताक ताहि रूपेँ अक्षुण्ण रक्षा कएने छथि जाहिसँ वर्त्तमान युगक कतोक स्वच्छन्द मैथिली कविक निरंकुश काव्यक हेतु एकरा तीक्ष्ण अंकुश कहि सकैत छी।[27]

एकर नाट्य-शैली पारंपरिक अछि; कल्पनामे नवीनतामे नाटकककारक प्रतिभाक निदर्शन होइत अछि। नाटककमे ऐतिहासिक एवं देशकालक तथ्यक अभाव, पात्रक आधिक्य, शिथिल, गतिहीन एवं नाटकीयतासँ रहित कथोपकथन, पारम्परिक नाट्य सदृश गीतक बाहुल्य, पात्रोचित भाषाक अभाव रहलाक कारणेँ एकर नाटकीयता समाप्त भ' जाइत अछि। एहि नाटककमे गद्यक संगहि-संग पद्यक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। एहि संदर्भ विष्णुलाल शास्त्रीक कथन छनि, एहिमे प्राचीन नाट्य शास्त्रक नियमक परिपालन करैत नवीनताक समावेश ताहि तरहेँ कयल गेल अछि जे ओहिसँ दुनू दृष्टिक पाठकक रुचिक पूर्ति होएत तथा एहिसँ मैथिलीक नाटकक विषयक अभावक पूर्तिक संग निर्दिष्ट मनोरंजन होएत।[28] एहि प्रसंगमे डॉ. प्रेमशंकर सिंहक कथन छनि यद्यपि प्राचीन परंपराक परिप्रेक्ष्यमे ई नाटकक लिखल गेल अछि तथापि नवीनता अनेक स्थलपर भेटैछ। ई नाटकक अभिनयोपयोगी नहि अछि। नाटककमे देशकालक तथ्यक अभाव, पात्रक आधिक्य, शिथिल, गतिहीन एवं नाटकीयतासँ रहित कथोपकथन, गीतक बहुलता, पात्रानुकूल भाषाक सर्वत्र निर्वाह नहि इत्यादि विभिन्न तथ्यक पर्यालोचनसँ सपष्ट भ' जाइछ जे नाट्यकार असफल छथि।[29]

जीवनाथ झा *दुर्गा विजय* (2015 सं.)मे सेहो पारंपरिक नाट्य-शैलीक अनुकरण क' कए पौराणिकताक परिवेशमे एकर रचना कयलनि। यद्यपि एहि नाटकेँ पारंपरिक नाटकक क्षेत्रमे राखल जाइत अछि, किन्तु एहिमे ने तँ प्रस्तावना अछि आ ने विषकंभके। एकर मुख्य रस वीर, अंगरस हास्य, करुण, भयानक एवं श्रृंगार अछि। नाटकक अतिशय सरल एवं रोचक अछि। अनुप्रासयुक्त छोट-छोट कथोपकथन नाटकक वैशिष्ट्य कहल जा सकैछ। आधुनिक मंच विधिक अनुकरण क' कए नाट्यकार एकरा रंगमंचोपयुक्त बनयबाक प्रयास कयलनि अछि।

पुत्रदान (1992)मे शंभुनाथ झा अर्जुन-चित्रांगदक पौराणिक आख्यानकेँ आधार बनौलनि जाहिमे हिनक कवित्वक संगहि भविष्णु नाटकीय प्रतिभाक परिचय भेटैछ।

एहिमे जनरुचिक रक्षा कयल गेल अछि। नाटकीय रोचकता एंव मंचोपयोगिता एकर वैशिष्ट्य अछि।

डॉ. शिवाकान्त ठाकुर परम्परागत संस्कृत नाट्य-शैलीक अनुकरण क' कए *कृष्ण विनु राधा* (1984) नाटकक रचना कयलनि जाहिमे राधाक विरह वैशिष्ट्यकेँ नाट्य रूप प्रदान कयल गेल अछि। यद्यपि एकर कथानकमे कोनो नवीनता नहि; प्रत्युत परिपाटीपर आधृत अछि तथापि एहिमे नाट्यकारक मौलिकताक आभास स्थल-स्थलपर भैटैछ।

उपर्युक्त नाटकादि पौराणिक परिवेशमे संस्कृत नाटकक अनुसरण करैत अछि। एहि नाटकादिमे चरित्र-चित्रण विषयक उपस्थापन तथा विकासक चरम परिणति संस्कृतक पारम्परिक नाटकक अनुरूप अछि। एहि नाटकादिमे कोनो प्रकारक नवीनता नहि भेटैछ। जँ नवीनता भेटितो अछि तँ दुइ बातपर - पौराणिक कथानकक भंडारसँ योग्य कथानकक चयन एवं ओकर रूपायतनमे यथासंभव मैथिलत्व दिस झुकाब। अतः नाटकक साहित्यमे पहिल बेर अंगद, जीमूतवाहन आदि नायकक रूपमे अवतरित कयल गेल छथि। जतय नाटकककार एहन स्थलक सर्जन हेतु साकांक्ष रहलाह अछि ततय ओ मिथिलांचलक रीति-नीतिक चित्रण कयलनि अछि।

परंपरागत सामजिक नाटक :

पारंपारिक नाट्य-शैलीक अनुकरण क' कए सामाजिक नाटकक रचना मैथिलीमे सेहो भेल अछि। मैथिलीक सामाजिक परंपरागत नाट्य-शैलीक पुरोधा युगपुरुष जीवन झाक छथि जनिक *सुन्दर-संयोग* [30](1904), ईशनाथ झाक (1907-1965) *चीनीक लड्डू* [31](1960) उल्लेखनीय परम्परागत मैथिली नाटकक थिक जकर विश्लेषण कयल जा रहल अछि।

सामाजिक विषय-वस्तुक परिप्रेक्ष्यमे पारंपरिक नाटकक लिखनिहारमे जीवन झा सर्वप्रथम छथि जे शास्त्रीय परम्पराक संगहि संग आधुनिकताक समन्वय कयलनि अछि *सुन्दर संयोग* मे। एहिमे नाटकीय कौतुहलताकेँ एहि प्रकारेँ समाविष्ट कयल गेल अछि जे पाठकक जिज्ञासाक तुष्टि आद्योपान्त पढ़ने बिनु नहि होइत अछि।[32] सुन्दर सबकेँ चिन्ह जाइत छथि आ हुनक हाथक लिखल पत्र पढि क' सरलाक मामा सेहो चिन्ह जाइत छथि; परन्तु नाटकककार एहन कौशलसँ दुनू पात्रक संभाषण प्रस्तुत करैत छथि जे ककरो परिचय करबाक अवसरे नहि भेटैत छनि। यद्यपि कादम्बरी मस्तकपर लागल तिलक चिन्हकेँ देखि संदेह करैछ, किन्तु मिथ्यावाद एवं सरस्वतीक माँक भये ओ प्रत्यक्ष रूपसँ एकरा प्रकट नहि क' पबैछ। वास्तविकताक रहस्योद्घाटन गाम पहुँचलापर होइछ तखन विस्मय मिश्रित

आनंदक अनुभूति होइछ। पाठककेँ पहिनेसँ जागृत जिज्ञासाक तुष्टि एहि प्रसंगपर अनायासे भ' जाइछ। एहि प्रकारेँ नाटकीय कौतुहलक निर्वाह नाटककारक कुशलता एवं सिद्धहस्तताक परिचायक अछि।[33]

यद्यिप एकर कथांश अत्यल्प अछि। किन्तु प्रस्तुतीकरण एवं वर्णन सौष्ठवमे नाटकककारक प्रतिभा एवं निपुणता प्रदर्शित होइत अछि।[34] कथानकक विकास एहन मोड़ उपस्थित करैछ जे ओहिमे अनायासे नाटकीय व्यंग्य एवं उत्सुकताक वृद्धि होइत अछि। कथोपकथन छोट, चुस्त, सरस, हृदयस्पर्शी एवं नाटकीयतासँ परिपूर्ण अछि। भाषा संस्कृतनिष्ठ, प्रांजल एवं माधुर्य्य गुणसँ संयुक्त अछि। एकहि सामाजिक स्तरक पात्रक सन्निवेशक कारणे भाषाक एकरूपता दृष्टिगत होइत अछि। भावावेशक स्थलपर अवश्ये ओहिमे भाव-भार-वहनक अद्भूत शक्ति देखबामे अबैछ।

चरित्र-चित्रणक दृष्टिएँ नाटकककार असफल छथि। एहि छोट नाटककमे पात्रक बाहुल्य अछि जाहिसँ पात्रक वैशिष्ट्य नहि प्रकाशित भ' पबैछ। किन्तु नाटककारक वैशिष्ट्य अछि जे एहन संवाद योजना कयलनि अछि जे प्रत्येक पात्रक मनोवृत्तिक संकेत भेटि जाइत अछि।[35] तीर्थस्थानमे अनावश्यक लज्जा एवं औपचारिकताक कारणेँ ओ अपन परिचय नहि दैत छथि। ई हुनक शालीनता एवं धीरप्रशान्तक द्योतक थिक। सरलाक हृदयमे प्रेम वियोगक ज्वाला प्रज्जवलित अछि *प्रमाणमन्तः कारण प्रतृत्तयः* क' आधारपर ओ आपन प्रेमी दिस आकर्षित होइत भाव प्रगट नहि करैत छथि; किन्तु व्रीहावश नहि कहि पबैत छथि। अपन अन्तर्द्वन्द्वकेँ ओ अपन सखी पर्यन्तकेँ नहि कहैत छथि। सरोजक कथनसँ स्पष्ट अछि जे ओ सहृदया, चचंल एवं प्रौढ़ छथि। मनोवैज्ञानिकताक अभावमे नाटकककार चरित्र-चित्रणमे निपुणता नहि प्राप्त क' सकलाह।[36]

एहिमे पचीस मैथिलीक एवं चारि संस्कृतक गीत प्रयुक्त भेल अछि जाहिमे पन्द्रह मात्र चतुर्थ अंकमे अछि। एहि गीतक भावादि स्पष्ट करैछ जै नाटकककारकेँ साहित्यिक एवं लोकजीवनक परंपराक अनुभव छलनि तँ दूनूक समन्यात्मक स्वरूपक परिचय देलनि। गीतक बाहुल्यक कारणेँ कथा-प्रवाहमे गतिरोध आबि गेल अछि। एहिमे प्रयुक्त गीतसँ हमरा प्रतीत होइछ जे हिनकापर मिथिलाक कीर्त्तनिया वा लीला एवं पारसी थियेट्रिकल कम्पनीक शैलीक प्रभाव अछि।[37]

मैथिली नाट्य-साहित्यक इतिहासमे असंदिग्ध रूपें ईशनथ झाक *चीनीक लड्डू* (1937-39)सर्वश्रेष्ठ पारंपारिक सामाजिक नाटकक थिक। एहिमे पारिवारिक वातावरणक जीवन्त चित्र उपस्थित कयल गेल संगहि दुष्ट एवं धूर्त्तसँ साकांक्ष रहबाक संकेत भेटैत अछि। एक सुखी-सम्पन्न परिवार कुचक्र एवं कलहक कारणेँ

कोना मरूभूमि बनि जाइछ तकर हृदयस्पर्शी चित्र नाट्यकार प्रस्तुत कयलनि अछि। परिवारक रेखाचित्रकेँ नाट्यकार अत्यन्त सतर्कताक संगहि पारिवारिक विषम स्थिति, कलह एवं ओकर दुष्परिणाम दुष्टक सरलता तथा वैमनस्यसँ अनुचित लाभ उठौनिहार आ अन्तमे कुकृत्यक फलभाग आदि तथ्यसँ समाजकेँ साकांक्ष रहबाक संकेत देलनि अछि।[38]

एहिमे नाटकककारक प्रतिभा सजीव भ' गेल अछि जे ओ पारंपरिक भारतीय एवं पाश्चात्य नाट्यकलाकेँ सहज समन्वित रूपमे प्रस्तुत करबामे हिनक वैशिष्ट्य छनि। नाटकककार शेक्सपियरक ऑथेलोसँ खलनायक, संघर्ष आदिसँ प्रेरणा ग्रहण क' कए ओहि विषय-वस्तुपर भारतीय नाट्य-कलाक अवतारणा कयलनि। ऑथेलोक खलनायक इयागोसँ प्रेरणा ग्रहण क' नाटकक खलनायक बटुआदास, प्रेमकान्त एवं हुनक पत्नीक सरलताक अनुचित लाभ उठबैछ।

एहिमे पाश्चात्य शैलीक अनुकरणपर भारतीय शैलीक आवरणक कारणेँ ई नाटकक सहज रूपमे आकर्षक एवं गतिशील भ' गेल अछि। एहिमे कथा एवं चरित्र वैचित्र्यक पूर्ण विधान अछि। कथा प्रवाह सहज गतिसँ अग्रसर होइत अकस्मात् अपन धारामे एहि वेगसँ एक आवर्त्त उत्पन्न करैछ जे छल, प्रवंचना विश्वासघात आ तज्जन्य निराशा - अंधकारक संघर्षक कारणेँ सुधाकान्त ओहिसँ ग्रस्त भ' कए अकालहि कालक ग्रास बनि जाइत छथि। एकर संघर्षक कारणेँ कथानकक धारा कखनो वेगवती भ' जाइछ तँ कखनो सर्प गतिवाली। घटना क्रममे कतहु निर्मल आ स्वाभाविक प्रेम, औदार्य, मातृ वत्सलता, शांति तथा संतोष अछि तँ कतहु ईर्ष्या, द्वेष, हत्या संकीर्णता आ लोभ। एहि प्रकारेँ नाटकक पाश्चात्य शैलीक अनुसारेँ विरोधक चरम सीमा आ नियतिक आधारपर कथानकक सृष्टि कयल गेल अछि।[39]

भारतीय पद्धतिक अनुसारेँ गर्भ-संधिक आधारपर एकर नामकरण चीनीक लड्डू कयल गेल अछि। एहि लक्ष्यक प्राप्तिक हेतु नायक एवं अन्य पात्र सतत उद्योगशील रहैछ। जँ सुधाकान्तक मृत्यूपरान्त नाटकक समाप्त भ' जाइत तँ भारतीय वा पाश्चात्य पारंपरिक शैलीक अनुसारेँ कोनो सफल प्रयोग नहि होइत। कारण भारतीय पद्धतिक अनुसारेँ ने तँ नायककेँ फल प्राप्ति, आ ने पाशचात्य पद्धतिक अनुसारेँ खलनायककेँ समुचित न्याये भेटि सकैत। अतएव नायकक मृत्यु भ' जाइछ तथापि भारतीय मान्यताक अनुरूप *आत्मा वै जायते पुत्रः* आत्माक प्रतीक ओकर आत्मजकेँ प्राप्त होइत अछि। अतएव नाटकक करुण सुखान्त अछि।

नाटककमे कथोपकथनक सर्वोपरि स्थान अछि जकर निर्वाहमे नाटकककारकेँ सफलता भेटलनि अछि। कथा-वस्तुक विकास, कौतूहल, नाटकीय व्यंग्य, चरित्रक

विकास मात्र संवाद तत्व पद निर्भर करैछ। उपर्युक्त नाटककमे सब गुण वर्त्तमान अछि। एहि नाटककमे भारतीय पारंपरिक एवं पाश्चात्य शैलीक उत्कृष्ट समन्वयात्मक रूप उपस्थित करैछ। एहि नाटकक फलागम दुष्ट व्याक्तिकेँ समुचित न्यायक आदर्शक उद्बोधन कयल गेल अछि।[40]

एहि पारंपरिक नाटककमे गीत आ संगीतक प्राचूर्य अछि संगहि-संग कथोपकथनमे मैथिलीक सुन्दर गद्यक स्वरूप भेटैछ। एहिमे गीतक जे प्रयोग भेल अछि ओ नीरसताक परिहार क' रसोत्पादन करबा, वातावरणक सृष्टि करबाक तथा पात्रक मनोभाव आ चरित्रगत विशेषताकेँ प्रगट करबामे सहायक भेल अछि। कथोपकथनक भाषा विषयानुकूल एवं पात्रक स्थिति, योग्यता एवं प्राकृतिक प्रयुक्त भेल अछि।

परम्परागत प्रतीक नाटकक :

पारंपिरक नाट्य-शैलीक अनुकरणपर एक मात्र प्रतीक नाटकक उपलब्ध होइछ ओ थिक आधुनिक मैथिलीक शिलान्यासकर्त्ता साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दासक *मिथिला नाटक* (1923)। एहि नाटकक पृष्ठभूमि पारंपरिक नाटकक पूष्ठभूमि थिक। यद्यपि ई नाटकक संस्कृत लक्षणग्रंथानुसारेँ नहि लिखल गेल अछि तथापि एकरा हम पारंपरिक नाटकक श्रेणीमे राखल, अछि कारण जाहि पृष्ठभूमिमे ई नाटकक लिखल गेल छल ओहि नाटककमे नान्दी, प्रवेशक, विषकंभक गर्भ-संधि एवं भरत-वाक्यक प्रयोग भेल अछि तथापि एकरा पारंपरिके नाटकक कहब उचित हैत। नाटककककार एहिमे अपन विविध भाषाक ज्ञानक परिचय देलनि अछि। एहिमे संस्कृतमे श्लोक, मैथिलीमे गद्य-पद्य, बंगला, हिन्दी आदि विविध भाषाक नुमाइश कयलनि अछि। हिनक भाषाक विम्ब विधायिनी शक्ति अपार अछि। वक्ता बोधव्य आ श्रोताक अनुकूल हुनक भाषा बदलैत अछि। संस्कृत नाटकक समान भेदकेँ अपनौलनि अछि। शिक्षित एवं अशिक्षित पात्रक भाषामे विविधता ई पारंपरिक नाटकक अनुरूप अपनौलनि अछि। एहिमे पात्रक एतेक बहुलता अछि जे मंचोपयोगिताक दृष्टिएँ उपयुक्त नहि कहल जा सकैछ तथापि एकर अभिनयक प्रसंगमे सूचना भेटैछ, कारण ओहि समयमे अभिनयोपयोगी नाटकक मैथिलीमे सर्वथा अभावे छल।[41]

परंपरागत ऐतिहासिक नाटकक :

विद्यापतिक जीवन वृत्तकेँ आधार बना क' मैथिलीमे अत्यधिक नाटकक रचना भेल; किन्तु परंपरागत शैलीक अनुकरण कयनिहारमे उल्लेखनीय छथि ईशनाथक *उगना*[42](1956), डॉ. व्रजकिशोर वर्मा *मणिपद्म* (1918-1986)क *कंठहार*[43] (2021),

विक्रम. संवत् जीवनाथ झाक *वीरनरेन्द्र* [44](1956), राधाकृष्ण चौधरीक (1924-1985) *राज्याभिषक* [45](1962) एवं गोविन्द झाक *रुक्मिणीहरण* [46](1989) इत्यादि।

विद्यापतिक भक्ति-भावनासँ प्रसन्न भ' कए महादेव हुनक सेवामे छलथिन; किन्तु रहस्योद्घाटनक पश्चात् ओ अन्तर्ध्यान भ' जाइत छथि। एहि प्रसंगमे रोचकता एवं नाटकीयता अनबाक हेतु अनेक काल्पनिक पात्रक नाटकककार सृष्टि कयलनि अछि। एहि काल्पनिक पात्रक कारणेँ नाटकमे स्वाभाविकता एवं मनोवैज्ञानिकताक संगहि परम्परागत नाट्य-शैलीक अनायासहि निर्वाह भ' गेल अछि। नाटकककार एहिमे विद्यापति कालीन समाजक समसामयिक स्थितिक आंशिक ज्ञान देलनि अछि। नाटकमे सफल रूपसँ ऐतिहासिकता, सामाजिकता एवं रूपकत्वक निर्वाह नाट्यकारक कौशल एवं ठोस मौलिक चिन्तन-प्रतिभाकेँ प्रदर्शित करैत अछि। एकर कथा–प्रवाह रोचकता आ मनोवैज्ञानिकताक संग अग्रसर होइत अछि जाहिसँ नाटकीय कौतूहलक प्राप्ति होइछ।[47] चारित्र-चित्रणकक दृष्टिएँ नाटकक पूर्णतया सफल अछि। एहि नाटकक आकर्षणक केन्द्र-बिन्दु थिक। विद्यापति अपन दार्शनिक, भावुक भक्त आ सांस्कृतिक चरित्रक कारणेँ पाठक एवं दर्शकपर अमिट छाप छोड़ैत छथि। अतएव हुनक चरित्र सरलता एवं सादगीक प्रतीक थिक। कथोपकथनमे नाटकीय लाधवक ध्यान राखल गेल अछि। प्रत्येक वाक्यमे गणित अछि। कतहु अनावश्यक विस्तार नहि कयल गेल अछि। एकर संवाद छोट, नाटकीय आ भाव-व्यंजक अछि। कथोपकथन चारित्रिक वैशिष्ट्यकेँ सपष्ट करैत अछि। ई नाटकक मंचोपयोगी अछि। इएह कारण अछि जे एकर अभिनय शहरी एवं ग्रामीण परिवेशमे अनेक बेर भेल अछि।[48]

वीर नरेन्द्र नाटकक (1956) एक ऐतिहासिक, मौलिक वीर रसात्मक नाटकक थिक जाहिमे वीर नरेन्द्र सिंहक वीरता प्रतिपादित अछि जकर रचना नाटकककार ऐतिहासिक परिवेशमे कयलनि अछि। एहि प्रसंगमे सुरेन्द्र झा सुमनक कथन छनि लेखक, बड़ निपुणतासँ नाटकीय कथा-वस्तुक विन्यास कयने छथि। रंगमंचक अनुकूल दृश्यक विभाग करैत, सूच्य अंशकेँ लक्षणानुकूल विषकम्भक-प्रवेश द्वारा यथास्थान निवेशक कथानकक जटिलताकेँ लेखक सोझरौने छथि। कथोपकथन जे नाटकक रीढ़ थिक, पात्रक प्रकृतिक अनुरूप प्रभावोत्पादक भाषामे अछि।[49] प्राचीन परम्परानुरुप आधुनिक रंगमंचक हेतु ई प्रथम मैथिली नाटकक थिक।[50]

राधाकृष्ण चौधरी ऐतिहासक पृष्ठभूमिमे *राज्याभिषेक* (1962)क रचना कयलनि जाहिमे विशेषत: मिथिलाक इतिहास प्रच्छन्न पृष्ठकेँ उद्घाटित कयलनि अछि। ओइनवार वंश (1353-1526)क प्रसिद्ध राजा महाराज शिवसिंह (1413-1416) मिथिलाकेँ स्वतंत्र घोषित कयने छलाह तकर रक्षार्थ ओ सतत युद्धरत

रहलाह आ अन्ततः वीरगतिकेँ प्राप्त कयलनि। यद्यपि शिवसिंहक राज्याभिषेक तँ नहि भेलनि, किन्तु लखिमा हुनक मुकुट ओ शंखवलाक टुकड़ीकेँ विधिवत राज्याभिषेक कयलनि। नाटककमे शिवसिंहक राज्याभिषेक तथा स्वतंत्रता संग्रामक हेतु विविध मंत्रणाक अनुपम चित्र भेटैछ।

यद्यपि नाटकक भाषा पात्रोचित अछि किन्तु स्थल-स्थलपर स्वाभाविकताक हनन भेल अछि। बंगदूत एवं इब्राहिम साहक दूतक मैथिली बाजब अनुपयुक्त कहल जा सकैछ। नाटकक वीर रसावेष्टित अछि। ई मैथिलीक दुखान्त पारंपरिक नाटकक थिक। पैघ-पैघ कथोपकथन एवं जटिल दृश्य विधानक कारणेँ ई नाटकक रंगमंचोपयोगी नहि अछि।[51]

मैथिलीमे विद्यापतिक पृष्ठभूमिमे कतिपय नाटकक रचना भेल, किन्तु ओहिमे वृजकिशोर वर्मा मणिपद्मक *कंठहार* (2021) विक्रम संवत् नाटकक एक पृथक अस्तित्व अछि, कारण ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे रचित एहि नाटककमे नाटकककार काल्पनिकताक कतहु प्रयोग नहि कयलनि अछि। विद्यापति शास्त्र एवं शास्त्र दुनू विषयक ज्ञाता रहथि। गढ़ गोढ़ियारीक समर क्षेत्रमे हिनक शस्त्र-शास्त्र विषयक ज्ञानक परिचय भेटैछ। ई नाटकक पारंपरिक शैलीमे लिखल गेल अछि जे एकर विशिष्टता थिक। नाटकककार प्राचीनतामे नवीनता, नवीनतामे आधुनिकता आ आधुनिकतामे सरसता अनबाक चेष्टा कयलनि अछि। नाटकक कथोपकथन यद्यपि सजीव अछि तथापि एहिमे उपन्यासक रोचकता, नाटकक अभिनीयता एवं संगीतमयता सहज प्रस्फुटित भेल अछि। घटनाक बाहुल्यक कारणेँ एकर मंचोपयोगितामे हनन करैछ।[52]

मैथिलीक पारपरिक शैलीमे लिखित गोविन्द झा (1923) *रुक्मिणी-हरण* (1989) कृष्ण लीलाक अनेक कथामेसँ रुक्मिणी-हरणक इतिहास प्रसिद्ध कथाक पृष्ठभूमिमे युगीन यथार्थक प्रक्षेपण प्रतिपाद्य नाटकक विशेषता थिक। मैथिली नाटकक क्षेत्रमे ई एक नवीन एवं अभिनव प्रयोग अछि। नाट्यकार अत्यन्त सजीवताक संग पारंपरिक शैलीमे फिंरगी द्वारा कयल गेल मजदूरपर अत्याचारक विरुद्धमे
क्रान्तिक स्वरक आह्वान कयलनि अछि। नाट्यकार ऐतिहासिक तथक आलोकमे रुक्मिणीक प्रेम प्रसंगक कपोल-कल्पना एहिमे कयलनि अछि। एहि नाटकान्तर्गत मिथिलाक सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिदर्शन दू स्तरपर चलैत अछि। एक भाग आम जन-जीवन, जमींदारक अय्याशी लीला। गौरक आतंक एवं शोषणक विरूद्ध होइत जनताक आक्रोश वा विद्रोहक कथा तथा दोसर भाग विसरल भुतिआएल विरासतक सशक्त नाट्य-शैली कीर्त्तनिया वा लीला नाटकक स्मरण करबैत अछि।[53]

प्रतिपाद्य नाटककमे विभिन्न सत्ताक केन्द्रमे सत्ता वर्गक पारस्परिक द्वन्द्व अन्तर्विरोध, अहंकार आ वैमनस्य एवं युद्धक कथा कहैत अछि जाहिमे जनसामान्यक भूमिका मूक दर्शक रहैछ जाहिमे जनसामान्यक कोनो हस्तक्षेप नहि होइछ। समयक क्रममे मिथिलांचलक सामाजिक आ राजनीतिक परिदृश्यमे परिवर्त्तन होइछ। शनैः-शनैः व्यापारी रूपमे समस्त मिथिलांचलमे अंग्रेज अपन हाथ पैर पसारि लेलक। एहिठामक राजा, जमींदार आ अमला सभ अंग्रेजक हाथक कठपुतरी बनि गेल तथा अनायास प्राप्त संवृद्धिसँ निरंकुश बनि गेल। एहिठामक विपुल प्राकृतिक संपदा, मेहनती मजदूर, विशाल भूमि एवं ललनाक आकर्षक सौन्दर्य अंग्रेजकेँ उन्मत्त बना देलक। तानाशाही प्रवृत्तिक अंग्रेज एत्तुका लोकक प्रति पशुवत व्यवहार करय लागल। ई आक्रोशाग्नि व्यक्तिसँ समाजमे पसरि गेलैक। समाजमे अद्भूत उत्तेजना अयलैक तथा ओ व्यग्र भ' कए अंग्रेजकेँ ध्वंस करय लागल।[54]

यद्यपि मैथिली नाट्य साहित्यक अन्तर्गत ऐतिहासिक नाटकक अभाव नहि अछि तथापि प्रत्येक नाटकक पारंपरिक नाटकक परिधिमे नहि अबैछ। मैथिली पुरोधा विद्यापति (1350-1938)क जीवन-चरित्रकेँ केन्द्र-विन्दु मानिक एक दर्जन नाटकक लिखल अछि, किन्तु ओ सब पारंपरिक नाटकक शास्त्रीय परंपरासँ अपन पृथक अछि तैँ एतय उल्लेखनीय नहि।

कीर्त्तनियाँ वा लीला नाटकक शैलीक परिवेशमे वर्त्तमान शताब्दीक नवम दशाब्दमे गोविन्द झा तद्वत पारंपरिक नाटकक रचना कयलनि जे वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे परंपरागत प्रवृत्तिक नाट्यरचना संभव अछि तकर ज्वलन्त प्रमाण उपर्युक्त नाटकक अनुशीलनसँ भ' जाइत अछि।

पारंपरिक विभिन्न भाषासँ अनूदित मैथिली नाटकक :

भारतीय अन्यान्य साहित्यमे विविध भाषाक नाटकक अनुवादक ज्वार आयल तकरे फलस्वरूप मैथिली साहित्यान्तर्गत परंपरागत नाटकक अनुवादक श्रीगणेश भेल। मैथिलीमे अद्यावधि जतेक नाटकक अनूदित भेल अछि ओकरा हम परंपरागत नाटकक श्रृंखलान्तर्गत राखि सकैत छी, कारण अनुवादक लोकनि ओहने नाटकक अनुवाद मैथिलीमे कयलनि जे अपन साहित्यमे पूर्ण प्रतिष्ठित छल। संस्कृत, अंग्रेजी एवं फ्रेंचसँ मैथिलीमे नाटकक अनुवाद भेल अछि जे संस्कृत नाटककसँ निशचित रूपेण शास्त्रीय परंपराक अनुशीलन करैत अछि।

अंग्रेजी शिक्षा, संस्कृति एवं साहित्यक प्रचूर प्रसारक फलस्वरुप अंग्रेजी नाटकक मैथिलीमे अनुवाद भेल जे हमर पारंपरिक नाट्य-रचना विधानकेँ अतिशय प्रभावित कयलक अछि। शिक्षा-संस्थादिमे अंग्रेजी नाटकक अभिनयक पद्धति हमर

परम्परागत अभिनय पद्धतिकेँ परिवर्त्तित क' देलक अछि। परम्परा एवं विधानसँ ई अभिनयमे एक नव स्पन्दन भरि देलक अछि। चमत्कारपूर्ण कथानक तथा कतहु-कतहु गीत वा संगीत आ नृत्यक प्रबन्धक नाटकककार जनताक युगीन रुचिक परितोष कयलनि अछि। जनरुचिक परिमार्जनक रूप मैथिली नाटकक एक निजी वैशिष्ट् अछि।

अंग्रेजीसँ अत्यल्प नाटकक अनुवाद मैथिलीमे भेल अछि। एहि दिशामे राजेन्द्र झा *स्वतंत्र सुप्रसिद्व नाट्यकार शेक्सपियरक ऑथेलोक अनुवाद देशमणि* [55](1957) एवं *एज यू लाइक इटक राजमीण* [56](1968) तथा इब्सनक *द घोस्टक* अनुवाद दामोदर झा *भूतक छाया* [57](1965) विशेष उल्लेखनीय अछि। फ्रेंच भाषासँ एकमात्र एकांकीक अनुवाद मैथिलीमे प्रकाशित भेल ओ थिक ऑस्कर वाइल्डक *सालोम* क *सलोम* [58](1965)क अनुवाद कयलनि डॉ. इलारानी सिंह (1945-1995)।

संस्कृत नाट्य साहित्यक विशाल परिप्रेक्ष्यमे जतेक नाटकक मैथिलीमे अनूदित भेल अछि ओकरा हम पारंपरिक नाटकक श्रेणीमे रखैत छी, कारण ओहि सभक रचना संस्कृत लक्षणानुसारेँ भेल अछि। संस्कृतक नाटकक तँ पारंपरिक नाटकक अछिए तँ ओहिमे पारंपरिक अनुवाद मैथिलीमे भेल अछि यथा महाकवि कालिदासक[59] अभिज्ञान शाकुन्तलमक अनुवाद कयलनि ईशनाथ झा *मैथिली शकुन्तला नाटकक (1367 साल)* एवं महाकवि शूद्रकक मृच्छकटिकम् *मैथिली मृच्छकटिक* [60](1955)। मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे प्रगीतिशीलता अनबाक दृष्टिएँ जीवानन्द ठाकुर (संस्कृत नाटकक अभ्युदय कालक) महाकवि भास रचित विभिन्न नाट्कावलीकेँ गद्य-पद्यानुवाद कयलनि जाहिमे *अभिषेक* [61](1945) भास नाटकावली, भाग- दू मे दूतवाक्य *मध्यम व्यायोग* एवं *पंचरात्र* [62](1947), भास नाटकावाली, भाग-*तीन* मे *उरु भङ्ग* एवं *बाल चरित* [63](1948) एवं भास नाटकावली भाग-*चारि* मे *कर्णभारम्* एवं दूत *घटोत्वच* [64](1373 साल) उल्लेखनीय अछि। महाकवि कालिदासक दुइ नाटकक मैथिलीमे अनुवाद भेल जाहिमे *मालविकाग्नि मित्र* [65](1354 साल) एवं *विक्रमोर्वशीय* [66](1945)क अनुवादक क्रमश: छथि गोविन्द झा एवं भवनाथ झा छथि।

मैथिलीमे हर्षक रत्नावली नाटिकाक दुइ अनुवाद उपलब्ध होइछ जाहिमे परमानन्द झा[67] द्वारा 1956 मे तथा सुन्दर झाा शास्त्री[68] द्वारा 1962 मे अनूदित भेल जे प्रकाशित अछि। भवभूतिक *उत्तर रामचारितक* सेहो दुइ अनुवाद मैथिलीमे उपलब्ध अछि। एकर अनुवादक छथि डॉ. राजकुमार मिश्र[69] जकर प्रकाशन 1954 मे भेल; किन्तु साहित्यरत्नाकर मुंशी रधुनन्दन दास[70] द्वारा अनूदित नाटकक प्रकाशन भेल 1982मे। मुंशी रघुनन्दन दास द्वारा अनूदित उतर रामचरित साहित्यिक मूल्यसँ वेसी वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे एकर ऐतिहासिक मूल्य भ'

गेल अछि।

परमानन्द झा वाणभट्टक *पार्वती परिणय* [71] (1964)क डॉ. सुधाकर झा शास्त्री (मृत्यु 1974) विशाखदत्तक *मुद्राराक्षस* [72](1965-66) एवं आनन्द झा जयदेवक *प्रबोध चन्द्रोदय* [73](1941) क मैथिली पद्य-गद्यानुवाद कयलनि।

उपर्युक्त संस्कृत नाटकादि मैथिलीक पारंपरिक नाट्य साहित्य श्रृंखलामे एक नवआयाम निर्माण करबामे सहायक सिद्व भेल। कोनो भाषाक साहित्य तावत् पूर्णत: समृद्ध नहि भ' सकैछ यावत् ओ अपन पूर्ववर्त्ती वा समकालीन साहित्यक समुचित ज्ञानकेँ आत्मसात नहि कयने हो। विशेषत: संस्कृत-साहित्य जाहिमे भारतीय आत्माक छवि युग - युगसँ झलकैत आयल अछि, ओकरा छोड़ि दी तँ कोनो भारतीय भाषा साहित्य अपन उन्नित नहि क' सकैछ। इएह कारण अछि जे अद्यावधि मैथिलीक अभ्युन्नतिक हेतु संस्कृत नाट्य साहित्यक अनुवादक लोकनि अनुपम रत्न सभक सौन्दर्य अपना भाषाकेँ उन्नतिक पथपर अग्रसर करबाक हेतु एक अभावक पूर्ति कयलनि अछि। मैथिलीमे रोचक गद्य - पद्यमे अनुवाद क' कए अनुवादक लोकनि पारंपरिक नाटकक क्षेत्रमे उल्लेखनीय कार्य कयलनि अछि।

निष्कर्ष :

उन्नैसम शताब्दीक छठम दशाब्दसँ मैथिली साहित्यमे आधुनिक कालक प्रारंभ होइछ तहियासँ ल' कए स्वातन्त्र्योत्तर काल धरि मैथिली नाटकक विविध प्रवृत्तिक दिग्दर्शन होइत अछि। मध्यकालीन पारंपरिक मैथिली नाटकक प्रभाव आधुनिक कालक मैथिली नाटकककारपर एतेक वेसी पड़लनि तँ आधुनिक कालक प्रारंभिकावस्थामे महामहोपाध्याय हर्षनाथ झा ओकर अक्षरस: अनुकरण क' कए नाट्य रचना कयलनि। दोसर प्रवृत्तिक नाटकककार भेलाह युगपुरुष जीवन झा जे ओ ओहि परंपराक अनुकरण तँ आवश्यक कयलनि, किन्तु नाटककमे गद्यक प्रयोगक एक ओहिमे नवीनता अनलनि, किन्तु हुनको प्रवृत्ति पारंपरिके रहल। हिनक शैलीकेँ अनुकरण कयलनि साहित्यरत्नाकर मुंशी रघुनन्दन दास जे अपन नाटककमे कथानकमे तँ नवीनता अवश्य अनलनि, किन्तु जतेक दूर धरि विषय उपस्थापनक प्रश्न अछि ओहिमे जीवन झाक द्वारा जे मार्ग प्रशस्त कयल गेल छल तकरे आगाँ बढ़ौलनि। लालदासक गद्यमे तत्सम शब्दक बाहुल्यक कारणेँ ओ बोझिल बनि गेल, किन्तु ओ संस्कृत रेखाकंन अल्प प्रयोग कयलनि। विशुद्ध रूपेँ पारम्परिक नाटकक रचना कयलनि तेजनाथ झा जे मात्र पद्य-गद्यमे सुरराज विजय नाटकक रचना कयलनि।

अधिकांश पारंपरिक नाटकक कथानक पुराणाश्रित एवं महाभारताश्रित रहलाक कारणेँ ओकर मंचनमे असुविधा भेल जाहि कारणेँ नाटकक मात्र पठनीय बनि भेल। सामाजिक नाटकक, प्रतीक नाटकक, ऐतिहासिक नाटकक जे पारंपरिक

शैलीक अनुकरणपर लिखल गेल ओहिमे सँ किछु एहन अछि जकरा अभिनयोपयोगी कहल जा सकैछ।

अतएव समग्र रूपेँ पर्यालोचन कयलासँ स्वत: स्पष्ट भ' जाइछ जे मैथिलीक पारंपरिक नाटकक विषय तथा ओकर प्रतिपादन शैलीमे निरन्तर विकासक गति परिलक्षित होइत अछि। पारंपरिक मैथिली नाट्य-साहित्य उपयुक्त मंचक अभावमे देश-कालानुरूप अनेक उत्ससँ सम्पर्क आ प्रभाव ग्रहण करैत जनमानसकेँ अनुरंजित एवं उद्वेलित करैत रहल अछि। जाहि नाटकमे मानव जीवनक अतलमे प्रवेश क' कए ओकर शाश्वत-भावनाकेँ उद्वेलित करबाक क्षमता रहत वैह नाटकक चिरस्थायी भ' सकैत अछि।

संदर्भ:

1. ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर, भोल्यूम-।, तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स,। सर पी.सी. बनर्जी रो, इलाहाबाद, ख 1949 पृष्ठ-353-357
2. जिज्ञासा, वर्ष-।, अंक-।, जनवरी-जून 1995, पृष्ठ-62
3. दरभंगा प्रेस कंपनी (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभंगा, 1962
4. मैथिली नाटकक ओ रंगमंच, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, मैथिली अकादमी पटना, 1978, पृष्ठ.-63
5. संपादक अमरनाथ झा, दरभंगा प्रेस कंपनी (प्राइवेट) लिमिटेड दरभंगा, 1962
6. तत्रैव
7. तत्रैव
8. काशी राजक सभा पंडित झोपाख्य शर्मा, 1920
9. जिज्ञासा, वर्ष-। अंक, जनवरी-जून 1995
10. मैथिली अकादमी, पटना, 1979
11. राजप्रेस, दरभंगा, 1352 साल
12. कांचीनाथ झा, रानी चन्द्रवती श्यामा दातव्य चिकित्सालय कचौरी गली, संवत् 1995
13. सूर्यकान्त झा, ग्राम नेहरा शाहपुर, मुंगेर 1960
14. काशीराज मुद्रणालय, बनारस, संवत् 2010
15. वैदेही समिति, लालबाग, दरभंगा, संवत् 2015
16. शंभुनाथ झा. इसहपुर, सोनकोर्थु, मधुबनी 1982
17. मि थिला किरण दरभंगा 1984
18. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, मैथिली अकादमी पटना, 1981, पृष्ठ 14

19. तत्रैव, पृष्ठ-97-98
20. ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, भोल्यूम-2, डॉ. जयकान्त मिश्र, पृष्ठ-349
21. मिथिलाक विभूति जीवन झा, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, मैथिली अकादमी पटना, 1988, पृष्ठ-19
22. आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास, डॉ. शैलेन्द्र मोहन झाा(अप्रकशित) पृष्ठ-
23. मैथिली नाटकक परिचय नाटकक, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-141
24. जीमूतवाहन चरित नाटकक, विचार विन्दु, पृष्ठ-क
25. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिह, पृष्ठ-142
26. सीता परिणय, पृष्ठ-25
27. गन्धर्व विवाह, गरूजनक मुख्यसँ, पृष्ठ-क
28. तथैव, पृष्ठ-क
29. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-34
30. काशी राजक सभा पंडित लक्ष्मण झा, तृतीय संस्करण संवत् 1938
31. विद्यापति प्रकाशन, दरभंगा, द्वितीय संस्करण-1960
32. चेतना समिति, विद्यापति भवन, पटना 1989
33. मिथिलाक विभूति जीवन झा, डॉ. प्रेमशंकर सिह, पृष्ठ-17
34. मैथिली नाटकक उद्भव और विकास, डॉ. प्रतापनाराण झा, कला संकाय, महाराजा सयाजीव राव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, 1973, पृष्ठ-। 201-202
35. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-145
36. मिथिलाक विभूति जीवन झा, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-25
37. मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास, डॉ. लेखानाथ मिश्र, आशुतोष मिश्र पौना, अड़ेरहाट मधुबनी, 1978, पृष्ठ-360
38. मिथिलाक विभूति जीवन झा, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ-25
39. मैथिली नाटकक उद्भव और विकास, डॉ. प्रताप नारायण झा, पृष्ठ-216-218
40. तथैव, पृष्ठ-218
41. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-45
42. रुक्मिणी हरण, गोविन्द झा, नेपथ्य कथा, पृष्ठ-ड.
43. तथैव, निर्देशकक दिससँ पृष्ठ-6
44. मुंशी रघुनन्दन दास, बनारस सिटी 1980 संवत्
45. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-101
46. दरभंगा प्रेस कम्पनी (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभंगा 1363
47. मैथिली प्रकाशन समिति, सरिसव दरभंगा, विक्रम 2021

48. माधव झा, दीनबन्धु पुस्तकालय, इसहपुर रामनगर, सरिसवपाही, मधुबनी 1956
49. मिथिला मिहिर 8 अप्रील 1962 सँ 13 मई 1962 धीर धारवाहिक रूपेँ प्रकाशित।
50. मैथिली नाटकक उद्भव और विकास, डॉ. प्रताप नारायण झा, पृष्ठ-213
51. आधुनिक मैथिली नाटककमे चारित्रक विकास, डॉ. इन्दिरा झा, स्वाती प्रकाशन, लँगरटोली पटना, 1987, पृष्ठ-142
52. वीर नरेन्द्र नाटकक, जीवनाथ झा, भूमिका, पृष्ठ-2
53. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-127
54. मैथिली नाटकक उद्भभव आ ओर विकास, डॉ. लेखनाथ मिश्र, पृष्ठ-348
55. मैथिली नाटकक परिचय, डॉ. प्रेमशंकर सिंह, पृष्ठ-24
56. स्वतंत्र पुस्तकालय, विक्रमपुर, पोस्ट-विहपुर, भगलपुर, 1968
58. सुधा प्रकाशन, दरभंगा, 1965
59. मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड, 14 व्रजनाथ मित्तर लेन कलकत्ता, 1965
60. ग्रंथालय प्रकाशन,दरभंगा, 1367 साल
61. सूर्यनारायण झा, दरभंगा प्रेस कम्पनी लिमिटेड, 1955
62. राजप्रेस दरभंगा, 1945
63. राजप्रेस दरभंगा, 1947
64. दरभंगा प्रेस कंपनी लिमिटेड, दरभंगा 1948
65. दरभंगा प्रेस कंपनी (प्राइवेट) लिमिटेड, दरभंगा, 1373 साल
66. मैथिली साहित्य परिष्ट, दरभंगा, 1354 साल
67. श्री अजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लिमिटेड, 1945
68. पाठक एण्ड सन्स, दरभंगा 1956
69. महेन्द्र विद्याभूषण, ग्राम-बभनिगामा (वार्त्ता) पोस्ट-जनक्पुर धाम, जिला महोतरी 1962
70. राजकुमार मिश्र, पण्डौल, मखुबनी, 1954
71. मैथिली अकादीम पटना, 1982
72. भारती प्रकाशन, काली स्थान, दरभंगा चतुर्थ संस्करण 1964-73. मैथिली मंदिर, मिथिला प्रेस, टावर चौक, दरभंग, 1965-66
74. चन्द्रकान्त झा, पी. मोद प्रेस, कचौड़ी गली, काशी, 1941

* * *

सामाजिक विवर्त्तक जीवन झा

उनैसम शताब्दीक पंचम दशकमे आधुनिक मैथिली साहित्यक क्षितिजपर एक प्रतिभा सम्पन्न साहित्य मनीषीक आविर्भाव भेल जे अपन नवोन्मेषशालिनी प्रतिभाक प्रसादात परिप्रदीप्ति प्रकाश पुञ्जसँ बीसम शताब्दीक प्रथम दशक धरि अबैत-अबैत मैथिली नाट्य-साहित्यक पूर्ववर्त्ती परम्परामे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन आनि, परवर्त्ती युगक नाट्यकार लोकनिक हेतु एक उन्मेष, नमोन्मेषक नेतृत्व नवीन नाट्य गद्यक जनक, प्रगतिशील विचारक, संवेदनशील मनोवृत्ति, कल्पनाशील मस्तिष्क, सरस रोमांचक अनुभूति एवं मैथिल समाजमे परिव्याप्त समस्याक प्रति अतिसाकांक्ष भ' समाजकेँ दिशा-निर्देश करबाक स्तुत्य प्रयास कयलनि, ओ रहथि शलाका पुरुष कविवर जीवन झा (1848-1912) राजदरवारसँ सम्पोषित रहितहुँ ओ जन-जनमे चेतनाक दीप जरौलनि, कण-कणमे उत्साह पसारलनि आ क्षण-क्षणमे सर्जनाक दिशा निर्दिष्ट कयलनि। युगपुरुष जीवन झाक समसामयिक समाज आ साहित्य बौद्धिक उत्तेजनाक लहरिसँ गुजरि रहल छल। राजनीति, समाजनीति, अर्थनीति, धर्मनीति, संस्कृति, संगीत, नाटकक एवं चित्रकारीपर वैज्ञानिक प्रभावक फलस्वरूप परिवर्द्धन, परिवर्त्तन, परिमार्जन प्रारम्भ भ' गेल छलैक। शिक्षाक नवज्योतिक फलस्वरूप सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक चेतनाक उदय भेल, जकर स्वाभाविक अभिव्यक्ति हिनक नाटकादिक प्रमुख केन्द्र विन्दु थिक।

ओ एक दूरदर्शी साहित्य चिन्तक सदृश आशा-निराशाक मिलन-विन्दुपर जनमानसकेँ देखलनि। ओ नैराश्यक अन्धकारमे आशाक दीप जरौलनि। युगीन परम्पराकेँ नीक जकाँ चिन्हलनि तथा युगानुभूति एवं कालक सत्यताक कोनो स्थितिकेँ अभिव्यक्त करबाक शक्तिकेँ दमित नहि क' पौलनि। सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे सामाजिक विषमताक हुँकार, तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितिक उपस्थापनमे अक्षर पुरुष प्रमाणित भेलाह। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक दृष्टिसँ जखन हम हिनक नाटकादिक परीक्षण-निरीक्षण करैत छी, तखन हम ओकरा समसामयिक सामाजिक स्थितिक दर्पण, सांस्कृतिक वैभवक धरोहरि आ आर्थिक विपन्नतासँ संत्रस्त समाजक यथार्थ एलबम कहि सकैत छी। ई सर्वविदित सत्य थिक जे ओहि कृतिकारक कृतित्व अक्षय रहैछ, जे सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक जीवनक वास्तविक प्रतिनिधित्व करैछ, जनिका हृदयमे उपर्युक्तक प्रतिपूर्ण आस्था रहैछ तथा ओकर अधःपतनकेँ जन

मानसक समक्ष रेखांकित क' सचेष्ट हैबाक प्रेरणा दैछ, कारण साहित्य तँ हमर जीवनानुभूतिकेँ प्रतिविम्बित करैछ।

युगपुरुष जीवन झाक नाटकादिक प्रेरणास्रोत थिक नवीन जागरणक ज्योति। अपन सजग आँखिएँ ओ देश-देशान्तरक विकासोन्मुख गतिविधिपर दृष्टि निक्षेप कयलनि, एहि विषयक अनुभव कयलनि जे मैथिल समाजमे नवजागरणक अभाव अछि। ई अपन नाटकक कथानकक चयनक निमित्त मिथिलाक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थिति दिस दृक्पात कयलनि तथा अपन युगक वास्तविक समसामयिक स्थितिक रूपायन ओहिमे कयलनि।

संस्कृत पण्डित रहितहुँ जीवन झा आधुनिकताक पूर्णपक्षपाती अपन कृतित्वमे दृष्टिगत होइत छथि। मिथिलांचलमे परिव्याप्त वैवाहिक समस्या छल तकरा केन्द्र-विन्दु बनाय सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे देशन्नितिक निमित्त नाटकक माध्यमे जन-आन्दोलनक प्रेरणा देलनि, कारण मिथिलामोद ओ मैथिल महासभाक आविर्भावसँ पूर्वहि ई अपन नाट्य कृतिमे ओकर समाधानार्थ विचार प्रस्तुत कयलनि। मैथिल समाजमे तिलक-दहेज, जाति-पाँजिक नामपर कन्यापर होइत अत्याचार एवं अन्याय एवं अन्य सामाजिक कुप्रथापर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ अपन आलोचनात्मक दृष्टिकोण जनसामान्यक समक्ष प्रस्तुत कयलनि।

सामाजिक पृष्ठभूमिकेँ आधार बनाय ई मैथिलीमे नाट्य-लेखनक शुभारम्भ कयलनि। हिनक तीन सम्पूर्ण नाटकक *सुन्दर संयोग* (1904), *सामवती पुनर्जन्म*, *नर्मदा सागर सट्टक* एवं खण्डित *मैथिली सट्टक* समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितिक उद्देश्य निर्धारणमे सहायक होइछ। वस्तुतः हिनक नाटकादिमे मैथिल समाजक विश्वास एवं संस्कारक प्रतिविम्ब भेटैछ, जकरा माध्यमे ओ उच्च जीवनक प्रतिष्ठाक आकांक्षी भेलाह। हिनक सम्पूर्ण नाट्य-साहित्यमे व्याप्त सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्तरक सन्निवेशक कारणेँ मिथिलांचलक वातावरणमे परिव्याप्त अछि।

विवाहक चौमुखी समस्यापर आधारित वासना, प्रेम, मिलन आ विछोह यद्यपि हिनक नाटकक केन्द्र-विन्दु थिक, जकर समाजशास्त्रीय एवं भाषाशास्त्रीय अध्ययन अपेक्षणीय अछि। सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे मैथिल सामाजिक जीवनक अधिकाधिक प्रामाणिक रूप सुन्दर संयोग एवं नर्मदा सागर सट्टकमे प्रस्तुत करबामे ओ सफलता प्राप्त कयलनि। हिनक नाटकादि मात्र मनोरंजनक हेतु नहि, प्रत्युत जीवनक गम्भीर समस्याक समाधान करबाक उद्देश्यसँ उत्प्रेरित भ' रचना कयलनि। एकर नायक-नायिका मिथिलांचलक परम्परागत कुलीन प्रथाक रूप प्रदर्शित करैछ। यद्यपि सामवती पुनर्जन्मक कथानक पौराणिक पृष्ठभूमिपर आधारित अछि, तथापि ओकर प्रत्येक पात्र समसामयिक समाज, संस्कृति एवं आर्थिक

पृष्ठभूमिमे उतारल गेल अछि।

सुन्दर संयोगमे नाट्यकार समाजक ओहि मानसिक स्थितिक विश्लेषण कयलनि अछि, जे जाति-पाँजि, कुलीनता, बिकौआ प्रथापर प्रचलित बहु-विवाह आ पत्नी-परित्यागक सन विकृतिसँ उत्पन्न होइत छल। तथाकथित कुलीनजन अनेक बियाह करैत रहथि आ पत्नीकेँ नैहरमे छोड़ि दैत रहथि। भलमानुसक पत्नीक जीवन गति इएह छलैक। विवाह क' कए जाथि आ जीवन भरि वापस नहि आबथि। दाम्पत्य सुख एहन कन्याक निमित्त जीवन भरि अननभूत सत्य बनल रहि जाइत छलैक। ओ ने तँ कुमारिए रहैत छल आ वास्तवमे सधवे। सधवा रहितो वैधव्य-वेदना सहैत रहैत छल। एहन स्थितिक चित्रण निम्नस्थ पंक्तिमे व्यिञ्जत भेल अछि:

सीमन्तक सिन्दूरक रेखासँ छी हम धन मन्ती।
हाथक दू लहठीसँ होइछ सधवामे नित गनती।

मिथिलांचलमे कुलीनताक बलपर प्रतिवर्ष विवाह करब सामान्य बात छल। समाजमे एहन परम्परा प्रचलित छलैक जे एक ठाम विवाह आ चतुर्थी सम्पन्न क' कए दोसर ठाम पुनः विवाह करैत छलाह। कुलीन व्यक्ति विवाहोपरान्त पलटि क' जयबाक प्रयोजन नहि बुझैत रहथि। समयक क्रममे अपन पत्नीक आकृति आ सासुरक लोककेँ बिसरि जाथि। अत्यल्प परिचयक कारणेँ सर-कुटुम्बकेँ नहि चिन्हब तँ सर्वथा स्वाभाविक।

एहन विषम स्थितिमे कन्याक माता-पिता, समाज आ कन्याकेँ केहन मानसिक यातना होइत छलैक, निराशा आ विषादसँ आछन्न मनःस्थितिमे कोना जीवन यापन करैत छल मे स्वतः कल्पनातीत छल। कोनो सौभाग्यशालिनी कन्याकेँ पुनः दाम्पत्य जीवन प्राप्त होयतैक, कतेक उल्लास होयतैक, केहन हर्ष होयतैक, ओहो काल्पनिक अछि।मिथिलांचलमे प्रचलित कन्यादानी शब्द ओही परिणीता, किन्तु परित्यक्ता नारीक यातनामय इतिहासकेँ अपनामे समेटने अछि।

युगपुरुष जीवन झाक समसामयिक सामाजिक वातावरणमे ई परम्परा परिव्याप्त छल। सामाजिक जीवनमे ई प्रतिष्ठाक विषय छल। नाटकककार एहि सामाजिक परिस्थितिसँ पूर्ण अवगत रहथि। एकर दुष्प्रभावकेँ ओ अनुभव कयने रहथि। समाजक ओहि परिवेशमे कन्यापक्षक मानसिक अन्तर्द्वन्द्वकेँ ओ सुन्दर संयोगमे अभिव्यक्त कयलनि। समाजक समक्ष ओ सुन्दर मिश्र सदृश आदर्श पुरुषक रूपमे प्रस्तुत कयलनि।

सुन्दर मिश्र अपन सासुरक प्रत्येक व्यक्ति, अपन पत्नीकेँ तखने चिन्ह जाइत छथि, जखन हरदत्त पण्डा हुनक ससुरक पूर्व पुरखाक नाम गाम बाँचैत छथि। ओ चतुर्थी दिन पत्नीक अस्वस्थताक कारणेँ सासुर छोड़ि देने रहथि। ओ अपन पत्नी

पर्यन्तकेँ नहि चिन्ह पौने रहथि। इएह स्थिति तँ सरलाक ओकर माय, ओकर परिवार, ओकर सखी-बहिनया ओ समाजक छलैक। किन्तु सभक मनमे आशाक किरण छलैक जे भलमानुस सुन्दर मिश्र विवाह क' कए चल गेलाह तँ आ ने बिकौआ वर जकाँ नहि जे आबथि। एहि मानसिकताक अभिव्यक्ति सरस्वतीक कथनमे अभिव्यक्त भेल अछि। जखन ओ वैद्यनाथकेँ प्रार्थना करैत छथि; *हे वैद्यनाथ! जे जे कबुला कैल सभ मनोरथ पुरल, आब जमाइकेँ कुशल पूर्वक देखी से वरदान दिअ* (सुन्दर संयोग, पृष्ठ 12)।

सरस्वतीक मनोभाव अत्यधिक पल्लवित भेल अछि, जखन ओ अनचीन्हेमे (अपन जमाय) सुन्दर मिश्रकेँ कहैत छथिन, हैँ बाबू! बड़ पुण्य रहैत तँ एकर ई वयस भेलैक जमाय चुतुर्थिअहिक दिन एकरा दुखित छोड़िकेँ जे गेलाह से आइ धरि उदेशो ने पबै छिऐन्ह! (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-14)।

जखन पण्डाइन संकेत करैत छथिन जे पण्डित बाबू सरलाक वर थिकथिन तखन हुनक निराशा व्यक्त होइत छनि, *एहन भाग हमर कहाँ जे जमायकेँ देखब परन्तु वैद्यनाथ बड़ गोट थिकाह।(सुन्दर-संयोग, पृष्ठ-19)*

सरलाक मनोव्यथा तावत धरि अव्यक्त रहैछ जावत धरि ओकरा संकेत नहि भेटैछ जे पण्डित बाबू सम्भवतः ओकरे वर थिकथिन। तत्पश्चात् ओकर विरह व्यथाक अभिव्यक्ति भेल अछि। मुदा ओ सामान्य विरह नहि थिक। सरलाक कथन गद्य आ गीतमे सामाजिक परिवेश-जन्य विषाद बजैत अछि, हे वैद्यनाथ! *ऐ तरहेँ दुखिनीकेँ किए सतबैत छहक। (सुन्दर-संयोग, पृष्ठ-20)* मे *दुखिनी* शब्दक मार्मिकताक अनुभूति तखने भ' सकैछ, जखन ओहि समयक सामाजिक परिवेशक अनुभव हो। ओहि सामाजिक कुप्रथाक पृष्ठभूमिमे सरलाक कथन विशेषार्थ बोध भ' जाइछ;

एतदिन शिवपद सेवल, केवल एतबहि काज।
से प्रसन्न वर भाषल राखल मोर कुल लाज॥
(सुन्दर संयोग, पृष्ठ-18)

बुझा देमक चाही कौखना अनजानकेँ कनिएँ।
जे ई अपराध छौ तोहर किए हमरासँ रुसल छी॥
(सुन्दर संयोग, पृष्ठ-19)

सरलाक विरह समाजशास्त्रीय विषय थिक जे समाजक परिस्थितिसँ उत्पन्न भेल अछि। एहि तथ्यकेँ नाट्यकार अन्तमे स्पष्ट करैत छथि। सुन्दर सासुरसँ गाम जयबाक जखन प्रस्ताव करैत छथि, तखन उद्विग्न भ' जाइछ, *हमरा बुझि परैए जे एहि लोकक मन फेरि अन्तऽ गेलैक। (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-33)*। ओ सुन्दरकेँ

कहैत छथिन, *और नहि किछु, जे फेरि ओएह बरहमासा सबने गाबक पड़ै (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-34)।*

सुन्दर जखन ओहि बारहमासा गीतक जिज्ञासा करैत छथिन तँ सरलाक उत्तर थिक, छओ मासक प्राप्त खन लोक बाजै जे आब नहि औथीन तखन सँ कादम्बरी बहिनक संग इएह गीत सब गबै छलहुँ। (सुन्दर संयोग, पृष्ठ-34)

सुन्दर संयोग नाटकक कथानक सामान्य प्रेम-कथाक परिधिमे नहि राखल जा सकैछ। ओ थिक मैथिल समाजमे प्रचलित नारी-यातनाक मानस-इतिकथा। प्रकारान्तरेँ नाट्यकार ओहि प्रथाक प्रति अरुचि प्रदर्शित करैत समाधान रूपमे सुन्दर सदृश आदर्श पुरुषक प्रयोजनीयता देखौलनि। सुन्दरमे आदर्श पतिक प्राण प्रतिष्ठा क' कए नाट्यकार समाजकेँ कान्ता सम्मति उपदेश देलनि।

हिनक नाटककमे मिथिलाक सामाजिक जीवनमे व्याप्त विवाह सम्बन्धी कुप्रथादिक प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रतिफलित भेल अछि, तकर विश्लेषणसँ प्रतिभाषित होइछ जे नाटकककार सामाजिक सुधारक प्रति पूर्णतः साकांक्ष रहथि। विवाह सदृश अतिमहत्वपूर्ण संयोजनमे निरीह पात्री होइछ कन्या। सामवती पुनर्जन्मक प्रस्तावनामे नटीक कथन थिक:

कन्या कुल मर्यादामे बान्हलि फूजय मुँह न बकार।
(*सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-*3)

समाजमे कन्याकेँ पुत्रक अपेक्षा न्यून मानल जाइत अछि जे सर्वथा अनुचित। तेँ तँ गौतमीक कथन थिक; *तखन पुत्र वा कन्या दु टा संसारमे ह्वै छैक। हम तँ बड़ि प्रसन्न छी। (सामवती पुनर्जन्म पृष्ठ-23)*

जीवन झा कालीन मिथिलांचलक समाज दुइ वर्ग-सम्पन्न एवं विपन्न वर्गमे विभाजित छल। ताहि कारणेँ स्वजातिमे जाति-पाँजि, कुलीन-अकुलीन, सोति-जोग, भलमानुष, जयवार, पठियार इत्यादिक विचार समाजमे घून जकाँ लागल छलैक। एकरे फलस्वरूप कन्या-विक्रय, बिकौआप्रथा, बहुविवाहप्रथा आ अनेक अमानुषिक समस्याकेँ जन्म दैत छल। ई श्रेय युगपुरुष जीवन झाकेँ छनि जे अपन नाटकक माध्यमे एकर साक्षात विरोध करबाक साहस कयलनि। *नर्मदा सागर सट्टक* क सुन्दर मिश्र तकर ज्वलन्त प्रमाण छथि। मोदन मिश्र सुन्दर मिश्रकेँ नीक जाति-पाँजिक वर त्रिविक्रम ठाकुरक संग नर्मदाक विवाह करयबाक विचार दैत अपन मतक समर्थनमे कहैत छथि:

कुलहीन जमाय अधीन कुलीन सुता अनुताप सदा सहती।
बसि नीच मनुष्यक बीच यथोचित नीच कथा कहती सुनती।।
पठियार अगार आचार-विचार विचारि विचारि व्यथा सहती।

परिवार समान जहाँ न तहाँ भरिजन्म कोना सुख सँ रहती॥
(*कविवर जीवन झा रचनावली, पृष्ठ*-107)

उपर्युक्त पंक्तिमे कन्याक पिताक मानसिक व्यथाक तथा सामाजिक व्यवस्था, ओकर परिवेश आ परिस्थितिक रेखांकन नाटकककार अत्यन्त सूक्ष्मताक संग क' कए समाजकँ दिशा-निर्देश करबाक उपक्रम कयलनि। एहिपर सुन्दर मिश्रक कथन छनि :

उत्तम जाति जमाय असङ्गत कष्ट सुता सभ काल जनाउति।
सासु दयादिन आदि अनादर वाद कथैँ कुल छोट गनाउति।।
जीउति जौ सहि गारि कदाचित् मातु-पिता हित बन्धु कनाउति।
ई असमञ्जस हैत निरर्थक ऊँचक सङ्ग जे नीच बनाउति॥
(*कविवर जीवन झा रचनावली पृष्ठ*-107)

नाटकककार सामाजिक वातावरणमे परिव्याप्त वैवाहिक प्रथाक प्रसंगमे अपन विचार व्यक्त करैत ओकर मात्र आलोचने नहि कयलनि, प्रत्युत एहन वैवाहिक सम्बन्धक प्रसंगपर तीक्ष्ण व्यंग्य सेहो कयलनि तथा समाजकँ सुधरबाक संकेत देलनि।

सामवती पुनर्जन्ममे बन्धुजीवक विकौआ मनोवृत्ति आ पुनर्विवाह करबाक चेष्टाक प्रति सारस्वत ओ वेदमित्रक तिरस्कार भावसँ नाटकककारक व्यक्तिगत विचार धाराक परिचय भेटैत अछि। एहि प्रसंगमे बन्धुजीवक कथन छनि :

जे हमरा ठुनकाबथि से लय पहिरथु राङ।
हम पुनि कतहु विकायब पोसब अपन समाङ।
(*सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ.*39)

उपर्युक्त कथनमे विकौआ प्रथाक निन्दाक स्पष्ट झलक भेटैत अछि। सामवती पुनर्जन्ममे घटक द्वारा सारस्वतकँ वर पक्षसँ टाका गनयबाक प्रस्तावपर सरस्वतक *उत्तरक अवलोकन करू, छी ! छी ! टाकाक चर्चा कोन हमरा तेहन मैत्री अछि आ ओ ततेटा व्यक्ति छथि जे एहन कथा सुनि टाका तँ गनि देताह। परन्तु असन्तोष* हयतैन्हि। ई कथा पुनि जनि बाजी। (सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-46)

नर्मदा सागर सट्टकमे त्रिविक्रम ठाकुर दिससँ नर्मदाक प्रति टाका गनयबाक घटकक प्रस्तावपर सुन्दर मिश्रक विपरीत प्रतिक्रियाक संग देल गेल उत्तर :

पिता आनि वर कन्या का वसन-विभूषण-युक्त।
सादर अर्पय मन्त्रवत मे विवाह विधि युक्त॥
(*कविवर जीवन झा रचनावली, पृष्ठ*-109)

मिथिलांचलक समाजमे प्रचलित नियमानुकूल वैवाहिक सम्पर्क स्थापत्यर्थ घटक-पजिआड़क नियोजन एक आवश्यक उपादान थिक। युगपुरुष जीवन झाक चाहे सामाजिक नाटकक हो वा पौराणिक ओ अपन प्रत्येक नाटककमे एकर नियोजन कयलनि अछि। सामवती पुनर्जन्ममे सेहो घटक पजिआड़क नियोजन कयल गेल अछि। जखन सारस्वत आ वेद मित्रक बीच अपन सन्तानक विवाहार्थ स्वीकृति भेटैछ तखन वेदमित्रक कथन छनि, *यद्यपि ब्राह्मणक विवाहमे अपद व्यय कोना ने हैइ छैक तथापि घटक-पजिआड़ जे कहताह ततबा टाका त अवश्य ओरिआ लेबऽ पड़त। (सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-4)*

अक्षरपुरुष जीवन झा मिथिलांचलक सामाजिक जीवनसँ निरपेक्ष नहि भ' सकलाह तेँ हिनक नाटकादिमे सबठाम सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भक संगहि-संग सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवनक अति यथार्थ प्रतिनिधित्व करैछ। हिनक समस्त नाटकक जनसामान्यक निकषपर अक्षरसः सत्यताक आवरणसँ आच्छादित अछि जाहिमे आशा-आकांक्षा, आचार-विचार, आमोद-प्रमोद, स्त्री-पुरुषक सुख-दुःख, रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, भाव-भाषा, राजनीति आदिक यथार्थ परिचय भेटैत अछि। ओ मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक प्रबल समर्थक रहथि जकर प्रतिरूप हिनक नाटकादिमे स्थल-स्थलपर उपलब्ध होइछ। मैथिल संस्कृतिक अनुरूप विवाह पूर्व घटक-पजिआड़क नियोजन हमर सांस्कृतिक परम्पराक अनुरूप समाजमे प्रचलित नियमानुकूल वैवाहिक सम्पर्कक स्थापत्यर्थ घटक-पजिआड़क नियोजन आवश्यक अछि। सामवती पुनर्जन्म एवं नर्मदा सागर सट्टकमे जे घटक-पजिआड़क चर्चा भेल अछि ओ सर्वथा मैथिल संस्कृतिक अनुकूलहि अछि।

जतेक दूर धरि वेशभूषाक प्रश्न अछि हिनक नाटकान्तर्गत विशुद्ध रूपेँ मैथिल संस्कृतिक अनुरूपहि पात्रक वेशभूषाक संग साक्षात्कार होइछ। नर्मदा सागर सट्टकक घटकराजक स्वरूपक तँ अवलोकन करू :

जैखन देखल लटपर पाग।
धोती तौनी नोसिक दाग॥
कयलक लोक गाम घर त्याग।
हमरा हृदय भेल अनुराग॥

(*कविवर जीवन झा रचनावली पृष्ठ*-95)

हाथमे फराठी छनि, अवस्था विशेषक कारणेँ हुनक डाँर पर्यन्त झुकि गेल छनि, पाग लटपर छनि। एहन वेश-भूषाकेँ देखि लोककेँ घटककेँ चिन्हब कनेको भाङठ नहि होइत छनि :

ओ जेना छल केहन उकाठी।
उचकि पड़ायल हमर फराठी॥
बीतल वयस वर्ष थिक साठी।
पैर न सोझ पड़य बिनु लाठी॥
जौं जनितहुँ एहि गामक ढाठी।
तौंस् न आबि भसिअइतहुँ भाठी॥

(*कविवर जीवन झा रचनावली, पृष्ठ*-95)

एहिमे नाटकककार मिथिलामे वैवाहिक अवसरपर घटकक कर्तव्यपरायणता तथा ओकर वेश-भूषाक यथार्थ स्थितिक चित्रण अत्यन्त मार्मिकताक संग कयलनि अछि।

सांस्कृतिक परिदृश्यमे मिथिलामे पर्दा प्रथाक पालन सामाजिक रीति-नीतिक अनुकूलहि हिनक नाटकादिमे वर्णित अछि। एहि प्रथाक अनुसारेँ ससुर-भैंसुर वा परिवारक श्रेष्ठ व्यक्तिक समक्ष वा अपरिचित व्यक्तिक समक्ष मिथिलांचलक महिला नहि जाइत छथि। एहि प्रथाक अनुरूपहि कादम्बरी एवं अभिरानी एहि रहस्यसँ अवगत रहितहुँ जे सुन्दर निश्चित रूपेँ सरलाक पति थिकथिन तथापि ओ सभ आत्मीयता नहि प्रदर्शित करैत छथि। सुन्दरकेँ सेहो अनुभव होमय लगैत छनि जे सरला हुनक पत्नी छथिन, किन्तु मर्यादाक पालनार्थ ओ अपन वास्तविक परिचय नहि उद्घाटित करैत छथि।

सांस्कृतिक परिवेशक नियोजनक दृष्टिएँ जखन हिनक नाट्य साहित्यक विश्लेषण करैत छी तँ स्पष्ट प्रतिभाषित होइछ, जे युगपुरुष जीवन झा मिथिलाक संस्कृतिक अनुरूपहि फगुआक हुड़दंगक चित्रण सामवती पुनर्जन्ममे कयलनि अछि। विदर्भराज सपरिवार बैसल छथि आ मृदंग वाद्य सहित हुनक राज्य वेश्या कलावती नचैत अछि आ गीत गबैत अछि :

रङ्ग रस होरी हो। गाबह सब मिलि रङ्ग॥
रहसि-रहसि सब फागु सुहागिन गाबय मनक उमङ्ग।
पहु परदेश बिताओल हमरा (सरिखहे) भेल मनोरथ भङ्ग॥

(*सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ*-14)

एहि नाटकक होलिकोत्सवक दृश्य अत्यन्त मनोरम अछि। रंग अबीरक प्रयोग सँ होरीक हुड़दंग मचल अछि। ओहि अवसरपर राजसभाक प्रत्येक पात्र रंग अबीरसँ बोरल अछि। लोक होरीक हुड़दंग मचयबा आ उधम मचयबामे अस्त-व्यस्त अछि। राज्यादेश अछि जे एहि अवसरपर जे अनच्छुक होथि तनिका एहिसँ फराके राखल जाय अन्यथा रंग-अबीरक सराबोर राज्याधिकारी लोकनि राजभवनमे

उपस्थित छथि। राजभवन दिस जाइत नगरक शोभा ओ होलिकोत्सवक विकृत रूप दृष्टिगत होइछ। सभ एक दोसराक संग हँसी-मजाकमे व्यस्त देखल जाइछ। एहि अवसरपर बसन्तक राजाकेँ आशीर्वाद दैछ :

महाराजक मन हरलक नटी, कहो लोक अपवाद।
सय वर्ष सँ जनि जीवी घटी हम दै छी आशिर्वाद।
(सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-14)

शलाकापुरुष जीवन झाकेँ मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक गम्भीर अनुभव छलनि तेँ ओ अपन नाटकक‍मे एकर पालनार्थ उपयुक्त अवसर बहार क' लेलनि।

कीर्तिपुरुष जीवन झा अपन नाटकादिमे धार्मिक भावनाक चित्रण सेहो अत्यन्त मार्मिकताक संग कयलनि जे हुनक सांस्कृतिक पृष्ठभूमिक पृष्ठपोषक हैबाक प्रमाण दैछ। सामवती पुनर्जन्ममे अर्थोपार्जनार्थ सामवान आ सुमेधा विदर्भराजक ओतय दम्पत्ति-रूपमे पूजनार्थ नियुक्त होइत छथि। सांस्कृतिक एवं धार्मिक पृष्ठभूमिक परिप्रेक्ष्यमे सुन्दर-संयोगक कथानकक श्रीगणेश वैद्यनाथधामक प्रांगणसँ आम्भ होइछ तथा ओकर अन्त सेहो ओतहि भ' जाइछ। नर्मदासागर सट्टकमे नाटकककार कपिलेश्वरमे शिवार्चनाक चर्चा कयलनि अछि। कार्तिक पूर्णिमाक अवसरपर लोक स्नानार्थ गंगा-कमला जाइत अछि जे हमर सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवनक अविभाज्य अंगक रूपमे चित्रित अछि। सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टिएँ जखन हिनक नाटकादिक विश्लेषण करैत छी तँ स्पष्ट भ' जाइछ जे ई परम शिवभक्त परायण रहथि जे हिनक नाटकादिमे प्रयुक्त नचारी आ महेशवाणीसँ भ' जाइत अछि।

मिथिलांचलक सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे एहि ठामक निवासीक वैशिष्ट्य रहल अछि जे सात्विक भोजनक पक्षपाती रहलाह अछि। एतय तामसी भोजन सर्वथा वर्जित मानल जाइछ। एहि परम्पराक पालन नाटकककार स्थल-स्थलपर अपन नाटकक मे कयलनि अछि। सामवती पुनर्जन्ममे नाटकककार समाजमे प्रचलित नवलोकक बीच मदिरापानक परम्परासँ क्षुब्ध भ' एकर बहिष्कार करबाक उद्घोषणा कयलनि। एहि प्रसंगमे सुमेधाक कथन छनि, *एहि सभ कारण सँ राज्य निषिद्ध थिक। देखू तँ मदिरापान कयनैँ केहन लाल लाल आँखि छलैकय। छी! छी! आब मन प्रसन्न भेल अछि महा अवग्रहमे पड़ल छलहुँ (सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-19)*।

मिथिलांचल निवासीक प्रमुख भोज्य वस्तुमे रहल अछि रेडीमेड चूड़ा आ दही जकर चर्चा पौराणिक साहित्यमे सेहो यत्र-तत्र उपलब्ध होइछ। नर्मदासागर सट्टकमे एहि भोज्य-सामग्रीक विश्लेषण नाटकककारक प्रमुख प्रतिपाद्य अछि जखन घटकराज भोजन करैत छथि :

केव नथबै अछि नाकक पूड़ा।
ककरहु केव आगाँ बैसौलैं थकड़ि बन्है अछि जूड़ा॥
झट झट गट गट घटक गिड़ै छथि राव दही संग चूड़ा।
दुइ एक बेर पानि दै मलि मलि कात पसौलन्हि गूड़ा।
धड़ि एक विछलन्हि पुनि अगुतैला सह-सह करइछ सूड़ा॥
(*कविवर जीवन झा रचनावली, पृष्ठ-*99)

कीर्तिपुरुष जीवन झाक नाटकादिक वैशिष्ट्य एहि विषयकेँ ल' कए अछि जे मिथिलांचलक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवनक चित्रणक क्रममे वैवाहिक अवसरपर होम आदिक व्यवस्थाक निमित्त लावा, जारनि, धान, घी, जल, कुश, आगि आदिक चित्रण सामवती पुनर्जन्ममे कयलनि अछि। जटिलकेँ सारस्वत आज्ञा दैत छथिन :

लावा जारनि धान धिउ जल कुश विष्टर आगि।
माड़व पर सञ्चित करह सब पुरहित सङ्ग लागि॥
(*सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-*47)

वैवाहिक विधिमे लौकिक एवं वैदिक दुनू रीतिक परिपालन कयल गेल अछि एहि नाटकान्तर्गत। चतुर्थीक विधि सम्पन्न होइछ संगहि-संग भार-दोरक चर्चा सेहो नाटकककार कयलनि अछि।

अक्षरपुरुष जीवन झा मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक कतिपय चित्रण अत्यन्त कुशलताक संग कयलनि अछि। सामवती पुनर्जन्म एवं नर्मदा सागर सट्टकमे सामाजिक रीति नीतिक चर्चा करैत नाट्यकार जाहि वैवाहिक प्रथाक उल्लेख कयलनि अछि से अत्यन्त प्राचीन परम्परा अछि। मिथिलांचलमे एहि प्रकारक प्रथा एवं परम्परा प्रचलित अछि जे वैवाहिक अवसरपर वर एवं कन्या पक्षक घटक पजिआड़क मिलान होइछ, जाहिमे पर्याप्त टाकाक प्रयोजन पड़ैछ जाहिसँ विवाहक उचित प्रबन्ध कयल जा सकय। सामवती पुनर्जन्ममे एहि प्रसंगक विश्लेषण पूर्वमे कयल गेल अछि। नर्मदा सागर सट्टकमे सेहो एहि स्थितिक चित्रण भेल अछि। घटकराज नर्मदाक विवाहार्थ ओ सागरक ओतय प्रस्तुत होइत छथि तँ सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमिमे एहि परम्पराक निर्वाह कोना करैत छथि तकर अवलोकन तँ करू, *औजी! एहना ठाम घटक जे हयत मे लगले कोना विचार देत? पजिआड़केँ जे इच्छा होइन्हमे बूझि लै जाउ। (कविवर जीवन झा रचनावली, पृष्ठ-*97*)।*

सामाजिक व्यवस्थाकेँ सुदृढ़ बनयबामे आर्थिक स्थितिक दृढ़ता अत्यन्त प्रयोजनीय बुझना जाइछ। वित्त विहीन व्यक्तिक सामाजिक जीवनमे कोनो मूल्य

नहि रहि जाइछ। अतएव जाहि समाजक आर्थिक जीवन जतेक सबल रहत ओ उन्नतिक पथपर अग्रसर भ' समाजकेँ दिशा-निर्देश करबामे सक्षम भ' सकैछ। जतेक दूर धरि मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक आर्थिक स्थितिक प्रश्न अछि ओ सदा सर्वदा आर्थिक विपन्नतासँ संत्रस्त रहल जकर फलस्वरूप कन्या-विक्रय सदृश कुप्रथाक जन्म भेलैक। जीवन झा अपन नाटकादिमे आर्थिक विपन्नताक दिग्दर्शन अनेक स्थलपर करौलनि अछि। सामवती पुनर्जन्ममे सामवान एवं सुमेधाक वैवाहिक प्रसंगमे सामाजिक आर्थिक विपन्नताक दिग्दर्शन होइत अछि जे विवाहक नियोजनार्थ प्रचुर टाकाक प्रयोजनार्थ समाजक विपन्नताक दिग्दर्शन करौलनि अछि। एहि प्रसंगमे बन्धुजीवक कथन समसामयिक समाजक विपन्नताक चित्र दर्शबैत अछि जखन ओ कहैछ, *घरमे तैखन सुख जौं पर्याप्त धन हो। हमरा तँ सतत सभ वस्तुक व्ययता लगले रहैए। (सामवती पुनर्जन्म, पृष्ठ-20)*।

आर्थिक विपन्नताक कारणेँ समसामयिक समाजान्तर्गत भीख मङनी प्रथाक जन्म भेल। नाटकककार सामवती पुनर्जन्ममे एहि प्रथाक यथार्थताक संग चित्रण कयलनि अछि। भिक्षुक ब्राह्मणक ओतय भीखक हेतु प्रार्थित होइत छथि, किन्तु परिस्थिति वसात हुनका भीख नहि भेटैत छनि।

शलाकापुरुष जीवन झाकेँ सामाजिक जीवनक गम्भीर अनुभव छलनि तेँ ओ स्थल-स्थलपर नारी दोष दिस समाजकेँ साकांक्ष करैत देखल जाइत छथि। सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमिमे नारीकेँ सामाजिक मर्यादाक पालनार्थ मद्यपान, निरर्थक भ्रमणशील बनब, तन्त्राक आह्वान, पतिपर निष्प्रयोजन रोष, दुर्जन व्यक्तिक संग प्रवास गमन आदिकेँ ओ कुल ललनाक निमित्त वर्जित कयलनि। एहि प्रसंगमे ओ नर्मदा सागर सट्टकमे अपन अभिमत प्रगट कयलनि :

मद्यपान पर्य्यटन पुनि तन्द्रा पतिपर रोष।
दुर्जन सङ्ग प्रवास यैह छवटा नारिक दोष॥
(*कविवर जीवन झा रचनावली, पृष्ठ-112*)

बीसम शताब्दीक प्रथम दशकक मैथिली नाट्य सहित्यक जनक अक्षर पुरुष जीवन झा अपन समयक प्रकाश स्तम्भ रहथि जनिक नाटकादिमे मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवनक जाहि स्वरूपक प्रदर्शन करैछ तकर सार्थकता एहिमे अछि जे नाटकककार ओकर समुचित समाधान ओही समस्यान्तर्गत कयलनि। युग विधायक जीवन झा एहि विचारधाराक अत्यन्त व्यापक प्रभाव हुनक समसामयिक साहित्यकार लोकनिपर पड़लनि जे परवर्त्ती युगक नाटकककार लोकनिक हेतु एक प्रकाश-पुञ्ज प्रमाणित भेल। एकर श्रेय आ प्रेय कविवर जीवन झाकेँ छनि जे मिथिलांचलक तत्कालीन सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितिकेँ नीक जकाँ जानि बूझि क' युगक आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि क'

अपना सम्मुख जनसाधारणक दृष्टिकोणकेँ समन्वित क' कए मौलिक नाट्य-रचनाक सूत्रपात कयलनि तथा नाट्य-प्रणालीक सन्दर्भमे नवीन दृष्टिकोण अपनौलनि। हुनका नाट्य-रचनाक ज्ञान निश्चये विस्तृत छलनि। ओ समसामयिक समाजमे घटित होइत घटनाकेँ अपन अनुभवक आधारपर विश्लेषण कयलनि। आधुनिक मैथिली नाट्य साहित्यान्तर्गत अक्षर पुरुष जीवन झा नाटकक क्षेत्रमे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्थितिक प्रसंगमे एक कीर्तिमान स्थापित कयलनि जे एहि साहित्यक निमित्त एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना थिक जे अधुनातन सन्दर्भमे मैथिल समाजक हेतु दिशाबोधक प्रमाणित भेल।

* * *

हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव

विगत शताब्दी निश्चये मैथिली साहित्यक हेतु स्वर्ण कालक रूपमे प्रवेश पौलक जकर फलस्वरूप सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे साहित्यिक वातावरणमे नव स्पन्दनक संचार भेलैक जे मातृभाषानुरागी रचनाकार एकर चहुमुखी विकास-यात्रामे मनसा वाचा कर्मणा आ कर्त्तव्य बुद्धया अजस्त्र साहित्य सरिता प्रवाहित करब प्रारंभ कयलनि जे पत्रिकादिक प्रकाशनक फलस्वरूप जनमानसमे मातृभाषाक प्रति अनुराग भावना उत्पन्न करबाक निमित्त जनजागरणक अभियान चलौलनि जे वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे ऐतिहासिक महत्वक विषय भ' गेल अछि। मातृभाषानुरागी साहित्य सृजक नव-नव प्रवृत्तिक रचनाक माध्यमे जनमानसक ध्यानाकर्षित करबाक निमित्त नव भाव-धाराक साहित्य-सृजन करब प्रारम्भ कयलनि तकरा अस्वीकार करब रचनाकारक प्रति अज्ञानता प्रदर्शित करब हैत। पत्रिकादिक प्रकाशनोपरांत मैथिली गद्य गंगा सहस्त्रमुखी साहित्यिक धारा उन्मुक्त भ' कए प्रवाहित होमय लागल जकर फलस्वरूप एकांकी, उपन्यास, कथा, निबन्ध, नाटक, प्रहसन, संस्मरण एवं यात्रा वृतांतादिक सर्वतोमुखी विकास-यात्राक शुभारम्भ भेल।

वस्तुतः उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे नवीनताक सूत्रपात भेल जकर फलस्वरूप आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक जीवनमे नव-नव परिवर्त्तन दृष्टिगत होमय लागल। सम्पूर्ण राष्ट्र यथार्थोन्मुख प्रवृत्तिसँ प्रेरित भ' महात्मा गाँधीक स्वतंत्रता आन्दोलनक प्रश्रय देमय लागल। सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे ओकर प्रतिनिधित्व पाश्चात्य शिक्षित वर्गक हाथमे छल। ओ लोकनि एक भाग अपन सांस्कृतिक विरासतक सुरक्षार्थ उत्सुकता देखौलनि तँ दोसर भाग नव आलोकक स्वागत कयलनि। एही सांस्कृतिक अनुष्ठानक पृष्ठभूमिमे अत्याधुनिक भारतीय भाषादिक विकास-यात्राक शुभारम्भ भेल जकर नेतृत्व बुद्धिजीवी लोकनि कयलनि। एही संक्रांति कालमे साहित्यमे आधुनिकता प्रारम्भ भेल आ रचनाकार साहित्यक नवीनतम प्रवृत्ति दिस उन्मुख भेलाह जे हास्य-व्यंग्यक सजीव चित्र अपन साहित्यमे प्रस्तुत कयलनि।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यक स्वर्णिम बेलामे विगत शताब्दीक प्रथम दशकमे एक एहन अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न साहित्य-सृजक प्रादुर्भूत भेलाह जे अपन विविध रूपा अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न रचनावली ल' कए पाठकक सम्मुख प्रस्तुत भेलाह जनिक

साहित्यमे प्रचुर परिमाणमे हास्य तीक्ष्ण एवं प्रखर व्यंग्यक कारणेँ ओ जे लोकप्रियता अर्जित क' कए प्रमाणित कयलनि जे मिथिलाक पावन भूमि अद्यापि विश्वकवि महाकवि विद्यापति सदृश सुसम्पन्न प्रतिभाशाली रचनाकार उत्पन्न क' सकैछ ओ रहथि हरिमोहन झा (1908-1984)। ओ प्रचुर परिमाणमे उपन्यास, एकांकी, कथा, कविता, निबन्ध, प्रहसन, एवं जीवनयात्राक रचना क' कए गद्य एवं पद्य धाराक अवरूद्ध मार्गकेँ नव प्रवृत्तिक रचनादि द्वारा प्रशस्त कयलनि। साहित्यक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिक जे रचनाकार अपन अनुभूतिकेँ सत्यताक संग उद्घाटित करब साहित्यकारक दायित्व होइछ। रचनाकारक व्यक्तित्वक निर्माणमे अनेक प्रकारक भूमिका कार्य करैछ आ ओहि सभक सम्मिलित संयोजनसँ अपन रचनाक स्वरूप सुनिश्चित करैछ। मातृभाषानुरागसँ उत्प्रेरित आ अब्याहत मोह हिनका अपन कौलिक विरासतक रूपमे प्राप्त भेलनि जकरा ओ जीवन आ जगतक गम्भीर अनुभवकेँ व्यक्त करबाक तीव्र लालसा हिनका साहित्य-सृजन दिस प्रेरित कयलक। साहित्यिक क्षेत्रमे ई अपन अद्भूत समंवयात्मक दृष्टिकोणक परिचय देलनि। ओ युगक निष्प्राण धमनीमे अपन साहित्यक माध्यमे नव जीवनक रक्त संचारित करबाक प्रयास कयलनि। ओ गद्य आ पद्य दुनू विधामे समान रूपेण लेखन कयलनि, किंतु पद्यक अपेक्षा गद्य-विधाकेँ, जकर अभाव मैथिलीमे छल तकरा पूर्त्ति करबाक संकल्प कयलनि।

ई श्रेय आ प्रेय हुनके छनि जे ओ सर्वप्रथम मिथिलाञ्चलक संगहि संग राष्ट्रीय आ अंतराष्ट्रीय जनमानसक नव्यतम प्रवृत्ति हास्य-व्यंग्यकेँ चिन्हलनि तथा ओकरा अवलम्बन क' कए कन्यादान (1933), द्विरागमन (1943), प्रणम्य देवता (1945), रंगशाला (1948), खट्टर ककाक तरंगक प्रथम भाग (1948), द्वितीय भाषा (1955), चर्चरी (1960), एकादशी (1964), जीवन यात्रा (1982), आ काव्य संग्रह (2005) आदि पुस्तक रूपमे प्रकाशित अछि। एहिसँ अतिरिक्त निबन्धादि यथा स्त्री-शिक्षाक वर्त्तमान दशा (मिथिला वर्ष-1 अंक-1 सन् 1336 वैशाख), स्वराज कँ लेत (मिथिला वर्ष-1 अंक-8 सन् 1337 अगहन) एवं देशाचार (डॉ. प्रेमशंकर सिंहक शोध प्रबन्ध)मे समसामयिक सामाजिक कुरीतिक प्रति ओ साकांक्ष कयलनि। हिनक निम्नस्थ कथादि यथा निरसन मामाक सिनेमा (1961), प्रगतिक पथपर (1961), शास्त्रार्थक जोश (1962), सहस्त्रर्थाचिभ्यो नमः (1962), सहयात्रिणी (1963), आब मोक्षे चाही (1970), भोला बाबाक गप्प (1974), कालाजारक उपचार (1977) एवं महाभारतक क्षेपक (1979), मिथिला मिहिरमे धूल-धूसरित भ' रहल अछि। हिनक प्रहसन यथा बौआक दाम (1946), महाराज विजय (1948), ठोपसँ टोप (1935), आदर्श मैथिल रेलवे एवं रेलक झगड़ा (1960) आदि कोनो संग्रहमे नहि आबि सकल अछि जे चिंतनीय विषय थिक।

उपर्युक्त रचनादिमे ओ सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे सामकालीन मैथिल समाजक कुरुचि पूर्ण सामाजिक विकृति एवं विसंगतिपर कुण्ठाराघात कयलनि। सादा जीवन आ उच्च विचारक ओ प्रतिमूर्ति रहथि। ओ सत्य ज्ञानक भण्डार रहथि। ओ सशक्त व्यंग्यकार रहथि। हुनक चिंतन, पाण्डित्य, नीर-क्षीर विवेचनक शक्ति, व्यक्ति-व्यक्तित्वक खरेपन, सोझ, सपाट कथनक निखरल स्वरूप जनमानस समक्ष प्रस्तुत भेल जे उपन्यासकार, एकांकीकार, कथाकार, कविताकार, निबन्धकार, प्रहसनकार, एवं जीवन-यात्राकारक रूपमे हिनक साहित्यिक अवदान निश्चित रूपें प्रेरणादायक प्रमाणित भेल राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तरपर। हिनक चिंतन आ साहित्य-साधना सागर सदृश विशाल अछि जे परवर्त्ती साहित्यसाधक लोकनिक प्रेरणाक अविरल स्रोत बनल। ओ अपन साहित्यिक प्रतिभा प्रसादात सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे अन्ध-विश्वास, रूढ़िग्रस्त परम्परा, धार्मिक वितण्डावाद, जीवनमे अंतर्विरोध, असंगति, ढ़ोंग, दम्म, पाखण्ड, बाबा वाक्यं प्रमाणम् क' हठधर्मियता, मिथ्या बड़प्पन, मूर्खतापूर्ण संघर्ष, जीर्ण-शीर्ण विचार धारापर कशाघात क' कए आचार-विचार एवं वाह्याडम्बरक तीव्र आलोचना आ भर्त्सना कयलनि। आनक उपलब्धिकेँ सहज भावसँ स्वीकारैत ओ सत्य गुणग्राहकक भूमिकाक निर्वाह कयलनि। हिनक कृतित्वक वैशिष्ट्य थिक हास्यमे सन्निहित व्यंग्य द्वारा ओ सामाजिक दोष दिस जनमानसक ध्यान आकर्षित कयलनि। प्राचीन एवं अर्वाचीन परम्परा एवं परिपाटीक दोष सम्प्रति वर्त्तमान अछि ओहि सभकेँ लक्ष्य क' कए ओ अपन व्यंग्यवाण सँ बेधबाक प्रयास कयलनि। हिनक साहित्यमे ने तँ प्राचीन अन्धविश्वासक प्रति निष्ठा अछि आ ने तँ नवीनताक आन्धानुकरणक प्रति आशक्ति।

हरिमोहन झाक सम्पूर्ण साहित्य मात्र मिथिलाञ्चलक परिसर धरि सीमित नहि रहल, प्रत्युत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर उज्ज्वल भविष्यक सूचक सिद्ध भेल। हिनका द्वारा स्थापित परम्पराक प्रभाव परवर्त्ती युवा पीढ़ीक साहित्यपर तीन रूपें पड़लैक। प्रथम तँ ई मैथिलीमे पाठक वर्गक निर्माण कयलनि। द्वितीय मिथिलाञ्चलक कन्या लोकनिक व्यक्तिगत जीवन प्रभावित भेल जे हजारक हजार शिक्षित भ' कए एक नव ज्योति जगौलनि। तृतीय प्रभाव पड़ल परवर्त्ती साहित्यकार लोकनिपर जे हुनका द्वारा प्रवाहित हास्य-व्यंग्य अविरल धाराक अनुकरण क' कए साहित्यक विभिन्न विधामे साहित्य सृजनक परम्पराक शुभारम्भ कयलनि।

मैथिली साहित्यमे हिनका द्वारा हास्य-व्यंग्यक जे धारा प्रवाहित कयल गेल ओ एक नव-युगक अवतारणा क' कए नव ज्योति जगौलक। हिनक प्रतिभाक छाहरिमे न्यू फोर्सक आविर्भाव भेलैक। हुनक कथा-साहित्यक परिवेशमे न्यू फोर्सक

औनाहटिकेँ नहि थाहल जा सकैछ। न्यू फोर्सक अवतारणा एहन धरातलपर भेल आ एकर औनाहटि सर्वथा मौलिक छैक। हिनक साहित्यमे एकहि अकुलाहटि थिक समाजक नव जीवन शक्ति (भाइटल फोर्स)क प्राचीनताक सड़ल छोलकोइया फोड़ि क' जनकल्याणक किरणसँ बाहर हैबाक अकुलाहटि। हुनक साहित्यमे रूढ़िवादक अन्धकार पूर्ण रात्रिक अंतिम अंशमे विहग कुलक रागिणी जे अयनिहार नवयुगक आन्दोलनक स्वागतमे गूंजि रहल अछि। ओ नारी जागरण शंखनाद कयलनि जकरा माध्यमे पर्दा प्रथा, तिलक-दहेज, बाबा वाक्यं प्रमाणम् पर गम्भीर चोट कयलनि।

हिनक साहित्य समाजक बीच प्रखर वेगसँ प्रवाहित होइत विभिन्न सामाजिक शक्ति सोसल फोर्सक घात प्रतिघात अछि। हुनक पात्र सभ परिस्थितिक प्रवाहमे बहैत अछि। आधुनिकताक बसातमे हिलैत अछि।

मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे ई हास्य-व्यंग्यक जे अजस्त्र धारा बहौलनि जे परवर्त्ती उपन्यासकार लोकनिक पाथेय बनल। जतय ओ शिक्षा-दीक्षा कारणेँ अनमेल विवाहक बलिदानक वेदी कन्या लोकनिक कुर्बान होइत देखलनि तकरा परवर्त्ती उपन्यासकार लोकनि व्यापक परिधिमे आनि यथा अवस्थाक कारणेँ अनमेल विवाह, रूप-गुणक कारणेँ अनमेल विवाह, शिक्षा दीक्षाक कारणेँ अनमेल, विधवा-विवाह आदि विविध सामाजिक वातावरण विशिष्ट सन्दर्भमे समसामयिक समाजमे व्याप्त विविध समस्यादिपर व्यंग्य कयलनि। वस्तुतः हिनक उपन्यासक प्रभाव मैथिली साहित्यपर तीन रूपें पड़लैक-समाजक मनोवृत्तिपर, कन्या लोकनिक व्यक्तिगत जीवनपर तथा परवर्त्ती लेखक समुदायपर।

हिनक उपन्यास नव युगक चौराहापर सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे परम्परावादक गुदरी पहिरने, कट्टरता मारल, ढ़ोंगक झमारल, रूढ़िवादी जजर्रित समाजपर तीक्ष्ण व्यंग्य क' कए हास्य उत्पन्न कयलनि। हिनक हास्य-व्यंग्यसँ संयुक्त उपन्यास माइल स्टोन प्रभावित भेल जे हिनका द्वारा स्थापित मापदण्डक टक्कर क्यो नहि क' सकला। हिनका द्वारा स्थापित एहि प्रवृत्तिक व्यापक प्रभाव परवर्त्ती अत्याधुनिक उपन्यासकार लोकनिपर पड़लनि जे वस्तुतः एहि प्रवृत्तिक वास्तविक विकास दृष्टिगत होइत अछि। हिनकासँ प्रभावित भ' योगानन्द झा (1922-1986) मिथिलाञ्चलमे प्रचलित कुलीन प्रथाक निस्सारतापर भलमानुस (1944) मे अन्धविश्वासक वेदीपर सुकुमारी निर्मलाक निर्मम हत्या आ पवित्रा (1966)मे बाल-विवाहक कारणेँ वैधव्यक समस्या उपस्थित क' कए व्यंग्य कयलनि।

हरिसिंह देवक वैवाहिक व्यवस्थाक पृष्ठभूमिमे कन्या-विक्रय आ वृद्ध-विवाहक पृष्ठभूमिमे वैद्यनाथ मिश्र यात्री (1911-1998), पारो (1353 साल) एवं नवतुरिया

(1954)मे अवस्थाक कारणेँ अनमेल विवाहक समस्यापर व्यंग्य कयलनि। उपन्यास सम्राट वृजकिशोर वर्मा मणिपद्म (1918-1986) अनलपथमे प्राचीन कुलीन प्रथाक नीचाँ दबायल चिनगोरा नव सामाजिक चेतनाक स्फुलिंग बनि क' भुवनेश्वर एवं सरिताक रूपमे खिलैत अछि। सामाजिक नैतिकताक भर्त्सनाक संगहि-संग एहिमे सामाजिक जीवनमे राजनीति एवं आर्थिक पक्षपर व्यंग्य कयल गेल अछि। शारदानन्द झाक जयवार एवं अवधनारायण झाक वनमानुषमे उपन्यासकार समाजांतर्गत कतिपय उदण्ड व्यक्तिक दुष्कर्मसँ परिवार कलंकित भ' सम्पूर्ण समाज हास्यापद भ' जाइछ। राजकमल (1929-1967), पाथर फूल (1957) एवं आदि कथा (1958)मे व्यक्तिक व्यवहार एवं आंतरिक जगतक वीभत्स नग्नता एवं सामाजिक विरूपतापर व्यंग्य कयलनि। जतय विन्देश्वर मण्डल बाटक भेट जिनगीक गेंठ (1967)मे तिलक-दहेजपर ततय रूपकांत ठाकुरक नहलापर दहला (1967)मे बीसम शदीक उत्तरार्द्धमे जीवनमे आयल विसंगतिपर हास्य-व्यंग्य शैलीमे समसामयिक समाजपर व्यंग्य कयलनि।

समाजक परिवर्त्तित परिवेशमे ओ कथा-साहित्यांतर्गत जाहि हास्य-व्यंग्य शैलीक अवतारणा कयलनि तकरा परवर्त्ती पीढ़ीक युवा कथाकार लोकनि अधिक प्रशस्त कयलनि। किछु कथाकार तँ हुनक विचारधाराक अनुगमन कयलनि आ किछु व्यंग्य-मिश्रित भाषा-शैलीकेँ। परवर्त्ती कथाकार कोन अनुपातमे हुनक अनुकरण ओ विचारणीय प्रश्न अछि। हिनक कथाक लोकप्रियताक फलस्वरूप परवर्त्ती कथाकार हाँजक हाँज अग्रसर भेलाह जकर फलस्वरूप हास्य-व्यंग्य शैलीक निम्नस्थ कथा संग्रह प्रकाशमे आयल यथा नागेन्द्र कुमारक ससरफानी (1947), दृष्टिकोण (1954), शिकार (1954), एवं फलेना जामुन (1955), मायानन्द मिश्र (1934)क भाङक लोटा (1957) गोविन्द चौधरीक पाञ्चजन्य, रूपगर्विता एवं पाँच फूल, उदयभानु सिंहक जखन-तखन (1963), रूपकांत ठाकुरक धूकल केरा (1964) एवं मोमक नाक (1965), रमानाथ मिश्र मिहिर (1939-1999)क स्मृति (1965) एवं एकयुगक बाद (1975), छत्रानन्दसिंह झा (1946)क डोकहरक आँखि (1971) एवं काँटकूस (1977), हंसराज (1938-2006) जे कीने से (1972) दमनकांत झा (1924-1994)क गपाष्टक (1974), अमरनाथ झाक क्षणिका (1975), एकटा चाही द्रोपदी (1976), कबकब (1977), जोंक (1978), मोम जकाँ वर्फ जकाँ (1980) एवं अधकट्टी (2007) तथा मंत्रेश्वर झा (1944)क एक बटे दू (1977) आदि उल्लेखनीय अछि। परवर्त्ती किछु कथाकार एहन छथि जनिक कथा संग्रह तँ नहि प्रकाशमे आबि सकल अछि, किन्तु समकालीन पत्रिकादिमे हुनका सभक एहि प्रवृत्तिक कथादि प्रकाशित अछि जकर संख्या शताधिक अछि।

हरिमोहन झा ने विश्रुत गद्यकार रहथि, प्रत्युत वाक् सिद्ध कविताकार सेहो

रहथि। हुनका विलक्षण प्रतित्वपन्नमतित्वक प्रतिभा सेहो छलनि। काव्यक क्षेत्रमे कुत्सित वैवाहिक परम्परा, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, आधुनिक फैशन एवं सभ्यता, महगी, धार्मिक पाखण्ड, पर्दाप्रथा इत्यादि विषय केन्द्रित क' कए गंभीर व्यंग्य कयलनि। परवर्त्ती युवा पीढ़ीक कवि लोकनि कतिपय कविताक रचना कयलनि। ओ ढ़ाला झा (विक्रम संवत् 2003)मे एहन व्यंग्यात्मक चित्र प्रस्तुत कयलनि जे लुट्टी झाक प्रप्रौत्र, नरहा पाञ्जि, ककरौड़क निवासी तथा बेलौंचेक वंशज, जनिक स्वरूप देखितहि पाठकक हास्यक अन्त नहि होइछ। एकर प्रभाव परवर्त्ती बड़ चर्चित काव्यकार वैद्यनाथ मिश्र यात्रीपर पड़ल आ ओ बूढ़वरक रचना कयलनि जे मैथिल समाजक यथार्थ व्यञ्जना उपस्थित करैत अछि। ई कविता भावनाक तीव्रताक कारणेँ हृदयग्राही बनि गेल अछि। वृद्ध विवाहक शब्द-चित्र चन्द्रनाथ मिश्र अमर (1925) बुढ़बा काका (1364 साल)मे अंकित कयलनि जे पुनर्विवाहक हेतु कतेक व्याकुल छथि। एहन वृद्ध-वरकेँ देखि क' केँ पाठक नहि हैत जकरा हृदयमे आक्रोशक भावनाक उदय नहि हैत। एहि परम्परासँ प्रभावित समाजक यथार्थ अभिव्यञ्जना वैद्यनाथ मिश्र यात्री बूढ़वरमे कयलनि :

माथ छलनि औन्हल छाँछ जकाँ
जीह गाँजक जोलही माछ जकाँ
दाँत ने रहन्हि निदन्त रहथि
बूड़ि रहिथ घेंत्था वसन्त रहथि

मिथिलाक समसामयिक समाजमे वृद्ध-विवाहक प्रचलनक कारणेँ कन्या विक्रय प्रथाक प्रचलन भेल। एहि परिप्रेक्ष्यमे हरिमोहन झा कन्याक निलामी डाक (1336 साल)मे पतित कुलीन प्रथापर कुण्ठराधात कयलनि जे कन्या एवं वर पक्षक घटक कोना मायाजालमे फँसा क' कोमल कलीकेँ वृद्धक संग विवाह स्थिर करैत छथि तकर मार्मिक चित्रणसँ प्रभावित भ' वैद्यनाथ मिश्र यात्री जखन कहैत छथि :

देख' मे सुखैल पकटैल काठ
रुपैया बान्हि बूढ़ ऐला सौराठ

तथा

ई की कैल उठा क' आनल
कमलक कोढ़ी लै ढ़ेङ कोकनल
बेटीकेँ बेचलहुँ मडुआक दोबर
बूढ़ बकलेल सँ भरलहुँ कोबर

आ उपर्युक्त प्रसंगमे चन्द्रनाथ मिश्र अमर कहैत छथि :

आगि देखौने कतहु नहि नमरैक लाह

वृद्ध विवाहक दुष्परिणाम होइछ अधिकांश कन्या विधवा बनि जाइछ। बाल-विधवाक जीवन केहन विषाद पूर्ण होइछ तकर स्पष्ट चित्रांकन वैद्यनाथ मिश्र यात्री कयलनि विलाप कवितामे। यथा :

भुस्साक आगि जकाँ
जरै छी मने मन हमहुँ
फटै छी कुसियारक पोर जकाँ
चैतक पछबामे ठोर जकाँ

हरिमोहन झा अत्याधुनिक फैशन परस्त युवक-युवतीपर सेहो व्यंग्यक कुण्ठाराधात कयलनि जकर स्पष्ट चित्र भेटैछ बूढ़ानाथ (1960) काव्यमे। आधुनिक समाजमे नारीक चारित्रिक उच्छृंखलता कतेक वेसी अछि ताहिपर कवि व्यंग्य करैत छिथ। एहिसँ प्रभावित भ' वैद्यनाथ मिश्र यात्री अत्याधुनिक राधिकापर कटाक्ष कयलनि :

देवि स्कूटर वाहिनी घुरिआउ सन्ध्याकाल
कोनो होटल मध्य बाट तकैत हैत बाँके बिहारीलाल

युग चक्रक कवि चन्द्रनाथ मिश्र अमर जखन कटाक्ष करैत छथि :

सुन्दरता लै पुरुष फटै छिथ
नारी वर्गक कान कटै छथि
तैं तँ महिला सब उठि चलली
काटै पुरुषक कान कहौ कें

आधुनिक फैशनक अति व्यापक प्रभाव पड़ल, जाहिसँ प्रभावित भ' परम्परावादी पण्डित लोकनि सेहो एहिसँ अछूत नहि रहि सकलाह। ओ सभ सेहो आधुनिकताक संग चरणमे चरण मिला क' चलय लगलाह। गोपाल जी झा गोपेश (1931-2009) एहने एक पोंगा पण्डितपर व्यंग्य करैत छथि :

देखने छलियनि पण्डित जीकेँ
टोस्टक संग चाहक चुस्की लैत
वैदिको जी भेटलाह सिनेमेमे
देखय आएल छला राजकपूरक सतरंगी तमाशा

अत्याधुनिक सभ्यतामे जतय हिनका दोष दृष्टिगत भेलनि तकरो ई व्यंग्यक आलम्बन बनौलनि। एहि दृष्टिएँ हिनक टी पार्टी (2005 साल) विशुद्ध हास्य-व्यंग्यसँ अनुप्राणित अछि जाहिसँ प्रभावित भ' गोपालजी झा गोपेश कतिपय कविताक रचना कयलनि।

धार्मिक पाखण्डक आलम्बन बना क' ई कतिपय काव्यक सृजन कयलनि। तन्त्र-मन्त्र, शास्त्र-पुराणक वितण्डावादक कारणेँ सामाजिक जीवन दिन प्रति दिन विषम भेल जा रहल अछि। धर्मक नामपर अपनाकेँ अग्रदूत बुझनिहार पाखण्डी पण्डित लोकनिपर व्यंग्य क' कए धर्माचारक भण्डा फोड़लनि जकर प्रत्यक्ष उदाहरण थिक हुनक पण्डित (1953) एवं पण्डित विलाप (1960)। एहिसँ प्रभावित भ' राजकमल चौधरी वैद्यनाथ धामक पण्डा लोकनिपर, आद्यानाथ झा निरंकुश (1934) गामक भूत एवं ब्रह्मस्थानमे, काञ्चीनाथ झा किरण (1906-1989) माटिक महादेवमे (1950) तथा तन्त्रनाथ झा (1909-1994), मुसरी झा (1956)मे उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे व्यंग्य कयलनि जाहिमे हास्यक रूप स्वयं उद्भाषित भ' गेल अछि। जहिना ओ अपन गद्य-साहित्यमे नारी जागरणक शंखनाद कयलनि तहिना ओ अपन काव्यमे सेहो उपर्युक्त प्रवृत्तिकेँ अधिक मुखर कयलनि जकर स्पष्ट रूप हिनक अङरेजिया लड़कीक समुदाउन (1953) एवं बुचकुन बाबा (1358 साल)मे उपलब्ध होइछ। एहिसँ प्रभावित भ' परवर्त्ती युवा कवि लोकनि कतिपय काव्यक सृजन क' कए एकरा अधिक मुखर कयलनि। हिनक निरसन मामा (1953)सँ प्रभावित भ' वैद्यनाथ मिश्र यात्री नवनाचारी तथा बुचकुन बाबासँ प्रभावित भ' गोपाल जी झा गोपेश करिया काकाक रचना कयलनि।

भिन्न-भिन्न स्थानसँ पत्रिकादिक प्रकाशनक फलस्वरूप निबन्ध-लेखनक एक प्रबल ज्वार आयल तकरे फलस्वरूप हास्य-व्यंग्य मिश्रित निबन्धक पारम्परिक शुभारम्भक प्रमाण थिक हिनक निबन्ध-साहित्य जाहिमे ओ समसामयिक सामाजिक कुरीति, पण्डित लोकनिक वाह्याडम्बर आ प्राचीन अन्धविश्वासकेँ खण्डित करबाक दिशामे जनमानसक ध्यानाकर्षित कयलनि। पहिने तँ हिनक निबंधादि वैदेही, मिथिला दर्शन, स्वदेश एवं मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल, किन्तु पश्चात् जा क' खट्टर ककाक तरंग प्रथम भाग (1948) आ द्वितीय भाग (1955)मे प्रकाशित भेल जकर फलस्वरूप एहि विधाकेँ अत्यधिक बल भेटलैक। हिनक निबन्धक प्रमुख नायक छथि खट्टर कका जे पूर्णत: विनोदी प्रवृत्तिक व्यक्ति छथि। हिनक प्रत्येक बात विनोद पूर्ण होइत छनि। ई अपन प्रतित्वपन्नमतित्वक कारणेँ सदिखन काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा प्रवाहित करैत छथि। हिनक व्यंग्य युक्त विनोद पूर्ण कथनमे व्यक्ति, समाज, धर्म, दर्शन आदिक कटु आलोचना उपलब्ध होइछ। थैकरे जकरा राउण्ड एवाउट पेपर्स, कहलनि ओहि परिप्रेक्ष्यमे खट्टर कका पुरातन परम्परा यथा

अन्धविश्वास, धार्मिक पाखण्ड, ढ़ोंग, रूढ़ि आदिपर व्यंगय क' कए भयानक विद्रोह करैत छथि।

हिनक निबन्धक प्रमुख स्वर रहल अछि वेद-पुराण, कर्मकाण्ड, धर्म-शास्त्र, रामायण-महाभारत, ज्योतिष, आयुर्वेद, तन्त्र-मन्त्र, देवी-देवता, स्वर्ग-नरक, पुनर्जन्म-मोक्ष आदि विविध विषयकेँ ओ कोन रूपेँ देखलनि जे हिनका तार्किक निबन्धकारक कोटिमे परिगणित क' देलक। ओ गीता, दुर्गापाठ एवं सत्यनारायणक कथाक विनोदात्मक व्याख्या करैत छथि तँ सांख्य, वेदान्त एवं भगवत्-भजनपर व्यंग्यात्मक पिचकारी छोड़ैत छथि। हिनक निबन्ध साहित्य बिजलीक करेंटक समान अछि। धार्मिक पाखण्डक खण्डनमे ओ प्रमाण एवं व्यंग्यवाणक झड़ी लगा देत छथि। हिनक निबन्धादिककेँ पंक्ति-पंक्तिमे हास्य-व्यंग्यक अजस्त्र धारा प्रवाहित भेल अछि। विचार-प्रधान निबन्धमे देखल जाइछ जे विचारात्मक एवं मधुर भावात्मक गद्यशिल्पक सम्मिश्रण आ वाद-विवादक प्रसंगमे संयुक्त गम्भीर व्याख्यात्मक गद्य-शिल्पक तेजी रहैछ। एहन गद्य शिल्पक हेतु बात कहबाक लेल भाषा नहि तकैछ।

निबन्धक क्षेत्रमे हुनका द्वारा स्थापित परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे परवर्त्ती युवा निबन्धकार एहि प्रवृत्तिसँ अनुप्राणित भ' आगाँ बढ़यबामे अद्भुत योगदान देलनि जकर संख्या सह्स्त्राधिक अछि। किन्तु दुर्योगक विषय थिक जे जाहि परिमाणमे हास्य-व्यंग्यसँ संयुक्त निबन्ध विभिन्न पत्रिकादिमे प्रकाशित भेल ओकर अत्यल्प संग्रह प्रकाशमे आयल अछि। खट्टर ककाक तरंगसँ सर्वाधिक अनुप्राणित भेलाह अमृतधारी सिंह (1918-1992) तथा हुनक शैलीक अनुकरण क' कए घूटरबाबाक जाल (1976) एवं मन्त्रेश्वर झा ओझा लेखेँ गाम बताहे (1979) प्रकाशमे आयल। उपर्युक्त दुनू निबन्ध संग्रहमे हास्य-व्यंगयक संग कथात्मक रोचकताक समन्वय भेल अछि।

एतय एक बातक उल्लेख करब अधिक समीचीन हैत जे एहि विधामे नव-नव प्रतिभा सम्पन्न निबन्धकारकेँ उपस्थित करबाक दिशामे पटनासँ प्रकाशित मिथिला मिहिर अत्यधिक प्रोत्साहित कयलक। किन्तु एतबा कहबामे अतिशयोक्ति नहि होयत जे जाहि प्रकारक लोकप्रियता हरिमोहन झा अर्जित कयलनि ताहि रूपक लोकप्रियता अद्यापि किनको नहि भेटलनि अछि।

हरिमोहन झाक प्रहसन, एकांकी एवं छाया रूपक रचना क' कए एक प्रतिमान प्रस्तुत कयलनि जकर व्यापक प्रभाव परवर्त्ती युगक युवा रचनाकर्मीपर पड़ल। एहि सब रचनादिमे व्यंग्य एवं हास्यक प्रधानता अछि जाहिमे ओ समाजकेँ कंगाल बना देनिहार दहेज प्रथा आ नारी जागरणक शंखनाद कयलनि। एहि दृष्टिएँ तन्त्रनाथ झाक एकांकी चयनिका (1947)मे कालेज प्रवेशमे एक अनुभवहीन, आधुनिकताक प्रिय एवं अर्द्धज्ञान प्राप्त छात्र समुदाय, तमघैलमे स्वार्थी समाज आ उपनयनाक

भोजमे सामाजिक द्वेष तथा कुप्रथापर प्रपंच रचनिहार तथा घटकक पराभवमे नव युवक समुदायपर व्यंग्य कयलनि अछि जे विनु कन्या देखने विवाहार्थ प्रस्तुत नहि होइत छथि। योगानन्द झा मुनिक मतिभ्रम (1953)मे वृद्ध विवाहपर कठोर आघात कयलनि जाहिमे नाटकीय व्यंग्यक स्वर अधिक प्रखर अछि। सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे समसामयिक घटनाक आधार बना क' चन्द्रनाथ मिश्र अमर समाधान (1955)मे निरक्षरता निवारक पाठशालामे वयस्क शिक्षापर संगहि नवीन पाठ्य प्रणालीमे आधुनिक शिक्षा पद्धतिपर तथा मलरवि (1961) हास्य-व्यंग्यक जे वातावरणक सृजन कयलनि जे सर्वाधिक निखरल अछि। सुधांशु शेखर चौधरी (1920-1990)क हथटूट्टा कुरसी (1960)मे दू पीढ़ीक मानसिक वैषम्य, संघर्ष, वाह्याडम्बर, ममत्व एवं सामाजिक परिवेशपर कठोर व्यंग्य कयलनि अछि।

एहि प्रवृत्तिकेँ आगाँ बढ़यबाक दिशामे परमेश्वर मिश्र क' त्रिवेणी, हिरश्चन्द्र झाक छींक, रूपकान्त ठाकुरक वचन वैष्णव (1965) एवं लगाम (1966), चन्द्रकान्त झाक वाल्टी क्लब (शाके 1881) एवं पढ़बाक खर्च (शाके 1881), प्रबोध नारायण सिंहक हाथीक दाँत (1964), उदय नारायण सिंह नचिकेताक रामलीला (1977), जगदीश झाक मैथिली एकांकी प्रहसन (1988), किशोरी यादवक आँखिक बीझ (1987), मन्त्रेश्वर झाक बहुरूपिया (1993) एवं धूर्त्तनगरी (1993) समारोह (1991) एवं पराजय (1994) आदि-आदि एकांकी एवं प्रहसन हरिमोहन झाक हास्य-व्यंग्य शैलीक अनुकरण क' कए लिखल गेल अछि।

एहि विधामे कतिपय एकांकी एवं प्रहसनकार उद्भूत भेलाह जनिक रचनादि विभिन्न पत्रिकादिमे धूल-धूसरित भ' रहल अछि जकर संकलन अद्यापि प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि। हमर विश्वास अछि जे भविष्यमे एहि विधाक अनुकरण क' कए परवर्त्ती युवा पीढ़ी नव रूपेँ हास्य-व्यंग्य प्रस्तुत करताह।

कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभासँ समलंकृत हरिमोहन झाक उपन्यास, एकांकी, एवं प्रहसन, कथा, कविता, निबन्धादिमे हास्य-व्यंग्यक नव प्रवृत्तिक ओ जे नेओ देलनि ताहिसँ अनुप्राणित भ' परवर्त्ती युवा रचनाकर्मी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर प्रभावित भेलाह जे उपर्युक्त विवेचनसँ स्पष्ट अछि। एहि प्रवृत्तिक हिनक विशाल साहित्यिक अवदान एक वट-वृक्षक समान अछि जकर परिसरकेँ केन्द्र-विन्दु मानि परवर्त्ती युवा रचनाकर्मी हास्य-व्यंग्यक अजस्त्र धारा प्रवाहित कयलनि आ पाठकवर्गक निर्माण, स्त्री शिक्षाक व्यापक प्रसार, अनमेल विवाहक अंत, धार्मिक वितण्डावादमे सुधार, चारित्रिक दुर्बलताक विनाश, राजनीतिक मूल्यमे ह्रास, सामाजिक वातावरणक विशिष्ट सन्दर्भमे सुधारक प्रयोजनीयताकेँ ध्यानमे राखि रचना कयलनि। हिनक साहित्यक व्यापक प्रभावक फलस्वरूप परवर्त्ती युवा पीढ़ीक साहित्य मनीषीपर पड़लनि आ हुनक प्रतिभाक प्रस्फुटन भेलनि। हुनक साहित्यक

विशाल परिधिकेँ ध्यानमे राखि क' जँ हुनका मैथिली साहित्यक चार्ल्स लैम्ब कहल जाय तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि हैत। अंग्रेज समाजक जेहन चित्रण बनार्ड शॉक रचनामे उपलब्ध होइछ ओही प्रकारक मिथिलाञ्चलक सामाजिक जीवनक विशिष्ट सन्दर्भक एलबल थिक हिनक साहित्य-संसार।

जहिना सुस्वाद, चर्व्य, चोष्य, लेह्य, पेय भोजनकेँ प्राप्त भेलापर पेटूकेँ आनन्द होइछ तहिना हास्य-व्यंग्यमे अभिरुचि रखनिहार राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय युवा पीढ़ीक परवर्त्ती रचनाकारकेँ हास्य-व्यंग्यक ई एक नव मार्ग प्रशस्त कयलनि। हिनक साहित्य-संसारक लोकप्रियताक अनुमान तँ एहीसँ लगाओल जा सकैछ जे जहिना देवकीनन्दन खत्रीक उपन्यास चन्द्रकान्ता सन्तितकेँ पढ़बाक हेतु अनेक अहिन्दी भाषी जनमानस हिन्दी सिखलनि तहिना हरिमोहन झाक चित्ताकर्षक हास्य-व्यंग्य रचनाक रसास्वादनक हेतु बहुतो लोक मैथिली सिखलक। हिनक विभिन्न रचनादि समय-समयपर विभिन्न आधुनिक भाषाक प्रमुख साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकादिमे अनूदित भ' प्रकाशित भ' अमैथिली भाषीकेँ आनन्दित कयलक। वस्तुतः ई श्रेय आ प्रेय हिनके छनि, जनिक साहित्य सर्वाधिक भाषामे अनूदित एवं समादृत भेल जे हिनका राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्यमे अत्याधुनिक परिवेशमे युवा रचनाकारकेँ साहित्य-सृजनक निमित्त उत्प्रेरित कयलक। विद्यापतिक पश्चात् मैथिली भाषा-साहित्यकेँ अन्तर्राष्ट्रीय पहचान देनिहार रचनाकारमे हिनक समस्त साहित्य अजर, अमर एवं अक्षुण्ण रहत से हमर विश्वास अछि।

* * *

मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी

विगत शताब्दीक प्रारम्भ भारतीय जनमानसक राष्ट्रीय आ सांस्कृतिक जनजागरणक प्रत्यूष बेला थिक। एही बेलामे समाज सुधार आ राजनीतिक आन्दोलनक देश-व्यापी चेतना सर्वत्र परिव्याप्त भेल। भारतीय संस्कृति आ सभ्यताक आत्म सुधारक लेल भारतीय जीवनगत दोषादि स्वीकृतिक प्रति मुखरित भेल। फलत: हिन्दू समाजक परिष्कार आ परिमार्जनक लेल बंग भूमिपर राजा राममोहन रायक उदय भेलनि। उत्तर भारतमे आर्य संस्कृतिक पुरुत्थानक निमित्त स्वामी दयानन्द आर्य समाज द्वारा हिन्दू जागरणक नव मन्त्र फूकलनि। ई वैह स्वर्णिम बेला थिक जे जनमानस अपन दोषादिकेँ सुधारि क' संसारक प्रगतिशील जातिक प्रतिद्वन्द्वितामे अग्रसर हैबाक दृढ़ संकल्प कयलक।

भारतीय राजनीतिक क्षितिजपर महात्मा गांधी सदृश प्रबल शक्तिक आविर्भाव भेलनि, जनिक नेतृत्त्वमे समस्त भारतवासी ब्रिटिश साम्राज्यवादक जड़ि उन्नमूलनार्थ कटिवद्ध भ' गेल। असहयोग आन्दोलनक ई राजनैतिक चेतनाक मूर्त्त रूप छल। विदेशी वस्तुक वहिव्कार, स्वदेशीक प्रचार, हिन्दु-मुस्लिम एकता, सत्यक आग्रह नेने देश भक्त लोकनिक अहिंसात्मक युद्ध, विभिन्न भंगिमाक बुनियादकेँ ल' कए ई पुनीत आन्दोलन सम्पूर्ण देशमे परिव्याप्त भ' गेल। ई मात्र राजनैतिक आन्दोलन नहि छल, प्रत्युत राष्ट्रक महान सांस्कृतिक आन्दोलन सेहो छल। महात्मा गांधीक राजनीति वस्तुत: सत्य, अहिंसा, पारस्परिक प्रेम, शान्तिक उज्ज्वल आदर्शसँ अनुप्राणित छल जे भारतीय संस्कृतिक सर्वोपरि निधि थिक।

समाज सुधार आ राजनीतिक ई आन्दोलन ने केवल विजातीय संस्कृति आ शासनक प्रतिरोध कयलक, प्रत्युत मातृभूमि, मातृभाषा एवं संस्कृतिकेँ सजग आ प्रवुद्ध बनौलक। ई आन्दोलन जतय मातृभूमि, मातृभाषा एवं संस्कृतिसँ देशवासीकेँ प्रेमक पाठ पढ़ौलक ओतहि समाज-सुधार आन्दोलनादिक माध्यमे एहि संस्कृतिक एक अत्यन्त भव्य आ उज्ज्वल रूप समक्ष आयल। वर्त्तमान समस्याक समाधान, भविष्यक सुखद नवनिर्माण तथा विदेशी संस्कृतिक प्रबल प्रवाहसँ अपन सभ्यताकेँ उबारबाक, मातृभूमि आ मातृभाषाक गौरवमय अतीतक आश्रय लेलक। एहि प्रकारेँ विदेशी शासनसँ आतंकित मातृभूमिक निष्प्राण धमनीमे पुरातन संस्कृतिक भव्य आदर्श, आचार आ निष्ठाक उष्ण रक्त प्रवाहित करबाक लेल युगक चेतना अत्यन्त तीव्र गतिएँ गतिशील भ' गेल।

साहित्यक माध्यमसँ युग-चेतनाक ई प्रवुद्ध स्वरूप विविध रूपमे व्यक्त होमय लागल। अपन सीमामे समटल ओहि समयक समस्त साहित्य वस्तुत: मातृभूमि, मातृभाषा एवं सांस्कृतिक जागरणक भाव भूमिपर स्थिर अछि। स्वदेश प्रेम, अतीतक प्रति गौरवगान, गांधीवादी विचार धाराक प्रति श्रद्धा सम्मान, राष्ट्रीय अखण्डताक समर्थन, जातीय संस्कृतिक नव-निर्माण, सामाजिक कुण्ठादिक निवारण विविध भाव सामग्री समकालीन साहित्य-सृजन आ पोषण कयलक। उपर्युक्त वातावरण परिप्रेक्ष्यमे तत्कालीन साहित्यमे उच्चादर्शवादिता, मातृभाषाक प्रति अगाध श्रद्धा तथा ओकर मान्यतार्थ अधिकार प्राप्त करबाक लेल आन्दोलनक शुभारम्भ भेल।

उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे विगत शताब्दीक तृतीय दशकमे एक एहन अक्षर पुरुष प्रादुर्भूत भेलाह जनिक बहुआयामी व्याक्तित्त्व, मातृभाषाक उत्कर्षक लेल, अविरल नव-नव आयामक प्रेरणा स्त्रोत, अनुसंधान, आन्दोलन, इतिहास-लेखन द्वारा विश्व स्तरपर मैथिलीकेँ प्रतिष्ठित करब, मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक कार्यान्वयनक हेतु संघर्षरत आ कानूनी लड़ाइ लड़निहार, दिशाबोधक, आलोचक तथा हेड़ायल-भुतिआयल मातृभाषानुरागी विभूतिकेँ प्रकाशमे आनि, दिवारात्रि चिन्ताग्रस्त रहनिहार आन्दोलनकारी मातृभाषाक उत्थानार्थ महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलनि ओ रहथि प्रोफेसर डॉक्टर जयकान्त मिश्र (1922-2009)। विगत सात दशक धरि अनवरत एक रस एक चित्त भ' मातृभाषाक निष्प्राण धमनीमे उष्ण रक्तक संचार क' कए अभिनव साहित्यिक वातावरणक निर्माणक क' कए ओकर पोषण कयलनि। मैथिली भाषा आ साहित्य जखन गहन अन्धकारमे टापर-टोइया द' रहल छल तखन ओ अपन अभिनव अनुसन्धान आ एक सजग आन्दोलनकारीक रूपमे एक नव आलोकक रश्मि विकीर्ण कयलनि। हिनक समकालीन परिदृश्य छल भारतक स्वतन्त्रताक महासंग्राम जाहिमे कतिपय महासपूत अपन प्राणक आहूति देलनि आ रक्तसँ तर्पण कयलनि।

भारतक स्वतन्त्रता संग्रामक इतिहासमे सन् उन्नैस सय वियालिसक अगस्त क्रान्ति, जाहि मे भारत छोड़ो क' आन्दोलनक शंखनादक अति महत्त्वपूर्ण स्थान अछि, एहि महाक्रान्ति मे बूढ़-बूढ़ानुस नेतासँ अधिक जुआन-जहानक रक्त विशेष गर्म छलैक आ अंग्रेजी शासनक विरूद्ध ओकरा सभक स्वर अधिक मुखर छलैक। मिथिलाञ्चलक कतिपय स्वतन्त्रता सेनानी एहि महासंग्राममे सहभागी बनि एकरा सफल बनयबामे सक्रिय सहभागिता देव प्रारम्भ कयलनि, जाहिमे मैथिलीक महान सपूतक संगहि अपन बहु विधादिक साहित्य सृजनिहार डा. वृजकिशोर वर्मा मणिपद्म (1918-1986) मनसा वाचा कर्मणा जेल यात्रा कयलनि, ब्रिटिश शासकक निर्मम कठोर यातना सहलनि, भूमिगत भेलाह आ फरारीमे जीवन व्यतीत कयलनि,

एहि दृष्टिएँ हिनक संस्मरण वियालसीक फरारीक सात दिन (1953) एवं फरारीक पाँच दिन (1961) प्रकाशित अछि, हुनकासँ भेट भेल छल (2004) जाहिमे स्वतन्त्रता आन्दोलनक क्रममे ओ जे डायरी लिखलनि तकर दारूण पीड़ादायक वर्णन कयलनि। एहिमे रचनाकारक सद्य: प्रस्फुटित भाव वा विचारकेँ अभिव्यक्ति देलनि वा अपन अनुभवक रेखाकंन कयलनि जे अत्यन्त मार्मिक अछि।

प्रोफेसर जयकान्त मिश्रक जीवन-धाराक दू रूप हमरा समक्ष अबैछ ओ थिक साहित्य आ आन्दोलन। दूनू क्षेत्र हिनक अत्यंत विस्तृत आ व्यापक अछि जकरा माध्यमे निष्प्राण मैथिली साहित्यमे नव स्पन्दन भरनिहार ई प्रथम सरस्वती पुत्र प्रादुर्भूत भेलाह जे मातृभाषाकेँ जीवन दान देलनि। ओ ने तँ स्वतन्त्रता संग्रामक महासमरमे सहभागी भेलाह आ ने तँ कोनो राजनीतिक दलसँ सम्वद्ध भेलाह, अपन मातृभाषाक उन्नयनार्थ सतत आन्दोलनोन्मुख रहला, दिशा निर्देश कयलनि, अपन उचित माँगक प्रति सचेष्ट रहला, संघर्षरत रहला आचार, व्यवहार वेष-भूषामे पूर्णत: मैथिल संस्कृतिक प्रतीक रहला जे वर्त्तमान परिदृश्यमे अनुकरणीय थिक। हुनक समस्त जीवन-दर्शन, समस्त विचार-प्रवाह, युग चेतनाक व्यापक सन्निवेश हुनक वाणीक परिधान पहिन क' मिथिलाक सांस्कृतिक परम्परा आ मैथिली साहित्यक भूमिपर दृढ़तासँ प्रतिष्ठित अछि। हुनक जीवनक सार्थकता अर्थोपार्जनमे नहि छलनि, ख्यातिमे नहि छलनि, अधिकारक विस्तारमे नहि छलनि, लोकक मुखसँ साधुवादमे नहि छलनि, भोगमे नहि छलनि, हुनक जीवनक सार्थकता मात्र जीवनकेँ गम्भीर रूपमे उपलब्ध करबामे, मातृभाषाक महत्त्व बुझबाक चेष्टा करबाक आनन्दमे छलनि। पैघ व्यक्तिक जीवन जीबाक एक ट्रेड सीक्रेट होइत छैक, से हिनका स्वत: प्राप्त छलनि। हुनक जीवनक मूल उद्देश्य छलनि **To know how to live in any trade**. नामी-गिरामी व्यक्तिक साहित्य संसार बहुत दूर धरि एक प्रतिभाशाली परिवार सदृश रहैछ जाहिमे ओ जीवनयापन कयलनि।

आन्दोलन-स्फुरण :

अनुसन्धानोत्तर एक नव प्रवृत्तिक जागरण हुनक मस्तिष्कमे भेलनि जे मैथिलीक गौरव-गरिमाकेँ वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे जागृत करबाक निमित्त ओ रचनात्मक आ आन्दोलनात्मक मार्गक अनुसरन कयलनि। एहि लेल ओ अर्कमण्य, निष्क्रिय, सुसुप्त, धार्मिक कट्टरता, रूढ़िग्रस्ता, जीवनक अन्ध कूपमे डूबल मिथिलाञ्चल एवं प्रवासी मैथिल समाजमे नव जीवनक संचार करबाक हेतु जनजागरणक अभियानक सूत्रपात कयलनि जे मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक जीवनमे नवचेतना अनबाक हेतु ओ रचनात्मक आ आन्देलनात्मक रुख अख्तियार कयलनि जकर व्यापक प्रभाव मैथिली भाषीपर अत्यन्त व्यापक रूपेँ पड़ल।

केन्द्र एवं विहार सरकारक उदासीनतासँ भाषाकेँ सर्वथा उपेक्षित देखि हुनका हृदयमे असीम पीड़ा आ आक्रोश होइत छलनि। ओ कविवर सीताराम झा (1891-1975)क निम्नस्थ पंक्ति अतिशय प्रभावित भ' आन्दोलनोन्मुख भेलाह :

अछि सलाइमे आगि बरत की बिना रगड़ने।
पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने।

कविवरक उक्त पंक्तिक व्यापक प्रभाव हुनकापर पड़लनि जाहिसँ अभिभूत भ' ओ जन जागरणक अभियान चलौलनि जे जनमानस अपन मातृभाषाक महत्त्वकेँ जानय, बुझय आ अपन समुचित अधिकार प्राप्त करबाक दिशामे आन्दोलनोन्मुख हो, हुनका मान्यता छलनि जे मिथिलाञ्चल वासीमे भाषा चेतनाक सर्वथा अभाव छैक। भाषा चेतनाक अर्थ थिक मातृभाषा प्रति प्रेम, दायित्व बोध, कर्त्तव्य बोध, गौरव बोध आदि समस्त विषय चेतना शब्दमे सन्निहित अछि। भाषाक उन्नति आ विकास ओहि भाषीक चेतनापर निर्भर करैछ, किन्तु अकर्मण्य मैथिली भाषी जनमानसमे अपन भाषा आ साहित्यक सर्वांगीन विकासक आकांक्षाक अभाव देखि ओ सर्वप्रथम भाषा चेतना जगयबाक उपक्रम कयलनि जे हम मैथिल छी, हमर मातृभाषा मैथिली थिक आ हम मिथिलावासी छी। एहि भावनासँ उत्प्रेरित भ' मिथिलाञ्चलक जन-जनसँ अनुरोध कयलनि जे जाति-भेद, वर्ग-भेद, छिद्रान्वेषणक प्रवृत्तिक परित्याग क' एक जुट भ' सम्मिलित रूपसँ मातृभाषाक विकास कार्यक प्रति समवद्ध भ' आन्दोलन करी, कारण कोनो भाषा भाषीकेँ विनु संघर्ष कयने कोनो उपलब्धि नहि भेलैक जे ऐतिहासिक दस्तावेजक रूपमे ओकर भाषा साहित्यमे नुकायल अछि।

मैथिली आन्दोलनक दधीचि बाबू भोलालाल दास (1894-1977)क कथन छलनि जे चुपचाप बैसने व्यक्ति वा संस्था वा भाषाकेँ न्यायोचित अधिकार नहि प्राप्त भ' सकैछ, अतएव मिथिलाञ्चलक सर्वांगीन विकास ओकर भाषा आ साहित्यक मान्यातार्थ समग्र मिथिलावासीकेँ एक सूत्रमे बान्हि, एकता प्रदर्शित क' भयंकर सिंहनाद करबाक प्रयोजन अछि आ अपन समुचित आधिकार प्राप्ति करबाक लेल अतुलित संघर्ष करबाक आह्वान ओ जीवन पर्यन्त कयलनि। हुनक प्रसिद्ध पंक्ति थिक :

अन्यायी सत्ता छी प्रलय गगन समार अतिविषम।
हमरहि लघु हुँकारसँ महाप्रलय होइछ नियम॥

हिनक नेतृत्वमे जाहि आन्दोलनक शुभारम्भ भेल तकर प्रभाव मातृभाषानुरागी साहित्य सृजनिहार लोकनिपर सेहो पर्याप्त मात्रामे पड़लनि तथा एहि निमित्त काव्यक माध्यमे जन–जनमे अपन सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षार्थ आन्दोलनोन्मुख

भेलाह। आन्दोलनमे तखने बल आओत जखन हम अपन संस्कृतिक शंखनाद करब आ जन–जनमे भाषिक चेतनाक हुँकार भरब। एहि भावनासँ उत्प्रेरित भ' महाकवि आरसी प्रसाद सिंह (1911–1996)क सुप्रसिद्ध कविता बाजि गेल रण डंक एक उद्बोधनात्मक गीत रूपमे मैथिली प्रेमीक जिह्वापर झंकृत होमय लागल :

बाजि गेल रण डंक, ललकारि रहल अछि।
गरजि-गरजि कय, जन-जनकेँ परचारि रहल अछि।
आबहु की रहती मैथिली बनलि वन्दनी ?
तरुक छाँहमे बनि उदासिनी जनक नन्दनी ?

(माटिक दीप)

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे ओ जनमानसकेँ उत्प्रेरित करबाक उद्देश्यसँ मातृभाषाक समुचित विकासार्थ जन आन्दोलनक सूत्रपात कयलनि। अखिल भारतीय भाषा सर्वेक्षणमे मैथिली भाषीक संस्था शनै:-शनै: विलीन होइत देखि कयलनि जे जनगणनाक अवसरपर मुखातिब भ' अपन मातृभाषा मैथिली लिखावथि। ओ जतय कतहु सभा सोसायटीक मिटींगमे सहभागी होथि ततय सेहो समय बहार क' मैथिली आन्दोलनक अद्यतन स्थितिकेँ उजगार करबाक अवसर निकालि लैत रहथि। हुनका एहि बातक कचोट छलनि जे स्कूल आ कॉलेजमे जतय मैथिलीक पठन-पाठनक सुविधा छैक ततय अभिभावक लोकनि अपन मातृभाषाकेँ उपेक्षाक दृष्टिसँ किएक देखैत छथि आ छात्रकेँ प्रोत्साहित नहि करैत छथि। पुस्तक एवं पत्रिका प्रकाशित होइत अछि, किन्तु ओकर क्रेताक अभाव अछि। मैथिली आन्दोलनक प्रति जनमासक उदासीनताकेँ दूर करबाक निमित्त आन्दोलन करबाक आवश्यकताक ओ अनुभव कयलनि। मातृभाषाक जागरणक सबसँ प्रबल आ सबसँ समर्थ स्वर मिथिलाक जनमानसकेँ झंकृत क' देलक। विगत सात दशकसँ मातृभाषा प्रेमी जनमानसकेँ अधिक प्रवुद्ध आ उर्जस्वित स्वरूप देबाक लेल ओ एक महान तपस्वीक समान अखण्ड साधनामे रत रहला। वर्त्तमान युग धर्मक अनुरूप हुनक साधना अत्यन्त विराट आ भव्य अछि।

आन्दोलन–नेओ :

मातृभाषा मैथिलीक समुचित मान्यताक अभाव हिनका हृदयमे सतत खटकैत रहलनि, जाहिसँ उत्प्रेरित भ' ओ आन्दोलनोन्मुख भेलाह। कारण पुरातन कालहिसँ इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्राच्य एवं प्रतीच्य उच्च शिक्षाक हृदय स्थल रहल अछि जतय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रक लब्ध प्रतिष्ठ मातृभाषानुरागी साहित्य चिन्तक लोकनिक निवास रहलनि लकर दू कारण अछि। प्रथमत: धर्मावलम्बी

मैथिल समाज गंगा-यमुना आ विलुप्त सरस्वती नदीक संगम स्थल थिक आ विद्याव्रती लोकनिक जमाबड़ा रहल अछि। स्वाधीनतासँ पूर्व मातृभाषानुरागी जयकान्त मिश्र एकर विकासार्थ दू संस्थाक स्थापना कयलनि तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स आ अखिल भारतीय मैथिली सहित्य समितिक माध्यमे मैथिल आन्दोलनक नेओ सन् 1944 ई.मे रखलनि। हुनक उत्कट अभिलाषा छलनि जे सोफिया वाडिया द्वारा संस्थापित अन्तर्राष्ट्रीय, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था पी. ई. एन. *(Poets, Essayist and Novelist)* द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता प्राप्त हो। उक्त संस्थाक ई सक्रिय सदस्य भ' भारतीय भाषा एवं विदेशी साहित्यानुरागी लोकनिक ध्यान मैथिली भाषा आ साहित्यक पुरातन एवं अधुनातन उत्कर्षसँ अवगत करयबाक निमित्त आन्दोलनोन्मुख भ' एकर पुनराख्यान क' उक्त संस्था द्वारा मैथिलीकेँ मान्यता दिऔलनि जकर विस्तृत विवरण ओकर कार्य विवरिणीमे प्रकाशित अछि।

बिहारक तत्कालीन राज्यपाल डा. रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर ऑल इण्डिया रेडियोपर एक भाषण देलनि जाहिमे ओ हृदयसँ अपन उद्गार व्यक्त करैत उद्घोषणा कयने रहथि जे मैथिली ज्ञान ग्रन्थस्थ प्राचीनतम भाषा थिक जे हिनका आन्दोलनोन्मुख करबामे अति महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक। ई घटना सन् 1956 ई. क थिक।

उक्त भाषणक एक ऐतिहासिक परिदृश्य अछि जे मैथिली अन्दोलनक सक्रियतामे हिनका दिशा निर्देश कयलक। हिनक कर्मभूमि सेहो इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे रहलनि जतय गणतन्त्र भारतक प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूक जन्मभूमि छनि। ओ अवकाश भेटलापर निश्चित रूपेँ ओतय अबैत-जाइत रहथि। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक अध्यक्ष आ विश्वविद्यालयमे अङरेजी विभाग व्याख्याताक रूपमे ओ प्रधानमंत्रीसँ सन् 1960 ई. मे आनन्द भवनमे दर्शनार्थीक रूपमे मैथिलीक दू पुस्तक वैद्यनाथ मिश्र यात्री (1911-1998)क काव्य-संग्रह चित्रा आ गल्पाञ्जलि कथा-संग्रह हुनका उपहार देलथिन, संगहि अनुरोध कयलथिन जे मैथिली भाषा आ साहित्यक गौरवशाली साहित्यिक परम्परा तेरहम शताब्दीसँ उपलब्ध अछि, किन्तु सरकारी मान्यताक अभावमे ई सर्वथा उपेक्षित अछि। पण्डित नेहरू ध्यानपूर्वक आ स्नेहपूर्वक हुनक बात सुनलथिन आ कहलिथन, *Institutional reorganization is not soul management of the richness of a language. We enjoy with sound literature?*

प्रदर्शनी-प्रेरणा :

ओतहि हुनका भेटलथिन इलाहाबाद हाईकोर्टक चीफ जस्टीस न्यायमूर्ति बी.

मल्लिक। ओ हुनका कहलथिन, एहि रूपेँ अहाँक मातृभाषाकेँ मान्यता नहि भेटि सकैछ। ओ सलाह देलथिन, एहि लेल आन्दोलनक तरीका अपनाबय पड़त, तखनहि अहाँक मातृभाषाकेँ मान्यता भेटि सकैछ। आन्दोलनक तरीका थिक जे अपन मातृभाषाक समृद्धशाली, गौरवशाली आ वैभवशाली परम्परासँ जनमानसक संगहि-संग साहित्य चिन्तक लोकनिक ध्यानाकर्षित करबाक उपक्रम करू।

न्यायमूर्त्ति जस्टीस मल्लिकक सत्प्रेरणा आ यथार्थ विचारसँ उत्प्रेरित भ' कए ओ इलाहाबादमे सर गंगानाथ झा संस्कृत रिसर्च इन्सच्युटमे 15 दिसम्बर 1961 ई. मे मैथिली पुस्तकक प्रदर्शनीक प्रथम आयोजन कयलनि तथा ओकर उद्घाटन करबाक लेल जस्टीस मल्लिकसँ अनुरोध कयलथिन। ता धरि जस्टीस मल्लिक भारत सरकारक कमीशन फॉर माइनोरीटी लैंग्वेजजक चेयरमैन पदपर सुशोभित भ' गेल रहथि। ई सुखद संयोग थिक जे उक्त पुस्तक प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक दायित्त्व जस्टीस मल्लिक स्वीकार कयलथिन, जाहिमे ओहिठामक प्रबुद्ध साहित्य चिन्तक लोकनि भाषा आ साहित्यक प्राचीनतम गौरवशाली परम्परासँ अवगत भेलाह जे हुनकापर अमिट छाप छौड़लक। उक्त अवसरपर यशस्वी कवि वैद्यनाथ मिश्र यात्री मैथिलीमे काव्य-पाठ कयने रहथि।

इलाहाबाद पुस्तक प्रदर्शनीसँ अनुप्राणित आ अनुप्रेरित भ' कए ओ सोचलनि जे एहन प्रदर्शनीक आयोजन गणतन्त्र भारतक राजधानी दिल्लीमे कयल जाय तँ निश्चित रूपेँ मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ मान्यता भेटबामे कोनो बाधा नहि आबि सकैछ। हुनकापर आन्दोलनक भूत एहन सवार भ' गेल छलनि। एकर आयोजनार्थ ओ अपन प्रोभिडेण्ड फण्डसँ लोन ल' कए 8 आ 9 जनवरी 1963 ई. मे दिल्लीक आजाद भवनमे ऐतिहासिक राष्ट्रीय पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन कयलनि जाहिमे मिथिलाञ्चल एवं प्रवासस्थ मैथिली प्रेमी लोकनिसँ चन्दा एकत्रित कयल गेल आ भालण्टीयर सहभागी भेल रहथि। प्रदर्शनीक सजावट हृदयाकर्षक छल। बहुतायादमे मैथिली पुस्तकादि पाण्डुलिपि एकत्रित कयल गेल छल जाहिमे मिथिला संस्कृत रिसर्च इन्स्टीच्युट दरभंगा आ पटना विश्वविद्यालय विशेष उल्लेखनीय भूमिकाक निर्वाह कयलक। सांसद रूपमे ललितनारायण मिश्र (1922-1975) एवं यमुना प्रसाद मण्डल सहभागी भेल रहिथ। भारत सरकारक संसदीय आ ऑल इण्डिया व्राडकास्टिंगक मंत्री बाबू सत्यनारायण सिंहक अपरिमित सहयोगसँ प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू उक्त प्रदर्शनीक उद्घाटन कयलनि। यद्यपि ओ पन्द्रह मिनट विलम्बसँ पहुँचल रहथि, किन्तु पुस्तक एवं पाण्डुलिपिक अम्बार देखि ओ हतप्रद भ' गेल रहथि, अपन उद्घाटन भाषणमे ओ जे बजलथिन ओ कल्पनाक विपरीते अनुभव भेलनि आयोजक जयकान्त मिश्रकेँ। भीजिटिंग रजिस्टरमे ओ टिप्पणी कयलथिन, *I was happy to inaugurate Maithili Book Exhibition and to*

see the large collection of books and Manuscripts in Maithili. This demonstrated that Maithili has been for long time and is to day a living among the people of that area. The lagnage deserves encouragement. एहि प्रदर्शनीकेँ सफल बनयबाक लेल हास्य-व्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा (1908-1984), मायानन्द मिश्र (1934), रामस्वरूप नटुआक अतिरिक्त अनेको गण्यमान्य राजनैतिक, मैथिली साहित्य प्रेमी उनटि क' प्रदर्शनीकेँ सफल बनयबाक हेतु उपस्थित भेल रहथि। प्रदर्शनीक शानदार सजावट मिथिलाञ्चल पेंटिंगक कारणेँ समग्र कार्यक्रमक झाँकी सिनेमा हॉलमे प्रदर्शित भेल जे मैथिलीक हेतु एक ऐतिहासिक घटना थिक। उक्त प्रदर्शनीक सफलता एहि बातक सबल प्रमाण थिक जे ओ एक सफल आयोजक रहथि तथा मैथिली आन्दोलनकेँ एक डेग आगू बढ़ौलनि।

साहित्य अकादेमी-सामान्यपरिषद

मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी मैथिली आन्दोलनकेँ तीव्र करबा प्रयासक शुभारम्भ हिनक कुशल नेतृत्त्व मे आगाँ ससरल। एही अवधिमे एक ऐतिहासिक घटना भेल। हिनक पिताश्री महामहोपाध्याय डॉक्टर उमेश मिश्र (1895-1967)क नियुक्ति सर कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक कुलपतिक रूपमे भेलनि। ई सुखद संयोग छल जे हुनक कार्यकालमे साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदक विश्वविद्यालयक प्रतिनिधित्त्व करबाक हेतु एक प्रतिनिधिक नाम अनुशंसित करबाक सूचना भेटलनि। मातृभाषनुरागी कुलपतिक अतीव इच्छा छलनि जे एहन व्यक्तिक नाम अनुशंसित कयल जाय जे मैथिलीक मान्यतार्थ एहि भाषा आ साहित्यक पुरातन परम्पराक उपस्थापन सबल तर्क द्वारा प्रस्तुत क' कए ओकर अध्यक्ष पण्डित जवाहरलाल नेहरूकेँ कन्भीन्स क' सकथि अंग्रेजीमे। कुलपति कार्यालय तीन बेर प्रोफेसर जयकान्त मिश्रक नाम प्रस्तावित क' हुनक अनुमोदनार्थ प्रस्तुत कयलक, किन्तु कुलपति बारम्बार बिनु कोनो टिप्पणी कयने फाइल वापस क' देथि। हुनका एहि बातक आशंका छलनि जे जनमानस ई आरोप लगाओत जे अपन पुत्रक नाम अनुशंसित कयलनि। सामाजिक दवाब एवं मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी जयकांत मिश्रक नाम अनुशंसित कयलथिन आ ओ सामान्य परिषद्क सदस्य मनोनीत भ' गेलाह। ओ अपन मातृभाषा मैथिलीक मान्यतार्थ साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदमे आन्दोलन प्रारम्भ कयलनि।

मैथिलीक मान्यता :

मैथिलीक मान्यता साहित्य अकादेमी अबिलम्ब दिय, ताहि हेतु ओ फाँड़बान्हि

क' आन्दोलनक शुभारम्भ कयलनि तनिक बलिदानक इतिहास जनमानससँ नुकायल नहि अछि। सामान्य परिषदक सम्माननीय सदस्य लोकनिक मैथिलीक गौरव गरिमाक ध्यानाकर्षित करबाक आ एकर महत्त्व निरूपित करबाक निमित्त अङरेजीमे दू बुकलेट ओ लिखलनि *A Case for Maithili* आ *What they say about Maithili* तकरा सदस्य लोकनिक बीच वितरित करब प्रारम्भ कयलनि। यद्यपि दिल्लीमे आयोजित पुस्तक प्रदर्शनीमे पण्डित नेहरू एहि बातक संकेत देने रहथि जे एहि पुरातन भाषाकेँ मान्यता भेटबाक चाही, किन्तु मैथिलीक दुर्भाग्य रहल जे अकस्मात हुनक निधन भ' गेलनि। हुनक मृत्यूपरान्त मैथिलीक परम हितौषी प्रख्यात भाषाशास्त्री प्रोफेसर सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय (1890-1977) अकादेमीक अध्यक्ष बनलाह जे एकर गौरव-गरिमा आ पुरातनतासँ नीक जकाँ परिचित रहथि। प्रोफेसर चट्टोपाध्यायक अध्यक्ष बनितहि ई अत्यधिक आशान्वित्त भ' गेलाह जे मैथिलीक मान्यता भेटबामे मात्र वैधानिक प्रक्रिया शेष रहि गेल अछि। अकादेमी एहि लेल एक समिति गठित कयलक जकर सदस्य रहथि भाषाविद् प्रोफेसर डॉ. सुकुमार सेन (1900-1992) प्रोफेसर डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी (1907-1979) आ डॉ. सुभद्र झा (1909-2000)। ई बैसक दिल्लीमे आहूत भेल एकर मान्यतार्थ। समितिक अनुशंसापर साहित्य अकादेमी सन् 1965 ई. मे मैथिली भाषा आ साहित्यकेँ आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे मान्यता प्रदान कयलक। एहि दिशामे प्रोफेसर जयकान्त मिश्रक आन्दोलनात्मक स्वरूप ऐतिहासिक घटनाक रूपमे सतत चिरस्मरणीय रहत मैथिली आन्दोलनक इतिहासमे।

लिपि-संरक्षण :

अन्य स्वतंत्र साहित्यिक आधुनिक भारतीय भाषादिक समान मैथिली भाषाकेँ अपन प्राचीन स्वतन्त्र लिपि छैक जकरा तिरहुता वा मिथिलाक्षर वा मैथिलाक्षर वा मैथिलीलिपि कहल जाइछ। तिरहुता नामसँ ज्ञात होइछ जे ई लिपि तिरहुत देशक थिक। जहिना भाषा आ सभ्यता एवं संस्कृति परस्पर अन्योन्याश्रित अछि तहिना लिपि आ भाषाक सम्बन्ध छैक। अपन लिपिसँ जहिना-जहिना सम्बन्ध विच्छेद होइत जायत तहिना-तहिना भाषाक प्रति ताहि अनुपातमे आकर्षण कम होइत जायत तकर प्रकृष्ट उदाहरण थिक मैथिली। एहि लिपिक जाननिहारक संख्या दिनानुदिन नगण्ण होइत देखि जयकान्त मिश्रकेँ मर्मान्तक पीड़ा होइत छलनि। एहि समस्यापर ओ गम्भीरता पूर्वक विचार कयलनि आ एकर संरक्षणार्थ आन्दोलन चलौलनि। साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृति प्रश्नपर बारम्बार ई समस्या उत्पन्न भेल छल, की एकरा अपन स्वतन्त्र लिपि छैक वा नहि? ओ एहि समस्याक समाधानमे तर्क देलथिन जे एकरा अपन स्वतन्त्र लिपि छैक जकर इतिहास अति प्राचीन छैक।

हुनक मान्यता छलनि जे मैथिलीक स्वतन्त्र लिपिक अस्तित्त्व स्थापित करबामे जे कठिनता लिपिक कारणेँ भेलनि आ वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे भ' रहल से नहि होइत जँ हमरा लोकनि एकरा संरक्षित रखने रहितहुँ तँ ई प्रश्न कथमपि नहि उठैत।

वार्त्तालापक क्रममे ओ हमरा एक बेर कहने रहथि जे पुरातन कालमे समग्र मिथिलाञ्चलमे तिरहुता लिपिक संगहि कैथी लिपिक प्रचलन छलैक। दरभंगा राजक कार्य-कलापमे सेहो तिरहुता लिपिक प्रयोग होइत छलैक, किन्तु ओकरा वहिष्कृत क' कए हिन्दी बहुल देवनागरी लिपिकेँ लादि देल गेलैक जकर भयंकर दुष्परिणाम भेलैक जे शनैः–शनैः जनमानससँ ई विलुप्त होइत चल गेल। एकरे फलस्वरूप मैथिली सदृश प्राचीनतम भाषाकेँ वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे हिन्दीक अंगक रूपमे उद्घोषणा कयलनि जेना वृजभाषा आ अवधीक प्रसंगमे कहल जाइछ। जँ तिरहुता लिपि प्रचलित रहैत आ एकर साहित्य सृजन एही लिपि मे होइत तँ एहन विवादक उद्भावना कथमपि नहि उपस्थित होइत। संस्कृतक हेतु वैकल्पिक रूपमे समस्त भारतमे देवनागरी लिपि व्यवहृत होमय लागल तकर प्रभाव मिथिलाञ्चलपर पड़ल आ मैथिली साहित्यक निर्माता लोकनि तिरहुताक स्थानपर देवनागरी लिपिक प्रयोग करय लगलाह जे मैथिलीक लेल कालदिवसक इतिहास प्रारम्भ भेल।

यद्यपि एहि लिपिक संरक्षणार्थ कतिपय आन्दोलन अवश्य कयल गेल, किन्तु कोनो प्रयास सफल नहि भ' सफल। दरभंगासँ तिरहुता लिपिमे समाचार पत्र बहार करबाक प्रयास कयल गेलेक, मुदा ओहो विफल रहल। मैथिली भाषी जनमानस तिरहुता आ कैथी लिपिमे पढ़ैत-लिखैत छल आ एहिसँ अतिरिक्त कोनो लिपिक प्रयोगक ज्ञान लोक नहि छलैक। यद्यपि एकरा पुनर्जीवित करबाक नेआर-भास पुस्तक भण्डारसँ जीवनाथ राय (1891-1969) बाङला लिपिक आधारपर टाइप अवश्य बनाओल गेल आ ओ *मैथिली प्रथम पुस्तक* क रचना कयलनि, परन्तु ओहो प्रयास सफल नहि भ' पौलक।

जखन मैथिली कोश प्रकाशित करबाक प्रश्न उपस्थित भेलनि तखन ओ विशुद्ध तिरहुता लिपिक टाइप बनबयबाक अथक आन्दोलन कयलनि, कारण हुनक बलबती आकांक्षा छलनि जे तिरहुता लिपिमे कोश प्रकाशित हो। एहि भावनासँ उत्प्रेरित भ' *तिरहुता ककहारा* (1967) नामक एक बुकलेट छपौलनि। दैव दुर्योग एहन भेल जे हुनक ई आन्दोलन सफल नहि भ' पौलनि। हुनक तर्क छलनि जँ हमरा लोकनि एकरा अपनौने रहितहुँ तँ मैथिलीक अस्तित्व, प्राचीन एवं मध्ययुगीन कालजयी साहित्यक रिसर्च अधिक सुकर होइत। वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे एकर पुनरूत्थान करबाक हेतु ओ आन्दोलनोन्मुख रहथि कारण रिसर्च आ सांस्कृतिक कार्यादिमे अलंकरणक रूपमे विशेष उपादेय होयत।

हम व्यक्तिगत रूपेँ जनैत छी जे कतेक बेर विश्वविद्यालय अनुदाय आयोगक

मीटिंगमे किछु गोटे तिरहुता लिपिकेँ वहिष्कृत करबाक सुनियोजित योजना वद्ध भ' आयल रहथि कारण ओ सभ तिरहुता लिपिसँ सर्वथा अनभिज्ञ रहथि। हम उक्त मीटिंगमे सहभागी छलहुँ। ओ अडिग रहला जे एकर पुरातन अस्तित्वकेँ संरक्षित राखब नितान्त प्रयोजनीय थिक। प्रत्येक मैथिली प्रेमी जनमानसक संगहि-संग विशेषत: मैथिली पढ़निहार छात्र आ मैथिली पढ़ौनिहार शिक्षक समुदायकेँ सतत ओ उत्प्रेरित करैत रहथि तिरहुता लिपि सिखबाक। अधिकांश मातृभाषानुरागीकेँ ओ उक्त लिपिमे पत्र लिखथि जनिका एकर ज्ञान छनि। एहन कतिपय पत्र हमरो लग अछि।

प्राथमिक शिक्षा-मातृभाषा :

प्राथमिक शिक्षा आ मातृभाषा दुनूक परस्पराश्रित अछि। शिक्षा मानव जीवनक मेरुदण्ड थिक। शिक्षाक उद्देश्य थिक ज्ञानार्जन। ज्ञानार्जनक हेतु भाषा माध्यम थिक। अतएव कोनो भाषाक सफलता एहि बातपर अवलम्वित अछि जे कोन सीमा धरि ज्ञानार्जन आ अर्जित ज्ञानक अभिव्यक्तिमे सहायक होइछ, जकरा द्वारा व्यक्तित्वक निर्माण होइछ आ आन्तरिक गुणक शक्तिक विकास तथा ओ एक उत्तरदायी नागरिक रूपमे जनमानसक समक्ष प्रस्तुत होइछ। मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा एक सिक्काक दू पहलू थिक। अतएव प्रारम्भिकावस्थामे जीवनमे मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा दुनूक प्राथमिकता अपेक्षित अछि। एहि प्रसंगे भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र (1950-1885)क कथन छनि :

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति की मूल।
विनु निज भाषा ज्ञान कैं, मिटय न हृदयक सूल।

मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक नहि व्यवस्था रहलाक कारणेँ हुनका हृदयमे अपार पीड़ा छलनि। एहि लेल ओ पृथकसँ जन आन्दोलन चलयबाक अभियान अवश्य चलौलनि, किन्तु बिहार सरकारक उदासीनताक कारणेँ हुनक ई स्वप्न साकार नहि भ' पौलनि। हमरा जनैत मिथिलावासी अपन मातृभाषाक महत्त्व नहि बुझबाक ई दुखद परिणाम थिक। जँ जनमानस अपन बाल-गोपालकेँ मातृभाषाक महत्त्वसँ वस्तुत: अवगत करबितथि तँ एहन स्वस्थ वातावरणक निर्माण होइत जे सरकारकेँ बाध्य भ' कए प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे लागू करय पड़ितैक।

जखन डॉ. जगन्नाथ मिश्र बिहारक मुख्यमंत्रीक पदपर सिंहासनारुढ़ भेलाह तखन जयकान्त मिश्र अत्यधिक आशान्वित भेला जे मातृभाषानुरागी मुख्यमंत्री मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक उद्घोषणा अवश्य करता। किन्तु ओकर कोनो फलाफल नहि बहरायल। हुनक अवधारणा छलनि जे जँ प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा

मैथिलीक माध्यमे होइत तँ मिथिलाञ्चलक अधिकांश समस्याक समाधान स्वत: भ' जाइत। मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा नहि भेटबाक कारणेँ नेना-भुटकाकेँ शिक्षाक प्रति अरुचि भ' जाइछ, जकर परिणाम होइछ जे विद्यालयसँ ओकर पलायन भ' जाइछ। इएह प्रमुख कारण थिक जे प्राथमिक स्तरपर मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक कार्यान्वयन हेतु ओ जीवन पर्यन्त आन्दोलनक संघर्ष करैत रहला। मिथिलाञ्चलमे मातृभाषा मैथिलीकेँ प्राथमिक स्तरपर शिक्षा नीति लागू करयबाक हेतु ओ पदयात्रा, बैसार, प्रचार अभियान तँ करबे कयलनि, एतेक धरि जे ओ कानूनी लड़ाइ लड़बामे पाछू नहि रहला।

एहि प्रसंगमे हुनक कथन छलनि जे आन-आन देश उन्नतिक शिखरपर पहुँचल अछि तकर प्रमुख कारण थिक जे ओ अपन मातृभाषाक महत्त्वसँ पूर्ण अवगत अछि। रुस, जापान, इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि देशमे प्राथमिक शिक्षा ओकर मातृभाषाक माध्यमे देल जाइछ जे प्रगतिक पथपर दिनानुदिन अग्रसर भेल जा रहल अछि। ओ एहि विषयसँ मर्माहत रहथि जे मिथिलाञ्चलमे जनजागरणक अभावक कारणेँ अभिभावक वर्ग अपन मातृभाषाक श्री वृद्धि हेतु प्राथमिक शिक्षा लागू करयबाक दिशामे प्रयत्नशील नहि छथि। मैथिली शिक्षक मैथिली पढ़यबाक हेतु सचेष्ट नहि छथि। यावत् मैथिल समाज एहि प्रश्नक यशोचित उत्तर नहि देत, तावत मैथिलीकेँ आगाँ बढ़बाक कोनो आन्दोलन सफल नहि भ' सकैछ।

सन् 1969 ई. मे मिथिला मण्डल मुम्बईक तत्त्वावधानमे आयोजित अखिल भारतीय मैथिली सम्मेलनमे विचारणीय विन्दु छल मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा। उक्त सम्मेलनमे विश्वविद्यालयक प्रतिनिधि रूपमे हम सम्मिलित भेल छलहुँ। ओतय मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक कार्यान्वयनार्थ एक समिति गठित भेलैक जकर सदस्य हम सेहो छलहुँ आ प्रोफेसर जयकान्त मिश्र ओकर अध्यक्ष रहथि। निर्णय निम्नस्थ अछि।

1. शैशवावस्थामे मातृभाषाक माध्यमे शिक्षाक व्यवस्था रहलापर ओकर ज्ञान आ मस्तिष्क विकास सहज, सुगम आ सुव्यवस्थित होइछ। विषय वस्तुक ज्ञान आरम्भिक संस्कार स्थायी होइछ। ओ सुगमता पूर्वक सब वस्तु ग्रहण करैछ जे विषय-वस्तु बुझबामे सहायक होइछ। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे सुगमता पूर्वक ओकर विकासक सम्भावना अछि।

2. प्रजातन्त्रक प्रथम शर्त्त थिक जनमानसकेँ शिक्षित करब, जाहिसँ ओ कोनो कार्य सम्पूर्ण शक्तिक संग सहर्ष करत। ओकर शक्ति विषय-वस्तु बुझबामे सहायक होइछ। जखन कोना समस्या उत्पन्न हैत तँ ओकर समाधान ओ आसानीसँ क' पबैछ। मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा जीवित प्रजातन्त्रक मूल मन्त्र थिक।

3. एहिमे कोनो सन्देह नहि जे प्राथमिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यमे देल जाय, कारण मैथिली एक प्राचीनतम जीवित भाषा थिक तैं एकरा अनिवार्य रूपैं लागू करबाक दिशामे प्रयासक प्रयोजन अछि आ बिहार राज्यक अधिकांश जिलामे ई बाजल जाइत अछि ततय अनिवार्य रूपैं एकरा लागू करबाक हेतु सरकारपर दवाब बनायब आवश्यक अछि।

किन्तु दुर्योगक विषय थिक जे सरकारक उदासीनताक कारणैं ने तैं मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षाक पुस्तक प्रकाशित भेल आ ने तैं ओकर अध्यापनक व्यवस्था अद्यापि भेल अछि जे चिन्तनीय विषय थिक। अतएव सरकारक एहि नीतिक विरोधमे जनमत संग्रह क' कए सशक्त आन्दोलनक प्रेरणा ओ देलनि जे मूक बधिर सरकारकैं जगयबाक प्रयोजन अछि। सुसुप्त सरकारकैं जा धरि जगाओल नहि जायत ता धरि मिथिलाञ्चलमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिलीकैं नहि भेटत। मिथिला आ मैथिलीक सर्वतोभावेन विकास आ विविध समस्यादिक निदान ओकर निराकरण ता धरि सम्भावित नहि अछि जा धरि ओहिसँ लड़बाक शक्तिक लेल आवश्यकता अछि जनमानसक चेतन विचार आ सक्रिय सहयोग। एहि लेल मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षा अपेक्षित अछि। हिनका द्वारा चलाओल गेल एहि आन्दोलनकैं साकार रूप देबाक दिशामे प्रयास अपेक्षित अछि। ई विषय अद्यापि अस्पष्ट अछि जे भारतीय संविधान, साहित्य अकादेमी आ अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था पी.ई.एन. द्वारा एहि भाषा आ साहित्यकैं मान्यता प्राप्त अछि तखन बिहार सरकार प्राथमिक शिक्षाक रूपमे एकरा लागू किएक ने करैत अछि ? एकरा लागू कयलासँ सरकारक प्रतिष्ठामे विकास होयतैक आ जनमत ओकरा पक्षमे अनायासहि आकर्षित भ' जायत।

आन्दोलन-नवआयाम :

जयकान्त मिश्र मैथिली आन्दोलनकैं नव स्वरूप प्रदान करबाक आकांक्षी रहथि, कारण हुनक प्रबल इच्छा छलनि जे आन्दोलन सम्बन्धी कार्यक्रमकैं रूपायित करबाक निमित्त झुण्ड बान्हिक, ढोल बजा क', गाम-गाममे घूमि क' मातृभाषाक की महत्त्व छैक तकरा बुझायब परमावश्यक अछि। एहि लेल मुख्य-मुख्य स्थानपर मीटिंगक आयोजन करब आ मातृभाषाक वास्तविक महत्त्व आ तज्जनित विविध समस्यादिसँ जनमानसक ध्यानार्षित करब। मैथिली भाषापर मात्र ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक वर्चस्वकैं समाप्त करबाक लेल ओ सेहो आन्दोलनक आवश्यकता अछि तकर ओ अनुभव कयलनि। ओ मिथिलाञ्चलक मुसलमानकैं मैथिली आन्दोलनक संग जोड़बाक बलवती इच्छा शक्ति छलनि हुनका। ओ एहन आन्दोलनक आकांक्षी रहथि जे जनमानस वैह यथार्थ रूपैं प्रतिनिधित्त्व क' सकैछ जे ओहि अंचल,

ओहि क्षेत्रक, ओहि समाजक सर्वांगीन विकास आ उन्नतिक हेतु सतत सक्रिय रहथि। किन्तु असीम पीड़ा हुनका एहि बातक छलनि जे मिथिलाञ्चल अपन विकासक लेल आन्दोलनक प्रति सतत उदासीन रहल अछि। मैथिली आन्दोलनमे तीव्रता अनबाक हेतु जा धरि सांसद, विधायक आ ग्राम पंचायतक प्रतिनिधिक सहयोग नहि भेटत ता धरि ई धारदार नहि भ' सकैछ। ओ एहि बातसँ अत्यधिक दु:खी रहथि जे मिथिलाञ्चलसँ निर्वाचित प्रतिनिधि लोकनिमे मातृभाषाक प्रति जनजागरणक अभाव परिलक्षित भेलनि।

जयकान्त मिश्र मैथिली आन्दोलनकेँ नव आयाम प्रदान करबाक प्रयास कयलनि। हुनक धारणा छलनि जे जा धरि एकरा राष्ट्रीय रूप नहि प्रदान कयल जायत ता धरि मैथिली भाषा आ साहित्यक विकासक सम्मावना नहि। जहिना ओड़िया भाषी, असमिया भाषी आ नेपाली भाषीकेँ अपन भाषा आ साहित्यक प्रति अगाध श्रद्धा आ सम्मान छैक जे अपन चिर स्नेही अमार भाषा जननीक नारा बुलन्द करैत अछि तहिना मैथिली भाषीकेँ सेहो अपन भाषा आ साहित्यक प्रति स्नेह आ श्रद्धा उत्पन्न करबाक लेल आन्दोलनक प्रयोजनक ओ अनुभव कयलनि। जाहि-जाहि भाषा आ साहित्यकेँ साहित्य अकादेमी मान्यता देने अछि ओहि सब भाषा-समूहकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे नहि सम्मिलित कयल जायत तकरा लेल एकात्मकता सूत्रमे आबद्ध भ' राष्ट्रीय स्तरपर आन्दोलनक प्रयोजन अछि। एहि आन्दोलनकेँ तीव्रतर रूप देबाक हेतु अनेक गामक ओ पद-यात्रा कयलनि आ जिला-जिलामे जन आन्दोलनक करबाक आह्वान कयलनि। हुनक दृढ़ धारणा छलनि ज मैथिली आन्दोलन तँ पत्र-पत्रिका, पत्रकार, साहित्यकार आ सहृदय मैथिली प्रेमी धरि सीमित अछि तकरा व्यापक परिधिमे अनबाक प्रयोजन अछि।

हुनक धारणा छलनि जे जा धरि एकरा राष्ट्रीय स्वरूप नहि देल जायत ता धरि एहि भाषाक विकास आ कल्याणक सम्भावना हुनका दृष्टिगत नहि होइत छलनि। एहि प्रसंगमे हुनक धारणा छलनि, जहिना पॉल रोक्सन रचित गीतकेँ लूथर किंग नामक निग्रो नेता निग्रो आन्दोलनमे उपयोग कयलनि तहिना हमरा लोकनिकेँ अपन भाषाक संग्राम गीत घोषित करबाक आवश्यकता अछि :

We shall over come, we shall over come
We shall over came some day, O! deep in my heart
I do believe, we shall over come some day
We will have in peace, we will go hand in hand.

हुनक मान्यता छलनि जे जा धरि मिथिलाञ्चल वासी उपर्युक्त काव्यांशसँ नहि अनु प्राणित हैता ता धरि हमर आन्दोलनकारी स्वरूपक यथार्थ परिचय नहि आ उपलब्धि नहि भ' सकैछ।

मैथिली आन्दोलन जकर ओ सूत्रधार रहिथ अनेक दशक धरि ओकरा चलौलनि तकरा ओ टिमटिमाइत दीप मानैत रहथि। मैथिलीक नामपर जतेक आन्दोलन चलाओल जा रहल अछि ओ साधारणत: हमर आन्दोलनकैँ उजागर करैत अछि। छोट-छोट बातकैँ ल' कए आन्दोलन करब तकरा ओ कथमपि आन्दोलनक संज्ञासँ नहि अलंकृत करैत रहथि। मैथिली आन्दोलनकैँ संचालित करबाक लेल ओ विराट शक्तिक ओ अनुभव कयलनि। मैथिली भाषी द्वारा संचालित आन्दोलनकैँ ओ तकरा विकास नहि, प्रत्युत विनाश मानैत रहथि। मैथिली आन्दोलनक असफलताक कारणक उल्लेख करैत हुनक कथन छलनि जे पंजाबी आ उर्दू सदृश हमर भाषाक कोनो धर्मसँ सम्वद्ध नहि अछि। मैथिली बजनिहारक संख्या भारतमे सातम अछि। हमर भाषाकैँ स्वतन्त्र लिपि छैक। एकर अतीत अत्यन्त समुज्जवल अछि। हमर महान सांस्कृतिक परम्परा विश्वकैँ दिशा निर्देश करैत रहल अछि। सांस्कृतिक अस्मिताक रक्षाक लेल आन्दोलन आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे धर्म थिक।

अपन जीवनक परिणत वयमे मिथिलाकैँ स्वतन्त्र राज्यक रूपमे स्थापनार्थ आन्दोलनमे सहभागी भेलाह तथा एहि अभियानकैँ सफल बनयबाक दिशामे संघर्षरत भेलाह। अपन स्वाभिमानक रक्षार्थ ओ आन्दोलनक अग्निकैँ प्रज्वलित कयलनि जे अद्यापि जनमानस संघर्षशील अछि। हुनक आकांक्षा छलनि जे राष्ट्रक अखण्डता आ एकता रहओ, किन्तु अपना घरमे, अपना जिला, अपना प्रान्तमे अपन भाषा आ संस्कृति अक्षुण्ण राखि अग्रसर हैबाक प्रयोजन अछि। लोक भरिपोख, भरिमन जीवित रहि देशक उन्नतिमे सहभागी हैत। कुण्ठित, कलुषित, हीन व्यक्तित्वक विकास कहियो नहि सम्भव अछि।

ओ मातृभाषाकैँ जीवित रखबाक आकांक्षी रहथि, कारण मातृभाषाक मरण जीवनक प्रश्नक हेतु हमरा लोकनिकैँ कोनो सक्रिय डेग उठयबाक प्रयोजन अछि। एहि प्रसंगमे ओ एक महत्त्वपूर्ण बातक बरोबरि चर्चा करैत रहथि जे द्वितीय विश्वयुद्ध चलैत छल। फ्रासकैँ चारूकातसँ जर्मन सेना घेरि नने छल। फ्रेंच अकादमीक पेरिस नगरमे सभा छल। एहि सभामे अधिकाधिक साहित्यकार ओ विद्वान् सम्मिलित भ' नियमानुसार विचार-विमर्श कयलनि। हुनका सभक इएह दावी छलनि जे केहनो विकट आ संकटकालीन स्थितिमे भाषा आ साहित्यक कार्यक परित्याग करब समुचित नहि। ओ एहिसँ प्रेरणा देलनि जे मातृभाषाक माध्यमे प्राथमिक शिक्षाक प्रयोजनीयतापर प्रकाश देलनि। एहि विकट समस्याक समाधानक हेतु ओ विचार विमर्श क' एकर समाधान तकबाक प्रेरणा देलनि। जँ मातृभाषाक रूपमे मैथिली सिखबाक, लिखबाक, पढ़बाक हिस्सक नहि लागत तँ आगाँ कखनो कहियो कोनो स्थितिमे आगाँ नहि बढ़ि सकब। एहि विडम्बनाकैँ हमरा सभकैँ

बुझबाक थिक। अपन मातृभाषाकेँ जीवित रखबाक ओ मूलमन्त्र देलनि। एहि लेल समाजक दृष्टि सम्पन्न आ सामर्थ्यवान लोकक सहभागिता मैथिली आन्दोलनक लेल प्रयोजनीय अछि। जे यथार्थमे जुड़ल चेतनाक संग सामाजिक विकासकेँ दृष्टिमे राखि आन्दोलनक नेतृत्व करथि।

ओ एहि बातकेँ स्वीकार करैत रहथि जे मैथिली आन्दोलनक लेल सशक्त नेतृत्त्वक आवश्यकता, दृढ़ इच्छा शक्ति, एकात्मकता आ समर्पण भावनासँ आन्दोलन कयलेपर अपन अधिकार प्राप्त करबामे कामयाबी भेटि सकैछ। केन्द्र हो वा राज्य सरकार ओ आन्दोलनक भाषा बुझैत अछि। एहि लेल जनजागरणक प्रयोजन अछि, विनु भय होहि न प्रीति। भाषा आ संस्कृतिक विकासक लेल संघर्ष करबाक ओ प्रेरणा देलनि।

उपलब्धि :

मैथिलीक वास्तविक विकासार्थ जयकान्त मिश्र द्वारा चलाओल आन्दोलनक कतिपय नव उपलब्धि थिक। हुनक आन्दोलनकारी स्वरूपक पहिल परिचय भेटैछ जे भारतक प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूकेँ मैथिली भाषा आ साहित्यक गौरवशाली प्राचीन पराम्परासँ अवगत करौलनि तथा एकर विकासक लेल पथ प्रशस्त करबाक निवेदन कयलनि। मैथिली भाषा आ साहित्यक समृद्धशाली परम्परासँ जनमानसक ध्यान आकर्षित करबा लेल सन् 1961ई. आ सन् 1963ई. मे क्रमश: इलाहाबाद आ दिल्लीमे पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन कयलनि। साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषद्क सदस्यक मनोनयनक पश्चात् अपन मातृभाषाक साहित्यिक पुरातन परम्परासँ अन्यान्य भारतीय भाषाभाषीकेँ एकर महत्त्वसँ अवगत करबाक निमित्त संघर्षशील भ' कए आन्दोलन कयलनि जकर परिणाम सकरात्मक रहल आ मैथिलीकेँ मान्यता भेटल साहित्य अकादेमी द्वारा आ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे।

मैथिली आन्दोलन सतत गतिशील तकर परिणाम अछि जे ओ शनै:-शनै: नीचाँसँ ऊपर ससरल अछि। ई आन्दोलनक परिणाम थिक जे भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे अपन स्थान स्वीकृत करौलक। मैथिलीक वास्तविक विकास हेतु अद्यापि आन्दोलन अपेक्षित अछि। आवश्यकता अछि जे हमरा लोकनि आन्दोलनोन्मुख भ' प्रयास करबाक चाही जे राजभाषाक रूपमे एकरा स्वीकृति भटैक। हुनक एहि सकारात्मक आन्दोलनकेँ मूर्त्त रूप प्रदान करबामे मिथिलाञ्चल आ प्रवासी मातृभाषानुरागी संस्थादि अपरिमित सहयोग भेटलनि जकर पुनराख्यानक प्रयोजन नहि।

जयकान्त मिश्र द्वारा चलाओल मैथिली आन्दोलनक जे उपलब्धि प्राप्त कयलक अछि ओ सर्व वर्ग व्यापी भेल अछि आ बहुत अंशमे सफलता प्राप्त कयलक अछि। प्राथमिक शिक्षाक विषयमे मैथिलीकेँ कण्ठ मोकबाक जे सरकार प्रयास कयलक अछि ओहि दिस ओ ध्यानाकर्षित कयलनि। मैथिली आन्दोलनक इतिहास साक्षी अछि जे हमर विविध माङ क्रमश: स्वीकृति भेटैत गेल अछि आ राजनैतिक स्वीकृत भेटि गेलाक पश्चात् ओहिसँ लाभान्वित होयबाक भरिगर दायित्त्व मातृभाषानुरागी लोकनिपर आबि गेल अछि तकर निर्वाह प्रत्येक मैथिल सपूतक पुनीत कर्त्तव्य थिक।

नि:सारण :

मैथिली साहित्यक प्राचीन परम्पराकेँ इतिहास-लेखन द्वारा सुदृढ़ करबाक दिशामे, निखिल विश्वमे एकरा महत्त्व निरूपित करबाक दिशामे, जनजागरणक जे अभियान चलौलनि, एकर मान्यतार्थ सतत संघर्षशील रहला, मातृभाषाक समुचित विकासक लेल दधीचिक समान हड्डी गलौलनि तनिक अक्षय अवदानकेँ अग्रगति आ अक्षुण्ण रखबाक दिशामे प्रत्येक मातृभाषानुरागी जनमानसक पुनीत कर्त्तव्य थिक। ई श्रेय आ प्रेय हिनके छनि जे ओ अपन सत्प्रयाससँ मैथिली साहित्यक समृद्ध आ व्यापक स्वरूप प्रदान कयलनि जे मैथिलीक अस्तित्त्व सुरक्षित रहि सकल। यद्यपि हुनका समक्ष कोनो आदर्श आ मार्ग प्रशस्त कयनिहार नहि छल तथापि मातृभाषाक सम्वर्द्धनार्थ ओ जे काज कयलनि तकर प्रभाव परवर्त्ती पीढ़ीपर पड़ल। एहि दृष्टिसँ ओ आदर्श पुरुष रहथि। ओ मार्ग निर्देशक बनि मातृभाषानुरागक बीजक वपन कयलनि आ ओकर उन्नयनार्थ अति महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलनि। हुनक तप, त्याग, तपस्या, कर्मशीलता, वैचारिक स्तर सतत अटल-अडिग रहनिहार मातृभाषानुरागी जनमानसकेँ चिरन्तन प्रेरणा-पुञ्ज बनल रहला। ओ अपन अद्वितीय वैदुष्य आ मैथिली आन्दोलनक अग्रदूत बनि जे आदर्श छोड़ि गेलाह ओ मातृभाषानुरागी लोकनिक लेल सतत प्रेरणा स्रोत बनल रहता। ओ परवर्त्ती पीढ़ीकेँ अनुसंधानक प्रेरणा देलनि जे अद्यापि मातृभाषाक विकासार्थ अनेक कार्य अवशेष अछि तकरा पूर्ति करबाक संकेत देलनि।

हिनक मातृभाषाक अपरिमित बहुमूल्य साहित्यिक आ आन्दोलनकारी अवदानसँ अतिशय प्रभावित भ' विश्रुत भाषा शास्त्री प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी मैथिली शब्द कोशक प्रथम खण्ड फॉरवार्ड लिखलनि जे डॉ. सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (1850-1941)क पश्चात भारतमे मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ हित चिन्तक रूपमे अजर, अमर आ अक्षुण्ण रहता :

His name will be handed down to posterity in India as the greatest benefactor of Maithili at present day after that of illustrious George Abraham Geierson, and will ean for him gratitude of sixteen millions of Maithili speakers in the first instance and of the scholarly world of India, in the second.

वस्तुत: हिनक ई सौभाग्य रहलनि जे अपन जीवन काल ओ मैथिलीक विकास विस्तारकेँ देखि पौलनि।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे हुनक आलेखादि यत्र-तत्र विविध संग्रहादिमे आ पत्रिकादिमे प्रकाशित अछि जे वर्त्तमानमे धूल-धूसरित भ' रहल अछि तकरा एकत्रित क' कए प्रकाशमे आनब प्रत्येक मैथिली भाषाभाषी मातृभाषानुरागीक पुनीत कर्त्तव्य थिक। इएह एहि युगपुरुषक प्रति वास्तविक श्रद्धाञ्जलि हैत जे हुनक मातृभाषानुरागक लेल व्यक्त विचारादि वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे प्रकाशित क' कए परवर्त्ती भावी पीढ़ीक दिशा-बोध, मार्ग-निर्देशनक पथ-प्रशस्त करयबामे सक्षम भ' पाओत अन्यथा ओ अक्षय कृति कालक प्रवाहमे गिरिगह्वरमे विलीन भ' जायत।

* * *

संस्मरण साहित्य

विगत अनेक शताब्दीसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक सुदीर्घ एवं समृद्धशाली साहित्यिक परम्परा अविछिन्न-अक्षुण्ण रूपेँ चलि आबि रहल अछि; किन्तु बीसम शताब्दीकेँ जँ एकर साहित्यिक विकास-यात्राकेँ स्वर्णयुगक संज्ञासँ अभिहित कयल जाय तँ एहिमे एक नव मोड़ आयल जे पत्र-पत्रिकाक उदय भेलैक तथा ओकर प्रकाशनक शुभारम्भ भेलैक जकर फलस्वरूप गद्यक विकासमे एक नव गति आयल। गद्यक विभिन्न रूप-विधानक प्रादुर्भाव पत्र-पत्रिकाक प्रकाशनसँ शुभारम्भ भेलैक। विगत शताब्दी प्रधानत: गद्य रूपमे ख्याति अर्जित कयलक आ ओकर प्रयोगक विविध रूप-विधानक रूपमे पाठकक समक्ष प्रस्तुत भेल। संघर्षमय युगक जीवनमे गद्यक मर्यादा एहि रुपेँ रूपायित क' देलक जे ओ अभिव्यक्तिक असाधारण साधन बनि गेल। आधुनिक मैथिली गद्य गंगाकेँ सम्पोषित करबाक उद्देश्यसँ साहित्य-पुरोधा लोकनिक सत्प्रयाससँ ओकर परिष्कार आ परिमार्जन भेलैक। गत शताब्दीमे आत्म-कथा, आलोचना, उपन्यास, कथा, गल्प, जीवनी, डायरी, निबन्ध, संस्मरण, साक्षात्कार आदि अनेक साहित्यिक विधाक जन्म देलक आ साहित्यमे एक नव-स्पन्दन भरबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक।

ई श्रेय वस्तुत: पत्रिकादिकेँ छैक जे आधुनिक गद्यक आविर्भाव एवं विकास-यात्राकेँ गतिशील करबामे तथा साहित्यक श्रीवृद्धिक सहयोगमे अपेक्षित घ्यान देलक) एहि निमित्त साहित्य-सृजननिहार लोकनि नव-नव प्रवृत्तिक रचनाक दायित्वक भार वहन कयलनि आ सम्पादक लोकनि ओकरा यत्न पुरस्सर प्रकाशित कयलनि जकर फलस्वरूप मैथिली गद्यक प्रवर्द्धन भेलैक आ ओकरा विविध रूप-विधानमे विन्यस्त कयल जाय लागल। पत्रिकादिक माघ्यमे सेहो नव-नव रचनाकारकेँ प्रोत्साहन भेटलनि तथा हुनका सभक घ्यान ओहि विधा दिस आकर्षित भेलनि जकर एहि साहित्यान्तर्गत सर्वथा अभाव छलैक। एहिसँ अतिरिक्त विगत शताब्दीमे साहित्यक विकास यात्रामे अनेक उल्लेख योग्य काज भेल जकर ऐतिहासिक महत्व छैक। रचनाकारक भाव-प्रवणता, हार्दिकता, कल्पनाशीलता एवं स्वच्छनंद प्रवृत्तिक परिणाम स्वरूप मैथिली गद्य अपनाकेँ नव पल्लवसँ पल्लवित कयलक। विगत शताब्दीमे एकर सर्वतोमुखी विकास भेलैक जाहि आधारपर एकरा गद्ययुग कहबा समीचीन होयत, कारण मैथिली गद्य-गंगा शत-शत धारामे प्रवाहित होइत एकर साहित्य सागरकेँ भरलक आ पूर्ण कयलक।

उपर्युक्त पृष्ठभूमिक परिप्रेक्ष्यमे विगत शताब्दीमे एक अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न तप: सपूत रचनाकारक प्रादुर्भाव भेल आ अप्रतिम प्रतिभाक बलपर साहित्यक अनेक विधाकेँ संस्करित कयलनि आ ओकरा मिथिलाञ्चलक अभिज्ञान द' कए भारतीय साहित्यक समकक्ष स्थापित कयलनि जे रचनाक प्रत्येक क्षेत्रमे, सर्जनाक यावतो प्रस्थानमे ओ अपन कृतिमे ने केवल परवर्त्ती पीढ़ीक हेतु; प्रत्युत समकालीन रचनाकार लोकनिक हेतु सेहो शिखर पुरुष आ प्रेरक स्तम्भ बनि गेलाह ओ रहथि डा. व्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म (1918-1986)। हुनक प्रकाशित साहित्य वैविध्य-पूर्ण अछि, कारण साहित्यिक अभिव्यक्तिक कोनो विधा नहि बाँचल रहल जकर सहज प्रयोगमे ओ उल्लेख्य योग्य सफलता नहि प्राप्त कयलनि। हुनका द्वारा रचित साहित्यक प्रचूरता आ विचित्रता अछि, किन्तु ओहिमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्य थिक जे एहि परिमाण-प्राचूर्य्यमे हुनक अधिकांश साहित्यिक कृति अत्यंत उच्च कोटिक थिक। जाहिना हिनक रचनाक विशदता पाठककेँ चकित आ विस्मित क' रहल अछि तहिना हुनक व्यक्तिक आध्यात्मिक रहस्मयता सेहो अधिक जोड़ पकड़लक। हुनक आभ्यन्तरिक शक्ति हुनका निरन्तर चिर-नूतन रचनाक हेतु उत्प्रेरित करैत रहलनि तथा विश्राम करबाक लेल पलखति नहि देलकनि। ओ जीवनक विविध पथक पथिक रहथि तथा विषाद आ करुणाक बीच सौन्दर्यक अंवेषण करब हुनक लक्ष्य छलनि। हुनक मन आ मस्तिष्कक क्षितिज जागृत छलनि। ओ जीवन आ प्रकृतिक पक्षधर रहिथ। ओ एक दूरदर्शी साहित्य-मनीषी रहथि जे मैथिलीमे जाहि विधाक अभाव हुनका परिलक्षित भेलनि तकर पूत्यर्थ मनसा-वाचा-कर्मणा ओहिमे लागि गेलाह। हिनका द्वारा प्रयुक्त विधाहि साहित्यिक विधे नहि रहल, प्रत्युत आकर्षक विधाक रूपमे ख्याति अर्जित कयलक।

चिर नूतनताक अन्वेषी मणिपद्म मैथिली साहित्यमे संस्मरण साहित्यान्तर्गत चारि नव-विधाक प्रवर्त्तन कयलनि जकर सम्बन्ध अतीतसँ अछि, यद्यपि संस्मरणक संसार विषयक दृष्टिएँ व्यापक नहि, तथापि संवेदनाक गाम्भीर्य आ आत्मीय-स्पर्शक दृष्टिएँ अत्यंत श्रेष्ठ कोटिक साहित्य-विधाक अन्तर्गत अबैछ। भारतीय भाषा आ साहित्यमे एहि विधाक जन्म पाश्चात्य साहित्यिक संग सम्पर्क फलस्वरूप प्रारम्भ भेल जे अधुनातन सन्दर्भमे एक चर्चित विधाक रूपमे प्रचलित भेल अछि। एहि विधामे ओ विपुल परिमाणमे साहित्य-सृजन कयलनि किन्तु अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति अछि जे मैथिलीक तथाकथित इतिहासकार लोकनिक ध्यान एहि दिस नहि गेलनि आ ओकर चर्चा पर्यन्त नहि कयलनि। भारतीय साहित्य निर्माता सिरीजक अन्तर्गत साहित्य अकादेमीसँ हिनकापर मणिपद्म (1996) नामे एक मोनोग्राफ प्रकाशित भेल अछि जे अत्यंत उपहासात्मक अछि। ओकर लेखक एहि सीरिजक रचनाकेँ बिनु पढ़नहि उपेन्द्र महारथीक संस्मरणकेँ रामलोचनशरणक नामोल्लेख

कयलनि अछि। इएह तँ मैथिलीक मोनोग्राफ लेखकक स्थिति अछि।

भारतीय स्वतंत्रता-संग्रामक इतिहासमे सन् उन्नीस सय बियालिसक अगस्त क्रान्तिक ऐतिहासिक दृष्टिएँ अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान अछि। एहि महाक्रान्तिमे बूढ़-बूढ़ानुस नेतासँ ल' कए जुआन-जहानक रक्त बेसी गर्म छलैक आ अंग्रेजी शासन-व्यवस्थाक विरूद्ध ओकारा सभक स्वर अधिक मुखर भेल छलैक। उत्तर बिहार आ मिथिलाञ्चलक नवयुवक लोकनि एहि महायज्ञमे अपन प्राणक आहूति देलनि आ रक्तसँ तर्पण कयलनि। मणिपद्म स्वयं सजग, सचेष्ट आ निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी रहथि। एहि परिप्रेक्ष्यमे ओ मैथिली-संस्मरण प्रथमे-प्रथम डायरी शैलीक प्रवर्त्तन कयलनि अवश्य, किन्तु एकरा अतंर्गत ओ प्रचुर परिमाणमे रचना नहि क' पौलनि वा कयनहु होयताह तँ ओ ने तँ प्रकाशित अछि आ आब अनुपलब्ध अछि। जँ कदाचित एहि विधामे प्रचुर परिमाणमे डायरी लिखने रहितथि तँ ओ निश्चये मैथिली साहित्यक अभूतपूर्व कृति होइत। एहि सिरीजक अन्तर्गत हुनक *बियालसीक फरारी सात दिन* (मिथिला मिहिर, 5 दिसम्बर 1953) एवं *फरारीक पाँच दिन* (मिथिला मिहिर 31 दिसम्बर 1961) प्रकाशित अछि जाहिसँ स्वतंत्रता आंदोलनक क्रममे ओ डायरी लिखलनि तकर दारूण पीड़ादायक वर्णन कयलनि। एहिमे रचनाकार सद्य: स्फुटन भाव वा विचारकेँ अभिव्यक्ति देलनि वा अपन अनुभवक रेखाकंन वा विगत अनुभवक पुनर्मूल्यांकन कयलनि। एहिमे बियालसीक महाक्रान्तिमे फरारीक स्थितिमे जाहि परिस्थितिक चित्रण कयलनि जे नेपाल तराइक जन जीवनपर प्रकाश देलनि।

अपन दीर्घ सार्वजनिक जीवनमे ओ देशक राजनैतिक, साहित्यिक, सामाजिक आ सरकारी तंत्रमे कार्यरत व्यक्तिक सम्पर्कमे अयलाह, ओहि स्मृति कणकेँ जोड़ि क' हुनकासँ भेट भेल छल सन् 1953 ई. सँ लिखब प्रारम्भ् कयलनि जकर समापन 1986 ई. धरि अनवरत चलैत रहलनि जकरा एहि सिरीजक अन्तर्गत अभिव्यक्ति देलनि। हिनक उपर्युक्त संस्मरण मात्र लेखकीय मनीषापर नहि आधृत अछि, प्रत्युत प्रकृति-प्रेम, ईश्वर प्रेम, स्वजाति प्रेम, महतक प्रति श्रद्धा, विनोद प्रियता आदिक समस्त वैशिष्ट्यक झलक एहिमे भेटैछ। ओ अपन दीर्घ साहित्यिक जीवनान्तर्गत जाहि-जाहि मातृभाषानुरागी आ साहित्यानुरागी साधक लोकनिक सम्पर्कमे अयलाह ओकरा संगहि अन्यान्य भाषानुरागी विद्वत् वर्गसँ अभिभूत भेलाह, जाहि रूपेँ हृदयंगम कयलनि, जाहि रूपेँ प्रभावित भेलाह, तनिके ओ श्रृंखलाक कड़ीक आधार बनौलनि। हिनक संस्मरणात्मक आलेख यद्यपि विवरणात्मक अछि तथपि ओ सत्य घटनापर आधृत अछि संगहि वर्णित व्यक्तिक मातृभाषानुराग आ साहित्यिक आन्दोलन परिचायक सेहो अछि। एहि सिरीजक अन्तर्गत प्रकाशित संस्मरण जीवनक एक पक्षकेँ उद्घाटित करैत अछि जे व्यक्ति अपन क्रियाकलापसँ

आकर्षित कयलथिन तनिकेपर ओ लिखलनि। एकरा अन्तर्गत वर्णित व्यक्तिक व्यक्तित्व ओही वैशिष्ट्य तथा स्थितिकेँ जनमानसक समक्ष प्रस्तुत कयलनि जाहिसँ हिनक संस्मरण वास्तविक घटित घटनाक सन्निकट आ सम्भव भ' सकल। ओ स्पष्ट रूपेँ अपन यथार्थ प्रतिक्रिया वर्णित व्यक्तिपर व्यक्त कयलनि जकर वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे ऐतिहासिक महत्व भ' गेल अछि।

एहि श्रृंखलाक अन्तर्गत मैथिला भाषा आ साहित्यक निम्नस्थ व्यक्तित्वक संग हुनका साक्षात्कार भेलनि तथा अमिट छाप छोड़लथिन यथा सीताराम झा (1891-1975) (मिथिला मिहिर, 12 दिसम्बर 1953), वैद्यनाथ मिश्र *यात्री* (1911-1998) (मिथिला मिहिर, 26 दिसम्बर 1953), काञ्चीनाथ झा *किरण* (1906-1989) (मिथिला मिहिर, 23 जनवरी 1954), चन्द्रनाथ मिश्र *अमर* (1925) (मिथिला मिहिर, 30 जनवरी 1954), हरिमोहन झा (1908-1984), (मिथिला मिहिर, 13 मार्च 1954), कुलानन्द नन्दन (1908-1980) (मिथिला मिहिर, 27 मार्च 1954), सुधांशु शेखर चौधरी (1920-1990) (मिथिला मिहिर, 30 अपैल 1954), सोमदेव (1934) (10 अप्रैल 1954), सुरेन्द्र झा *सुमन* (1910-2002) (मिथिला मिहिर, 17 अप्रैल 1954), नरेन्द्रनाथ दास (1904-1993) (मिथिला मिहिर 1 मई 1954), मायानन्द मिश्र (1934) (मिथिला मिहिर, 8 मई 1951), भोलालाल दास (1894-1977) (मिथिला मिहिर, 15 मई 1954), लक्ष्मण झा (1916-2002) (मिथिला मिहिर, 22 मई 1954), गिरीन्द्रमोहन मिश्र (1890-1983) (मिथिला मिहिर, 14 अगस्त 1954), जगदीश्वरी प्रसाद ओझा (?) (मिथिला मिहिर, 28 अगस्त, 1954) उमेश मिश्र (1895-1967) मिथिला मिहिर, 4 सितम्बर, 1954) अमरनाथ झा (1897-1955) (मिथिला मिहिर, 11 सितम्बर, 1954), सोमनसदाइ (?) (मिथिला मिहिर, 25 सितम्बर, 1954), नइँ बिसरब (मिथिला दर्शन, जनवरी 1954), नंग्टू साँढ़ (मिथिला दर्शन, अगस्त 1960), कमला, यमुना आ गंगा (मिथिला दर्शन, जुलाई 1961), तीन गोट संस्मरण (वैदेही, जुलाई-अगस्त 1961), सामा चकेबा (वैदेही, सितम्बर 1961), गोदपाड़िनी नट्टिन (मिथिला मिहिर, 21 अप्रैल 1963), थानेदार (मिथिला मिहिर, 17 नवम्बर, 1963), राजकमल चौधरी (1929-1967) (मिथिला मिहिर, 30 जुलाई 1967), मिहिरोदय (मिथिला मिहिर, 1 मार्च 1970), रामकृष्ण झा *किसुन* (1923-1970), (मिथिला मिहिर, 2 अगस्त 1970), रमानाथ झा (1906-1971) (मिथिला मिहिर, 16 जनवरी, 1972), हजारीप्रसाद द्विवेदी (1907-1979) (मिथिला मिहिर, 27 मार्च 1973), बदरीनाथ झा (1893-1974) (मिथिला मिहिर, 30 सितम्बर 1973), ललितानारायण मिश्र (1922-1975) (मिथिला मिहिर, 19 जनवरी 1975), बलदेव मिश्र (1880-1979) (मिथिला मिहिर, 3 फरवरी 1975), विशालकाय महिला (?) (मिथिला मिहिर 2 नवम्बर 1975) राजाबहादुर विश्वेश्वर सिंह (1908-1976)

(मिथिला मिहिर, 25 अप्रैल 1976), पिताश्री चल गेलाह (मिथिला मिहिर, 3 अक्तूबर, 1976), राजेश्वर झा (1922-1977) (मिथिला मिहिर 15 मई 1977), सुनीतिकुमार चटर्जी (मिथिला मिहिर 3 जुलाई, 1977), लक्ष्मीपति सिंह (1907-1979) (मिथिला मिहिर, 25 मार्च 1979), जयप्रकाश नारायण (1902-1979) (मिथिला मिहिर 14 अक्तूबर 1979) उपेन्द्र ठाकुर मोहन (1916-1980) (मिथिला मिहिर, 8 जून, 1980), चिरवत्सले (मिथिला मिहिर, 7 दिसम्बर 1980), उपेन्द्र महारथी (मृत्यु 1981) (मिथिला मिहिर, 1 मार्च, 1981), योगेन्द्र मल्लिक (?), (कर्णामृत, सितम्बर 1981), धर्मलाल सिंह (?) (मिथिला मिहिर, 29 नवम्बर 1981) सुभद्रा झा (1911-1982) (मिथिला मिहिर, 24 अक्तूबर 1982), राधाकृष्ण चौधरी (1924-1984) इत्यादि। कविवर सीताराम झा, बाबू भोलालाल दास एवं राधाकृष्ण चौधरी पर दुइ संस्मरण उपलब्ध होइछ जे एक तँ जीवितावस्था थिक आ दोसर मृत्यूपरान्त जे क्रमश: मिथिला मिहिर, 20 जुलाई 1975, मिथिला मिहिर, 19 जून 1977 एवं कर्णामृत, जनवरी-मार्च 1986 मे प्रकाशित भेल। उपर्युक्त संस्मणान्तर्गत ओ हुनक जीवन वृत्तक इतिहासे नहि, प्रस्तुत कयलनि, प्रत्युत हुनक साहित्यिक अभिरुचि एवं अवदानक संगहि-संग संगठनात्मक प्रवृत्तिक लेखा-जोखा प्रस्तुत कयलनि अछि जे मातृभाषाक विकासमे उल्लेख्य योग्य अवदानक कारणेँ चर्चित अछि।

हुनकासँ भेट भेल छलक परिधि मात्र मैथिली साहित्य मनीषी लोकनि धरि सीमित नहि रहल, प्रत्युत ओकर फलक विस्तृत छल तकर प्रारूप भेटछै जे विश्वक प्रख्यात भाषा शास्त्री विद्वत् वरेण्य सुनीतिकुमार चटर्जी, हिन्दीक प्रख्यात मनीषी आचार्य हजारी प्रसाद् द्विवेदी, महान राजनेता जयप्रकाश नारायण, मिथिलाक प्रख्यात चित्रकार उपेन्द्र महारथी, मिथिलाक यशस्वी राजनेता ललितनारायण मिश्र एवं महान् लक्ष्मीवान राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह इत्यादि व्यक्तिक प्रसंगमे अपन निजी धारणाकेँ रूपायित कयलनि।

एहिसँ अतिरिक्त अपन पूज्य पिताश्री आ पूज्या माताश्रीपर सेहो संस्मरणक रचना कयलनि। एहि सिरीजक अन्तर्गत समाजक उपेक्षित आ तिरस्कृत वर्गक प्रति हुनकर हृदयमे असीम श्रद्धा, अगाध प्रेम आ अपार सहानुभूति छलनि तकर यथार्थताक प्रति रूप भेटैछ सोमनसदाय, गोदपाड़िनी नट्टिन एवं नंग्टू साँढ़मे जाहिमे ओकर वास्तविक पृष्ठभूमिक रेखाकंन कयलनि। सरकारी तन्त्रक परिवेशमे भ्रष्टाचारी थानेदारक संग कोन स्थितिमे साक्षात्कार भेलनि तकर यथार्थ क्रिया-कलाप दिस हुनक घ्यान केन्द्रित भेलनि तकरो एहि सिरीजमे समाहित कयलनि। व्यवसायसँ ओ होमियोपैथ रहथि। ओ एक विशालकाय पहाड़ी रोगिणीक प्रसंगमे सेहो लिखलनि जे हुनकासँ इलाज कराबय आयल छलीह।

हुनकासँ भेट भेल छलक अन्तर्गत ओ स्मृतिकण आ साहित्यिक रिक्तताक

जीवन परिचय, विचार-धारा, साहित्यिक प्रवृत्ति आ सामाजिक गतिविधिक परिचय प्रस्तुत कयलनि। एहि संस्मरणात्मक निबन्धमे ओ ने केवल प्राचीन परिपाटीक परित्याग कयलनि, प्रत्युत नवजीवन दृष्टि आ नव पद्धतिक श्रीगणेश कयलनि। एहन अनुभूति परक कृति सभमे ओ अपन अतीतक ओहि प्रसंगक उद्भावना कयलनि जे हुनक साहित्यिक व्यक्तित्वक नियामक सिद्ध भेल। एहि सिरीजमे जतबे संस्मरण उपलब्ध अछि ततबे ओ तद्युगीन साहित्यिक गतिविधिक दस्तावेज थिक जे मैथिली साहित्येतिहासमे अहं भूमिकाक निर्वाह करैछ। भावनात्मक आ वैयक्तिकताक संगहि-संग वैचारिकताक अद्भूत समन्वय एहिमे भेल अछि।

सैद्धान्तिक दृष्टिएँ, हुनक संस्मरण-साहित्य साहित्यिक संस्मरणक विशिष्ट गुणसँ अलंकृत आ महत्वपूर्ण अछि। एहिमे कथात्मकताक दृष्टिएँ कथा, वैचारिकताक दृष्टिएँ निबन्ध आ भावनात्मकताक दृष्टिएँ कविता, एहि तीनू विधाक त्रिवेणीक अभूत पूर्व संगम भेल अछि। हिनक संस्मरणमे अनुभूति, वर्णन, विवरण, विचार, भाव, यथार्थ आ कल्पनाक अद्भूत समन्वय भेल अछि। हिनक संस्मरणात्मक निबंधक मूलाधार थिक भावना जे काव्यात्मकताक गुणसँ अंलकृत अछि।

एहि सिरीजक संस्मरणक अनुशीलनसँ अवबोध होइछ जे हिनका भारतीय साहित्यक संगहि-संग पाश्चात्य साहित्यक सेहो गहन अध्ययन छलनि। एहि वास्तविकताक परिचय हुनक उपर्युक्त संस्मरणान्तर्गत डेग-डेगपर उपलब्ध होइछ। ओ अपन एहि रचनान्तर्गत एहन वातावरणक निर्माण कयलनि जाहिसँ पाश्चात्य साहित्य चिन्तक लोकनिक विश्व प्रसिद्ध रचना सभक सेहो विवरण प्रस्तुत करबामे कनियो कुंठित नहि भेलाह जे ओहि अवसरक हेतु उपयुक्त छल। एहिमे गांधीवादक संगहि-संग मार्क्सवादक छौंक स्थल-स्थलपर भेटैछ।

हुनकासँ भेट भेल छलमे तीव्र मानवीय संवेदना, व्यापक सहानुभूति, सजल करुणा, ममता आ आत्मीयता अछि जे अन्यत्र दुर्लभ अछि। एहिमे नोर आ तीव्र आवेगक गम्भीर चित्र तथा सामाजिक, राजनीतिक विचार-धाराक स्पष्ट छाप फराकहिसँ चिन्हल जा सकैछ। एहिमे साहित्यकार, शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ, मातृभाषानुरागी, उन्नायक, समाजसेवी, कलाकार आ विद्वत वर्गसँ सम्बन्धित व्यक्तिक संग साक्षात्कार अछि जे वर्त्तमान परिवेशमे अतिशय ज्ञानवर्द्धक आ ऐतिहासिक पृष्ठभूमिक निर्माण करैछ।

मणिपद्म एक पैघ यायावर रहथि। साहित्यिक यायावरकँ एक अद्भूत आकर्षण अपना दिस आकर्षित करैछ, ओ मन्त्र मुग्ध भ' कए ओहि दिस आकर्षित भ' जाइछ। एहन साहित्य सर्जनमे ओ संवेदनशील भ' कए निरपेक्ष रहथि। यायावरीक क्रममे हुनका रस्तामे पड़निहार मन्दिर, मस्जिद, मीनार, विजय स्तम्भ, खण्डहर,

स्मारक, किला, कब्रिस्तान आ प्राचीन महलक संस्कृति, कला आ इतिहासकेँ एकत्रित क' कए अपन यात्राक पृष्ठभूमि तैयार कयलनि। हिनक उपलब्ध यात्रा-साहित्य संस्मणात्मक थिक जाहिमे ओ एक सामान्य यात्री जकाँ अपन प्रभाव, प्रतिक्रिया आ संवेदनाकेँ महत्व देलनि। एहि सभकेँ ओ ओहिठाम गेल छलहुँ नामे यात्रा वृतान्त प्रस्तुत कयलनि जकरा अन्तर्गत कोरहाँस गढ़क साँझ (मिथिला-मिहिर, 2 अप्रैल 1962), ई आषाढ़क प्रथम दिन (मिथिला मिहिर, 16 जून, 1963) पुण्यभूमि सरिसवपाही (मिथिला मिहिर, 14 मार्च, 1968), कुलदेवी विश्वेश्वरी (मिथिला मिहिर, 11 अगस्त, 1968), त्रिशूलातट प्रवास (मिथिला मिहिर, 12 जनवरी, 1969), एकटा पावन प्रतिष्ठान (मिथिला मिहिर, 10 अक्तूबर, 1971), प्रसंग एकटा स्मारकक (मिथिला मिहिर, 10 अप्रैल, 1975), महिषीक साधना केन्द्र (मिथिला मिहिर, 29 जून, 1975) एवं विसफीसँ वनगाम धरि (मिथिला मिहिर, 25 दिसम्बर 1983) आदि उल्लेखनीय अछि।

ओहिठाम गेल छलहुँमे ओ साहित्यक समग्र जीवनक अभिव्यक्ति रूपमे ग्रहण कयलनि। हिनका लेल प्रकृति सजीव अछि, यात्रामे जे पात्र भेटलथिन ओ हुनक आत्मीय आ स्वजन बनि गेलथिन। हिनक यात्रा साहित्य महाकाव्य आ उपन्यासक विराटत्व, कलाक आकर्षण, गीतिकाव्यक मोहक भावशीलता, संस्मरणक आत्मीयता, निबन्धक मुक्ति सभ किछु आनायासहि एहि मे भेटि जाइत अछि। ओ जे देखलनि, अनुभव कयलनि तकर यथार्थ चित्र एहिमे प्रस्तुत कयलनि।

एकर सर्वोपरि वैशिष्ट थिक-औत्सुक्य जे पाठक एकबेर पढ़ब प्रारम्भ करैछ तँ ओकर समाप्ति जा धरि नहि भ' जाइछ ता धरि हुनका चैन नहि होइत छनि। हुनका भूगोलक विशद ज्ञान छलनि तँ कोनो स्थानक भौगोलिक वर्णन करबामे ओ निपुणता देखौलनि जकर यथार्थ परिचय एहिमे उपलब्ध करौलनि। एहि श्रृंखलान्तर्गत जे रचनादि उपलब्ध अछि ओकर चिन्तन-मननसँ स्पष्ट प्रतिभाषित होइत अछि जे वर्णित विषयक फिल्माकंन क' कए पाठकक समक्ष प्रस्तुत कयलनि जे पाठकक समक्ष वर्णित विषय-वस्तुक समग्र चित्र सोझाँ आबि जाइछ।

हिनक यात्रा-वृतान्त शैलीपर औपन्यासिक शैलीक प्रभाव परिलक्षित होइत अछि जे ओहिमे स्थान विशेषक विस्तृत-चित्रण कयलनि जहिना ओ देखलनि तहिना तकर यथार्थ चित्रण पाठकक समक्ष प्रस्तुत कयलनि। पाठककेँ सहसा बोध होमय लगैत छनि जेना ओहो ओहि यात्राक सहयात्री होथि। हिनक वर्णन-कौशल चित्रात्मक होइत छलनि। एहन चित्रात्मक वर्णन निश्चये अप्रतिम प्रतिभाक परिचायक थिक जे सामान्य रचनाकार द्वारा सम्भव नहि। ओ जाहि वस्तुक वर्णन कयलनि तकर रनिंग कमेन्ट्री ओहिना प्रस्तुत कयलनि जेना आइ काल्हि क्रिकेट खेलक मैदानसँ रेडियो वा टेलिभीजनपर देल जाइछ।

यात्रा-विवरणमे रोचकता अपरिहार्य गुण मानल जाइछ, तकर सम्यक निर्वाह हिनक ओहिठाम गेल छलहुँमे भेल अछि। ओ अत्यन्त भावुक हृदयक व्यक्ति रहथि तैँ बिनु कोनो राग-द्वेषक ओकर यथार्थ वर्णन कयलनि। अपनाकेँ सत्य आ ज्ञानक भण्डार नहि बुझि क' तथा पाठककेँ शिक्षित करबाक मनसा हुनकर कदापि नहि छलनि, जेना ओ पञ्चभूतसँ भिन्न-भिन्न चरितक सहायतासँ, भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण उपस्थित कयलनि जाहि प्रकारेँ ओहिठाम गेल छलहुँमे जेना ओ अपनहि संग तर्क करैत यात्राक समापन कयलनि। एहि श्रृंखलान्तर्गतक रचनामे ओ जे किछु मैथिली पाठककेँ द' पौलनि. ओ सभ हुनक आत्म परीक्षणक स्वगत कथन थिक।

मैथिलीक प्राचीन पत्रिकादिक अनुशीलनसँ ज्ञात होइछ जे हुनकर प्रबल इच्छा शक्ति छलनि जे ओ अपन व्यक्तिगत एवं साहित्यिक जीवनक आधारपर आत्मकथाक एक विस्तृत पुस्तकक रचना करथि तकर प्रतिमान उपलब्ध होइछ सांस्कृतिक समिति मधेपुर, मधुबनी द्वारा प्रकाशित स्मृति नामक स्मारिका तथा मैथिली प्रकाशमे प्रकाशित *बाटे-घाटे* (1983) एवं *अनजान क्षितिज* (1983) मे। बाटे-घाटे पहिने प्रकाशित भेल स्मृतिमे जे पश्चात् जा क' मैथिली प्रकाशमे पुन: प्रकाशित भेल। एहि दुनू आलेखसँ ई विषय स्पष्ट होइछ। वस्तुत: ओ आत्मकथा लिखलनि वा नहि से अनुसन्धेय अछि।

मणिपद्यकेँ भाषापर जबरदस्त अधिकार छलनि। हुनक भाषाक चमक कहियो फिक्का नहि पड़लनि। अपन विलक्षण भाषाक कारणेँ ओ मैथिलीमे अनुपम उदाहरण रहथि। मैथिलीमे ओ अपन भाषा आ वर्णन-कौशल कारणेँ प्रख्यात रहथि। चाहे ओ प्रकृतिक दृश्य हो वा महानगरक कोलाहल पूर्ण वातावरण हो, ओ ओकर अत्यंत मनोहारी वर्णन अपन भाषाक बलपर कयलनि। हुनक डायरी, हुनकासँ भेट भेल छल, ओहिठाम गेल छलहुँ एवं आत्मकथा सभक भाषा-शैली अलंकृत अछि जाहिमे कतहुँ अस्वाभाविकताक आभास नहि भेटैछ। विम्ब-धार्मियता हुनक भाषाक सर्वाधिक वैशिष्ट्य थिक। एहन भाषामे संगीतात्मकताक लय आ धारा-प्रवाह अछि।

भाषाक धनी मणिपद्य अपन विचार-वल्लरीक प्रत्याख्यानमे शब्दक एहन अनुपम विन्यास कयलनि जे हुनक भाषामे छन्द रूप आ सुस्वादता अछि जे पाठकक संग हुनक व्यवहार, सौजन्य, आसक्ति आ हास्य-व्यंग्यक बोध होइछ आ जगक संग ओकर व्यवहारमे राग ओ दूरदर्शी काल्पनिकताक पुट भेटैछ। ओ तथ्यपूर्ण भाषाक प्रयोग कयलनि। उपर्युक्त रचनादिमे भाषा-काव्यमयी अछि जे स्थल-स्थलपर ओ अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा आ रूपकक झड़ी लगा देलनि जे हिनक एहि साहित्यक अनुपम उपलब्धि थिक।

हिनक भाषा मिथिलाञ्चलक लोक माटिक भाषा थिक। हिनक भाषापर हिनक व्यक्तित्वक एतेक गम्भीर छाप छलनि जे सुगमतापूर्वक चिन्हल जा सकैछ। हिनक भाषामे एहन अद्भूत शक्ति सम्पन्न आ वैभव पूर्ण अछि जाहि कारणेँ हिनक रचना सभकेँ बारम्बार पढ़बाक उत्सुकता पाठकक मनमे सतत जागृत होइत रहैछ चाहे उपन्यास हो, कथा हो, नाटकक हो, एकांकी हो, संस्मरण हो, यात्रा-वृतान्त हो, डायरी हो वा आत्म-कथा हो। एहिमे साधु भाषाक संगहि-संग ठेंठ चलन्त भाषाक स्त्रोतस्विनी प्रवाहित कयलनि। लोकप्रचलित शब्दावलीकेँ ओ मने-मन स्वीकार क' लेने रहथि जकर यथार्थ प्रतिरूप हुनक समग्र साहित्यान्तर्गत प्रतिध्वनित होइत अछि। शास्त्रीय-भाषाक संगहि-संग ओ आंचलिक भाषाक अनुच्छिष्ट उपमाक प्रयोग प्रचुर परिमाणमे कयलनि। जनिका मिथिलांचलक ग्राम्य-शब्दाब्लीक उपमानक रसास्वादन करबाक होइन ओ मणिपद्य-साहित्यक अवगाहण करथु जाहिमे हुनका एहन-एहन शब्दावलीक संग साक्षात्कार होयतनि तकर यथार्थ अर्थ-बोधमे अवश्य कठिनता होयतनि। अन्यान्य भारतीय भाषामे हिनक रचनादिक अनुवाद करबा काल कतिपय समस्या उत्पन्न होइछ जे ओकर समानार्थी शब्द सुगमतापूर्वक नहि उपलब्ध होइछ जाहि सन्दर्भमे ओ प्रयोग कयलनि।

विषयगत विविधताक अनुरूप हिनक भाषा-शैली विविध रूप थिक। संस्कृत गार्भित मिश्रित भाषा, काव्यात्मक आ भाव बहुल भाषा, सामान्य लोकक भाषाक संगहि-संग ओ आलंकारिक भाषाक सेहो प्रयोग कयलनि। एहि श्रृंखलान्तर्गत रचनादिमे मिथिलाञ्चलक माटिपानिक अपूर्व सौष्ठव अछि। ई अत्यन्त छोट-छोट वाक्यक प्रयोग कयलनि जाहिसँ भाषासँ चमत्कार आबि गेल अछि। एहि रचना-समूहमे संलाप-शैलीक प्रयोग ओ कयलनि। काव्यक समानहि हिनक गद्यक भाषा-शैली सेहो अत्यन्त सरल, प्रवाह पूर्ण आ माधुर्य युक्त अछि। भाव, भाषा आ संगीतक त्रिवेणीक संगम बना क' ओ गद्यक निर्माण कयलनि। हुनक शब्द-चयन अत्यन्त शिष्ट, भावानुकूल तथा सरल वाक्य-विन्यास अत्यन्त सुदृढ़ अछि। हुनक गद्य-भाषामे सर्वत्र कविताक सरसता, तल्लीनता, तन्मयता आ तीव्रता अछि। फलत: पाठक कखनो कोनो स्थलपर अरुचिकर नहि अनुभव नहि करैछ, प्रत्युत कलाकारक भावक संग बहैत चल जाइत अछि। ओ भाव-प्रवण रचनाकार रहथि। अतएव जाहि स्थलपर मार्मिक अनुभूति आ विलक्षण काल्पनिकताक समन्वय अछि ओतय भाषाक सौन्दर्य प्रेक्षणीय अछि। अपन भावुक अभिव्यक्तिमे ओ अत्यंत आलंकारिक एवं व्यंजनापूर्ण शैलीक प्रयोग कयलनि। हुनक शैलीमे कल्पनाक प्रौढ़ता, भावुकता, सजीवता आ भाषाक चमत्कार दर्शनीय अछि। हुनक भाषा-शैलीमे स्पनन्दन अछि, दृश्यकेँ मथबाक शक्ति अछि, सुकुमारता आ तरलता अछि जे मैथिलीमे अन्यत्र दुर्लभ अछि।

मणिपद्य गद्यक उदात्त रूप उपलब्ध होइछ हुनक डायरी, हुनकासँ भेट भेल छल, ओहि ठाम गेल छलहुँ आ आत्मकथामे। ओ गद्य रचना कयलनि कविक समान, हुनक गद्यक गुण कविताक गुण थिक। एहि सिरीजक गद्य तकर प्रतिमान प्रस्तुत करैछ जे ओहिमे शब्दालंकारक संगहि अर्थालंकारक अपूर्व चमत्कार भेटैछ। हुनक गद्य-साहित्य वा पद्य-साहित्य हुनक व्यक्तित्वक अखण्डताकेँ प्रमाणित करैछ। जहिना स्मितफान मलार्गेक पोलरीक गद्यक समानहि सांकेतिक होइत छलनि तहिना हिनक गद्य-साहित्य विषयोविशुद्ध आ भार रहित अछि। ओ अपन डायरी, संस्मरण, यात्रा वृतान्त आ आत्मकथामे एकरे आधार बनौलनि आ अपन भावनाक, अपन कल्पनाक, अपन मूल्यबोध आ मत पक्षक विस्तार कयलनि एहि सिरीजक गद्य-रचना एक रम्य रचनाक प्रतिमान प्रस्तुत करैछ।

स्वातंत्र्योत्तर मैथिली गद्य-साहित्यमे हिनक प्रवेश एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना थिक जे ओ स्वातन्त्र्योत्तर गद्य-साहित्यक स्रष्टाक रूपमे ख्याति अर्जित कयलनि। गद्यक स्वरूप जाहि रूपेँ विवर्त्तित आ रूपान्तरित भेल जा रहल अछि तथा आधुनिक गद्य कहबासँ जकर बोध होइत अछि तकर साक्ष्य, प्रमाण आ उदाहरणक भण्डार थिक हिनक गद्य-साहित्य। हिनक गद्यमे साधु-भाषा ओ चलन्त-भाषा, धरौआ, गोष्ठी ओ दरबारी रीतिक प्राचीन, आधुनिक आ आधुनातन शैली हुनक अक्षय गद्य-साहित्य एकर साक्ष्य थिक जकरा हम गद्यक अणु-विश्व कही तँ कोनो अत्युक्ति नहि हैत। हिनक गद्यमे सब किछु अछि भारी, हल्लुक, गम्भीर, चपल, तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज, समतल, उबड़-खाबड़, अत्युक्ति, वक्रोक्ति, स्वाभावोक्ति तथा ओहिसँ मिलल-जुलल राग-रागिणी अछि। सात्विक मिताचारक सन्निकट, ऐश्वर्यक आत्मविकिरण हिनक गद्यक सर्वोपरि उपलब्धि थिक। जीवन स्मृति, परिमित, यथोचित ओ स्वतन्त्र थिक हिनक गद्य।

हिनक गद्यक अध्ययनसँ मैथिली गद्य-धाराकेँ जानल जा सकैछ, जे ऐतिहासिक वा अन्यान्य कारणेँ अन्य कोनो मैथिली गद्यकारक प्रसंगमे नहि कहल जा सकैछ। हिनक गद्यमे पद्य-छन्दक वाणी अनगुञ्जित भ' रहल अछि। हिनक वाक्य ऋजु अछि, शिक्षित सैन्य-दलक समान ओ कालवद्ध चरण मिला क' चलैछ, ओकर श्रृंखला आ धारावाहिकता युक्ति निर्भर अछि जे एक अभिप्रायक क्षमतासँ सम्वद्ध अछि। हिनक गद्यक कल्प वा यूनिट वाक्य नहि अनुच्छेद थिक। यद्यपि हिनक गद्य महाकविक गद्य थिक तथापि ओ पद्य-गन्धी नहि। हिनक गद्य साहित्य अप्रतिम प्रतिभाक हस्ताक्षर थिक जे वेगवान आ दीप्तिपूर्ण अछि।

जे क्यो पाठक हुनक समग्र गद्य-साहित्यकेँ घ्यानसँ पढ़ने होयताह हुनक निश्चित धारणा होयतनि जे गद्य-शिल्पमे ओ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ-पुरुष रहथि तथा हुनक समकालीन गद्य-साहित्य अत्युच्च अछि। विशेषत: हुनक संस्मरणक गद्य

तीव्र आ गम्भीर अछि। गद्य-शिल्पक एहन ऐश्वर्य, एहन वैभव अन्य कोनो गद्यकारक रचनामे प्रकट भेल अछि, ताहिमे सन्देह अछि।

हुनकासँ भेट भेल छल, डायरी, ओहिठाम गेल छलहुँ एवं आत्मकथाकेँ प्रकाशन तिथिक अनुरूपहि एकहि संग विश्लेषण कयल अछि। चारू सिरीजक रचना समूहकेँ समवेत रूपसँ हुनकासँ भेट भेल छल नाम देल अछि तकर दुइ कारण अछि। प्रथमत: हुनकासँ भेट भेल छलक संख्या अधिक अछि आ द्वितीय जे साहित्यिक दृष्टिएँ सभ तँ संस्मरणेक श्रेणीमे अबैत अछि।

* * *

अमरक एकांकी: सामाजिक यथार्थ

नाटकक प्रकृत्या सामाजिक कला थिक। एकर आयोजनसँ ल' कए अवलोकन धरि समस्त क्रिया समाजे द्वारा सम्पादित होइत अछि। अन्तत: एकर प्रदर्शन समाज द्वारा सामाजिक लेल कयल जाइत अछि। अतएव एकर सर्वस्वर समाज द्वारा सामाजिकतासँ सम्पुष्ट अछि। एकर संरचनाक मूल प्रेरणाक स्थल सामाजिक थिक। लेखक समाजगत प्रेरणासँ अनुप्राणित भ' कए नाट्य रचना दिस प्रवृत्त होइत छथि। समाजिक जीवनमे घटित भेनिहार विभिन्न क्रिया कलाप, वेष-भूषा, भाषा आदिक आधारपर नाटकककार अपन नाट्य क्रिया कृतिमे कथानक, पात्र, रस, संवाद आदि विभिन्न नाटकीय तत्वक समावेश करैत छथि। नाट्यकर्त्ताक मानस पटलपर समाजक जे स्वरूप अंकित होइत छनि ओकरा ओ पुन: सामाजिकक समक्ष प्रदर्शित करैत छथि। कोनो देशक समामाजिक विकास तथा नाट्य-साहित्येतिहासिक तुलनात्मक विश्लेषणसँ स्पष्ट भ' जाइछ नाटकक संरचनामे सामाजिकक प्रेरणा सर्वदा प्रमुख स्वरूप रहल अछि। मैथिली नाट्य परम्पराक अवलोकनसँ सामाजिक प्रेरणाक स्वरूप पूर्ण रूपेण स्पष्ट भ' जाइछ। एहिमे समाजक यर्थाथ स्थितिक चित्रण नाटकककार अत्यन्त सूक्ष्मतासँ क' कए वास्तविकताक परिचय देलनि अछि।

प्रत्येक महत्वपूर्ण नाटकककार एवं एकांकीकार ओ अपन कृतिक माध्यमे जीवनक कोनो-ने-कोनो मूल्यकेँ अपन अन्तदृष्टिकेँ अपन सामाजिक, दार्शनिक, नैतिक, माननीय उपलब्धिकेँ अभिव्यक्ति करैत छथि। प्रत्येक साहित्यकारक सामाजिक दायित्व होइत छनि, किन्तु दृश्य साहित्य लिखबाक कारणेँ नाटकककार अन्यक अपेक्षा अधिक उत्तरदायी होइत छथि। नाट्यकर्ता अपन सार्थकता तखने सिद्ध क' सकैत छथि जखन ओ सामाजिक चेतनाकेँ कर्त्ता अपन संस्पर्श करैत छथि। इएह कारण अछि जे नाटकक वा एकांकी वा प्रहसन सामयिक होइत अछि। जीवनक जटिलता ओ गूढ़ रहस्यकेँ खोलि क' देखबाक कारणेँ आधुनिक सन्दर्भमे जाहि द्रुत गतिएँ एकरा माध्यम जतेक सुगमतासँ भ' सकैछ ततेक साहित्यक अन्य कोनो विघासँ नहि। जन समाजमे सामयिक स्थितिक ओ समाज प्रति चेतना उत्पन्न करब नाटकककारक प्रमुख दायित्व होइत छनि। राष्ट्र ओ समाजमे व्याप्त निर्जीवता एवं यांत्रिकतासँ पृथक् रहि क' उद्बुद्ध करब

नाटकककारक घर्म होइत छनि। एहन पैघ उत्तरदायित्वक सफल निर्वार्थ परमावश्यक अछि जे ओ वर्ग विशेष वा सिद्धान्त विशेष वा दल विशेष धरि अपनाकेँ सीमित नहि राखि, समाजक समग्रताकेँ प्रत्येक दृष्टिएँ सामाजिकक सम्मुख प्रस्तुत करथि। एहि लेल नाटकककारकेँ अपन कृतिमे परिस्थितिक व्याघातक विरूद्ध संघर्षरत होमय पड़ैत छनि। क्षणिक ख्यातिक हेतु ओछपनमे नहि पड़ि नाटकककार सामाजिक शक्तिक गम्भीर अध्ययनक हेतु केन्द्रित होइत छथि। सामाजिक विवर्त्तनक फलस्वरूप नाटकककारक दायित्व अधिक भ' गेलनि अछि। ओ सब ओकर विरोध करैत छथि।

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारक फलस्वरूप समाजिक परिवेशमे तीव्र गतिएँ परिवर्त्तन भ' रहल अछि। परम्परागत घारणादि, प्रथादि, व्यवस्थादि, आदर्शादिसँ लोकक धारणा शनै:-शनै समाप्त होमय लागल अछि। अतीतक व्यवस्था आदि वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे जीवनयापनक लेल पर्याप्त नहि, रहि गेल अछि। समाजमे एक विचित्र स्थिति उत्पन्न भ' गेलैक अछि। एहन अवस्थामे समाजसँ बनब तथा समाजकेँ बनायब नाट्य प्रक्रियाक आधार भूत हेतु बनि गेल अछि। तेँ नाटकककारकेँ सामाजिकक रुचिसँ प्रभावित हैबाक होइत छनि। संगहि हुनका समाजकेँ सुरुचि सम्पन्न बनयबाक प्रयत्न करय पड़ैत छनि। नाटककमे नाटकककारक मानसिकताक विम्ब रहैत अछि ई प्रतिविम्ब आत्मनिष्ठ एवं स्वयं पूर्ण होइछ। नाटकककारक मानसिकता हुनक गृहीत संस्कार तथा समाजमे घटित घटनादिक परिणाम होइत अछि।

यद्यपि मैथिली साहित्यमे समस्त पूर्वांचालक भाषाक अपेक्षा नाट्य-साहित्य समृद्धशाली परम्पराक दिग्दर्शन एकर प्रारम्भिकावस्थहिसँ दृष्टिगत होइत अछि तथापि एकांकी साहित्यपर दृष्टिपात करैत छी तँ एकर उदय ओ विकास बीसम शताब्दीक चतुर्थ दशाब्दसँ प्रारम्भ होइत अछि। वर्त्तमान युगमे जीवनक व्यस्तता, अशांति, कार्याधिक्यक कारणेँ अवकाशाभाव तथा जीवनक बढ़ैत द्वन्द्व एकर विकासक मूलमे अछि। शिक्षा प्रचारिक फलस्वरूप विद्यालय, महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालयमे अभिनयोपयोगी एकांकीक निरन्तर माँग तथा रेडियो-टेलीभिजनक प्रचार-प्रसारक फलस्वरूप एकांकीक लोकप्रियता बढ़ैत गेल अछि। द्वितीय विश्व युद्धक अवसरपर गद्य-साहित्यक प्रचारात्मक साधनक आवश्यकता भेलैक। फलत; एकांकीक अनेक रूपक विकास भेलैक जाहिमे रेडियो प्ले फीचर फेंटेसी आदि प्रमुख अछि। किन्तु मैथिली एकांकीक विकास ओ प्रचार-प्रसार स्वातंत्र्योत्तर युगमे भेल अछि।

बीसम शताब्दीक विगत पाँच दशकसँ मैथिली साहित्यक गतिविधिपर दृष्टिनिक्षेप कयनिहार सर्वाधिक चर्चित साहित्य-मनीषीमे जनिक गणना कयल जाइत छनि ओ

छथि अग्रगण्य साहित्य-चिन्तक, सशक्त कवि, उपन्यासकार, कथाकार, एकांकीकार, प्रहसनकार, इतिहासकार अनुवादक, सम्पादक, ओ आलोचकक रूपमे विशिष्ट स्थान रखनिहार चन्द्रनाथ मिश्र *अमर* (1925)। हिनक वास्तविक प्रतिभाक प्रस्फुटन भेल हास्य-व्यंग्यसँ संयुक्त काव्य-सृजनसँ। एही कारणेँ मैथिली पाठकक सर्वाधिक चर्चित व्यक्ति रूपमे ख्याति अर्जित कयलनि। तथापि हुनक जतबहि एकांकी ओ प्रहसन अद्यापि उपलब्ध भ' रहल अछि ओहि आधारपर हुनका श्रेष्ट एकांकीकार ओ प्रहसनकारक रूपमे गणना कयल जाय तँ एहिमे कोनो अत्युक्ति नहि। हिनक वैशिष्ट्य एहि विषयकँ ल' कए अछि जे ओ एकांकी ओ प्रहसनमे जँ गंगा-यमुनाक धारा प्रवाहित कयलनि अछि तँ ओहिमे हास्य-व्यंग्यक लुप्त सरस्वती सेहो दृष्टिगत होइत अछि जे हिनक रचना धार्मियताक वैशिष्टय थिक।

चन्द्रनाथ मिश्र अमर स्वयं एक कशुल अभिनेता, कुशल निर्देशकक रूपमे अपन यथार्थ प्रतिभाक परिचय अपन कार्य-कालमे देलनि, जकर फलस्वरूप समाजमे ओ प्रतिष्ठा अर्जित कयलनि। एम. एल. एकेडमी लहेरियासरायमे अध्यापनक प्रारम्भिक कालहिसँ सेवा निवृति काल धरि भिन्न-भिन्न उत्सवपर नाटकक, एकांकी प्रहसनक मंचनमे निर्देशकक रूपमे सम्वद्ध रहलाह जकर प्रतिफल हमरा लोकनि देखि चुकल छी जे मैथिली फिल्मक अभ्युत्थानार्थ कन्यादानमे लालकाकामे अभिनय क' कए मैथिली रंगमंचक विकासार्थ अभियानक अवदान देलनि जकर फलस्वरूप ओ समस्त मिथिलांचलमे लोकप्रियता अर्जित कयलनि। इएह कारण अछि जे हिनकामे रंगमंचोपयोगिता अद्यापि अक्षुण्ण छनि, जकर प्रतिफल ई भेल जे कतिपय नाटकक एकांकी ओ प्रहसनक मंचन हिनक कुशल निर्देशनमे भेल। ओ समाजकँ अत्यन्त समीपसँ देखलनि तथा ओकर सजीव चित्र अपन एकांकी ओ प्रहसनमे सामाजिक यथार्थक वास्तविक मूल्यांकनमे भेल अछि। ई अपन एकांकी ओ प्रहसनमे मिथिलांचलक सामाजिक जीवनक यथार्थवादी स्वरूपक उपस्थापन कयलनि। ओ नव समाजक कल्पना कयलनि तथा आधुनिक जीवनसँ आयल विकृतिकँ केन्द्र-विन्दु बनौलनि जे सामाजिक परिप्रक्ष्यकँ जनबामे सहायक सिद्ध भेल।

मैथिलीक विभिन्न पत्रिकादिक अन्वेषण अनुसंधान ओ सर्वेक्षणोपरान्त अद्यापि हिनक जे एकांकी ओ दृष्टि पथपर आयल अछि ओ थिक *टोपी* (वैदेही 1950) समाधान (1955)मे संग्रहीत प्रहसन *आधुनिक पाठ्य प्रणाली* दुइ एकांकी *निरक्षरता निवारक पाठशाला* एवं *श्रमदान, घरैया लूरि* (वैदेही नवम्बर-दिसम्बर 1958), *मलरवि* (मिथिला दर्शन 1965) *बाइचान्स* (मिथिला मिहिर 14मार्च1965) *ब्रह्मस्थान* (पटना रेडियोसँ प्रसारित) *हाकिमक हाकिम वा ननदिओक ननदि, दिशा बोध* (मिथिला मिहिर 16 जुलाइ 1978) पत्रिकादि एवं विभिन्न संग्रहमे संगृहीत अछि। एम्हर आबि

क' ओ समग्र एकांकी एवं प्रहसनक संग्रह प्रकाशित कयलनि अछि *खजवा टोपी* (2005)क नामे जाहिमे *कौआ ल गेल कान* (1998) एक नव एकांकी दृष्टिगत भेल अछि। एहि ट्टष्टिसँ हुनक कुल मिला क' एगारह एकांकी प्रकाशित अछि जाहि मे दुइ प्रहसन आ शेष एकांकीक परिप्रेक्ष्यमे हिनक मूल्यांकन करबाक उपक्रम कयल जा रहल अछि। ओ मैथिलीक एहि विधान्तर्गत एक नव प्रतिमान उपस्थित करबामे सहायक भेलाह।

हिनक, एकांकी ओ प्रहसनमे पाठक एवं दर्शककेँ मिथिलांचलक समाजक प्रतिविम्ब भेटैछ। ओ अपन एकांकी एवं प्रहसनमे समाजमे प्रचलित समस्यादिक स्पष्ट अंकन, सूक्ष्म निरीक्षण एवं विषय उपस्थापन अत्यन्त प्रभाव पूर्ण शैलीमे कयलनि। ओ जाहि समस्याकेँ उपस्थित कयलनि अछि, ओ ओहि कालक सापेक्ष धरि सीमित नहि रहल, प्रत्युत भविष्य कालीन परिणामक स्पष्ट अंकन करबामे सहायक भेल। हमर धारणा अछि जे भविष्यमे सेहो हिनक एकांकी एंव प्रहसन ओहिना प्रभाव अनुभूत हैत। कतिपय समस्या एहन अछि जे कोनो स्थितिमे कहियो नष्ट नहि हैत - जेना दलितपर भेनिहार अन्याय, अत्याचार, शोषण, पीड़न शिक्षाक परिवर्त्तित स्वरूप, भ्रष्टाचार, राजनीतिक भ्रष्टता, सामाजिक असमानता इत्यादिकेँ ओ एकांकी एवं प्रहसनमे युगीन सन्दर्भकेँ महत्व देलनि। ओ जीवन पर्यन्त अध्ययन-अध्यापनसँ सम्वद्ध रहलाह आ समाजक विभिन्न स्तरक विद्यार्थीकेँ अत्यन्त समीपसँ दैखलनि। ओकर कतिपय समस्यादि जे हुनक मनमे गड़लनि तकर ओ एकांकी एवं प्रहसनमे सजीव रूपेँ प्रस्तुत करबाक उपक्रम कयलनि। जेना कोनो कानून बनैत अछि सर्वसाधारणकेँ न्याय दियबाक हेतु, किन्तु कखनो-कखनो न्यायमे एतेक बेसी जड़ता आबि जाइत छैक जे ओहिसँ न्याय नहि भेटि पबैछ। अतएव परिवर्त्तनशील समाजक लेल आवश्यकता अछि जे कानूनमे सेहो समय-समयपर परिवर्त्तन हो। कैंसर अत्यन्त पीड़ादायक बिमारी छैक जकर औषधि नहि छैक। एकमात्र मृत्युक अतिरिक्त आन कोनो उपाय नहि छैक। तखन दोसर यथार्थ दया मरणक कानून हैबाक चाही।

मैथिली दृश्य काव्यमे ई दस्तक देलनि प्रहसनकारक रूपमे। हिनक पहिल प्रहसन प्रकशित भेल टोपी। एहि प्रहसन अनुशीलनसे अवबोध होइछ जे एहिपर व्यंग्यसम्राट हरिमोहन झा (1908-1984) क प्रसिद्ध प्रहसन बौआक दाम (1946)क स्पष्ट प्रभाव अछि। फ्रेंच नाटकककार मौलियर (1622-1673) जहिना अपन नाटककमे हास्यक आयोजनक हेतु कतिपय साधनकेँ अपनौलनि तहिना ई अपन टोपी प्रहसनमे सेहो एकर आयोजन कयलनि, किन्तु स्थल-स्थलपर एहि *जार्ज बर्नार्ड शाँ* (1856-1950)क समान गम्भीर व्यंग्यक रूप परिलक्षित होइत अछि।

आधुनिक पाठ्य-प्रणाली (1955)मे प्रहसनकार सरकारक आधुनिक शिक्षा

नीतिक परिप्रेक्ष्यमे एक शिक्षकक हैसियतसँ जे अनुभव कयलनि तकरे पृष्ठभूमिमे एकरा परिवर्त्तित सामाजिक परिवेशमे प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिलीक इतिहासकार एकर गणना एकांकीक श्रेणीमे कयलनि अछि, किन्तु ई विशुद्ध रूपेँ प्रहसन थिक, जाहिमे हास्य-व्यंग्यक धारा प्रवाहित भेल अछि। प्राचीन ओ नवीन शिक्षा प्रणालीक परिप्रेक्ष्यमे प्रहसनकार एकर कथा भित्तिक निर्माण कयलनि अछि जे पाठक एवं दर्शककेँ मनोरंजन करबाक हेतु प्रचुर अवसर प्रदान करैत अछि। प्रचीन परम्परानुसार जतय साले साल धौत परीक्षोतीर्ण पंडित लोकनि दरभंगा महाराजक ओतय गौरवान्विक होइत छलाह ततहि आधुनिक पाठ्य-प्रणालीक परिप्रेक्ष्यमे परीक्षा तँ सत्यनाराण पूजाक समान संकरातिञेँ-संकरातिञेँ भ' रहल अछि। एतय प्रहसनकार समसामयिक समाजमे प्रचलित सरकारक आधुनिक पाठ्य-प्रणालीमे प्रचलित शिक्षा नीतिपर व्यंग्य करैत छथि जखन देश स्वतन्त्र भेल छल, नव-नव योजना कार्यान्वित भेल जाहिसँ शिक्षा जगत सेहो बाँचल नहि रहि सकल। परिवर्त्तित परिवेशमे प्रहसनकारक व्यंग्य कतेक मर्मस्पर्शी थिक तकर अवलोकन तँ करू :

बचकानी :

> *बापरे! से धरि सत्ते, छोट-छोट नेना सब हक्कर पेलैत चढ़ले भानसमे सँ काँचे कोचिल खा क' तीन-तीन कोस दौड़ल जाइत अछि आ सुनैत छिऐक जे स्कूलपर एकरा सबसँ टकुरी- चर्खा कटबैत जाइत छैक।*
>
> *(समाधान, निर्माण प्रकाशन, लहेरियासराय, 1955, पृष्ठ-15)*

स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे नवीन शिक्षा-नीतिक तहत स्कूलपर बुनिआदी शिक्षाकेँ प्रश्रय देल गेलक तथा एकरा क्रियान्वित करबाक हेतु पाठ्यक्रममे आवश्यक परिवर्त्तन कयल गेल, जकरा समकालीन सामाजिक परिवेशमे स्वीकार करबाक स्थितिमे समाज एकदम नहि छल। समाजक एहन मानसिकतापर प्रहसनकार हस्य-व्यंग्यसँ युक्त धारा प्रवाहित कयलनि अछि:

बुद्दन :

> *हौ तोँ मौसम्मातक बेटा बेटा थिकाह जे चर्खा लेबह ओ तँ गाँधी बाबा एकटा रास्ता देखा गेलथिन्ह जे राड़ँ, मसोम्मात अपन गुजर करत, जकर जीवन पहाड़ छैक आ तोरा कथीक चिन्ता छह? कोन वस्तुक कम्मी छह ?*
>
> *(समाधान पृष्ठ-19)*

आधुनिक पाठ्यप्रणाली प्रहसनक वैशिष्ट्य अछि जे प्रहसनकार सामाजिक परिवेशक यथार्थ मानसिकताक घटना चक्रक आधारपर हास्य-व्यंग्यक आयोजन क' कए जतहि एक भाग समाजकेँ हँसौलनि अछि ततहि दोसर भाग ओकरा माध्यमे मानसिक स्थितिकेँ परिवर्त्तित करबाक प्रयास कयलनि अछि। उपर्युक्त प्रहसनक मंचन एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायक वार्षिकोत्सवक अवसरपर भेल जतय तत्कालीन बिहार सरकारक शिक्षा मंत्री हरिनाथ मिश्र उपस्थित रहथि। एकर निर्देशन प्रहसनकार स्वयं कयने रहथि।

एकांकी :

देशक पुनर्निर्माणक आवश्यकता एवं सामाजिक चेतनाकेँ ल' कए मैथिलीमे एकांकी लिखनिहारमे एक सजग एकांकीकारक रूपमे मैथिली एकांकी द्वारपर दस्तक देलनि। एहि दृष्टिएँ हिनक निरक्षरता निवारक पाठ्शाला, श्रमदान, घरैया लूरि, ब्रह्मस्थान, हाकिमक हाकिम वा ननदिओक ननदि, मलरवि, दिशा बोध एवं कौआ ल' गेल कान, इत्यादि मैथिलीमे उल्लेखनीय एकांकीक रूपमे चर्चित अछि जाहि आधारपर हिनका मैथिलीक सफल एकांकीक रूपमे परिगणित कयल गेल छनि। हिनक उपलब्ध एकांकीक विश्लेषण नाटकीय तत्वक आधारपर करब समीचीन होयत। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक तेँ ओकर मूल्यांकन सामाजिक दृष्टिएँ अपेक्षित अछि।

वस्तु :

नाट्य तत्वक अन्तर्गत वस्तुक सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान अछि। वस्तु द्वारा एकांकीक गतिशील होइत अछि। रस-निष्पत्ति, चरित्रक सजीवता एवं गतिशीलताक लेल वस्तुक निर्माण कयल जाइत अछि। एहि दृष्टिएँ वस्तु एकांकीक प्रमुख तत्वक रूपमे स्वीकारल गेल अछि। एकरा अन्तर्गत कार्यावस्था वा व्यापार तत्व एकांकीकेँ सफल ओ सप्राण बनबाक उद्देश्यसँ कयल जाइत अछि। कार्यक गाति द्रुतगतिएँ बढ़यबाक दिशामे वस्तु-विन्यास श्रेष्ठ माध्यम थिक, कार्य एकांकीक प्रमुख साध्य थिक। नाटकीय सौष्ठवकेँ वस्तु-संगठन एवं व्यापक समुचित योजनाक रूपमे देखल जाइत अछि। एहि प्रसंगमे पाश्चात्य आलोचक ई.एम. फार्स्टरक कथन छनि जे कथानक घटनाक ओ कालक्रमानुसार वर्णन थिक जाहिमे कार्य-कारण-सम्बंधपर विशेष बल रहैत अछि। नाटकक वा एंकाकीमे संघर्ष वा द्वन्द्वक महत्ता सर्वोपरि अछि। तेँ वस्तु विन्यासक वा एकांकीमे संधर्ष वा द्वन्द्वक महत्ता सर्वोपरि अछि। तेँ वस्तु विन्यासक अन्तर्गत कथानकपर दवाब ओकर प्रतिक्रियाक अंकन कयल जाइछ। वस्तु-विन्यास लेखकक उद्देश्यक अनुरूप क्रमवद्धता एवं विस्तार ग्रहण

करैछ। अतएव एकांकीकार वस्तु-विन्यास करबा काल जीवनमे घटित भेनिहार समसामयिक जीवनसँ सम्वद्ध रहैत छथि, कारण मानव जीवनसँ विच्छिन्न कोनो साहित्य उत्कृष्ट नहि भ' सकैछ।

निरक्षता निवारक पाठशाला (1955)मे एकांकीकार जाहि समसामयिक समस्याक उपस्थापन एहिमे कयलनि अछि तकर संकेत ओ पचास वर्ष पूर्वहि कयने रहथि तकर प्रतिरूप बीसम शताब्दीक नवम दशकमे सरकारक माध्यमे निरक्षरकें साक्षार बनयबाक दिशामे प्रयास भेल अछि। सरकार वयस्क शिक्षा योजनापर करोड़क करोड़ रूपैया खर्च करैत जा रहल अछि जकर मूल उद्देश्य छैक जे कोहुना प्रत्येक भारतीयकें साक्षर बनाओल जाय। साहित्य-चिन्तक कतेक दूरदर्शी होइत छथि तकर वास्तविकताक परिचय एहि एकांकीक प्रणयनसँ पाठक वा दर्शककें उपलब्ध होइत छनि। समसामयिक परिवेशमे सरकार वयस्क शिक्षा नीतिकें क्रियान्वित करबाक हेतु नुक्कड़ नाटकक आयोजन करैत अछि। जनसामान्यकें एहि दिशामे आकर्षित करबाक कतिपय प्रलोभन दैत अछि। तथापि ओकर कतेक परिणाम ओकरा भेटि रहल छैक तकरा स्पष्ट करबाक प्रयोजन नहि, प्रत्युत्त अनुभव करबाक योग्य थिक। किन्तु एकांकीकार समाजक एहि ज्वलन्त समस्याक सम्बन्धमे कतेक पूर्व ध्यानाकर्षित कयने छलाह तकर स्पष्टीकरण उक्त एकांकीक मननसँ स्पष्ट भ' जाइत अछि। नेना बाबू ने तेना सोने झाकें शिक्षित करबाक निमित्त प्रयासरत भेलाह जकर फलस्वरूप ओ शिक्षित भ' गेलाह। एकरा माध्यमे एकांकीकार एहि विषयकें उद्घाटित करबाक उपक्रम कयलनि अछि जे देशक उन्नति तखने सम्भव अछि जखन प्रत्येक भारतीय शिक्षित क' कए ज्ञानक ज्योति प्रज्वलित क' कए एकर वास्तविक महत्व बुझथि। तखने मातृभूमिक स्वतन्त्रताक वास्तविक अर्थ बुझबामे तथा अपन अधिकार ओ कर्त्तव्यक पालनमे सक्षम भ' सकताह अन्यथा सब प्रयास निरर्थक अछि। एहि निमित्त आवश्यक अछि जे जनसामान्यकें शिक्षित कयल जाय। एहि प्रसंगमे चतुर्भुजक कथन छनि:

> *जतेक पढ़ल लिखल लोक छी से यदि प्रतिज्ञा करी आ कम-सँ कम दस व्यक्तिकें शिक्षित बनाबी। एक सँ दस, दस सँ सै, सै सँ हजार तुरन्त भ जैत। तैं हेतु साँझखन जे समय घूड़लग बितबैत अछि से एही काजमे लगाबी तँ कोन क्षति।*

(समाधान, पृष्ठ-7)

उपर्युक्त वातावरणक पृष्ठभूमिमे एकांकीकार समाजक समक्ष एक प्रतिमान उपस्थित कयलनि अछि जे शिक्षित समाज भ' कए अपन सामाजिक दायित्वक

संगहि-संग राष्ट्रीय दायित्वकेँ बुझि देशक प्रति अपन त्याग कर्तव्यकेँ बुझथि। ई तखने सम्भव भ' सकैछ जे लोक अपन अधिकार ओ कर्त्तव्यक प्रतिपूर्ण साकांक्ष भ' पौताह अन्यथा ई संभव नहि। एहि दृष्टिएँ एकर कथानक समाजकेँ अपन अधिकार ओ कर्तव्यक प्रति दिशा-बोध करबैत अछि।

आधुनिक परिवेशमे दिन प्रतिदिन समसामयिक समाजक व्यक्ति आराम तलब बनल जा रहल अछि। ओ जेना श्रमक महत्वसँ अपरिचित भ' गेल अछि। व्यक्ति-व्यक्तिमे एतेक वेसी ऊर्जा छैक जे ओ सम्भव कार्य सेहो सम्भव क' सकल अछि। तेँ मानव जीवनमे श्रम सर्वोपरि साधन थिक। एकांकीकार *श्रमदान* (1955) एकांकीमे समाजकेँ श्रमोन्मुख बनयबाक उद्देश्यसँ, शैशवावस्थहिसँ श्रमक महत्वकेँ बुझयबाक हेतु एहि एकांकीक रचना कयलनि। स्वातन्त्र्योत्तर भारतक सर्वतोमुखी विकासक शिक्षाक नव नीतिमे एकर उपयोगिताकेँ उद्घाटित करबाक उद्देश्यसँ आधुनिक पाठान्तर्गत बुनियादी शिक्षाकेँ महत्व देबाक उद्देश्यसँ श्रमदान करबाक प्रवृत्ति जगैबाक लेल एहि एकांकीक ओ रचना कयलनि। एकरा माध्यमे आर्थिक स्वतन्त्रता तँ आसानीसँ भेटि जा सकैछ। अतएव तन-मन, धनसँ अपन मातृभूमिक सेवामे तत्पर भ' जयबाक प्रयोजन अछि। व्यक्ति-व्यक्तिमे एहि भावनाकेँ जगयबाक हेतु जे प्रयास भेल ओ तँ अपन स्थानपर रहल, किन्तु विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तरपर ए.सी.सी., एन.सी.सी., एन.एस.एस., सदृश योजनाकेँ क्रियान्वित करबाक लेल स्थापना कयल गेलैक जकर मूल उद्देश्य छलैक श्रमदान करबाक प्रवृत्ति जगेबाक तथा भावी संतनिकेँ शैशवास्थाहिसँ अनुशासनक सूत्रमे बान्हल जाय जे भविष्यक हेतु लाभ प्रद भ' सकैछ तेँ तँ ज्ञान-धन कहैछ:

> *देशक एक-एक गोटेसँ निवेदन अछि जे निर्माण कार्यमे तन-मन-धनसँ सहायता करू। श्रमदानक भुखलि भारत माता अहाँक आह्वान कै रहल अछि।*
>
> *(सामाधन, पृष्ठ -27)।*

एहि प्रवृत्तिक उदय भेलासँ देशक नव-निर्माण निश्चित रूपेँ हैबाक सम्भावना अछि। सरकार एहि शिक्षा नीतिक सराहना करैत छनि आ जे स्कूल एवं कालेजमे पढ़निहारपर दबाव वा जनमानस उत्साहित भ' कए एहि दिशामे कार्यरत हैताह। तखन सुन्दर लालक कथन छनि:

> *जे सोचलक ई बात बड़ बुधियार छल। देखहक आब पढ़ैत छैक बारहोवर्णक धियापूता, सबकेँ नोकरी गेटतैक नहि, तखन सब बेकार भेल गामेपर एहि खोन्हीसँ ओहि खोन्ही ढ़हनाइत फिरैत छल से तँ नहि ने हैत।*
>
> *(समाधान, पुष्ठ-32)।*

अनादि कालहिसँ समाज दुह वर्गमे विभाजित रहल अछि जकरा धनीक-गरीब वा शोषक-शोषित वा सम्पन्न-विपन्न आदि विविध संज्ञासँ विभिन्न समयमे सम्बोधित कयल जाइत रहल अछि। सामाजिक विषमता सबसँ ज्वलन्त समस्या थिक जकर फलस्वरूप समाजक विभाजन भ' गेलैक नया समाजन्क वर्त्तमान स्वरूप विलुप्ति भ' गेल। आर्थिक परिस्थिति वा हित-सम्बन्धक आधारपर समाज मुख्यत: तीन श्रेणीमे विभाजित अछि। उच्च वर्ग, मध्य वर्ग ओ निम्न वर्ग। उपर्युक्त आधारपर समाजक अन्तर्गत वर्ग वैषम्यक आगमन भेलैक। सामाजिक वातावरणक उपर्युक्त पृष्ठभूमिमे हिनक *ब्रह्मस्थान* एक उल्लेखनीय एकांकी थिक, जाहिमे एकांकीकार शोषित वा गरीब वा विपन्न वर्गपर होइत अत्याचारक वास्तविकतासँ अवगत करौलनि अछि। ग्रामीण परिवेशमे एहन परम्परा रहल अछि जे गामक डिहबाक अर्थात ब्रह्मस्थान गामक न्यायालय प्रतीक मानल जाइत छल, जतय नीक अधलाहक विश्लेषण क' कए दोषीकेँ दण्ड देल जाइत छलैक, जकर ओ साक्षी होइत छलाह। समाजक आचार संहिताक ओ प्रतीक होइत छलाह। ब्रह्मस्थान जतय गाममे रहनिहारक सुख-दुःखक समान रूपेण सहभागी होइत छथि। समाज कल्याण जनिक सर्वप्रमुख वैशिष्ट्य छनि तथा सामाजिक कल्याणमे अपन कल्याण मानैत छथि। एहन न्यायालयमे बैसि क' लोक दूधक दूध आ पानिक पानि न्याय करबामे वस्तुतः सक्षम होइत छथि। वैह डिहबार समाजमे सतत पूजित होइत रहल छथि तथा समाज हुनक सम्मान करैत आयल अछि।

बदलैत समाजिक परिवेशमे एहन मान्यतामे परिवर्त्तन भेल जकर परिणाम भेल अछि जे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे राम राज्यक स्थापनाक उद्देश्यसँ ग्राम पंचायतक स्थापना कयल गेलैक तथा ओकर प्रधान मुखियाक हाथमे गामक न्याय करबाक उत्तरदायित्व देल गेलनि। मुदा मुखिया न्याय की करैत छथि ओ तँ अन्यायक प्रतीक बनि क' अपन राक्षसी प्रवृत्तिसँ समाजपर अत्याचार करैत छथि। एही यर्थाथताक पृष्ठभूमिमे एकांकीकार ब्रह्मस्थान एकांकीक कथाभित्तिक निर्माण कयलनि अछि।

गामक मुखिया हरिवंश बाबूकेँ युग-युगान्तरसँ दीन-हीन जनमानसकेँ शोषित करबाक अभ्यास छनि। सुगियाक बेटा मखना विगत अठारह दिनसँ ज्वराक्रान्त छैक जे हुनक शोषण नीतिक फलस्वरूप अकस्मात् काल-क्वलित भ' जाइत अछि। सुगियाक मात्र एतबे अपराध छैक जे समयपर हुनका ओतय पानि भरबाक हेतु नहि जाइत अछि, जकर इनाम ओकरा भेटैत छैक मारि-गारि सुनबैत निर्ममतापूर्वक पीटब ओ अपमानित करब। सुगियाक अन्घभक्त पति पचकौड़ी अपन पुत्रक मृत्युसँ आहत भ' परम्परागत न्यायालयक प्रतीक ब्रह्मस्थानक अस्तित्वकेँ मेटैयबाक लेल कटिबद्ध अछि, किन्तु ठकाइक बात मानि अपन

विचारकेँ बदलि दैछ। अन्ततः ओही ब्रह्मस्थानमे गामक सब क्यो उपस्थित भ' वर्त्तमान मुखिया हरिवंश बाबूकेँ पदच्युत क' कए एक नव मुखियाक चुनावक नारा दैत अछि।

एकांकीकार शोषित वर्गक बीच युगयुगान्तरसँ चल आबि रहल आक्रोशसँ कथानकक निर्माण कयलनि अछि। प्रतिपाद्य एकांकीमे मूलत: दुइ विचारधारासँ संघर्षरत अछि। एक तँ परम्परासँ चल आबि रहल बहियाक प्रति शोषक वर्गक नृशंस हत्या दोसर भाग समसामयिक सामाजिक परिवेशमे प्रचलित चुनाव-पद्धति तथा आधुनिक मुखियाक क्रियाकलापक वास्तविकतापर जे अन्हरजाली छल तकरा हटयबाक उपक्रम कयल गेल अछि। परिवर्त्तित परिवेशमे समाजमे विद्रोहक स्वर अत्यन्त तीव्र भ' गेल अछि तँ सामाजिक परिवेशकेँ परिवर्त्तित करबाक प्रयोजन अछि। एकांकीकार इएह प्रवृत्ति छनि।

कतोक शताब्दीक गुलामीक पश्चात् भारतकेँ स्वतन्त्रता प्राप्त भेलैक। देशक नव-निर्माणक हेतु कतिपय योजनादि क्रियान्वित करबाक दिशामे सरकार प्रयासोन्मुख भेल। सरकारक दिससँ सेहो कतिपय योजनाकेँ कार्यरूप देबाक हेतु प्रयास कयल गेल। एकर एक मात्र उद्देश्य छलैक कोहुना व्यक्ति-व्यक्ति जे गरीबीक मारिसँ कुहरि रहल अछि ताहिसँ मुक्ति दियबाक दिशामे प्रयास कयल जाय। अधिकांश ग्रामीण गामक परित्याग क' शहरोन्मुख हैबाक दिशामे प्रयास करय लागल। तकर भीषण दुष्परिणाम भेलैक जे गामक गाम जनशून्यताक कगारपर पहुँचय लागल। समाजक समक्ष एक विषम स्थिति उत्पन्न होमय लगलैक। एहना स्थितिमे ग्रामीण परिवेशकेँ बचयबाक लेल जनमानसमे एहन वातावरणक निर्माण कयल गेल जे ओ ओही परिवेशमे रहि अपन जीवकोपार्जनार्थ अपन कौलिक धन्धाकेँ पुनः स्वीकार करय। एकर दूटा प्रभाव पड़ितैक। एक तँ लोक अपन गृह-उद्योग दिस उन्मुख होइत आ दोसर शहरी परिवेशपर अनावश्यक दबाब नहि पड़ितैक।

एहि परिप्रेक्ष्यमे हिनक एकांकी *घरैया लूरि* (1958) एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थिक। विसुनदेव ग्रामीण परिवेशक परित्याग क' विसेस्सरक संग कलकत्ता सदृश महानगरीय परिवेशमे रोजगारक तलाशमे जयबाक आकांक्षी अछि। मुदा विसेस्सर शहरी परिवेशसँ परिचित रहलाक कारणेँ ओकर वास्तविक कठिनाइसँ अपन बाल संगी मित्र विसुनदेवकेँ एहन निर्णय करबासँ सर्वथा मना करैत अछि :

> *हम सौचैत छिऔक जे तोरा की करक चाहिअउ तोहूँ नीक जकाँ सोचि ले।*
>
> *(वैदही, नवम्बर-दिसम्बर 1958, पृष्ठ -407)*

विसेस्सर, अपन नेक सलाह दैत छैक जे अपन पुश्तैनी अथार्त् करघा चला क' अपन परिवारक संग, सुखी सम्पन्न रहि सकैत अछि। एकर ओ समुचित प्रबन्ध

सेहो *क'* दैत छैक, जकर परिणाम होइछ जे विसुनदेव गामहिमे रहि अपन रोजगार क' कए सुखी-सम्पन्न भ' जाइत अछि। विसुनदेवक देखा-देखी गोविन्द मिस्त्री, सैनी ठठेरी एवं झिंगुर चमार द्वारा निर्मित पलंग, झालि ओ ढ़ोलक बाजारमे छुहुक्का उड़ि जाइत अछि। एकांकीकारक मान्यता छनि, जे आधुनिक शिक्षा प्रणाली व्यक्ति - व्यक्तिकेँ रोजगार मुहैया नहि करा सकैछ। जा धरि व्यक्ति पुश्तैनी धन्धाकेँ नहि अपनाओत ता धरि ओकर सामाजिक परिवेश कोनो तरहक सुधारक सम्भावना नहि दृष्टिगत होइछ। अतएव एकांकीक मूलस्वर छैक अपन कौलिक धन्धाक अनुरूपहि प्रशिक्षित भ' कए काज करब। तखने हमर सामाजिक परिवेश परिवर्त्तित भ' सकैछ तथा व्यक्ति-व्यक्ति सुखी सम्पन्न बनबाक कामनाक पूर्ति भ' सकैछ।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीक रामराज्यक सपना एकरे फलस्वरूप साकार भ' सकैछ। हमर प्रचीन सामाजिक व्यवस्थामे प्रत्येक जातिक कार्य ओकर सामाजिक परिवेशानुसारेँ विभाजित छलैक, तेँ वेरोजगारीक समस्या नहि उत्पन्न होइत छलैक। वर्णाश्रमक जे व्यवस्था हमर समाजमे कयल गेल छलैक तकर मूल परिकल्पना इएह छलैक। किन्तु परिवर्त्तित परिवेशमे लोक ओहिसँ विमुख भ' अछि तेँ वेरोजगारीक समस्या समाज ओ सरकारक समक्ष उपस्थित भ' गेल गेल अछि। प्रतिपाद्य एकांकीमे एकांकीकार मूल रूपेँ कुटीर-उद्योग एवं गृह-उद्योग दिस जन सामान्यक ध्यानाकर्षण कयलनि अछि। अत्याधुनिक परिवेशमे समाजमे, देशमे, पुनर्निर्माण तथा सामाजिक चेतनाक आवश्यकता अछि। एकांकीकार अपन व्यक्तिगत जीवनक व्यावहारिक अनुभवक आधारपर समाज ओ देशमे प्रचलित योजनान्तर्गत घरैया लूरिक केन्द्र-विन्दुमे निरूपित कयलनि अछि। ओ समाजक ओहि पक्ष दिस संकेत कयलनि अछि जे अत्याधुनिकताक चक्रवातमे पड़ि कौलिक क्रिया-कलापके तिलांजलि द' कए शहरोन्मुख हैबाक आकांक्षी भ' गेल अछि। किन्तु प्रयोजन अछि जनमानसमे दिशा-निर्देशनक जकर फलस्वरूप ओकर कायाकल्प कयल जा सकैछ। उचित दिशा बोधक फलस्वरूप विसुनदेव, गोविन्द मिस्त्री, सैनी ठठेरी ओ झिंगुर चमार समाजिक परिवेशमे रहि क' अपन आर्थिक स्थितिकेँ सुधारबामे सक्षम भ' सकलाह आ उन्नतिक शिखरपर चढ़ि समाजक अन्य व्यक्तिकेँ अपन कौलिक व्यवसाय दिस उन्मुख कयलनि।

मलरविमे एकांकीकार हास्य-व्यंग्यक अद्भूत धारा प्रवाहित कयलनि अछि। जहिना काव्यक क्षेत्रमे एहि प्रवृत्तिक प्रस्फुटन भेल अछि तहिना ओकर वास्तविक स्वरूप एहि एकांकीमे स्पष्ट अछि जे पण्डित लोकनि झूठक प्रपंच रहि सर्वसाधारणक शोषण करैत आयल छथि। एहिमे राउत लोकनिक तथा पंडित लोकनिक घूर्त्ततार्केँ अत्यन्त मनोरंजक ढ़ंगे एकांकीकार प्रस्तुत कयलनि अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर भारतक प्रमुख प्रवृत्ति जनसामान्यक समक्ष आयल अछि

भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचारी प्रवृत्ति हमर जीवनमे एहि प्रकारेँ प्रवेश क' गेल अछि जे ओहिसँ मुक्तिक मार्ग नहि भेटि रहल अछि। जीवनमे डेग-डेगपर एकर नग्न रूप स्पष्ट अछि तथा समाजकेँ मुक्तिक मार्ग नहि भेटि रहल छैक। जँ परिचमी-एवसर्ड नाटकक लक्ष्य द्वितीय महायुद्वोत्तर विसंगतिक चित्रण करब छल तँ स्वातन्त्र्योत्तर भारतमे उपजल करब चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार एवं नूतन अन्ध धार्मिकतापर तीक्ष्ण-व्यंग्यक प्रहार करब मैथिली एकांकीकारक लक्ष्य बनि गेल छनि। अतएव स्वातंत्र्योत्तर भारतमे उपजल चरित्र हीनता एवं भ्रष्टाचारक केन्द्र-विन्दुपर तीक्ष्ण-व्यंग्यक प्रहार कयल गेल अछि।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे हिनक *हाकिमक हाकिम वा ननदिओक नानिदमे* स्पष्ट झाँकी भेटैत अछि। एहिमे एक निर्धन संस्कृत पाठशालाक शिक्षक चित्रक माध्यमे एकांकी ओहि भ्रष्टाचारी डिप्टीक चरित्रकेँ उपस्थित कयल गेल अछि जे आकंठ भ्रष्टाचारमे डूबल अछि। डिप्टी साहेब भ्रष्टाचारक प्रतीक छथि जनिक निर्दयतासँ शिक्षक समुदाय बेचैन रहैछ, किन्तु ओ एहि विषयकेँ सर्वथा बिसरि जाइत अछि जे ओकरो ऊपर कोनो अधिकारी छैक। संस्कृत पाठशालाक शिक्षक विद्यालयसँ अनुपस्थित रहलाक कारणेँ पाँच टाका घूस डिप्टीकेँ गछैत छथि, किन्तु टाकाक अभावक कारणेँ शीघ्रहि अदा करबासँ वंचित रहैत छथि। स्कूलक वार्षिकोत्सवमे पण्डित जी चेयरमेन साहेबक सोझाँ रूपैया दैत छथि। एहि घटनासँ डिप्टी साहेब आहत भ' जाइत छथि, कारण ओ हुनक हाकिम छथिन। जहिना पारिवारिक जीवनमे ननदिक छैक, ओ अत्याचार करबामे कनेको कुंठित नहि होइछ। अतएव एकांकीकार अत्यन्त नियोजित ढ़ंगे सामाजिक परिप्रेक्ष्यमे घटित भेनिहार घटनाक चित्रांकन कयलनि अछि एहि एकांकीमे।

निर्धनता सामाजिक जीवनक अभिशाप थिक। जतय प्राचीन समयमे समाजवादी समाज छल ततय आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे व्यक्तिवादी समाजक स्थापना शनै:-शनै भ' रहल अछि। एकर श्रेय छैक पश्चिमी संस्कृति ओ सम्यताकेँ। वर्त्तमान शताब्दीक उत्तरार्द्धमे सामाजिक परिवेशमे एतेक शीध्रतासँ परिवर्त्तन भ' रहल अछि जे सामाजिक स्वरूप परिवर्तित भ' गेल अछि। व्यक्ति आब एतेक बेसी आत्म केन्द्रित भ' गेल अछि जे एकैसम शताब्दीक प्रवेश करैत-करैत अपन प्राचीन परिवेशक परित्याग करबाक हेतु विवश भ' गेल अछि। हमर सामाजिक परिवेश कतेक दूषित भ' गेल अछि तकर वास्तविकताक चित्रण एकांकीकार कयलनि अछि *दिशाबोध* एकांकीमे। सुन्दर युवावस्थाक प्रचण्ड बिहाड़िमे सामाजिक परिवेश परिवर्त्तित भ' जयबाक कारणेँ एहन दिग्भ्रमित भ' गेलाह जे अपन वृद्ध माता-पिता पर्यन्तकेँ अपन सुख-सुविधाक जिनगीमे बाधक मानैत छथि। किन्तु हुनक पत्नीपर परम्पराक छाप एतेक वेसी छनि जे आधुनिक परिवेशमे रहितहुँ ओ

अपन मर्यादाक पृष्ठ पोषिकाक रूपमे जन सामान्यक समक्ष प्रस्तुत होइत छथि। इएह कारण अछि जे हुनका अपन ससुर एवं सासुक प्रति असीम श्रद्धा ओ सद्भावना छनि। एकर पालन करबाक हेतु ओ अपन पतिक विरोध करैत छथि :

> *हम अहाँक गार्जियन किएक रहब, मुदा जे माय - बाप एतेक सिद्धति सहि क' पोसलनि - पाललनि, लिखौलनि - पढ़ौलनि, ताहि मायक वास्ते दवाइ लय अहाँ कहैत छिऐक बूढ़ा झीटय चाहैत छथि आ सिनेमामे पाइ फेकय जाइत छी से उचित थिकैक।*
>
> *(मिथिला मिहिर 16 जुलाई, 1978)*

सुन्दर पत्नीक मानसिक दशाक विश्लेषण करबामे सर्वथा असमर्थ छथि, कारण आधुनिकताक अन्हरजाली हुनका लागल छनि। तैँ पत्नीकैँ एकाकी छोड़िकैँ' सिनेमाक लाथैँ घरसँ पड़ा जाइत छथि। एकांकीकार पति-पत्नीक वैचारिक भिन्नताकैँ यथार्थक घरातलपर आनि सामाजिक परिवेशमे बदलैत मानसिकताक विश्लेषण करबामे सफल भ' पौलनि अछि। एतय ओ सामान्य पाठककैँ सोचबाक हेतु बाध्य करैत छथि जे अल्प वेतन भोगी कर्मचारीक मानसिकता आधुनिक सामाजिक परिवेशमे केहन भेल जा रहल अछि। ई मानसिकता मात्र किरानीक नहि, प्रत्युत समपूर्ण समाजक भ' गेल अछि। सुन्दरकैँ परिस्थितिक वास्तविकताक ज्ञान तखन होइत छनि जखन ओ अपन बालसंगीकैँ नूनूकैँ अपन वृद्ध माता-पिताक प्रति अगाध आत्मीयता ओ श्रद्धा देखैत छथि जे वस्तुतः अनुकरणीय एवं सराहनीय अछि। पत्नीकैँ प्रताड़ित क' कए ओ नूनूक ओतय उपस्थित होइत छथि। नूनू एम्.ए. इन फिलॉसिपी छथि तथापि ओ नौकरीकैँ परामुखापेक्षी मानैत छथि, की इएह आधुनिक सभ्यता वा सामाजिक परिवेशक उपज थिक।

सामाजिक परिवेशमे एहन लोकक अभाव नहि जे वस्तुस्थितिक यथार्थतासँ बिनु अवगत भेनहि ओकर सत्यापनक पाछाँ अपस्याँत भ' जाइत अछि। एकांकीकार *कौआ ल गेल कान* मे एहने एक घटनाक नियोजन करबाक उपक्रम कयलनि अछि। डाक्टरक पुत्र मनोज तथा धन्नूक पुत्र मोहनक विवाह अपहरण क' कए करबाक अपवाहसँ दुनू मित्र किंकर्त्तव्यविमूढ़ भ' जाइत छथि, किन्तु वास्तविकताक रहस्योद्घाटन होइत समग्र चिन्ता प्रसन्नतामे परिवर्त्तित भ' जाइछ।

हास्य-व्यंग्यसँ उब-डूब करैत हिनक एक एकांकी थिक *वाइचान्स*। शिक्षा प्रकाशसँ कोसो दुर रहलाक कारणैँ बिजलीकान्त कोना अपन पिताकैँ ठकलनि तकर यथार्थतासँ परिचय करौलनि अछि एकांकीकार। मधुकांत पुत्रक परीक्षोत्तीर्ण भेलाक कारणैँ सुनता सत्यनाराण पूजाक धूमधामसँ आयोजन कयलनि, किन्तु

यथार्थ वस्तु स्थितिसँ अवगत भेलापर हुनक मानसिक स्थिति कोन तरहक भ' जाइत छनि तकरे एहिमे उद्घाटित कयल गेल अछि।

पात्र :

पात्र एकांकी प्रणेताक मानसिक सन्तान होइछ। ओकरामे रक्त बीज संचरण करैछ। ओहिमे संकल्प-विश्वासक गोत्रता तथा जीवन दर्शनमे वंशजता रहैछ। ओकर समस्त अभिजात्य कौलिक रहैछ जकर सम्पूर्ण वर्ण शुद्व सेहो रहैछ। समग्रत: अपन प्रणेताक जीवन्त रंग-साक्षत्कारक जीवन्त रचना थिक। ओहिमे रागात्मकता आ संग सृजन-संकल्पना, नाट्यानुभव, रंग- संस्कार तथा रंग-राशिक तात्विक संधातसँ उद्भूत रंगपुत्र अछि। एकांकी प्रणेताक आन्तरिक रंगयज्ञक रंग कुण्डसँ उत्पन्न तथा वरदान रूपमे प्राप्त रंग सिद्धि रंगवंशी रंगकुमार अछि। एकांकी प्रणेताक रंग प्रक्रियामे रचनामे पात्र केहन होइछ? ओ रंग-प्रक्रियामे कतयसँ अबैत अछि ? एहि प्रश्नसँ बाँचि क' आगाँ जायब युक्ति संगत नहि होयत। एखन धरि बहुधा पात्रक गुण-प्रकार वर्ग तथा ओकरा संगक बात होइत अबैत हो, अधिकांशतः पृष्ठपेषण होइत अछि। पात्रक रंग प्रक्रियापर बड़ कम विचार भेल अछि। पात्र तँ रचनाकारक मानसिक सन्तान होइछ। रचनाकारक जीवनगत प्रतिवद्धतामे पात्रक मर्यादा थिक। ओ सेहो जीवनक प्रति ओहिना प्रतिवद्ध होथि।

हिनक पात्र योजनापर दृष्टिपात करैत छी तँ स्पष्ट भ' जाइछ जे ओ मध्य एवं निम्नवर्गीय सामाजिक परिवेशक प्रतिनिधित्व करैत देखल जाइत अछि जकरा समक्ष रोजी-रोटीक संगहि-संग अपन जीवकोपार्जनार्थ विविध समस्या सुरसा सदृश मुह बौने ठाढ़ छैक। एहि दृष्टिएँ ब्रह्मस्थान एवं घरैयालूरिक अधिकांश पात्र निम्न गमैया सामाजिक परिवेशक प्रतिनिधत्व करैत अछि। ननदिओकँ ननदि, मलरवि, दिशाबोध, वाइचान्स, कौआ ल' गेल कानक अधिकांश पात्र सेहो ओही श्रेणीमे अबैत छथि। मध्यम वर्गीय श्रेणीमे घरैयालूरिक महेन्द्र बाबू ब्रह्मस्थानक हरिवंश बाबू एवं ननदिओकँ ननदकि चेयरमैन प्रतिनिधित्व करैत छथि। उच्च वर्गक पात्रक अभाव हिनक एकांकीमे अछि।

वस्तुत: हिनक पात्रक संघर्षमे सामाजिक समायोजन (*सोसल एडजस्टमेण्ट*)क भावना सन्निहित अछि। हिनक आत्मसम्मानी पात्र अपन प्रकृतिक विरोधी नकारात्मक प्रवृत्तिक सामाजिक प्रवत्तिसँ अपन मेल नहि बैसा पबैत अछि। अतएव समायोजनक स्थितिमे ओ मानसिक आशांतिक अनुभव करैत अछि जे कोहुना ओहि मानसिक तनावसँ मुक्ति भेटय एकरा हेतु ओ अपन समायोजनक कारण भूत विरोधी प्रवृत्तिकँ परास्त करय चाहैछ। एहि प्रयासमे ओकर समाज-विरोधी प्रवृत्तिसँ संघर्ष करय पड़ैत छैक।

एहि प्रकारेँ आत्मसम्मानी पात्रक संघर्ष सामाजिक समायोजनक दिशामे कयल गेल एक प्रयास थिक। इएह हुनक अन्त:स्थ सामाजिक प्रेरणाकेँ व्यावहारिक क्षेत्रमे आनि क' उपस्थित क' दैत अछि। एहन संघर्षमय प्रयासक फलस्वरूप आत्मसमानी पात्रक व्यक्तित्व निर्मित्त भेल अछि जे हिनक मिथिलांचलक समाजक एकांकीक अनुपम देन थिक। *ब्रह्मस्थानक* पचकौड़ी एही श्रेणीक पात्र अछि जे अपन आत्म-सम्मानक रक्षार्थ ब्रह्मस्थानकेँ कोड़ि क' हुनक अस्तित्वकेँ मेटैबाक लेल तैयार अछि।

सत्ता आँखिक सोझाँ नव-दर्शनक निर्माण करैत अछि जहिमे एकमात्र *स्व* रहैत अछि। स्वार्थान्ध सत्ताकेँ जीवित रखबाक हेतु मदति कयनिहार व्यक्ति आत्मकेन्द्रित बनि जाइत अछि। किन्तु ओकरा संधर्ष ओ करैत अछि जकरा लोकतन्त्रमे विश्वास एवं निष्ठा छैक। जे व्यक्ति सत्ताक विरोधमे नारा लगबैत अछि तकरापर विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ैत छैक। तथापि नैतिकता आ सत्ताक बलपर व्यक्तिक मनोबल बढ़ैत छैक आ असत् वृत्तिक संरक्षक कालजयी सेहो सद्वृत्तिसँ डेराय लगैत अछि। एहि प्रकारक जन-जागृतिक कार्य एकमात्र साहित्ये द्वारा संभावित अछि। हरिवंश बाबू गामक मुखिया छथि तेँ हुनक आज्ञाक बिना गामक एक पात पर्यन्त नहि हिल पबैत अछि। ओ एतेक वेसी स्वार्थान्ध छथि जे ओ अपन स्व क पूर्तिक निमित्त निरीह सुगियापर प्रहार करबामे कनेको कुठित नहि होइत छथि, कारण ओ हुनकर बेटा नूनू बचबाक आज्ञाक उल्लंघन कयलक अछि, जाहिसँ हुनका चोट पहुँचैत छनि। यद्यपि ओकर बेटा मखना अठारह दिनसँ ज्वराक्रान्त छैक माया, मोह, तथा ममता नामक कोनो वस्तु हुनक अन्तरात्मामे नहि छनि। तेँ निर्दयता पूर्वक व्यवहार करैत छथि जकर परिणाम अत्यन्त भयावह होइछ।

जाहि ग्रामांचलमे अशिक्षा एवं अन्ध श्रद्धाक प्रभाव रहत ओतय निर्धनता तथा शोषणक परम्परा निश्चित रूपेँ रहतैक। अधंश्रद्धाक प्रतीक छथि पंचकौड़ी तथा हुनक पत्नी सुगिया जे ब्रह्मस्थानपर कबुला पाती क' कए मखनाक नीके होयबाक कामना करैत अछि। शोषित वर्गमे एकता अवश्य अछि तथापि ओ अन्यायसँ डेरायल रहैत अछि, किन्तु ओहिसँ मुक्त होयबाक इच्छा अवश्य रखैत अछि। मुदा सामाजिक परिवर्त्तित परिवेशमे से सम्भव नहि भ' पबैत अछि।

वर्त्तमान परिवेशमे एक दोसराक उपयोग करबाक पाछाँ बेहाल अछि। एहि लेल कोनो तरहक योग्यता अपेक्षित नहि, प्रत्युत एक हथकण्डाक प्रयोजन अछि। मुदा एतबा निश्चित अछि जे लोक अपन लाभक लेल ओकर उपयोग दोसरापर करैत अछि। ई परम्परा समाजमे सतत चलैत रहैत अछि। एक बेर आक्टोपसक शिंकजामे पड़ि गेलापर वापसीक मार्ग अवरूद्द भ' जाइत छैक। *घरैयालूरिक*

महेन्द्र बाबू आ *ब्रह्मस्थानक* हरिवंश बाबू एही श्रेणीक पात्र छथि। जतय महेन्द्र बाबू अहि श्रेणीक प्रतिनिधि छथि जे शोषित वर्गक शोषण सूदिपर रूपैया लगा क' करैत छथि, आ समाजक साइलॉक सदृश छथि जे खदुकाक कोंढ़-करेज पर्यन्तख खोरबामे कनियो कुठित नहि होइत छथि ततहि हरिवंशबाबू एक अहंकारी व्यक्ति छथि, जे शोषित वर्गपर अत्याचार करैत छथि। यद्यपि शोषित समाज हुनका सभक गतिविधिसँ पूर्णरूपेण परिचित अछि तथापि बेर-घड़ीपर वैह काज अबैत छथिन तँ विरोध करबाक प्रश्ने ने उठैछ।

अत्यल्य पात्रक प्रयोग क' कए दिशाबोध एकांकीक रचना एकांकीकार कयलनि। एहिमे कुल चारि पात्र अछि। नूनू हुनक वृद्ध पिता, सुन्दर तथा हुनक युवती पत्नी। हमर सामाजिक परिवेशक उक्त चारू पात्र मानसिक विश्लेषण करबामे सक्षम भेलाह अछि। आधुनिक सामजिक परिवेशक प्रतीक छथि सुन्दर जे भौतिकवादी युगमे अपन जीवनकेँ सुखी-सम्पन्न सानन्दित बनयाबामे निम्नसँ निम्न स्तरपर जा सकैत छथि। किन्तु युवती पत्नीक विद्रोही तेवर एतेक बेसी प्रखर अछि जे हुनका सोझाँमे ओ अँटकि नहि पबैत छथि। किन्तु नूनू कर्तव्यनिष्ठ पात्र छथि जे एम.ए. इन फिलॉसफी रहितहुँ अपन कर्त्तव्यपरायणता संगहि संग पितृ एवं मातृभक्तिकेँ अपन पुनीत कर्त्तव्य बुझैत छथि। ओ दिग्भ्रमित सुन्दरकेँ आदर्श जीवन एवं कर्त्तव्यपरायणता पाठ अपन व्यवहारसँ पढ़ा क' दिशाबोध करबैत छथि। नूनूक चरित्रसँ शिक्षित भ' कए सुन्दर अपन संग मायक इलाजक लेल तत्परता देखायब अपन पुनीत कर्तव्य बुझैत छथि। एकांकीकार दिग्भ्रमित सामाजिक परिवेशक जे वास्तविक मानसिकता भेल जा रहल अछि तकर यथार्थतासँ जन सामान्यकेँ परिचित करयबाक प्रयास कयलनि अछि जे आधुनिक परिवेशमे उपेक्षणीय नहि प्रत्युत ग्रहणीय अछि।

संवाद :

रंग रचना चाक्षुष यज्ञ थिक तथा रङ्गानुष्ठान ओकर कर्मकाण्ड। संवादक ऋचा स्तवनसँ युग पुरुषकेँ साक्षात् कयल जाइत अछि। रंगानुभव यज्ञ पुरुषक एहि गायित्री गायनसँ अवगाहन पबैत अछि आ सम्पूर्ण रंगकर्ममे प्रत्यक्ष होइत अछि। अतएव संवादक मन्त्रोचारसँ रंग कर्मक साक्षात्कार होइत अछि। एहि ऋचा गायनक निश्चित व्याकरण अछि। एहि प्रकारेँ संवादक प्रस्तुतीकरणक सेहो एक संहिता अछि जे ओहिमे निहित अछि। संवाद रंगानुभवक आत्मज थिक। संवाद रंग कर्मक व्यवहार ओ आचारण थिक निर्देशक, सूत्रधार ओ रंगकर्मीक संवादमे रंगकर्म, मंचन आ अभिनयक दिशाक अन्वेषण करैत छथि। कारण संवादक प्रत्येक शब्द, वाक्य रंगसिद्धिमे रहैत अछि। अतएव पूर्ण संवाद रचनामे एक तँ प्रत्येक शब्दसँ रंगकर्मक किरण फुटैत अछि, दोसर सम्पूर्ण संवाद एहन रंगसिद्ध

शब्दक अनुशासित समन्वयसँ एक एहन आलोक विम्ब प्रस्तुत करैत अछि जे रंगकर्मक दिशा संकेत करैत अछि।

संवाद पात्रक बहुविधि व्यक्तित्वक दर्पण थिक, ओकर विधायिका चारित्रिकताक समानुपातिक विकासक मानदण्ड थिक। संवाद रचनामे नाटकक प्रणेताक अत्यन्त कठिन भूमिका रहैत छनि। हुनका एकहि संग विविध पात्रक भूमिकामे उतरि क' ओकर मनःस्थितिक अनुरूप संवाद रचना करय पड़ैत छनि। कतहु संवाद आरोपित नहि लागय, पात्रक प्रकृति ओ रंगवेदनाक प्रतिकूल नहि हो जकरा सतत ध्यानमे राखय पड़ैत छनि।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्यमे हिनक संवाद योजनापर दृक्पात कयलापर स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे ओ प्रत्येक पात्रक संवाद-योजना ओकर परिस्थितिक अनुकूलहि निरूपण कयलनि अछि। प्रहसनमे जतय हास्य-व्यंग्यक प्रमुखता रहैत अछि ततय ओ तदनुरूपहि संवाद-योजना कयलनि अछि। हिनक प्रत्येक संवाद एहन बुझना जाइछ जेना ओ स्वयं पात्रक रूपमे उपस्थित भ' कए अपन बात ओकरा मुहे कहयबाक प्रयास कयलिन अछि। हिनक एकांकी ओ प्रहसनक एक विशेषता अछि जे एकांकीकार ओहिमे पात्रोचित भाषाक संगहि-संग ग्राम्य भाषाक प्रयोग एतेक सहजताक संग कयलनि अछि जकर परिणाम भेल अछि जे हिनक भाषा-शैली अत्यन्त मर्मस्पर्शी बनि गेल अछि। यद्यपि ई संस्कृतक पण्डित छिथ जनिका तत्सम शब्दक प्रयोग करबामे विशेष आभिरुचि रहबाक चाही, किन्तु ई भाषा प्रयोगमे एतेक, उदारचेता छथि जे हिनक चाहे काव्य भाषा हो चाहे गद्यभाषा हो ओहिमे ठेंठसँ ठेंठ शब्दावलीक एतेक प्रचुर परिमाणमे प्रयोग करैत छथि जे पाठकक मर्मकेँ स्पर्श करबामे सहायक होइत अछि। जतेक दूर धरि एकांकी ओ प्रहसनमे भाषा प्रयोगक प्रश्न अछि ओहि परिप्रेक्ष्यमे निर्विवाद रूपेँ जा सकैछ जे लोकोक्तिक प्रयोग करबामे ई महारथ हासिल कयने छथि जे पाठकक ध्यानाकर्षित करैत अछि। प्रहसन ओ एकांकीक भाषाशैली वा संवाद योजना प्रस्तुत करबाक शैली एतेक सक्षम अछि जे नेपथ्यमे कोनो प्रकारक आडम्बर करबाकक प्रयोजन नहि पड़ैछ। रंगमंचक व्यवस्थाक एहन संकेत पात्रक माध्यमे देलनि अछि जे ओकर भूमिकाक नहि निर्माण करैछ। पात्र जखन परस्पर वार्तालाप करैछ तखन अपन मौन, आवेग, स्थिर दृष्टिएँ, कखनो-कखनो हँसि क' कखनो- कखनो बीचमे रूकि क' नाटकीय प्रभाव गम्भीर बना दैत अछि। एहि प्रकारेँ मंचीय सम्भावनासँ परिपूर्ण हिनक प्रहसन ओ एकांकी सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्याकेँ जहिना-तहिना प्रस्तुत कयलक अछि।

मिथिलांचलमे प्रचलित मुहावरा ओ लोकोक्तिक प्रयोगमे हिनक काव्य भाषाक संगहि-संग गद्यभाषाक वैशिष्ट्य अछि। हिनक एहि प्रवृत्तिक प्रतिफल प्रहसन ओ

एकांकीमे सेहो उपलब्ध होइत अछि जकर किछु बानगीक अवलोकन कयल जा सकैछ यथा पेट काटि क' पोसल पूत सैह कहै फलनामा भूत, परिलागब, दाँत निचोड़ब, हक्कर पेलब, जीक पातर, नडो-चडो करब, मनक मनोरथ मनहि बिलटल, आन करैत आन भेल हो रामा, गाल लगायब, अमार लगायब, बहिरा नाचे अपने तालेँ, कुकुर माछी काटब, रनरनायब फिरब, बडौर लगाएब, भोथहा कलम, सनक सवार, मन लोहछब, गुमाने फाटब, पाँतरमे पड़ब, काछर काटब वंश कुड़हरि, नुड़िऐल फिरब, कन्ही गायकेँ भिन्ने बथान, कटहरमे नेढ़ा लगाएब, भौँडो छुड़ल ओ पेटो नहि भरल, सोनक दोस की सोनारक दोस, पहाड़ ढ़ाहब, छौड़ी सिखाबय बूढ़, दादीकेँ बुड़िसटही, खोप सहित कबुतराय नमः, रड़ धुम्मस करब, दम्म ने दुस्सा खाली बात पकठोस, गप्पीक खरिहान, दूरक ढ़ोल साहओन, पेट छूटल गोनू झाक ढ़ाकी, कनहा नछत्तर, नाक दम ठेकब, यमराजक पित्ती, आँखि गुड़रब, कमला कातक दड़ारि जकाँ मुह बायब, जीवइ छी ने मरइ छी हुकुर-हुकुर करइ छी, भोकना बिलाड़, सुखि क' टिटही, फिफिआइत रहब, छुहुक्का उड़ब, खगल लोक, डाँर पीठ एक्कठा होयब, हक लिलो भेल फिरब, खगले लोक की ने करय, पेट पहाड़, सुरता लागब, घूड़ घूआँ करब, टही लागब, लते पत्त दौड़ब, जोगार धरायब, छप्पन छूरी चमकायब, कबुला करब, जिन्न पोसब, आँखि फुटब, एक बजा बय सतरह आबे, अकाश ठेकब, साटिधट राखब, लटारहम करब, खेखनियाँ करब, कुर्रकाई करब, ऑंटागील करब, उत्तम खेती मध्यम वान, अधम चाकरी भीख निदान, हाथ पकड़ब, सेवा सँ मेवा पायब, कौआ ल' गेल कान, इयादि। एहिसँ स्पष्ट भ' जाइछ जे हिनका भाषापर अद्भुत अधिकार छनि तथा पात्रक मुहे सुनैत देरी दर्शककेँ स्वयं आत्मबोध भ' जाइत छैक।

एकांकी एवं प्रहसनक भाषा अन्य साहित्यिक विधादिक तुलनामे एक पृथक संस्कारसँ संयुक्त अछि। यथार्थक आग्रह कारणेँ ओकरा सामान्य जीवनक बोली वर्णक भाषासँ निकट होयब अनिवार्य अछि। हिनक एकांकी ओ प्रहसन सामान्य भाषाक भीतरहिसँ संचरित संस्कारित भेल अछि। एहि रूपमे एकांकीक वस्तुक लेल तथ्ये नहि करैछ, प्रत्युत सम्पूर्ण रचनातन्त्रक निर्माण सेहो करैछ। वस्तुतः हिनक एकांकी ओ प्रहसनक भाषा सम्पूर्ण सम्प्रेषणक भाषा थिक जाहिमे एक-एक शब्द कहल गेल अछि ओ महत्वपूर्ण नहि महत्वपूर्ण अछि एक समग्र प्रभाव आ ओ जे नहि कहल गेल अछि, जे, ध्वनित-व्यंजित मात्र कयल जाइत अछि। भाषा हिनक व्यक्तित्वमे रचल-बचल छनि जे सामजिक परिवेश, मानिसक चेतना सब मिलि क' हिनक भाषिक प्रतिभाक निर्माण करबयमे सहायक भेल अछि। हिनक सर्जनात्मक बोध, चयन ओ संयोजनक सायास आग्रह सामान्यसँ विशिष्ट बना देलनि अछि।

गीत :

अमर मूल रूपैं कवि छथि तैं एकांकीमे सेहो स्थल-स्थलपर हिनक काव्य प्रतिभाक प्रस्फुटन भेल छनि जकर प्रतिफल घरैयालूरि, हाकिमक हाकिम एवं श्रमदानमे सेहो हिनक काव्य-प्रतिभासँ पाठक एवं दर्शक परिचित होइत अछि घरैयालूरिमे ढ़ोलक झालिपर गबैत एक मण्डली प्रवेश करैत अछि जकर विषय-वस्तु थिक राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा देखाओल गेल गृह-उद्योग एवं कुटीर-उद्योग, तकर महत्तापर प्रकाश देल गेल अछि। एहि एकांकीमे प्रयुक्त गीतक महत्व मूलस्वर थिक जनसामान्यकैँ एहि दिस आकर्षित करब। हाकिमक हाकिम वा ननदिओक ननदिमे सहो उक्त परम्पराक पालन कयल गेल अछि, जखन मिडिल स्कूलक प्रागंणमे चेयर मैन साहेब उपस्थित भ' छात्र लोकनिकैँ वार्षिकोत्सवक अवसरपर पारितोषिक देबाक लेल जाइत छथि तखन हुनक स्वागतार्थ स्वागतगानक आयोजन कयल जाइत अछि। श्रमदान एकांकीमे सेहो एहि परम्पराक निर्वाह कयल गेल अछि। स्वयं सेवकक दल कान्हपर कोदारि आ हाथमे छिट्टा ल' कए श्रमक महत्ताकैँ प्रतिदिन करैत मातृभूमि भारत माताक आह्वान करैत छथि जे मानवतापर दानवताक स्पष्ट झाँकी भेटि रहल अछि। एहन विषम स्थितिमे दलितक उद्धारक हेतु एहिसँ उत्तम साधन आ की भ' सकैछ ? श्रमक माध्यमे हमरा सभक उद्धार संभावित अछि। एहिसँ प्रेरित भ' कए गबैया सब मिलि क' देशक निर्माण, अपन भाग्यक निर्माण तथा भावी संतानक भविष्य निर्माणक हेतु कोसीक वन्दना करैत देखल जाइत छथि जाहिमे मातृभमिक कल्याणार्थ क्रान्तिकारी डेग उठबैत विश्व बन्धुत्वक भावनासँ प्रेरित भ' कए अबला-वृद्ध वनिता देशक नव-निर्माणक हेतु सन्नद्ध भ' जाइत छथि जे त्याग तस्पया, आलस्य, भय, आदिक परित्याग क' देशक निर्माणमे लागि जाथि। उपर्युक्त तीनू एकांकी गीतक शब्द-विन्यास संगीत परम्परानुरूप अछि।

उद्देश्य :

चन्द्रनाथ मिश्र अमरक जतबे एकांकी ओ प्रहसन प्रकाशमे आलय अछि ओहिमे एकांकीकार मिथिलांचलक परिप्रेक्ष्यमे जाहि सामाजिक समस्यादिकैँ प्रस्तुत कयलनि अछि ओ मात्र मिथिलांचलेक समस्या धरि सीमित नहि अछि, प्रत्युत सम्पूर्ण भारतवर्षक ओहि सामाजिक परिवेशक समस्या थिक जाहि परिवेशमेभारतीय निम्न एवं मध्यवित परिवार गुजर बसर करैत अछि। हमरा जनैत एकांकी ओ प्रहसनक रचनाक पाछाँ एकांकीकारक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहलनि अछि जे एकरा माध्यमे मिथिलांचक सामाजिक परिवेश पुनर्निर्माणक संगहि-संग समाजमे एक एहन चेतना आनब जाहिसँ जर्जरित समाजक कायाकल्प कैल जा सकय। एक सफल

शिक्षक होयबाक कारणेँ व्यावहारिक जीवनक अनुभवक आधारपर एक युगद्रष्टा साहित्कार सदृश ओ इएह सन्देश देबाक उपक्रम कयलनि जे शिक्षा जगतमे आमूल परिवर्त्तन, परिवर्द्धन ओ परिमार्जनक प्रयोजन अछि। एहि पृष्ठभूमिमे ओ अपन एकांकी ओ प्रहसनक विषयवस्तुक चयन कयलनि जे व्यावहारिक जीवनमे जनसामान्यक हेतु लाभप्रद सिद्ध भ' सकय।

प्रत्येक व्यक्तिक जीवनक एक सुनिश्चित उद्देश्य होइछ। ओहि ध्येयक प्राप्तिक हेतु व्यक्ति सब किछु तन-मन-धन समर्पित क' दैत अछि। पुस्तक मनुष्यक गुरु एवं मित्रक संगहि सब किछु अछि। ओहिसँ फराक रहि क' मनुष्यकेँ सुखक अनुभूति नहि भ' सकैछ। मृगतृष्णाक पाछाँ-पाछाँ दौड़लासँ मनुष्यकेँ मात्र थकाने होइत छैक। किन्तु पुस्तकमे व्यस्त रहलापर मानसिक समाधान ओ ज्ञानक संगहि सम्मान भेटैछ। अतएव समाजसँ किछु माँगबाक लालसासँ नीक थिक जे अध्ययन-अध्यापनक सत्य दुनिया अपनायब राजमार्ग थिक। चन्द्रनाथ मिश्र अमरक विफुल साहित्य साधनाकेँ देखि प्रतिभाषित होइत अछि जे हिनक साहित्य साधना निशिचत रूपेँ हिनक राजमार्ग छनि जकरा अनुसरण क' कए एतेक अवदान मैथिली साहित्यकेँ श्रीवृद्धि बनयबामे द' पौलनि ओ जाहि सामाजिक परिवेशक प्रश्न एकांकी ओ प्रहसनमे उठौलनि ओ निश्चित रूपेँ मिथिलाक पृष्ठभूमिमे एक अभिशाप थिक।

ब्रहास्थान एक उल्लेखनीय एकांकीक रूपमे पाठकक समक्ष अबैत अछि जाहिमे एकांकीकार निम्नवर्गीय गमैया समाजक प्रतीक रूपमे सुगिया ओ पंचकौड़ीकेँ प्रस्तुत क' कए ई जनयबाक उपक्रम कयलनि अछि जे युग-युगसँ सीदित अछि, पीड़ित अछि, जकरापर अत्याचार तँ अवश्य होइत छैक, किन्तु अपन आक्रोशकेँ गामक मुखिया हरिवंश बाबूपर नहि प्रकट क' कए ब्रह्मस्थानपर प्रकट करैत अछि जे भगवान सेहो शोषक वर्गक संग मिलि क' अत्याचार करबामे सहयोग देबामे कनेको कुंठित नहि होइत छथि। जाहि समाजमे अशिक्षा ओ अन्धश्रद्धाक प्रभाव छैक ओतय गरीब तथा मजदूरक शोषणक परम्परा बनि क' रहि जाइत अछि। ओकर मानसिकता एहन छैक जे ओ ने तँ भगवानक विरोध क' सकैत अछि आ ने शोषक वर्गक प्रतिनिधि बनि क' मूक रहि सकैछ। ओ अन्यायसँ डेरायल अछि तथा ओहिसँ मुक्ति पयबाक आकांक्षी सेहो अछि। एतय संघर्ष दोसर पक्ष सेहो अछि जे मुखिया एहि अन्यायक एक पुर्जा मात्र अछि।

सामाजिक यथार्थ विषयक चयन करबाक पाछाँ चन्द्रनाथ मिश्र अमरक मुख्य उद्देश्य छनि समाज-सुधार तथा जनसामान्यकेँ एहि दिस आकार्षित करब। एकांकीकार समाजक अन्यायपर प्रकाश द' कए जनसामान्यमे चैतन्य उत्पन्न कयलनि अछि। ओना तँ सभ देशक नाटकककार सामाजिक विषयकेँ आधार बना क' कतिपय एकांकी ओ प्रहसनकार रचना कयलनि अछि जे पाठक वा दर्शकक

आकृषणक केन्द्र बनल अछि। भारतीय एकांकीकार ओ प्रहसनकार सामाजिक यथार्थक पूर्ण उपयोग कयलनि। प्रस्तुत एकांकीकार सामाजिक विषयक आधार बना क' सुधार करबाक दिशामे प्रयास कयलनि। ओ मिथिलांचलक सामाजिक जीवनमे विस्तृत कुरीतिकेँ देखलनि तथा ओहिपर व्यंग्यात्मकताक शैलीमे प्रहार कयलनि। एकांकीकारक सुधारक वृत्तिक परिणाम स्वरूप समाजक जीवैत-जगै चित्र जनसाधारणक सोझाँ प्रस्तुत भेल तथा नवीन भावनाक विकासक लेल मार्ग प्रशस्त भेल। समाजक परिष्कार भावनासँ प्रेरित भ' कए ओ एकांकी एवं प्रहसनक रचना कयलनि तथा सामाजिक परिवेशक अन्तर्गत वर्गगत बिडम्बनाकेँ नष्ट करबाक उद्देश्यसँ ओ हास्य-व्यंगयकेँ प्रमुख साधन बनौलनि।

संभवतः एहि वास्तविकतासँ अवगत नहि रहलाक कारणेँ डॉ. दुर्गानाथ झा श्रीश (1929-2000) मैथिली साहित्यक इतिहास (1991)मे हिनकापर जे आरोप लगौलनि जे हिनक एकांकी जाहि प्रचार-प्रसारक स्वर अत्यन्त प्रमुख भेलासँ प्रत्येक एकांकी, सरकारी प्रचार साहित्य जकाँ लगैत अछि (पृष्ठ-301)। हमारा दृष्टिएँ दुर्गानाथ झा श्रीशक ई कथन सर्वथा दिग्भ्रमित विचार थिक, कारण साहित्यक प्रमुख उद्देश्य होइछ जे समाजमे घटित भेनिहार घटनाक यथार्थ पाठक ओ दर्शककेँ अवगत करायब, समाजक अभावमे साहित्य महत्वहीन भ' जाइछ। एकांकीकार समाजक यथार्थक चित्रण क' वास्तविकतासँ अवगत करयबाक प्रयास कयलनि जे सर्वथा ग्रहणीय अछि, अनुकरणीय अछि, कारण हुनक एकांकी ओ प्रहसनक विषय-वस्तु समाजोन्मुखी तथा समयक जे माँग छल तकरा परिप्रेक्ष्यमे लिखल गेल अछि।

नि:सारण :

चन्द्रनाथ मिश्र अमर अपन प्रहसन ओ एकांकीमे हास्य-व्यंग्यक अवतारणाक लेल विविध पात्र एवं परिस्थिति कथा-वस्तुमे नियोजित कयलनि अछि, कारण हुनक समसायिक सामाजिक परिवेशक अन्तर्गत एही प्रकारक ज्वलन्त समस्या छल जकर ओ अत्यन्त सूक्ष्मताक संग विश्लेषण कयलनि। प्रहसनक कथा अतिरंजित होइत अछि आ प्रहसनक पात्रक विविध क्रियाकलाप सेहो दर्शककेँ हँसबैत अछि। यद्यपि प्रहसन उहपासात्म होइत अछि तथापि ओहिमे सुधारक भावना सन्निहित रहैत अछि जे हिनक प्रहसनक केन्द्र-विन्दु थिक।

एकांकीमे सामाजिक समस्याक विभिन्न पहलूकेँ ओ प्रभावोत्पादक शैलीमे प्रभावशाली ढंगसँ प्रस्तुत कयलनि अछि।एकांकीकार यथास्थान सहज स्फूर्तिसँ मार्मिक विचारकेँ अभिव्यक्त कयनिहार ग्राम्य भाषाक माध्यमे प्रस्तुत कयलनि। हिनक एकांकी ओ प्रहसनक भाषा तथा ओकरा प्रस्तुत करबाक शैली एतेक सक्षम

अछि जे नेपथ्यमे कोनो प्रकारक आयोजनक प्रयोजने नहि पड़ैछ। ई एकांकी ओ प्रहसनमे रंग-व्यवस्थाक एहन संकेत पात्रक माध्यमे देलनि अछि जाहिसँ एकर भूमिका निर्माण स्वयं भ' जाइछ। एक पात्र दोसरा संग वार्तालाप करैत अपन आवेग, मौन एवं स्थिर दृष्टिएँ बीच-बीचमे रूकि क' नाटकीय प्रभावकेँ गम्भीर बना देलनि अछि। एहि प्रकारेँ मंचीय सम्भावनासँ परिपूर्ण हिनक ओ प्रहसनक सामाजिक जीवनक यथार्थताक विभिन्न समस्याकेँ एहि प्रकारेँ रू-ब-रू प्रस्तुत कयलनि अछि जाहिसँ ओ लोकनि बिनु भेने नहि रहि सकैछ। हिनक एकांकी ओ प्रहसनक भाषामे सूक्ष्मता एवं प्रत्यक्षता अछि।

चन्द्रनाथ मिश्र अमर अपन समसामयिक जीवनक दैनिक, आर्थिक सामाजिक समस्याकेँ विचार प्रधान ढंगसँ सोझरयबाक प्रयास कयलनि। ओ काल्पनिक जीवनसँ हरि क' यथार्थक सहरजमीनपर अयलाह। कथानक, पात्र, चरित्र चित्रण, भाषा, वेशभूषा, सभमे यथार्थताक प्रति अभिरुचि हिनक एकांकी ओ प्रहसनक विशिष्टता अछि। यथार्थवादी प्रगतिशील समस्याकेँ ओ एकांकी एवं प्रहसनमे स्थान देलनि। ई नाटकीय भाषाक संस्कार कयलनि, नव भावक संजीविनी ओकरा देलनि एवं कलाक विभिन्न रूपमे सार्थक प्रयोग कयलनि तथा वर्त्तमान मैथिली गद्यकेँ दिशा देलनि। हिनक एकांकी ओ प्रहसनमे रस-निष्पत्ति स्वयं होइत अछि। विशेषत: हास्य-व्यंग्यक ई मैथिलीमे सिद्धस्त लेखक छथि जकर प्रतिरूप हिनक समग्र साहित्यमे उपलब्ध होइत अछि। हिनक एकांकी ओ प्रहसन आभिनयोपयोगी अछि जकरा प्रस्तुत करबाक हेतु कोनो तामझामक आयोजनक प्रयोजन नहि पड़ैछ। हिनक एकांकी-प्रहसन जहिना पठनीय अछि तहिना अभिनीय सेहो। एहि प्रकारेँ हिनक एकांकी-प्रहसनक माध्यमे मिथिलांचलक सामाजक समस्त सामाजिक जीवनक झलक भटैत अछि जे विविध रूपमे प्रत्यक्षीकरण भ' जाइत अछि।

* * *

मायानन्दक रेडियो शिल्प

समय परिवर्त्तनशील अछि, जकर प्रभाव अभिव्यक्तिक माध्यम पर पड़ैछ आ साहित्यक स्वरूप विधान सेहो परिवर्त्तित भ' गेल। अभिव्यक्तिक परिवर्त्तनक फलस्वरूप नाट्यक रूप-विधान पूर्णत: परिवर्त्तित भ' गेल अछि। रेडियो रूपक आहने सुंदर पाठ्य सामग्री भ' सकैछ जेना संस्कृतक अमर कवि अपन नाटकक सभमे देलनि। रेडियोक आविष्कारक फलस्वरूप रेडियो-रूपककेँ जकरा दृश्य काव्यक अन्तर्गत गणना कयल जाइत छल ओ आब श्रव्य-काव्यक श्रेणीमे परिवर्त्तित भ' गेल अछि। रेडियो-रूपक एक नवरूपमे हमरा समक्ष आयल अछि। जाहि कला कृतिकेँ रंगमंचपर प्रेक्षकक समक्ष प्रस्तुत कयल जाइत छल ओ आब स्टूडियोमे अभिनीत भ' कए श्रोताक कान धरि पहुँचि गेल अछि। पूर्वमे नाट्य-प्रेमी नाटकक समक्ष प्रस्तुत होइत छलाह, किन्तु आब नाटकक हुनका समक्ष प्रस्तुत होमय लागल अछि। आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे प्रेक्षक मात्र श्रोता रहि गेल अछि आ रेडियो सम्पन्न आ विभिन्न घरक प्रेक्षागृह बनि गेल अछि।

वस्तुत: रेडियो रूपक रंगमंचीय नाटकक दृश्य-पक्ष हैबाक कारणेँ शुद्ध शब्दमे निहित भावना पक्षमे कतहु-कतहु अवरोध आबि सकैछ ओतय रेडिया-रूपकमे भावना पक्ष निर्वाध गतिशील रहैछ। रेडियो-रूपक पूर्णत: श्रव्य काव्यथिक।ध्वनि एकर मूलभूत अपार थिक ध्वनि भावाव्यक्तिक सशक्त साधन थिक। जे कार्य चित्रकारमे रंगक माध्यमे करैछ रेडियो रूपककार आ प्रस्तुतकर्ता ध्वनिक माध्यमे करैछ। एडवर्ड सेकविल वेस्टक कथान छनि जे आत्यन्तिक नमनीयता आ काल्चनात्मक सांकेतिकताक शक्तिक कारणेँ ई रंगमंच आ चित्रपटसँ अधिक नाटकीयताक सृष्टि करैत अछि।

अभिव्यक्तिक माध्यमक परिवर्त्तनक प्रभाव मैथिली साहित्य चिन्तक मनीषी लोकनिपर सेहो पड़लनि कारण समयक जे माँँग छलैक ओहिसँ साहित्य मनीषी लोकनि कोनो निरपेक्ष रहि सकैत छथि। एकर परिणाम भेल जे मैथिली साहित्यमे रेडियो-रूपकक रचनाक शुभारम्भ भेल तथा बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे ई विधा पूर्ण विकसित भ' गेल जकर प्रभाव रचनाकार लोकनिपर पड़लनि।

स्वातंत्र्योत्तर काल मैथिली भाषा आ साहित्यक हेतु उत्थान कालक रूपमे जानल जाइत अछि, कारण कतिपय साहित्य-चिन्तक प्रादुर्भाव भेल जे मनसा-वाचा-कर्मणा अपन मातृभाषाक उन्नयनार्थ साहित्यिक गतिविधिमे सहयोग देलनि ताहि

परिप्रेक्ष्यमे वर्त्तमान शताब्दी पल्लवित-पुष्पित भ' रहल अछि। मैथिली भाषा आ साहित्यिक क्षेत्रमे गत शताब्दीमे क्रान्तिक बीज वपन भेल जे साहित्यिक गतिविधिकेँ दिश संकेत करबामे सहायक सिद्ध भेल। कतिपय साहित्य सेवी तपः सपूत नव स्फूर्ति आ नव स्पन्दनक संग साहित्य ओ भाषाक सम्वर्द्धनमे अपन अभूतपूर्व साहित्यिक अवदानक संग प्रवेश कयलनि जे साहित्यक स्रोत एक नव स्पन्दनसँ भरय लागल तथा ओहिमे जे अभाव छल तकर पूत्यर्थ रचनाधर्मी साहित्य चिन्तक अत्यंत लगनशीलता आ तन्मयताक संग एकर सम्वर्द्धनार्थतत्पर भेलाह जकर परिणाम भेल जे मातृभाषाक विशाल भण्डार केँ भरबाक निमित्त ओ सब कृत संकल्प भेलाह।

गत शताब्दीक चतुर्थ दशकमे मातृभाषाक उन्नयनार्थ एक नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा सम्पन्न साहित्य चिन्तकक प्रादुर्भाव भेल जे उपन्यासकारक रूपमे कथा-कारक रूपमे, गीतकारक रूपमे आ समीक्षकक रूपमे सम्पोषित कयलनि ओ छथि मायानन्द मिश्र (1934) जनिक अक्षय कृतिसँ मैथिली पाठक नीक जकाँ परिचित छथि; किंतु ओ एक विशिष्ट रेडियो-रूपककार सेहो छथि तकर परिचय अद्यापि नहि भेटि पौलनि अछि तकर दोषी मैथिलीक इतिहासकार आ आलोचक छथि। एहि प्रसंगमे इतिहासकार आ आलोचक सर्वथा मौन छथि। ने जानि किएक ई एक अनुत्तरित प्रश्न अछि। रेडियोमे जीविकापन्न करबाक कारणेँ ओ समय-समयपर भवानन्दक नामे रेडियो-रूपकक रचना कयलनि। हिनक पाँच रेडियो-रूपक अद्यापि हमरा दृष्टिपथपर आयल अछि ओ थिक*, एके बापक बेटा, नवलोकः नवगप्प, गुड़-चाउर, अपन आन आ इतिहासक विसरल (अभियान-2)* शेष चारू अद्यापि अप्रकाशित अछि, किन्तु सभक प्रसारण आकाशवाणी पटनासँ भेल अछि।

जीवकोपार्जनार्थ मायानन्द आकाशवाणी पटनाक चौपाल कार्यक्रमसँ विगत अनेक वर्ष धरि सम्वद्ध रहलाह तँ हुनका समय-समयपर रेडियो रूपकक रचनाक प्रतिवद्धता रहलनि। ओ रेडियो-रूपकक शिल्पक सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्षक सूक्ष्मताक संग अध्ययन कयलनि। हिनक उपलब्ध रेडियो रूपकमे हमर पारिवारिक, सामाजिक आ ऐतिहासिक पहलूक चित्रण भेल अछि। कलाकार युग-जीवनक प्रति अधिक जागरूक रहैछ तथा ओकर प्रयास रहैछ जे संसारकेँ खुजल आँखिए देखय। मायानन्द सजग मानवतावादी कलाकार छथि तँ ओ युगीन समस्याक प्रति अपन जागरूकता देखौलनि। आधुनिक आर्थिक वैषम्यसँ उत्पन्न रिक्तताक स्थिति, समाजक मध्यवर्गीय लोकक वेरोजगारी, ओकर दुर्दशा, सामाजिक यथार्थ आदिकेँ ओ अपन रेडियो रूपकमे चित्रित क' कए ओहिपर तीक्ष्ण व्यंग्य सेहो कयलनि। यथार्थक पृष्ठभूमिपर आधारित आदर्श-स्वर हिनक रेडियो-रूपकमे मुख्य स्वर थिक।

कथानक :

मायानन्दक रेडियो-रूपकमे युगीन समस्याक प्रति अधिक जागरूकता देखबामे अबैछ। आधुनिक आर्थिक वैषम्यसँ उत्पन्न स्थिति समाजक मघ्यवर्गीय लोकक वेरोजगारी, ओकर दुर्दशा, संघर्ष आदिकेँ ओ अपन रेडियो रूपमे उपस्थापित कयलनि। एहि परिप्रेक्ष्यामे हमर समाजक पारिवारिक यथार्थकेँ अंकित करबाक उपक्रम कयलनि जाहिसँ कथाक विकास सरल गतिसँ भेल अछि। कथाकार हैबाक कारणेँ ओ रेडियो-रूपकक कथानकक निर्माणमे अपन कुशलताक परिचय देलनि। ई अपन रेडियो रूपकक कथानक निर्माणमे जिज्ञासा तत्वपर विशेष बल देलनि। हिनक प्राय: सब रेडियो-रूपक कोनो-ने-कोनो रहस्यपर आधारित अछि जकरा उद्घाटित कयल गेल अछि जाहिसँ रूपक चमत्कारिक बनि गेल अछि। हिनक कथानक संघर्षपर आधारित अछि। कथानक निर्माणमे विशेष कौशल परिलक्षित होइत अछि। ओहिमे संघर्ष अछि, गति अछि।

एक्के बापक बेटाक कथानक एक आदर्श भातृप्रेमक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। हरि आ मदन दूनू भय छथि। हरि एक आफिसमे अल्प वेतन भोगी मुलाजिम अछि। अपन छोट भाय मदनकेँ शिक्षित-दीक्षित करबामे ओ कोन-कोन ने बेलना बेललनि, किन्तु यथासमय नोकरी-चाकरीक व्यवस्था नहि भ' पौलनि तँ एक ट्यूशनक व्यवस्था कयलनि जाहिमे अपन वेतनक टाका मिला क' ओकर अहाँक तुष्टि कयलनि। अन्तत: एहि रहस्यक उद्घाटन तखन होइछ जखन मदनक डिप्टी कलक्टरक परिणाम अबैत अछि। पारिवारिक परिवेशमे अल्प आयक कारणेँ कर्जक भारसँ आयल रिक्तताक एक सुखद सोहान वातावरणमे परिवर्त्तित भ' जाइछ। अधुनातन संदर्भमे एहन भ्रातृ प्रेम कतहु नहि देखबामे अबैछ। रेडियो रूपककार एक एहन वातावरणक निर्माण करबामे सफल भ' पौलनि अछि जे भ्रातृ प्रेमक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करैछ।

पारिवारिक पृष्ठभूमिपर केन्द्रित अछि *नव लोकः नवगप्पक* कथानक। किसुन एवं विसुन दूनू भैयारी नोन-पानि जकाँ सम्मिलत रहैत छलाह, किन्तु जिलेबी साहूक कर्जक तगादाक कारणेँ पारस्परिक प्रेम एहन तिक्त वातावरणक निर्माण करबामे सक्षम होइछ जे एक दोसराक जानी दुशमन मानि संयुक्त परिवारके खण्डित करबाक हेतु डेग उठयबाक उपक्रम करैत छथि। मधुकान्तक सत्प्रयासँ सब समस्याक समाधानोपरान्त तिक्तता मधुरिमामे परिवर्त्तित भ' जाइछ तथा संयुक्त परिवार यथावत रहि जाइत अछि। रेडियो-रूपककार समाजिक परिवेशमे परिवर्त्तित विचारधाराक धरातलपर नव दिशा समाजकेँ एहिमे देबाक उपक्रम कयलनि अछि जे नवतावादी सर्वथा नव आयामक सृजन करबामे सहायक होहत

छथि जे टूटैत परिवार पुन: संगठित भ' जाइत अछि। अन्यथा विखण्डित भ' जाइत।

पति-पत्नीक हास-परिहासपर केन्द्रित अछि *गुड़ चाउर* कथानक। पारिवारिक पृष्ठक भूमिमे कलहक जड़ि होइत अछि गहना-गुरिया जकरा लेल पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष उत्पन्न भ' कए प्रेमक पवित्र बंधनकेँ तोड़ि दैत अछि। द्वारिका अपन पत्नी लक्ष्मीकेँ आध सेरक सूति गढ़बा दैत छथि जकर फलस्वरूप संयुक्त-परिवारमे विघ्नक बीजारोपण होइछ तथा माधव पत्नी जयाकेँ ई घटना सर्वथा अनसोहाँत लगैत छनि। जया माधवकेँ सतत प्रेरित करैत छथि जे साझी आश्रममे रहबाक अब कोनो अर्थ नहि रहि गेल अछि। शनै:-शनै: समस्या एतेक गम्भीर भ' जाइछ जे एहि घटनाकेँ ल' कए द्वारिका आ माधव संयुक्त परिवारक परम्पराकेँ खण्डित क' कए भीन-बखरा करबाक हेतु उताहुल भ' जाइत छथि। किन्तु लक्ष्मीकेँ ई स्वीकार नहि होइत छनि जे हुनका पसिन नहि। अन्तत: भीन-बखराक बात खटाईमे पड़ि जाइत अछि तथा दुनू भाय संयुक्त परिवारमे रहबाक अभिलाषी बनि जाइत छथि।

अपन आन रेडियो रूपकमे सामाजिक वातावरणक विशिष्ट संदर्भकेँ रेखांकित करैत अछि जे हमर समाजमे एहन-एहन महनुभाव एखनो वर्त्तमान छथि जनिक सतत इएह प्रयास रहैछ जे एहन विषम वातावरणक निर्माण करी से भाय-भायक बीच जे आपसी प्रेम, स्नेह, आ सद्भावना अछि ओ तिक्ततामे परिवर्त्तित भ' जाय। शीतल झा एक एहने पात्र छथि जे मुखियाक चुनावक अवसरपर शिवान्त आ विष्णुकान्तकेँ चुनावमे एक दोसराक विरोधी रूपमे वर्णित क' कए अपन उल्लू सोझ करबाक प्रयासमे लागि झूठ-फूस, प्रपंचक ताना वाना बुनि क' दुनू भायकेँ चुनाव लड़बाक हेतु सतत उत्प्रेरित करैत रहैत छथि तथा दुनू पक्षसँ पर्याप्त टाका-पैसा ऐठि क' अपन स्वार्थ सिद्धि करबामे कनियो कुंठित नहि होइत छथि। किन्तु वास्तविकताक रहस्योद्घाटन तखन जा क' होइत अछि जखन कि पिताक वर्खीक अवसरपर दुनू भायकेँ एहि प्रसंगमे विस्तारसँ विवेचन करबाक अवसर भेटैत छनि तथा शीतल झाक वास्तविकतासँ अवगत होइत छथि।

सामाजिक कथानकक अतिरिक्त हिनक एक रेडियो रूपक थिक *इतिहासक विसरल* जाहिमे रूपककार इतिहासक एक आवृत अध्यायकेँ अनावृत करबाक उपक्रम कयलनि अछि। एहिमे मल्ल जनपदक भट्टारक सूर्यकूलभूषण सम्राटक ओहि कथांश दिस संकेत कयलनि अछि जे भारतक प्राचीनतम विश्व विद्यालय वैदिक साहित्य आ परित्तनीक सूत्र अध्ययनार्थ गेल रहथि, किंतु पितृत्यक देहावसानोपरांत सुखद जीवनक परित्याग क' कए सम्राट पदकेँ सुशोभित

कयलनि। आचार्य नागभद्रक पट्ट शिष्य श्रेष्ठ आर्य शिल्पीके पारखी सम्राट तत्क्षण हुनक शिल्प कलासँ परिचित भ' जाइत छथि जनिक शिल्प-ज्ञान समग्र आर्यावर्त्तमे प्रख्यात तथा यशोध्वज दिग-दिगन्तमे व्याप्त छल। सम्राटक आदेशानुरूप शिल्पीकेँ दुर्गाक भव्य प्रतिमा निर्माण आज्ञा भेटैछ, किन्तु दुर्योगसँ एहन नहि भ' पौलक आ मूर्ति निर्माण भ' गेलैक राजकुमारी मारूतिका जे साम्राज्ञी छलीह। सम्राट क्रोधान्ध भ' सूर्योदयसँ पूर्व ओकरा राज्य निष्कासनक आज्ञा देल गेलैक। कतोक दिनक पश्चात् आर्य शिल्पी विक्षिप्तता अवस्थामे मल्ल सम्राट रूद्र सिंहक समक्ष प्रस्तुत कयल जाइछ। सम्राट एहि विषयसँ अवगत रहथि जे नागभद्रक अथवा हुनक शिष्यक द्वारा बनाओल निर्मित प्रतिमामे प्राण प्रतिष्ठा स्वयं भ' जाइत छैक। सम्राट इच्छा व्यक्त कयलनि जे एक एहन काल्पनिक अलौकिक नारीक कामना अछि जकर छवि इन्द्रधनुषोसँ अधिक आकर्षक, जकर कान्ति सघन जलदमे छिटकैत विद्युतलतोसँ अधिक प्रखर, जकर मादकता सोमरस पर्यन्तकेँ नीरस तथा कोमलता नवीनताकेँ कठोर बना दैत छैक। सम्राट इच्छा छलनि जे मल्ल जनपद विदैश्वकेँ पराकाष्ठाक काव्य-निर्माणक आधार दैक तथा सौन्दर्य स्नेहीकेँ महान् पवित्र मंदाकिनीक नीक स्नानक फल दैक। राजाक आज्ञा शिरोधार्य क' कए मूर्ति निर्माणार्थ छओ पक्षक कलावधि देल जाइछ।

आर्य शिल्पीक अपूर्ण सौन्दर्य आ ओकार शिल्प ज्ञानपर आकर्षित भ' कए राजकुमारी तुँगभद्रा शनै:-शनै: ओकार सामीप्य सुखक लाभक आकाकांक्षिणी बनि जाइछ तथा अपन अगाध स्नेह जलसँ ओकरा अभिसिक्त करबाक उपक्रम करैछ, किन्तु आर्य शिल्पीक समक्ष हुनक अरण्य रोदन निष्फल भ' जाइछ। मूर्ति निर्माणमे शिल्पी ततेक ने तन्मय भ' जाइछ जे मूर्तिक सौन्दर्य रेखा आर्य महारानी मारुति तथा नासिका आ भौं तुंगभद्रा सदृश स्वयंमेव बनि जाइछ। सम्राट आर्य शिल्पीक मूर्ति कलापर आकर्षित भ' महामात्यक समक्ष विचार व्यक्त कयलनि जे तुँगभद्रा आ आर्य शिल्पी एकत्रित भ' कए नूतन-शिल्पकलाक सृष्टि करथि, कारण राजकुमारी संगीत कलामे निपुण छलीह। एकर सुखद परिणाम हैत जे मल्ल जनपद सौन्दर्य सम्पदाक लेल पुन: विश्वभंरमे अपन ज्योति जगाओल। आर्य शिल्पीक मूर्त्तिकला क्षमता सर्वदा राजकुमारी तुंगभद्राक अनुरूप अछि। सम्राट व्यक्तिक मूल्य वैयक्तिक योग्यताक आधारपर अंकित करबाक आकांक्षी छथि। आर्य शिल्पी एवं तुंगभद्राक समाचारसँ मल्ल साम्राज्ञी उज्जैनक राजकुमारी मारुति जे मल्ल सम्राट रूद्रपतिक अर्धांगिणी छथि ओ अतीव विह्लता, मंद, कल्पन आ स्पन्दनक अनुभव क' रहल छथि, कारण कोनो समयमे मारुति स्वयं आर्य शिल्पीक छलीह, किन्तु परिस्थितिक विपरीतताक फलस्वरूप ओ आर्य शिल्पीकेँ अपन बनयबासे असमर्थ भ' गेल छलीह तथा पिताक आज्ञानुरूप महामहिम मल्ल सम्राटक रूद्रपतिक अर्धांगिणी बनबा लेल

विवश भ' गेल छलीह। एक नारीक जे विवशता होइछ जकर फलस्वरूप ओ आर्य शिल्पीकेँ अपनयबामे असक्षम भ' गेलीह।

परिवर्त्तित परिवेशमे वास्तविकताक रहस्योद्घाटन तखन होइछ जखन सम्राट रूद्रपति अपन कन्याक हेतु ओही आर्य शिल्पीक चयन करबाक अभिलाषी भेलाह जे पूर्वमे राजमाताक प्रेमी छल। राजमाता अर्थात् मारुति स्वयं आर्य शिल्पीक समक्ष प्रस्तुत भ' कए वास्तविकताकेँ उद्घाटन करैत छथि। यथास्थितिसँ परिचित भ' कए आर्य शिल्पी सम्राटकेँ बिनु कोनो सूचना देने अदृश्य भ' जाइत छथि।

हिनक समग्र रेडियो-रूपक पारिवारिक परिवेशपर केन्द्रित अछि। स्वतंत्रताक पश्चात् पारिवारिक स्वरूपपर एतेक शीघ्रतासँ परिवर्त्तन भेल अछि जे संयुक्त परिवारक मान्यता शनैः-शनैः खंण्डित होमय लागल आ एकांगी परिवारक उदय होमय लगलैक ताहि परिप्रेक्ष्यमे संयुक्त परिवारक पारम्परिक ढाँचाकेँ सुरक्षित रखबाक उद्देश्यसँ उत्प्रेरित भ' ओ अपन समग्र रेडियो-रूपकमे ओकर मान्यताकेँ पुनस्थापित करबाक कल्पना कयलनि। ओ इतिहासक ओहि अघ्यायपर दृक्पात कयलनि जाहि दिस साहित्यकारक घ्यान नहि आकर्षित भेल छलनि। इतिहासक बिसरलक कथानकमे पर्याप्त नाटकीय तत्व अछि आ ई एक प्रभावशाली रेडियो-रूपक थिक।

पात्र :

मायानन्दक रेडियो रूपकक वैशिष्ट्य थिक ओ कथा-विन्यासमे अत्यल्प पात्रक प्रयोग कयलनि अछि। पात्रक चुनावमे ओ अपन कल्पना शक्तिक प्रयोग क' कए अत्यंत कुशलताक संग पात्रक चयन कयलनि। हिनक रेडियो-रूपकमे प्रयुक्त पात्रक मन-मे कोनो-ने-कोनो द्वन्द्व अवश्य अछि। हुनक प्रत्येक पात्रक मानसिक द्वन्द्वक सूक्ष्मसँ सूक्ष्म परतकेँ उदघाटित करबामे सफलता प्राप्त कयलनि अछि। हिनक पात्रक मनोभाव आ द्वन्द्वकेँ अत्यंत कुशलताक संग उद्घाटित करबामे सक्षम भेलाह अछि।

मनुष्य जेहन देखबामे लगैछ भीतरसँ ओ ओहन नहि रहैछ। मनुष्यक वाह्य व्यवहार कोनो स्थितिमे ओकर वास्तविक चरित्रक परिचायक भइये ने सकैछ। मायानन्द एक मनोवैज्ञानी सदृश पात्रक अन्तः स्थलमे प्रवेश क' कए मानवक कृत्रिम आवरणकेँ हटा क' वास्तविक रूपकेँ स्पष्ट करबाक प्रयास अपन प्रत्येक रेडियो-रूपकमे कयलनि अछि। मनुष्यक आन्तरिक रूप अत्यंत संवेदनशील, भाव-प्रवण आ कोमल होइत अछि। ओ एहने पात्रक चयन कयलनि वा पात्रक जीवन क्षणकेँ उद्घाटित कयलनि जाहिमे द्वन्द्वक तीव्रता अछि। मनोवैज्ञानिक पात्रक प्रभाव हुनक नाटकीय शिल्पपर प्रचुर परिमाणमे पड़ल अछि। हुनक विशिष्टता थिक जे

ओ हरेक पात्रक भावनाक सधनता आ तीव्रताकेँ सरलतासँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत कयलनि। हिनक रेडियो रूपकक धरातल मुख्यत: भावनात्मक अछि।

हिनक रेडियो रूपकमे पात्रक शील-निरूपणक विनियोगमे रूपककारक सफलता एहिमे अछि जे अत्यल्प पात्रक प्रयोग द्वारा घटनाकेँ मार्मिकताक संग उपस्थित करबामे सक्षम भ' पौलनि। अपन: आनमे तीन पुरुष पात्र आ दू महिला पात्री, गुड़ चाउरमे दू पुरुष एवं दू स्त्री पात्र, नवलोकः नवगप्पमे पाँच पुरुष आ दू स्त्री पात्र तथा इतिहासक बिसरलमे चारि पुरुष आ तीन स्त्री पात्रक प्रयोग रेडियो रूपककार कयलनि अछि जे हुनक विलक्षण शिल्पक प्रमाण थिक।

इतिहासक बिसरल एक मनोवैज्ञानिक रेडियो रूपक थिक जकरा अर्न्तगत प्रत्येक पात्रक मानसिक यातनाक प्रसंगमे विस्तार पूर्वक विश्लेषण रूपककार कयलनि अछि। आर्य शिल्प, तुंगभद्रा, मारुति एवं महाराज रुद्रसिंह सभ मानसिक द्वन्द्वसँ गुजरि रहल अछि। महाराजक उत्कट अभिलाषा छलनि जे आर्य शिल्पी आ तुंगभद्राक सम्मिलित प्रयाससँ एक नूतन सौन्दर्य कलाक निर्माण संभव अछि, किन्तु साम्राज्ञी मारुति जे यथार्थ वस्तुस्थितिसँ अवगत छथि। ओ नहि चाहैत छथि जे एहन कार्य महाराज द्वारा कयल जाय तदर्थ ओ प्रयत्नशील भ' आर्य शिल्पीकेँ ओतयसँ विदा भ' जयबाक अनुरोध करैत छथि। प्रतिपाद्य रेडियो रूपकक पात्रक मानसिक अंतर्द्वन्द्व अपन पराकाष्ठासँ गुजरि रहल अछि।

दू भायक बीच अनार्द्वन्द्वक रूप भेटैछ अपन आन, गुड़ चाउर, नवलोक नवगप्प एवं एक्के बापक बेटामे। प्रत्येक पात्र अपना अनुसारेँ प्रत्येक कार्यकेँ क्रिया रूप देबापर उताहुल अछि, किन्तु स्थितिक यर्थाथतासँ अवगत भेलापर सभ एकहि भ' जाइत अछि।

रेडियो रूपकमे मनोवैज्ञानिक चित्रणक अनेक सुविधा प्राप्त अछि जकर प्रयोग रूपककार पात्रक मानसिक ओझरौंठकेँ अत्यंत सरलासँ अंकित करैत छथि। एहिमे सामाजिक जीवनक विविध रूपिणी यथार्थताकेँ अंकित कयल जा सकैछ जे अन्तरकेँ उद्वेलित कयनिहार द्वन्द्वक चित्रण भेल अछि। समाजमे भेटनिहार किछु विशेष प्रकारक व्यक्तिकेँ घ्यानमे राखि क' एहि रेडियो रूपक सभक रचना भेल अछि।

संवाद :

संवाद लेखनमे मायानन्द अत्यंत निपुण छथि। वातावरण आ प्रसंगक अनुरूप छोट-पैघ सब प्रकारक संलाप हिनक रेडियो रूपकमे उपलब्ध होइछ। रेडियोपर हिनक नाटकक सफलताक रहस्य ई अछि जे रेडियोक लेल जाहि संसिलष्ट कथानकक एकाग्रता निश्चित दिशा आ सशक्त संलापक अपेक्षा होइत अछि तकर

निर्वाह हिनक रेडियो रूपकमे उपलब्ध होइछ। हिनक रेडियो रूपकमे वाचिक तीव्रताक प्रचुरता अछि। अति संक्षिप्त संलाप द्वारा कोना घटना विकास आ भाव व्यंजनाक काज भ' सकैछ तकर उदाहरण हिनक रेडियो रूपकमे उपलब्ध होइछ।

ई रेडियो रूपकमे संलाप सहज बोलचालक भाषामे लिखलनि अछि। ओहिमे वाकपटुता देखयबाक हेतु भेटैछ जे हास्य-व्यंग्यक सृजनक हेतु उपयुक्त अछि। संलापमे गति अछि। बातसँ बात क्रमिक रूपेँ बहराइत अछि जे हिनक रेडियो रूपकक वैशष्ट्य अछि। संलाप लेखनमे हिनका कुशलता छनि जे रेडियो रूपककेँ नीरस नहि होमय दैछ। संलापमे पात्र, प्रसंग एवं भावक अनुरूप परिवर्त्तित होइत रहैछ जाहिसँ रोचकता आबि जाइछ।

भाषा :

रेडियो रूपकक सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय थिक भाषा आ ई भाषा लिखलनि नहि, प्रत्युत भाषित होइछ। अतएव एहन भाषाक प्रयोग हो सर्वसाधारणकेँ बोधगम्य होइक। मायानन्दक रेडियो रूपकमेँ अप्रचलित शब्द जे साधारण जनमानससँ उठि जकाँ गेल अछि तकर प्रयोग अपन नाटकीय भाषान्तर्गत कयलनि। ओ भाषाकेँ व्यावहारिक रूपकेँ रेडियो रूपकमे स्थान देलनि। इएह कारण अछि जे हुनक भाषा कतहु अव्यवस्थित नहि भ' पौलक। ओ शब्दकेँ तोड़ि- मड़ोड़ि क' कहु विकृत नहि कयलनि। हुनक भाषाक रसधार सर्वथा स्वच्छन्द आ स्वाभाविक रुपेँ प्रकाशित भेल। ओ सब प्रकारक भावक प्रकाशनक क्षमता हुनक भाषामे अछि। परिस्थितिक अनुकूल ओ शब्दक चयन कयलनि। लोकोक्ति आ मुहावराक सफल प्रयोग हुनक भाषाक सौन्दर्यमे अपूर्व अभिवृद्धि कयलक अछि। हिनक भाषा- नैसर्गिक रसाद्र आ भावपूर्ण अछि। ओहिमे तन्मयता, सार्थकता आ स्वाभाविकताक सहज समावेश अछि। मायानन्दक रेडियो रूपकक विशेषता थिक जे स्थल-स्थलपर ओ एहन मार्मिक लोकोक्ति आ मुहावराक प्रयोग कयलनि जकर फलस्वरूप हुनक रूपकक संवाद अत्यंत प्राणवन्त बिन गेल अछि।

डा. नागेन्द्र *आलोचक की आस्थामे* हालीक काव्यमे एहि विषयकेँ स्पष्ट कयलनि अछि जे गद्य हो अथवा पद्य दुनूमे रोजमर्राक घ्यान राखब आवश्यक अछि। भावनाक सटीक अभिव्यक्ति लोकोक्ति आ मुहावरा द्वारा सम्भव अछि। भावनाक सहजताक कारणेँ ओकार अभिव्यक्तिकेँ लेल सहज, स्वाभाविक भाषा ओ एकरे माघ्यमे सम्भव अछि। मानवक अत्यधिक जीवन्त, भाव-प्रवण आ ऐन्द्रिय अनु-अनिवार्यता ओहि भाषासँ सम्वद्ध होइत अछि जे यथार्थमे बजैत अछि।

हिनक एकांकी सभ चौपालसँ प्रसारित भेल जकर जनसाधारणसँ सम्पर्क हैबाक कारणेँ अलंकृत अर्थात् सजह स्वाभाविक आ सरल अछि, कारण एहन

भाषामे कोनो प्रकारक आडम्बरक स्थान नहि रहैत अछि। इएह कारण अछि जे हिनक भाषा सर्वसाधारणक हेतु बोधगम्य अछि। भाषापर हिनका अधिकार छनि। हिनक भाषा मुहावरेदार अंलकृत आ काव्यात्मक अछि। हिनक भाषा व्यावहारिक जीवनक भाषा थिक।

एहि तथ्यकँ उद्घाटित करबाक उद्देश्यसँ हिनक प्रत्येक रेडियो रूपकमे प्रयुक्त लोकोक्ति आ मुहावरापर विचार करब आवश्यक प्रतीत भ' रहल अछि। लोक भाषाक यथार्थ रूपकँ ओ अपन रेडियो रूपकमे उपस्थित कयलनि जकरा पाछाँ हुनक उद्देश्य छलनि जे श्रोतापर एकर प्रभाव पड़य।

अपनः आन रेडियो रूपकमे ई निम्नस्थ लोकोक्ति एवं मुहावराक प्रयोग कयलनि अछि यथा: चिकरब-भोकरब, नङ्ग्टे नाचने, घोडा पर चढल, कुर्सी-फुर्सी, मजिस्टर दरोगा, मन हनछिनआएब, चिकचाक, चुटट्राक लोह तँ सोझे रहैछ, एक्केटा प्राण दू ठाँ बाटल, बसुलाक धार वस्तुकँ अपना दिस झीकब, जकरे पात खोइ तकरे पात भूर करब, आँखिक देखल-कानक सुनल, अनका घरमे आगि लगा क' तपनिहारक कमी नहि, जकरे खयबैक तकरे गयबैक, ताल लागब, पाँच हाथ तड़पब, आँखि लाल पीयर करब, अनटोटल गप्प, मुँह ने कान बीचमे दोकान, सोंसे नगर घिनाएब, लारब-चारब, अपने मने पैघ, आगि झायब, बाभनक गाममे राड़ पजिआड़, इनारमे, अतह करब, अनटोटल गप्प, भेड़ा महिसक कानि, कटांउझि करब, दू टा आत्मा एक्के, मुँह पुरुख बनब, नाङटे नाचब, रसातलमे पहुँचाएब, उजाहि उठब, मतिभ्रष्ट, नाक कटाय, अदगोइ-बदगोइ, पोल खुजब, कपार फारब, धोखा देब इत्यादि। एकके बापक बेटामे काबुलमे गदहा होइछ, गदैस-मदौस, किचकिच-किचकिच करब, आँखि गड़रब, भटकल भौंह, बेलसक गप्प पेट पोसब, भनभनायब, ललबबुआ बनब, रमा डोलबेनब, छिहइआछत रहब, बताह बनायब, बौआइत-ढ़हनाइत, ओलसन बोल, कान बरही, चूल्हिमे झोंकब, तम्मा ल' कए माङब्ब, आगि लगाएव, गुड चाउरमे विधवा हैत सात घरक मुद्दइ, ठीकपर माङु हँसी करब, हुथनूड़, निसा देब बनब, हक्कन कानब, अकान बनब, कोसलिया करब, बकलेल सन, मनोरथ पुरब, झुकादेब, फरिछौट करब, रङताल बजरब, खोंताक चोंचा जकाँ मुँह लटकायब, किकहारि काटब, अकच्छ करब. सूइघाक नोक बरोबरि, नवलोकः नवगप्पमे मार बारहैनि, बिठुआ काटब, सुगरक गवाही हरिन देल दुनू पड़ा क' जंगल गेल, देह ढ़ाहब, देहमे आगि लगायब, विसपिपरी, हाथीपर चढल एलाह आघोड़ापर तैयार, घर उजारब, कडरीक थम्मपर सितुआ चोख, कपार फूटब, गलहथ्या देब, तथड़ाड़ामे गारब, भाकसी झोंकब, कौआक रापे बेङ नैासरै, पार लागब, अन्हेड़ करब, नन्नो थान-बिहन्नबान, अपने कचियासँ घेंट ततारब, भुकायब, चौहाठी हिलायब, अपन बड़द कुड़हरिए नाथब, मुहपर जाभी लगाएब, चौहाठी

हिलायब, अपन बड़द कुड़हरिए नाथब, मुहपर जाभी लगाएब, कोसिकाक दोखरा बालु फाँकब, उकटा पैंची, खाधिमे खसायब, आगि उगलब, लथगोबर एवं इतिहासक बिसरलमे टकटकी लागब, संकल्प विकल्पमे ओझायब, छल करब आदि-आदि।

वातावरण :

मायानन्द ध्वनि आ शब्दक माध्यमे वातावरणक निर्माण कयलनि अछि। हिनक रेडियो रूपकक विशिष्टता अछि जे हमर ग्रामीण परिवेशक मध्यवित्त परिवारक यथार्थ स्थितिकेँ उद्घाटित करबाक उपक्रम कयलनि अछि जे वर्त्तमान परिवेशमे खण्डित भेल जा रहल अछि तकरा कोना बचाओल जाय ताहि दिस संकेत कयलनि अछि। हिनक रेडियो रूपकमे परिवारकेँ तोड़बाक जे प्रयास सामाजिक परिवेशमे ज्वलन्त भ' गेल तकरा ओ जोड़बाक प्रयास कयलनि अछि अपन आन, गुड़ चाउर, नवलोक नवगप्प आ एक्के बापक बेटामे। परिवारिक परिवेशमे रहि क' लोक कोना एक दोसरापर टीका-टिप्पणी करैत अछि, किन्तु वास्तविकताक धरातलपर ओ कतेक सटीक उतरैत अछि तकरा स्पष्ट करब रूपककारक अभीष्ट परिलक्षित भ' रहल अछि। इतिहासक बिसरलमे काल्पनिकताक विलक्षण प्रयोग क' कए रूपककार एहन वातावरण सृजन कयलनि अछि जे कथानकक विकासमे कतहु व्यवधान नहि भ' पबैत अछि।

ई अपन रेडियो रूपकमे श्रव्य-माध्यमे घ्यानमे रखलनि। शब्द आ ध्वनि द्वारा यथोचित वातावरणक निर्माण कयलनि वातावरणक अनुरूप छोट-छोट सब प्रकारक संपादक रचना कयलनि। ध्वनि-प्रभाव आ संगीतक माध्यमे रेडियो रूपककार वातावरण-निर्माण प्रभावशील ढंगसँ प्रस्तुत करबाक प्रयत्न कयलनि अछि।

उद्देश्य :

मायानन्द उद्देश्यक एकतापर घ्यान केन्द्रित कयलनि अछि। ओ सभ स्थितिकेँ एकहि दिशा दिस प्रेरित कयलनि। हिनक रेडियो रूपकक उद्देश्य मनोरंजन रहल अछि। किछु रेडियो रूपकमे ओ सामाजिक असंगतिपर तीक्ष्ण व्यंग्य कयलनि अछि। हिनक रेडियो रूपकमे उद्देश्य अपन कथ्यकेँ रोचक एवं आकर्षक रूपमे प्रस्तुत करबाक प्रयास थिक जाहिमे रुपककारकेँ पर्याप्त सफलता भेटलनि अछि।

रंग-शिल्प :

हिनक रेडियो-रूपकमे रंग-संकेत आ दृश्य-विधानक अन्तर्गत प्रथम श्राव्य, द्वितीय श्राव्य तदनुरूप अछि। ओ मध्यवर्गीय सामाजिक जीवनक पृष्ठभूमिमे रेडियो-

रूपकक रचना कयलनि। हिनक सभ रेडियो-रूपकमे पारिवारिक समस्याक उद्घाटन कयलनि जे सामाजिक यथार्थपर आधारित अछि। समाजिक यथार्थपर आधारित रेडियो रूपकमे ओ वर्त्तमान आर्थिक वैषभ्य आ ओहिसँ उत्पन्न समस्या दिस संकेत कयलनि अछि। ओ रेडियोकेँ घ्यानमे राखि क' एकर रचना कयलनि आ ओ ओहि मे सफल भेलाह। ई सभ सामाजिक समस्याकेँ अपन प्रतिपाद्य बनौलनि। ओ एकरा प्रभावोत्पादक बनयबाक हेतु घ्वनि-प्रभावक उचित प्रयोगपर घ्यानकेँ केन्द्रित कयलनि। श्रव्य-संकेत आ घ्वनि-प्रभावक व्यवहारक प्रयोग कुशलतापूर्वक ओ अपन रेडियो रूपकमे कयलनि। बिनु कोनो नैरटरक सहायता नेने प्रसंगकेँ नाटकीय रूपमे, प्रस्तुत करबामे सफलता ओ प्राप्त कयलनि। दृश्य परिवर्तनमे नवीनता अनबाक ई प्रयास कयलनि। जिज्ञासा आ कोतूहलताकेँ प्रतिष्ठित करबाक उपक्रम कयलनि।

मायानन्दक प्रत्येक रेडियो रूपक रेडियोपर ब्राडकास्ट भेल। रेडियोक माघ्यम थिक घ्वनि। आँखिक अपेक्षा ओ कानक लेल अधिक रहैत अछि। अतएव ओहिमे एक्शनक अभाव रहैत अछि। ई अपन रेडियो रूपकमे घ्वन्यात्मक मूल्यपर अधिक घ्यान देलनि अछि। ई अपन रेडियो रूपकमे कार्य-व्यापारक एकाग्रता आ पात्रक चरित्राकंनपर अधिक बल देलनि अछि। हिनक प्रत्येक रेडियो रूपकक अन्त प्रभावशाली रूपमे भेल अछि। दृश्य-परिवर्तनक कलात्मक प्रयोग देखबामे अबैछ। विषय प्रधानात्मक प्रभाव हिनक रचना शिल्पपर पड़ल अछि। विषय प्रधानाताक प्रभाव हिनक रंग शिल्पर पड़ल अछि। ई हास्य-व्यंग्य प्रधान, गम्भीर, रोमांचक, दुखान्त आदि रेडियो रूपक लिखलनि। ओ श्रव्य-शिल्पपर विशेष घ्यान रखलनि अछि।

नि:सारण :

रेडियो रूपक संक्षिप्त नाट्य रूप थिक। रेडियो रूपक मैथिली एकांकी एक शाखाक रूपमे स्वतत्र रूपसँ विकसित भेल अछि। मायानन्द अपन रेडियो रूपकमे नैरेशनक प्रयोग कतहु नहि कयलनि अछि। ओ श्रव्य-शिल्प सम्बन्धी कुशलताक परिचय एहि विधामे देलनि अछि। सर्वत्र श्रोताक दृष्टिसँ एकरा आकर्षक बनयबाक प्रयत्न कयलनि अछि। हिनक एहि कृतिमे घ्वनि-प्रभाव आ संगीतक व्यवहार कलात्मक रूपमे भेल अछि। भाषाशैली सब रूपकक अपन-अपन अछि। वातावरणक प्रसंग पात्रक अनुरूप अछि जहिसँ नाटकीय दृष्टिसँ प्रभावशाली बनि गेल अछि।

जतेक दूर धरि मायानन्दक रेडियो-रूपकक अछि ओ रेडियो रूपक-नाट्य-शिल्पक कसौटीपर अक्षरस: सटीक उतरैत अछि। हिनक रेडियो-रूपकमे

कथानक-निर्माण, चरित्र-चित्रण,संवाद, उद्देश्य, वातावरण, भाषा-शैली, रंग-शिल्प, घ्वनि-प्रयोग आदि दृष्टिएँ, कुशलतासँ निर्वाह कयलनि अछि। हिनक रेडियो रूपक भावी-विकासक दिशा-निर्देशक क' सकैछ।

रेडियो-रूपक मैथिली एकांकी शाखा रूपमे स्वतंत्र विधाक रूपमे विकसित भ' रहल अछि। मैथिलीमे विभिन्न प्रकारक रेडियो रूपकक रचना निरन्तर भ' रहल अछि। मायानन्द पाश्चात्य नाट्य-शिल्प आ नाट्य कृतिसँ धनिष्ठ रूपेँ सम्पर्कित भेलाह। रेडियो रूपक एक पैघ सशक्त माघ्यम, एक जीवित रंगमंच प्रदान कयलक अछि। रेडियोक प्रचार-प्रसार अधिक भेलासँ अनेक व्यक्तिकेँ एहि रूपक रचना करबाक हेतु प्रेरित कयलक। मैथिली रेडियो-रूपक लिखनिहारकेँ भारतीय अन्य भाषा सदृश अद्यापि सौविघ्य नहि उपलब्ध छनि तथापि जे एहन रचना उपलब्ध भ' रहल अछि ओहि आधारपर रेडियो नाट्य-शिल्पकेँ जतेक विकसित हैबाक चाही ओ नहि भ' सकल अछि। रेडियो, नाट्य-लेखनक लेल रेडियोकेँ निकटसँ देखबाक-समझबाक प्रयोजन अछि। प्रतिभा आ माघ्यमक धनिष्ट परिचय रेडियो-नाट्य-लेखन हेतु अनिवार्य अछि। आकाशवाणी सरकारी नियंत्रणमे अछि आ प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार ओतय पहुँचि क' अपन प्रतिभाक। समुचित उपयोग नहि क' पबैत छथि, कारण ओहि ठामक यान्त्रिकतासँ बन्हा जाइत छथि।

* * *

चेतना समिति ओ नाट्यमंच

सांस्कृतिक, साहित्यिक आ कलाक मुख्य केन्द्र रहल अछि बिहारक प्रशासनिक राजधानी पटना। जीवकोपार्जनार्थ मिथिलांचलवासी प्रचुर परिमाणमे एहि महानगरमे निवास करैत छथि। मैथिली भाषा-भाषीक एतेक विशाल जनसंख्या वाला महानगरक मातृभाषानुरागी लोकनिक सत्प्रयाससँ अपन भाषा आ साहित्य ओ रंगमंचक विकासमे महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कयलक समानार्थी अछि, कारण एहि क्षेत्रमे जे किछु अवदान अछि ओ पटना आ चेतना समितिक योगदान एकहि बात थिक। आब ई प्रयोजनीय भ' गेल अछि जे जनमानस ओहि अवदानकेँ जानय आ जँ महत्वपूर्ण अछि तँ ओकर मुक्त कण्ठे प्रशंसा क' कए ओकरा स्वीकार करय। रंगमंचक क्षेत्रमे चेतना समितिक नाट्यमंचक अवदानक पूर्ण मिथिलाञ्चल एवं मिथिलेत्तार क्षेत्रक अवदानसँ परिचित होयबाक हेतु प्रेमशंकर सिंह (1942)क मैथिली नाटकक ओ रंगमंच (1978), मैथिली नाटकक परिचय (1981), जीवन झा (1987), नाट्यान्वाचय (2002)क एवं चेतना समिति ओ नाट्यमंच (2008)क अवलोकन कयल जा सकैछ।

ई निर्विवाद सत्य थिक जे मिथिलाञ्चल आ मिथिलेत्तर क्षेत्रमे मैथिली रंगमंचक शौकिया रंगमंचक संख्या अत्यन्त सीमित अछि। यद्यपि बीसम शताब्दीक तृतीय, चतुर्थ आ पंचम दशकमे समग्र भारतीय स्वतंत्रता-संग्राममे संलिप्त रहला, जाहि कारणेँ नाटकक सदृश समवेदक कलात्मक सृजन विकसित नहि भ' पौलक, तथापि यत्र-तत्र पौराणिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक नाटकक मंचन होइत रहल। एहन प्रस्तुतिक मूल उद्देश्य छलैक राष्ट्र आ समाजक समक्ष एक उच्च कोटिक आदर्श प्रस्तुत करब। एहन शौकिया रंगमंच अत्यल्प संख्यामे समाजक संग जुड़ल आ एहिसँ आगाँ बढ़ि क' ओ ने तँ जीवनक अभिन्न अंगे बनि सकल आ ने सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कलात्मक विकासक माघ्यमे।

स्वतंत्रात्मक पश्चात् व्यक्ति-व्यक्तिक दृष्टिकोणमे परिवर्त्तन भेलैक आ समाजमे सांस्कृतिक साहित्यिक एवं कलात्मक विकासक अवरुद्ध द्वार खुजि गेलैक। स्वाधीनोत्तर युगमे सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कलात्मक स्थितिक यथार्थ चित्रण जानबाक, बुझबाक आवश्यकता महसूस भेलैक समाज एवं जनमानसकेँ। सामान्य जनमानसक सुख-दु:ख, आशा-निराशा, कुण्ठा संत्रास, असन्तोष, क्षोभ, क्रोध एवं जीजिविषाकेँ वाणी देबाक हेतु नाटकककारक अन्तर उद्वेलित भेलनि आ एहि

दिशामे सोझे-सोझ स्थितिक वर्णन करबाक हेतु नाटकक आश्रय लेलनि । शनैः-शनैः रंगमंच सामाजिक जीवनक सन्निकट अबैत गेल आ वर्त्तमान स्थितिमे तँ ओ एक अभिवाज्य अंग बनि गेल अछि। एकर परिणाम एतबे नहि भेलैक जे शौकियाक संगहि-संग अर्द्ध व्यावसायिक वा व्यावसायिक स्तरपर जनमानस रंगमंचक महत्वकेँ स्वीकारलक। एहिमे सबसँ क्रान्तिकारी परिवर्त्तन भेल जे महिला समुदाय एहिमे अपन सहभागिता देब प्रारम्भ कयलनि। हुनका सभक सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप शनैः-शनैः ई मानव जीवनक अविभाज्य अंग बनय लागल, किन्तु अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण स्थिति थिक जे मिथिलाञ्चल वा मिथिलेत्तर क्षेत्रमे अद्यापि व्यावसायिक रंगमंचक प्रादुर्भावे नहि भेलैक।

पटना सदृश महानगरमे चेतना समितिक तत्वावधानमे नाट्यभिनयक यात्राक शुभारम्भ भेलैक तकरे फलस्वरूप नाट्यमंचनक परम्पराक सूत्रपात भेलैक जाहिमे गृहिणी महिला वर्गक सहभागितासँ एकर प्राणमे नव स्पन्दन भरलक जे अनुर्वर छल। चेतना समितिक स्थापनोपरान्त सांस्कृतिक गतिविधिक संगहि-संग रंगमंचक क्षेत्रमे नवजागरणक संचार भेलैक सन् 1954 ई. सँ। किन्तु आम्भिक कालमे अनवरत एकाँकीक मंचन होइत जकर विवरण आगाँ प्रस्तुत कयल जायत, मुदा सन् 1973 ई. सँ अद्यपर्यन्त एकांकी वा नाटकक मंचन होइत आबि रहल अछि। भारतीय गणतंन्त्रमे एहन कोनो महानगर, नगर आ कस्बा नहि अछि जतय नियमित रूपसँ नाट्य-प्रस्तुति नहि होइत अछि, किन्तु नाट्यमंच अपन प्रस्तुतिसँ एकरा मूर्त्त रूप प्रदान करबामे सक्षम सिद्ध भेल अछि।

चेतना समितिक तत्वावधानमे आयोजित विद्यापति पर्वक प्रति शनैः-शनैः जनमानसमे एक प्रबल ज्वारक उद्भावना होइेत देखि एकर कार्यकारिणी समितिक अध्यक्ष दिवाकर झा (1914-1997) एवं सचिव जटाशंकर दास (1923-2006) अनुभव कयलनि जे ई संस्था मात्र साहित्यिक गतिविधिपर केन्द्रित नहि रहय, प्रत्युत एकरामे अत्यधिक गतिशीलता अनबाक हेतु आ ओहन जनमानसक संग।जोड़बाक प्रयोजन बुझलनि जकरा हेतु मनोरंजनक किछु एहन कार्यक्रम सुनिश्चित कयल जाय जे अधिकाधिक संख्यामे जन्मानस एहि आयोजनमे सहभागी बनि सकथि तथा एकर क्रिया-कलापमे अपन उपस्थिति दर्ज करा सकथि। एहि सोचकेँ क्रिया रूप देबाक निमित कार्यकारिणी समिति एक उपसमितिक गठन कयलक जाहिमे बाबू लक्ष्मीपति सिंह (1907-1979), आनन्द मिश्र (1924-2006), गोपाल जी झा गोपेश (1931-2007) एवं कामेश्वर झाकेँ ई भार देल गेलनि जे एकरा कोना क्रियान्वित कयल जाय ताहि प्रसंगमे अपन ठोस विचार कार्यकारिणी समितिक समक्ष प्रस्तुत करथि। उपसमितिक सदस्य लोकनि एक स्वरेँ अपन विचार कार्यकारिणीक समक्ष प्रस्तुत कयलनि जे मिथिलांचलक गौरव-गरिमाक

पुनर्राख्यान आ नाट्य साहित्यिक पुरातन परम्पराकेँ पुनरूजीवित करबाक हेतु एहि मंचसँ नाट्यभिनयक परम्पराक शुभारम्भ कलय जाय। उपसमितिक विचारसँ सहसत भ' कार्यकारिणी समिति जनमानसक हृदयमे मातृभाषानुरागकेँ जागृत करबाक निमित नाट्योजनक प्रयोजनीयताक आवश्यकता अनुभव कयलक तथा एकरा क्रियान्वित करबाक दिशामे प्रयासरत भेल।

समिति अपन प्रयोगवस्थामे नाट्ययोजनक शुभारम्भ नाटकसँ नहि क' कए एकांकीसँ करबाक निश्चय कयलक, कारण ओहि समय मैथिलीमे अभिनयोपयोगी नाटकक सर्वथा अभाव छलैक आ एकहि नाटककेँ बारम्बार अभिनीत करब समुचित नहि बुझलक उपसमितिक स्दस्य लोकनि अभिनयोपयोगी एकांकीक अन्वेषण करब प्रारम्भ कयलनि। अभिनयोपयोगी एंकाकीक हेतु मैथिलीक वरेण्य साहित्य-मनीषी लोकनिक संग सम्पर्क साधल गेल। एहि दिशामे उपसमितिकेँ सफलता भेटलैक जे समकालीन मैथिली साहित्यपर अपन अमिट छाप छोड़ निहार बहुविधावादी रचनाकार हरिमोहन झा (1908-1989) सँ सम्पर्क साधल गेल आ हुनकासँ अनुरोध कयल गेल जे एक एहन एकांकी अभिनेयार्थ समितिकेँ उपलब्ध कराबथि जाहिमे मिथिलाक विद्या-वेदायन्ताक गौरवगाथाक उल्लेख हो। ओ समितिक एहि आग्रहकेँ स्वीकार क' मण्डन मिश्र (1958) एकांकीक रचना क' कए ओकर पाण्डुलिपि समितिक तत्कालीन पदाधिकारी लोकनिकेँ उपलब्ध करौलथिन जे मिथिलाक अतीतकेँ उद्भाषित करैछ जाहिसँ जनमासन रचित भ' सकथि।

अभिनयोपयुक्त एकांकीक पाण्डुलिपि उपलब्ध भेलाक पश्चात् समितिक पदाधिकारी लोकनि अत्यधिक उत्साहित भ' निर्णय लेलनि जे अद्यापि मैथिली रंगमंचपर महिला अभिनेत्रीक भूमिकामे मिथिलाञ्चल वा मिथिलेत्तर क्षेत्रमे पुरुष अभिनेतहि द्वारा अभिनेत्रीक भूमिकाक निष्पादन कराओल जाइत छल, ताहि परम्पराकेँ खण्डित करबाक दिशामे समिति सोचब प्रारम्भ कयलक। ई अनुभव कयल जाय लागल जँ महिला कलाकार उपलब्ध भ' जाथि तँ नाट्य मंचन विशेष स्वाभाविक भ' जायत। मुदा ई एक जटिल समस्या छल। महिला कलाकार औतीह कतयसँ? कोनो मैथिलीक मंचपर आबि अभिनय करथि से सोचनाइयो साहसक काज छल, तखन प्रस्ताव राखब आ मना क' हुनका मंचपर उतारब आ ओर कठिन छल। समिति मैथिली रंगमंचपर एक क्रान्ति अनबाक दिशामे प्रयासरत भेल, कारण समितिक सतत प्रयास रहल अछि ले एहि मंचसँ एहन अभिनव कार्य कयल जाय जकर सुपरिणाम हैत जे जनमानसक हृदयमे रंगमंचक प्रति आकर्षण भावनाक उदय होयतैक तथा नाट्यभिनयमे स्वाभाविकता आ ओ तँ कोनो मैथिलानी रंगमंचार आबि अभिनय करथि ई सोचबो निराधार छल। ई अत्यन्त साहसक काज छल, तखन किनको समक्ष एहन प्रस्ताब रखबाक आ हुनका मना क' मंचपर

उतारब ओहूसँ कठिन छल। समिति सोचलक जे ओही मैथिलीनीक समक्ष प्रस्ताव राखल जाय जनिका हृदयमे मैथिल संस्कृतिक उत्कर्षमय परम्परामे आयोजित होइत सांस्कृतिक अनुष्ठनावा कार्यक्रमक प्रति आकर्षण आ आगाध श्रद्धा होइन। समिति एहि विषयसँ पूर्ण परिचित छल जे हरिमोहन झा उदारवादी प्रगतिशील विचार-धाराक साहित्य-मनीषी छथि तँ समितिक पदाधिकारी लोकनि हुनक आश्रयमे उपस्थित भ' अपन मनोभावनाकेँ रूपायित करबाक निमित्त हुनकासँ सविनय साग्रह अनुरोध कयलक जे एहि योजनाकेँ क्रियान्वित करबाक निमित्त कृपया अपन धर्मपत्नी सुभद्रा झा (1911-1982)केँ अपन एकांकीमे भारतीक भूमिकामे अभिनय करबाक अनुमति प्रदान कयल जाय। किछु क्षणतँ ओ इत्तस्ततःक स्थितिमे आबि गोलाह जे की कयल जाय? ओ अपन रचनादिमे मिथिलाञ्चल नारी जागरणक गखनाद करैशं रहथि तँ ओ अपन उदारवादी दृष्टिकोणक परिचय दैत सहर्ष सांस्कृतिक चेतना सम्पन्न, मैथिल समाजक समक्ष एहि चुनौतीकेँ स्वीकार क' कए युग-युगसँ आबि रहल बन्धन केँ तोड़ि मंचपर अयलीह आ सुभद्राकेँ मण्डन मिश्रक पत्नी भारतीक भूमिकामे रंगमंचपर उपस्थित हैबाक अनुमति देलथिन जे सर्वप्रथम मैथिलानी रंगकर्मीकरूपमे मैथिली रंगमंचपर अवतारित भ' एहि अवरुद्ध धाराक द्वारकेँ भविष्यक हेतु खोलि देलनि जकरा एक ऐतिहासिक घटना कहब समुचित हैत आ मैथिल समाजक हेतु प्रकाश स्तम्भ बनि गेलीह।

मैथिली रंगमंचपर सुभद्रा झा पदार्पण महिला रंगकर्मीमे एक क्रान्ति आनि देलक। चेतना समिति एवं रंगमंच हेतु ई एक ऐतिहासिक घटना भेलैक आ मैथिली रंगमंचक इतिहासमे एक नव अघ्यायक शुभारम्भ भेलैक। हुनकासँ अनुप्राणित भ' पटना विश्वविद्यालक स्नातकोत्तर विभागक एक छात्रा पनिभरनीक भूमिकामे रंगमंचपर उपस्थिति दर्ज करौलनि ओ छलीह अहिल्या चौधरी। एहि एकांकी अभिनय भेल छल लेडी स्टीफेन्सस हालमे। मण्डन मिश्रक भूमिकामे उतरल रहथि आविर्तक उपसम्पादक यदुनन्दन शर्मा आ हुनक पत्नी भारतीक भूमिकामे सुभद्रा झा। पनिभरनीक भूमिका कयने रहथि अहिल्या चौधरी आ ठिठराक भूमिकाक निर्वाह कयने रहथि इण्डियन नेशनलक इन्द्रकान्त झा।

विगत शताब्दीक षष्ठ दशकक उतरार्द्ध अर्थात् सन् 1958 ई. मे चेतना सिमतिक रंगमंचपर एहि एकांकीक सफलतापूर्वक मंचस्थ कयल गेल तथा महिला रंगकर्मी अपन सहभागितासँ एकरा अधिक प्राणवन्त बनौलनि। सुभद्रा झा एवं अहिल्या चौधरीक मैथिली रंगमंचपर उपस्थिति आ हुनका सभक अभिनय कौशल एतेक बेसी प्रभावोत्पादक भेल जे महिला वर्ग एहि कलाक प्रदर्शनमे अपन कुशल कलाकारिताक परिचय देलनि जाहिसँ प्रोत्साहित भ' अधुनातन रंगमंच एतेक विकसित भ' सकल अछि तकर श्रेय आ प्रेय हुनके लोकनिकेँ छनि। समाजक

प्रति सोच, अपन उतरदरयित्वक प्रति प्रतिवद्धता, त्याग, सेवा-भावना आ कर्म निष्ठाक परिणाम थिक जे महिला रंगकर्मी सचेष्टता, तत्परता आ अपन अभिनय-कौशलक परिचय द' रहल छथि। मैथिली रंगमंचक इतिहासमे एकर ऐतिहासिक महत्व छैक।

समिति द्वारा प्रस्तुत एंकाकीक मंचन अनेक दिन धरि पटनाक अतिरिक्त अन्यो स्थानपर चर्चित-अर्चित होइत रहल, जाहिसँ अनुप्राणित भ' समितिक पदाधिकारी लोकनिक विचार भेलनि जे प्रतिवर्ष विद्यापति स्मृति पर्वोत्सवपर कोना-ने-कोनो रुकांकीक मंचन अवश्य कयल जाय, कारण जनमानसक अभिरुचि नाट्यमंचन दिस विशेष जागृत भेल आ अधिकाधिक संख्यामे जनमानसक सहभागिता होमय लागल।

पुन: ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर आधृत गोविन्द झा (1923) एकांकी वीर कीर्ति सिंहक मंचन कयल गेल जाहिमे कीर्ति सिंहक अग्रज वीर सिंहक राजतिलक कराय हुनके हाथे कीर्ति सिहंकँ सिंहासनारूढ करयबाक जटिल समस्या छल जे मौलिक एवं मातृस्नेहक विलक्षण आदर्शकँ रंगमंचपर प्रस्तुत करब कठिन समस्या छल। एहू एकांकीक मंचन स्थानीय लेडी स्टीफेन्सस हालक प्रागंनमे भेल छल। समितिक तत्कालीन सचिव रूपनारायण ठाकुरकँ आशंका छलनि जे ऐतिहासिकताक पृष्ठभूमिमे लिखित एकांकीक मंचन कठिन होइछ, तेँ बारम्बार ओकर असफलताक आशंका व्यक्त करैत रहथि, किन्तु संयोगसँ एकर प्रस्तुति अत्यन्त सफल भेल। दर्शकक मानस पटलपर एकर स्वस्थ प्राभाव पड़लैक। यद्यपि गणपति ठाकुरक मुहेँ असलानसँ दान रूपमे प्राप्त राज्य स्वीकार करयबासँ हुनक उज्ज्वल चरित्र धूमिल भ' जाइछ तथापि निर्देशक हुनक चारित्रिक उत्कर्षकँ एक्शनसँ प्रस्तुत कयलनि।

सामाजिक पृष्ठभूमिपर आधारित एकांकी गोविन्द झाक *मोछसंहारक* (1965) कतोक घटना एहि रूपेँ विन्यस्त अछि जकरा मंचपर प्रस्तुत करब ओहि समय मे मंचीय-कौशलक अभाव रहितहुँ अत्यन्त सफलता पूर्वक ओकर मंचन भेल। एहि एकांकीमे महिला अभिनेत्रीक अभाव छल तेँ एकर प्रस्तुतिमे कोनो प्रकारक कठिनताक अनुभव निर्देशककँ नहि भेलनि। एकर निर्देशन कयने रहथि गोपाल जी झा गोपेश। *मिथिलाक प्रतिनिधि* (1963) एकांकीक मंचन सेहो चेतनाक मंचपर भेल अछि जकर लेखक आ निर्देशन गोविन्द झा स्वयं कयलनि। एहिमे दू महिला अभिनेत्रीक छैक जकर अभिनयमे महिला अभिनेत्रीक भूमिकामे पुन: प्राचीन परम्पराकँ स्थापित कयल गेल जे पुरुष द्वारा महिला अभिनेत्री भूमिकाक निर्वाह करओल गेल।

सन् 1962 ई. मे चीनी आक्रमणक पृष्ठभूमिमे गोपालजी झा *गोपेश* लिखित

गुडूक *चोट धोकड़े* जानय तथा भारत-पाक युद्धक समय *विनु विवाहे द्विरागमक* मंचन चेतनाक तत्वावधानमे विद्यापति स्मृति पर्वोत्सवपर मंचित भेल छल लेडी स्टीफेन्सस हालक प्रंतगनमे। एहि प्रस्तुतिमे भारती ब्लाक वर्क्सक प्रोप्राइटर अर्जुन ठाकुरक संगहि-संग नगीना कुमर एवं निरंजन झा महिला अभिनेत्रीक रूपमे मंचपर उपस्थित भेल रहथि। पुरुष पात्रकेँ महिलाक भूमिकामे देखि क' जनमानसँकेँ कोनो आश्चर्य नहि होइत छलैक एवं नायक-नायिकाक क्रिया-कलाप मे मर्यादाक वचनपर कोनो आश्चर्य वा व्यवधान नहि होइत छलैक। एहि अभिनयमे भाग लेनिहार अन्य कलाकारमे इण्डियन नेशनक बेचन झा, प्रियनारायण झा आ राजेन्द्र झा प्रभृति अपन-अपन भूमिकाक निर्वाह सफलता पूर्वक कयलनि। उक्त दुनू एकांकीमे गीतगाइनिक भूमिकामे कमला देवी एवं हुनक सखी लोकनिक सहयोग चेतनाक मंचकेँ उपलब्ध भेल छलैक।

चेतना द्वारा नियमित मंचक स्थापनाक पूर्व विद्यापति पर्वोत्सवपर जे एकांकी मंचित भेल ओ निम्नस्थ अछि:

वर्ष	**एकांकी**	**एकांकीकार**
1958	मण्डनमिश्र	हरिमोहन झा
1959	मोछ सहांर	गोविन्द झा
1960	मिथिलाक प्रतिनिधि	गोविन्द झा
1961	चंगेराक सनेस	गोविन्द नारायण झा
1962	गूडक चोट धाकड़े जानय	गोपाल जी झा गोपेश
1965	वीर कीर्ति सिंह	गोविन्दझा
1966	बिनु विवाहे द्विरागमन	गोपाल जी झा गोपेश

उपर्युक्त परम्पराक जे शुभारम्भ भेल छलैक ताहिमे कतिपय अपरिहार्य कारणेँ व्यतिक्रम भ' गेलैक तथा समिति द्वारा रंगमंचक दिशामे जे प्रयास भेल छल ओ किछु अन्तरालक पश्चात् अवरुद्ध भ' गेलैक।

किन्तु ताराकान्त झा (1927) जखन समितिक सचिवचक पदभार ग्रहण कयलनि तखन ओ एकर क्रियाकलापकेँ व्यापक फलक पर अनबाक प्रयास कयलनि। हुनक सोच छलनि समितिक विविध आयोजनादि एकहि स्थानपर केन्द्रित नहि रहय: प्रत्युत प्रचार-प्रसारक दृष्टिएँ पटना स्थित विभिन्न मुहल्ला सभमे एकर आयोजनकेँ मूर्त्त रूप प्रदान कयल जाय। ओ अपन एहि योजनाकेँ क्रियान्वित करबाक निमित्त अमरनाथ झा जयन्तीक आयोजन कंकड़बागक लोहिया नगरमे आयोजित करबाक निर्णय कयलनि जाहिमे समितिकेँ गजेन्द्र नारायण चौधरी, वासुकिनाथ झा, गणेशशंकर खर्गा सदृश कर्मठ कार्यकर्ता उपलबध भेलैक।

नाट्यमंच :

शनै:-शनै: चेतना समितिक अपन उतरोत्तर विकास-यात्राक उत्थान वा उत्कर्षमे पहुँचि विविध रूपे मिथिलाक सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विधाकेँ सम्पोषित करबाक दिशामे प्रयासरत भेल। ई अपन गौरवमय परम्पराक अनुरूप विद्यापति स्मृति पर्वोत्सवपर नाट्य मंचनक परम्परा पुर्नस्थापित करबाक तत्कालीन अध्यक्ष कुमार तारानन्द सिंह (1920-) एवं सचिव ताराकान्त झा सोचलनि जे समितिक गतिविधि अत्यधिक प्राणवन्त बनाओल जाय, कारण ओ लोकनि दूरदर्शी व्यक्ति रहथि जनिका कार्यकालमे समिति कतिपय नव-नव योजनाकेँ क्रियान्वित करबाक प्रयास कयलक। मैथिली नाटकक ओ रंगमंचकेँ विस्तृत एवं व्यापक रूप देबाक निमित्त कार्यकारिणी समिति एक अनौपचारिक समितिक गठन कयलक जकर थींक टैंकक सदस्य रहथि गजेन्द्र नारायण चौधरी, वासुकिनाथ झा (1940), छत्रानन्द सिंह झा (1946) एवं गोकुलनाथ मिश्रकेँ अधिकृत कयल गेलनि आ एहि योजनाकेँ कोना मूर्त्त रूप देल जाय ताहि हेतु प्रस्ताव देबाक भार देल गेलनि जकर सुपरिणाम भेल जे नाटकक ओ रंगमंचक विकासार्थ रंगकर्मीक नाट्यमंच (1972) नामक एक प्रभावी प्रभागक स्थापना कयलक जकर उद्देश्य भेलैक नवीन टेकनिक नाटकक अन्वेषण ओकर मंचन तथा प्रकाशन। नाट्यायोजनकेँ मूर्त्त रूप प्रदान करबाक उत्तरदायित्व देल गेलनि नवयुवक नाट्य कर्मी छत्रानन्द सिंह झाकेँ जे रेडियोसँ सम्वद्ध रहथि आ नाट्यमंचक तकनिकक सैद्धान्तिक एवं व्यवाहारिक पक्षक अधिकारिक जानकारी छलनि। अत्याधुनिक नाटकक आ रंगमंचक दिशामे समिति क्रान्तिकारी डेग उठौलक जकर प्रयाससँ रंगमंचकेँ नव-दिशा भेटलैक तथा नाट्यमंचनक परम्पराक शुभारम्भ भेलैक समिति द्वारा।

नाट्यमंचक स्थापनाक पश्चात् मौलिक नाट्य रचना हेतु प्राचीन एवं अर्वाचीन नाटकककारक आह्वान क' कए नव-नव नाटकक अन्वेषणक प्रक्रिया प्रारम्भ भेल। एहि प्रकारेँ रंगमंचक एक सुदृढ परम्पराक स्थापना भेल जे विद्यापति स्मृति पर्व समारोहक अवसरपर वा समिति द्वारा आयोजित कोनो महत्वपूर्ण अवसरपर नाट्यमंचनक एक सशक्त माध्यम स्थापित भेल। समितिक नाट्यमंच एक सार्थक भूमिकाक निर्वहण कयलक जकर लाभ नाटकककारक संगहि-संग रंगमंचकेँ निम्नस्थ लाभ भेटलैक:

1. आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे नवीन नाट्य-साहित्यक विकास यात्राक शुभारम्भ।

2. आधुनिक तकनिकक रंगमंचक स्थापना।

3. राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर मैथिली नाटकक आ रंगमंचकेँ स्थापित करबाक प्रयत्न।

4. अभिनेता-अभिनेत्रीक संगहि-संग कुशल निर्देशकक अन्वेषण।

5. नाटय-लेखनक दिशामे प्रतिभान नाटकककारकेँ प्रोत्साहन।

6. अमंचित एवं अप्रकाशित नाटकक पाण्डुलिपिकेँ आमंत्रित क' कए विशेषज्ञक अनुशंसा पर मंचन।

7. मंचनोपरान्त नाटकक प्रकाशन।

बीसम शताब्दीक सप्तदशकोत्तर कालावधिमे समितिक नाट्यमंच प्रभाग नाटकक लेखक लोकनिसँ नव-नव प्रवृत्ति आ नव-शिल्पक नाट्य रचनाक अनुरोध करब प्रारम्भ कयलक तथा मंचोपरान्त ओकर प्रकाशनक भार वहन करबाक दायित्व स्वीकारलक। नाट्यमंच प्रभाग द्वारा विद्यापति स्मृतिपर्वोत्सव वा अन्याय कोनो आयोजनोत्सवपर मौलिक, अनूदित वा उपन्यास वा कथाक नाट्य-रूप प्रस्तुत करबाक परम्पराक शुभारम्भ कयलक जे नाट्यलेखन आ मंचनक दिशामे ऐतिहासिक घटना थिक जे नव-नव प्रतिभाशाली नाट्य-लेखक लोकनिकेँ प्रोत्साहन भेटलनि तथा प्राचीन आ अर्वाचीन अभिनेता, अभिनेत्री आ निर्देशक लोकनि एकर प्रस्तुतिमे सहभागी बनलाह। अभिनयोपयोगी आ मंचोपयोगी नाटकक जे अभाव साहित्यान्तर्गत छल तकर पूर्त्यर्थ समितिक नाट्य प्रभागक ई निर्णय निश्चित रूपेण नाट्य-लेखन ओकर मंचन तथा ओकर प्रकाशनमे नव-दिशाक संकेत कयलक।

चेतना अपन कार्यक्रमकेँ व्यापक बनयबाक हेतु पूर्व निर्णयानुरूप सन् 1973 ई. मे अमरनाथ झा जयन्तीक आयोजन कंकड़बाग कॉलनीक लोहियानगरमे हैबाक निर्णय भेलैक तथा इहो निर्णय भेलैक जे एहि अवसरपर एक नाट्याभिनयक आयोजन कयल जाय जाहिमे सहयोगी भेलाह वासुकिनाथ झा, गणेशशंकर खर्गा, अमरनाथ झा एवं छत्रानन्द सिंह झा। जखन ई प्रचार भेलैक जे एहि कॉलनीमे अमरनाथ झा जयन्तीक अवसरपर नाट्याभिनयक सेहो योजना छैक तखन कौलनीवासी सभक सहयोग पर्याप्त मात्रामे भेटय लगलनि। ओहि अवसरपर जनमानसक मनोरंजनार्थ *हवेली रानी* नाटकक मंचन भेल छल, जाहिमे रोहिणी रमण झा जे आब मैथिलीक नाटकककार आ अभिनेताक रूपमे चर्चित छथि अभिनेत्री रूपमे रंगमंचपर उतरल रहथि। एहि नाट्य योजनामे कतिपय सहयोगीक बल भेटल जाहिमे उल्लेखनीय छथि इण्डियन नेशनक इन्द्रकान्त झा बेचन झा, आर्यावर्त्तक शिवकान्त झा, राजभाषा विभागक महादेव झा मिथिलेन्दु एवं वेदानन्द झा जनसम्पर्क विभागक एहि आयोजनक ऐतिहासिक महत्व छैक जे बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री केदार पाण्डेय एही मंचसँ बिहार पब्लिक सर्भिस कमीशनमे मैथिलीक स्वीकृति आ मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापनाक उद्घोषणा कयने रहथि।

प्रारम्भिकावस्थामे अभिनयोपयुक्त नाटकक अभाव रहलैक ओकरा संगहि-संग रंगमंचकेँ नवरूप देबाक प्रयास भेलैक। समयाभावक कारणेँ समितिक नाट्यमंच

प्रभाग द्वारा एकर प्रयोग प्रारम्भ भेलैक दिगम्बर झा लिखित एकांकी टुटैत लोकसँ। पुन: समितिकेँ महिला अभिनेत्रीक अन्वेषणक प्रक्रिया प्रारम्भ कयलक जाहिमे ओकरा कठिनताक सामना करय पड़लैक, किन्तु संयोगसँ रेडियोक अभिनेत्री प्रेमलता मिश्र प्रेम, कुमारी भारती मिश्र तथा अभिनेयताक रूपमे छात्रानन्द सिंह झा, जगन्नाथ झा, नरसिंह प्रसाद आ वेदानन्द झाक अविस्मरणीय सहयोगक फलस्वरूप ई प्रदर्शन अत्यन्त सफल भेल जाहिसँ आयोजक संगहि-संग संयोगकक सेहो उत्साहवर्द्धन भेलनि। एहि एकांकीक निर्देशन कयने रहथि गणेश प्रसाद सिन्हा तथा बिहार आर्ट थियेटरक संस्थापक अनिल कुमार मुखर्जीक अपरिमित तकनिक सहयोग भेटलनि। एहि एकांकीक मंचनक संग प्रथमे-प्रथम आधुनिक रंगमंचक अवधारणाक एकरा बानगी प्रस्तुतमे भेल।

नाट्यमंचक विधिवत स्थापानोपरान्त जनमानसक मनोवृत्तिमे नाटकक आ रंगमंचक प्रति प्रतिवद्धताक संगहि-संग नाट्यमंचनक हेतु प्रतीक्षातुर रहब एक औत्सुकयक भावनाक उदय होइतहि समितिक पदाधिकारी लोकनि एकरा प्रति अपन सचेष्टता आ तत्पारता देखायब प्रारम्भ कयलनि तकरे परिणाम थिक जे नाट्यमंच मौलिक आ नव तकनिकक नाट्यक हेतु अन्वेषण करब प्रारम्भ कयलक। नाट्यमंचक संयोगक छत्रानन्द सिंह झाकेँ ई गुरुतर भार देल गेलनि जे अग्रिम वर्ष चेतनाक नाट्यमंचक तत्वावधानमे समसामयिक समस्यासँ सम्बन्धित एहन मौलिक नाट्य लेखकसँ सम्पर्क क' कए नव तकनिकक नाटकक हेतु प्रयास करथि। एहि हेतु ओ हिन्दीक वरिष्ठ नाटककार आ मिथिला मिहिरक तत्कालीन सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरी (1920-1990)सँ सम्पर्क साधि हुनकासँ एक एहन नाटकक अनुरोध कयलनि जे जनमानसक हृदयकेँ स्पर्श कयनिहार हो। एहि प्रसंगमे नाटककारक कथन छनि, आकाशवाणी पटनाक बटुक भाइक आ चेतना समितिक वर्त्तमान सचिव गजेन्द्र नारायण चौधरी ठोंठ मोकि हमरासँ भफाइत चाहक जिनगी लिखा लेलनि आ हम मैथिली नाटककारक रूपमे चीन्हल आ जानल जा सकलहुँ। (भफाइत चाहक जिनगीक आत्म-कश्य) ओ हुनक अनुरोधनि मैथिलीमे प्रथमे-प्रथम काल खण्डी नाटकक लिखलनि भफाइत चाहक जिनगी जकरा नाट्यमंचक तत्वावधानमे सन् 1974 ई. मे शहीद स्मारकक प्रांगणमे प्रस्तुत कयल गेल जाहिमे प्राय: पैंतीस हजारसँ बेसी मैथिल समाजक छोँटल-बीछल लोक दम साधि नाटकक एक-एक शब्द पीबैत रहल, एक-एक दृश्यकेँ अपलक देखैत रहल। एहि प्रदर्शनक सफलताक प्रमुख करण छलैक जे एहि प्रकारक नाट्यायोजन चेतना समिति द्वारा पूर्वमे नहि भेल छल तेँ दर्शककेँ ई सर्वथा नवीनताक आभास भेटलैक। नाटकक सफलता एहिमे रहलैक जे अपेक्षित ध्वनि प्रकाश आ उपयुक्त प्रेक्षागृहक अभावोमे नाट्यमंच चुनल बीछल कलाकारक सक्रिय सहभागिताक फलस्वरूप एकरा

रूपायित कयल जा सकल। अग्रिम वर्ष ओकर प्रकाशनक व्यवस्था कयल गेलैक जकर परिणाम भेलैक जे जनमानसक जन-मन-रंजनक साधनक संगहि समकालीन समाजमे व्याप्त वेरोजगारीक समस्याक हृदयस्पर्शी कथानक जनमानसक आकर्षणक केन्द्र विन्दु बनि गेलैक।

एहि प्रस्तुतिमे सहभागी रहथि छत्रानन्द सिंह झा, हृदयनाथ झा, वेदानन्दझा, अशर्फी पासवान आजनवी, बन्धु, फन्नत झा, परमानन्द झा, चन्द्रप्रकाश झा, मोदनाथ झा, मनमोहन चौधरी, शम्भुदेव झा, रामनरेश चौधरी, प्रेमलता मिश्र प्रेम, कुमारी रमा चन्द्रकान्ति, सुरजीत कुमार एवं सुनील कुमार। अपार जन समुदायक उपस्थितिमे ई नाटक प्रशंसिते नहि, प्रत्युत बहुतो दिन धरि चर्चाक विषय बनल रहल। नाटकक सफलतामे नाटकमे कलाकार लोकनिक ओ अदम्य उत्साहक संग-संग बिहार आर्ट थियेटर जन सम्पर्क विभाग आ भारत सरकारक संगीत एवं नाटकक विभागक कलाकार लोकनिक सहयोगकेँ अस्वीकारल नहि जा सकैछ।

वस्तुत: एहि प्रस्तुतिक सफलतासँ समितिक पदाधिकारी लोकनि पुन: हुनकासँ एक नव नाटकक रचनाक अनुरोध कयलक। आधुनिकताक सन्दर्भमे एक सेटक नाटककमे सुधांशु शेखर चौधरीक कथा-वस्तु मूल प्रवाह संग-संग एक वा एकसँ अधिक अन्तर प्रवाहक प्रयोग रहल अछि। ओ नाट्य मंचक संयोजक छत्रानन्द सिंह झाक प्रस्तुतिसँ एतेक प्रभावित भेलाह जे अपन दोसर नाटकक ढ़हैत देवाल लेटाइत आँचरक रचना क' कए हुनका देलथिन प्रस्तुति करबाक हेतु। पुन: एहू काल-खण्डी नाटकक प्रदर्शन एतेक प्रभावकारी भेल आ जनमानस नवनाट्य प्रस्तुतिक हेतु वर्षभरि प्रतीक्षातुर रहय लागल। एहि प्रकारेँ नाट्यमंच नाटकक आ रंगमंचक दिशामे अपन डेग आगू बढबैत गेल। नाट्य-प्रदर्शनक सफलताक पाछाँ नाट्यामंचक प्रतिवद्ध कलाकार लोकनिक अदम्य उत्साहक फलस्वरुप एकर नाट्याभिनय अपार जनमानसक समक्ष भेल। एहि नाटककमे प्रतिभगी कलाकार लोकनिमे हृदयनाथ झा, मोदनाथ झा, अशर्फी पासवान अजनवी, शंभुदेव झा, रामनरेश चौधरी, सत्यनारायण राउत, वीरेन्द्रकुमार झा, फन्नत झा, बालाशंकर, कल्पनादास एवं प्रेमलता मिश्र प्रेम। एहि नाट्ययोजनक सब श्रेय कलाकार लोकनिक परिश्रमक संगहि-संग बिहार आर्ट थियेटर एवं जनसम्पर्क विभागक कलाकारकेँ रहलनि।

चेतना समितिक ई अभिनव प्रयास भेलैक जे मिथिलाञ्चलक पुरातन सांस्कृतिक विरासत तथा नाट्य साहित्यक अविच्छिन्न समृद्धिशाली आ गौरवशाली परम्परामे एक नव प्राणक स्पन्दन भरबाक निमित नियमित रूपेँ प्राचीन एवं अर्वाचीन प्रतिभाशाली नाट्य-लेखकक आह्वान क' कए नाट्य लेखनक दिशामे प्रोत्साहन, मंचोपरान्त ओकर प्रकाशनक व्यवस्थित परम्पराक व्यवस्था कयलक सन् 1973 ई.

सँ जे जनमानसक मनोरंजनक संगहि-संग नाट्य-साहित्यिक सम्वर्द्धनक दिशामे गतिशील भेल जे विद्यापति स्मृति पर्वोत्सवपर संगहि-संग अमरनाथ झा, हरिमोहन झा, ललितनारायण मिश्र एवं जयनाथ मिश्र जयन्तीक अवसरपर मौलिक, अन्य भारतीय भाषासँ अनूदित वा मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास वा कथाक नाट्य रूपान्तरणक परम्पराक शुभारम्भ कयलक जे अद्यपर्यन्त अव्याहत रूपेँ चलि आबि रहल अछि। एकर सुपरिणाम एतबा अवश्य भेलैक जे अद्यापि निरस्थ नाटकक मंचन समितिक तत्वाधानमे भेल अछि जकरा ऐतिहासिक घटना कहब विशेष समुचित हैत, कारण भंगिमा (1984)केँ छोड़ि क' मिथिलाञ्चल वा मिथिलेत्तर क्षेत्रक कोनो नाट्य संस्था अद्यापि एतेक परिभाषामे नाट्यायोजन नहि क' सकल अछि। एकरा द्वारा मंचित नाटकककेँ विविध काल-खंडमे सुविधानुसार विभन्न दशकमे प्रदर्शित नाटकक तिथिक अनुसारेँ कयल जा रहल अछि।

अमरनाथ झा जयन्तीक आयोजनपर महेन्द्र मलंगिया (1946) क ओकरा आडन्नक बारहमासा, गुणनाथ झाक पाथेय, गंगेश गुंजन (1941)क चौबटियापर/बुधिबधिया एवं रोहिणीरमण झाक अन्तिम गहना, हरिमोहन झा जयन्तीपर हुनकहि द्वारा लिखित एकांकी अयाची मिश्र (1956), हुनक प्रसिद्ध कथा पाँच पत्रक एकल अभिनय एवं छत्रानन्द सिंह झाक आदर्श कुटुम्बक नाट्य रूपान्तरण, ललित नारायण मिश्र जयन्तीपर तन्त्रनाथ झा (1909-1994)क उपनयनाक भोज (1949) एवं अरविन्द अक्कू गुलाब छडी तथा जयनाथ मिश्रक जयन्तीपर हरिमोहन झाक प्रसिद्ध कथा कन्याक जीवनक नाट्य रूपान्तरण विभूति आनन्द द्वारा तित्तिर दाइकेँ मंचस्थ कयल गेल जकर विवरण निम्नास्थ अछि :

विगतीत शताब्दीक अष्टम दशकमे मंचित एकांकी / नाटकक:

तिथि	नाटकक	नाटकककार	अभिनीत स्थान	अवसर	निर्देशक
10 नवम्बर 1973	टुटैत लोक	दिगम्बर झा	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	गणेशप्रसाद सिन्हा
10 नवम्बर 1974	भफाइत चाहक जिनगी	सुधांशु शेखर चौधरी	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	गणेशप्रसाद सिन्हा
18 नवम्बर 1975	ढ़हैत देवाल/लेटाइत आँचर	सुधांशु शेखर चौधरी	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	गणेशप्रसाद सिन्हा
6 नवम्बर 1976	पसिझैत पाथर	रामदेव झा	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	नवीनचन्द्रा मिश्र
6 नवम्बर 1976	एक दिन एक राति	सीताराम झा श्याम	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
23 नवम्बर 1977	एकरा अन्तर्यात्रा	जर्नादन राय	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	जनार्दन राय
25 नवम्बर1977	इन्टरव्यू	जनार्दन राय	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	जनार्दन राय
25 नवम्बर 1977	रिहर्सल	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	रवीन्द्रनाथठाकुर
25 नवम्बर 197	ओझा जी	दमनकान्त झा	शहीद स्मारक	विद्यापती पर्व	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
14 नवम्बर 1978	पाहिल साँझ	सुधांशु शेखर चौधरी	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	अखिलेश्वर
14 नवम्बर 1978	हॉस्टल गेस्ट	सच्चिदानन्द चौधरी	शहीदस्मारक	विद्यापति पर्व	सच्चिदानन्द चौधरी
25 फरवरी 1979	ओकरा आङनक बारहमासा	महेन्द्र मलंगिया	आइ.एम.ए.हॉल	अमरनाथ झा जयन्ती	अखिलेरवर
4 नवम्बर 1979	ओंकरा आङनक बारहमासा	महेन्द्र मंलगिया	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	अखिलेश्वर
4 नवम्बर 1979	चानोदाइ	उषाकिरण खाँ	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	अखिलेश्वर
22 नवम्बर1980	एक कमल नोरमे	महेन्द्र मलंगिया	शहीद स्मारक	विद्यापति पर्व	अखिलेश्वर

एहि दशकक कालावधिमे कुल पन्द्रह एकांकी/नाटकक प्रस्तुति कयल गेल

जाहिमे पाँच नाटकक आ शेष दस एकांकी अछि। एहि दशाब्दक अन्तर्गत ख्याति अर्जित कयलक भफाइत चाहक जिनगी, ढ़हैत देवाल, लेटाइत आँचर। पहिल साँझ एवं ओकरा आङनक बारहमासा, कारण नाटकककार सामाजिक परिप्रेक्ष्यकेँ घ्यानमे राखि क' एकर कथानक संयोजन कयलनि जे जनमानसपर अपन अमिट छाप छोड़बामे सहायक सिद्ध भेल। उपर्युक्त नाटकादिक कथानक द्रुतगामिता, घटना-उपघटनादिक विस्तारक संग समन्वित क' कए नाटकककार नाट्य साहित्यान्तर्गत तेहन मानदण्ड स्थापित क' देलनि जे अन्यतम भ' गेलाह। एहि संस्था द्वारा जखन-जखन नाट्यायोजन कयल गेल तखन-तखन दर्शकक रूपमे सम्पूर्ण मैथिल समाज उनटि आयल जे एकर लोक प्रियताक प्रतिमान थिक।

बीसम शताब्दीक नवम दशकमे मंचित एकांकी/नाटकक :

तिथि	नाटकक	नाटकककार	अमिनीत स्थान	अवसर	निर्देशक
22 फरवरी1961	पाथेय	गुणनाथ झा	आइ. एम. ए. हॉल	अमरनाथ झा जयन्ती	रमेश राजहंस
11 नवम्बर 1981	आगिधधाक रहल छै	अरविन्द अक्कू	बाल उदद्यान प्रांगण	विद्यापति पर्व	मादनाथ झा
22 फरवरी ट 1982	चौबयिापर/बुधिबधिया	गंगेश गंजन	आइ. एम. ए. हॉल	अमरनाथझा जयन्ती	विभूति आनन्द
28 नवम्बर1982	अन्तिम प्रणाम	गोविन्दझा	बालउद्यानप्रांगण	विद्यापतिपर्व	जावेद अखतर खाँ
28 नवम्बर 1982	बेचारा भगवान	अनुवादक शैलेन्द्रपटनिया	बालउद्यान प्रांगण	विद्यापति पर्व	कौशलदास दास
28 नवम्बर 1983	भर्तृहरि	अनुवादक शारदानन्द झा	बालउद्यानप्रांगण	विद्यापतिपर्व	जावेद अख्तर खाँ
8 नवम्बर1984	प्रायश्चित	छात्रानन्दसिंह झा	बाल उद्यान प्रांगण	विद्यापतिपर्व	विनोद कुमार झा
8 नवम्बर 1984	नवतुरिया	उषाकिरण खाँ	बान उद्यान प्रांगण	विद्यापति पर्व	त्रिलोचन झा
8 नवम्बर 1984	टूलेट	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	बाल उद्यान प्रागंण	विद्यापति पर्व	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
26 नवम्बर1985	एना कत्तेदिन?	अरविन्द अक्कू	बाल उद्यान प्रांगण	अमरनाथ झा जयन्ती	प्रशान्त कान्त

अन्हार जंगल अरविन्द अक्कू बाल उद्यान प्रांगन विद्यापति पर्व त्रिलोचन झा

5 नवम्बर 1987	जादूजंगल	अनुवादक रोहिणीरमण झा	बालउद्यानप्रांगण	विद्यापतिपर्व	अरविन्द रंजनदास
23 नवम्बर 1988	विद्यापति बैले	सरोजा वैद्यनाथ	बालउद्यान प्रांगण	विद्यापतिपर्व	सरोजावैद्यनाथ
23 नवम्बर 1988	जखते कहल कक्का हो	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	बालउद्यानक प्रांगण	विद्यापतिपर्व	मनोज मनु
23 नवम्बर 1988	रुकमिणी हरण	गोविन्द झा	बालउद्यान प्रांगण	विद्यापति पर्व	कुणाल
18 सितम्बर 1989	अयाची मिश्र	हरिमोहन झा	विद्यापति भवन	हरिमोहन झा	जयन्ती
13 नवम्बर 1989	आतंक	अरविन्द अक्कू	बाल उद्यानक प्रांगण	विद्यापतिपर्व	त्रिलोचनझा
2 फरवरी1990	अपनयनाकभोज	तन्त्रनाथ झा	विद्यापति भवन	ललितनारासण मिश्र जयन्ती	भवनाथ झा
4 मार्च 1990	तितिरदाइ	रूपकार विभूति आनन्द	विद्यापति भवन	जयनाथमिश्र जयन्ती	किशोर कुमार झा
18 सितम्बर1990	आदर्श कुटुम्ब	रूपकार छात्रानन्द सिंह झा	विद्यापतिभवन	हरिमोहनझा जयन्ती	उमाकान्त झा
2 नवम्बर 1990	राजा सल्हेस	रोहिणीरमण झा	मिलरहाइस्कूल प्रांगण	विद्यापतिपर्व	प्रशान्तकान्त

अपन अस्तित्वक एक दशक पूर्ण कयलाक पश्चात् नाट्यमंच द्वारा 26 नवम्बर 1984 ई. मे ई एक नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन कयलक जाहिमे प्रतिभागी नाट्यसंस्थाहि नाट्याभिनय कयलक। पटनामे प्रादुर्भूत रंगकर्मी सहमागी बनल। भंगिमाक प्रस्तुति छल प्रायश्चित छत्रानन्दसिंह झा द्वारा लिखित आ विनोद कुमार झा द्वारा निर्देशित ई नाटकक अति प्राचीन कथ्थक संग मंचस्थ भेल। सीताक पाताल प्रवेश चिरपरिचित कथानकेँ नारी-मुक्ति-आन्दोलन चश्मासँ देखलापर एहि नाटकक कथानक प्रासंगिक छल अन्यथा गीत गाओल छल। नाटकक सम्वाद अत्यधिक सशक्त रहलाक कारणेँ नाट्य प्रस्तुति प्राणवन्त बनि गेल एहि नाटकक निर्देशन कयने रहथि विनोद कुमार झा हुनक अथक परिश्रमक झलक भैटल

दर्शककेँ। ओना रामक गौरांग शरीर निर्देशकक राम-कथाक स्पष्ट अध्ययन दिस प्रश्न चिह्न उपस्थित करैछ। एहि नाटकककेँ दर्शनीय बनयबाक पाछाँ विशिष्ट चमत्कारिक संवाद-योजना। प्रकाश-परिकल्पना आ प्रभावोत्पादक घ्वनिक माघ्यमे सीताक पाताल प्रवेश देखाओल गेल। एकर मंच-सज्जा पटनामे अद्यापि मंचित मैथिली नाटककमे सर्वोत्कृष्ट छल।

अरिपनक प्रस्तुति छल वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक उपन्यास नवतुरिया (1954)क नाट्य रूपान्तरण कयने छलीह उषाकिरण खाँ जकर निर्देशन कयने रहथि त्रिलोचन झा। मृतपाय समस्यावला कथ्य आ छोट-छोट रेडियो टाइप दृश्यक रहितहुँ निर्देशक अपन प्रतिभाक बलेँ नीक प्रस्तुति कयने छलहि। अभिनेता लोकनिमे चुनि-चुनि क' संवाद बजबाक प्रवृत्ति छल। किछु कलाकारक अभिनय अतीव प्रभावशाली छल, किन्तु शेष कलाकार पिछड़ि गेलाह, मंच-सज्जा नाटकक अनुरूप छल तथा पार्श्व-संगीत तथा प्रकाश अवस्था सामान्य छल।

नवनिर्मित नाटय-संस्था अभिनव भारतीक प्रस्तुति छल टूलेट जकर लेखक आ निर्देशक रहथि रवीन्द्रनाथ ठाककु,। निर्देशककेँ कलाकार लोकनिपर कोनो नियंत्रण नहि छलनि आ ओ सभ मंचपरक फूलदानसँ अत्यन्त हल्लुक हास्य उत्पन्नकरबामे सफल भेलाह। एकर प्रस्तुति ग्रामीण मंच सदृश प्रहसनक श्रेणीमे आबि गेल।

उपर्युक्त प्रतियोगितामे भंगिमाकेँ प्रथम, अरिपनकेँ द्वितीय आ अभिनव भारतीकेँ तृतीय घोषित क' कए क्रमश: दू हजार एक सय, एकहजार पाँच सय आ एक हजार एक सयक पुरस्कार चेतना समिति प्रदान कयने छल जे नाटकक आ रंगमंचक क्षेत्रमे एक साहसिक प्रयास कहल जा सकैछ।

विगत शताब्दीक अन्तिम दशकमे मंचित एकांकी/नाटक :

तिथि	नाटकक	नाटकककार	अभिनीत स्थान	अवसर	निर्देशक
21 नवम्बर 1991	रक्त	अरविन्द अटकूम	मिलरहाइस्कूलप्रांगण	विद्यापतिपर्व	मनोजमनु
10 नवम्बर 1992	लीडर	वनदेवी पुत्र भवनाथ	मिलरहाइस्कूलप्रांगण	विद्यापति पर्व	रघुनाथ झा किरण
28 नवम्बर 1993	ओरिजन काम	महेन्द्र मलंगिया	मिलरहाइस्कूल प्रांगण	विद्यापति पर्व	महेन्द्र मलंगिया
17 नवम्बर 1994	अथअद्भुतानन्द	संजय कुन्दन	मिलर हाइ स्कूल प्रांगण	विद्यापति पर्व	कुमार शैलेन्द्र
6 नवम्बर 1995	एकरा चिनसा	विनोद कुमार मिश्र बन्धु	मिलरहाइ स्कूल प्रांगण	विद्यापति पर्व	प्रशान्त कान्त
29 नवम्बर 1996	केकर?	अरविन्द अक्कू	मिलर हाइ स्कूल प्रांगण	विद्यापति पर्व	कौशन किशोरदास
27अगस्त 1997	बरेहर हम आ बाहरे हमर नाटकक	अरविन्द अक्कू	विद्यापति भवन	स्वतंत्रातक स्वर्णजयन्ती	विनीतझा
14 नवम्बर 1997	पदुआ कक्का अयुल गाम	अरविन्द अक्कू	भारतीय नृत्यकला मंदिर	विद्यापति पर्व	विनीतझा
4 नवम्बर 1988	गुलाबछडी	अरविन्द अक्कू	मिलर हाइ स्कूल प्रांगण	विद्यापति पर्व	विनीत झा
2 फरवरी 1999	गुलाब छडी	अरविन्द अक्कू	विद्यापति-भवन	ललित जयन्ती	विनीतझा
23 नवम्बर 1999	अग्निपथक सामा	कुमार शैलेन्द्र	कृष्णमेमोरियलहॉल	विद्यापतिपर्व	किशोरकुमारझा
11 नवम्बर 2000	सेहन्ता	रोहिणीरमण झा	भारत स्काउट एण्डगाइड प्रांगण	विद्यापतिपर्व-	रघुनाथझा किरण

नाटकक ओ रंगमंचक प्रगतिक प्रारूप भेटैछ विगत शताब्दीक अन्तिम दशकमे प्रदर्शित नाटकादिमे। यद्यपि एहि दशाब्दमे मात्र बारह नाटकक प्रस्तुति भेल। भारतीय स्वतन्त्रताक पचास वर्ष पूर्ण भेलापर विहार सरकारक कला संस्कृति एवं युवा विभाग 15 अगस्तसँ 1 सितम्बर 1977 धरि विद्यापति भवनमे नाट्य समारोहक आयोजन कयलक जाहि मे चेतना समितिक नाट्यमंचकेँ प्रतिभागीक रूपमे आमंत्रित कयलक जाहि प्रतिभागी भ' मैथिली नाटकक प्रस्तुति कयलक *वाह रे हम आ वाह रे हमर नाटकक।* एहिसँ प्रमाणित होइछ जे सरकारी स्तरपर सेहो चेतनाक नाट्यमंचक स्वीकृति प्राप्त अछि। आधुनिक समाजमे व्याप्त विभिन्न समस्यादिक परिप्रेक्ष्यमे नाटकककार लोकनि कथानक संयोजन कयलनि जकरा जनमानसक हृदयकेँ स्पर्श कयलक।

एकैसम शताब्दीक प्रथम दशकमे मंचित नाटक :

30 नवम्बर 2001	नवघर उठे	कमल मोहल चुन्नू	भारत स्काउटएण्ड गाइड प्रांगण	विद्यापति पर्व	रघुनाथ झा किरण
19 नवम्बर 2002	शपथग्रहण	कुमार गगन	भारत स्काउट एण्ड गाइड प्रांगण	विद्यापतिपर्व	किशोरकुमार झा
8नवम्बर 2003	राज्याभिषेक	अरविन्द अक्कू	भारत स्काउट एण्ड गाइड प्रांगण	विद्यापति पर्व	उमाकान्त झा
26 नवम्बर 2004	छूतहा घैल	महेन्द्रमलंगिया	भारत स्काउट एण्ड गाइड प्रांगण	विद्यापति पर्व	किशोर कुमार झा
15 नवम्बर 2005	जयजयजनताजर्नादन	कुमार गगन	विद्यापति भवन	विद्यापति पर्व	कुमार गगन
2 नवम्बर 2006	नदी गुगिआयलजाय	मनोज मनु	कॉपरेटिभफेडरेशन प्रांगण	विद्यापतिपर्व	मनोजमनु
24 नवम्बर 2007	अलखनिरंजन	अरविन्द अक्कू	कॉपरेटिभफेडरेशन प्रांगण	विद्यापति पर्व	कौशल किशोरदास

वर्त्तमान शताब्दीमे अद्यापि सात नाटकक मंचन भेल अछि जाहिमे सभक प्रस्तुति दिनप्रतिदिन प्रगतिक पथपर अग्रसर अछि। प्रत्येक नाटकक अपन कथ्यक नवीनतासँ अनुप्राणित अछि तथा ओकर प्रस्तुतिमे शनैः-शनैः विकास भ' रहल अछि जकर सुपरिणाम भेलैक जे अलखनिरंजनक प्रस्तुति एतेक आकर्षक आ कथानकक नवीनता आ समसामियक रहबाक कारणेँ जनमानसक हृदयकेँ स्पर्श कयलक। एहि प्रस्तुतिक सफलतासँ अनुप्राणित भ' समितिक पदाधिकारी लोकि प्रतिभागी कलाकार लोकनि केँ पुरस्कृत करबाक निर्णय कयलना ई आयोजन 14 दिसम्बर 2007 केँ विद्यापति भवनमे आयोजित कयल गेल छल तथा नाटकक ओ रंगमंचक लब्धप्रतिष्ठ विद्वान प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह द्वारा प्रतिभागी कलाकार लोकनिकेँ नगद राशि एवं प्रमाण पत्रसँ सम्मानित कयल गेलनि जे हुनका सभक मनोबलकेँ बढ़यबाक दिशामे अहं भूमिकाक निर्वाह कयलक आ भविष्यक हेतु पाथेय सिद्ध हैत।

प्रकाशन :

रंगमंचक क्षेत्रमे चेतना समितिक नाट्यमंच प्रभाग एक प्रतिमान प्रस्तुत कयलक जे अद्यापि कुल मिला क' सनतावन एकांकी/नाटकक अपन तत्वावधानमे मंचित करौलक अछि जे उपर्युक्त विवरणसँ स्पष्ट अछि। नाट्यमंचक तत्वावधानमे जतेक

नाटकक अद्यापि मंचित भेल अछि तकर सूची वृहत्तर अछि जकरा देखलासँ अनुमान कयल जा सकैछ जे समिति नाट्य प्रेमीक समक्ष एक कीर्तिमान स्थापित करबामे पूर्ण सफल भेल अछि। समितिक ई प्रभाग द्वारा नवोदित नाट्यकारक नाट्य-कृतिकेँ प्रकाशित कयलक अछि जे अद्यापि मैथिली जगतक कोनो संस्था द्वारा नहि कयल गेल अछि। नाट्य लेखन, मंचोपरान्त ओकर कमी बेसीकेँ सुधारिक क' प्रकाशित कयलक अछि यथा दिगम्बर झाक टूटैत लोक (1974), सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी (1975) एवं ढ़हैत देवाल/लेटाइत आँचर (1976), महेन्द्र मलंगियाक ओकरा आङनक बारहमासा (1980), अरविन्द अक्कूक आगि धधकि रहल छै (1981), एना कत्ते दिन? (1985), अन्हार जंगल (1987), आतंक (1994), के ककर? (1986), वाह रे हम वाह रे हमर नाटकक (1998), पद्धुआ कक्का अएला गाम (1994), गुलाबछड़ी (1999) राज्याभिषेक (2005), अलख निरंजन (2008), गंगेश गुंजनक चौबटियापर। बुधि बधिया (1982) गोविन्द झाक अन्तिम प्रणाम (1982) एवं रुक्मिणी हरण (1989), रोहिणीरमण झाक अन्तिम गहना (1929) एवं राजा सलहेस (1990), विभूति आनन्द का तित्तिर दाइ (1994) वनदेवी पुत्र भवनाथक लीडर (1994), कुमार शैलेन्द्रक अग्नि पथक सामा (2000), कमल मोहन चुन्नूक नव घर उठे (2001), कुमार गगनक शपथग्रहण (2003) एवं विनोद कुमार मिश्रक एकटा चिनमा (2006) आदि।

चेतनाक नाट्यमंचपर निम्नस्थ एकांकी/नाटकक मंचपर तँ अवश्य मंचित भेल, किन्तु ओ पुस्तकाकार रूपमे पाठकक समक्ष नहि आबि सकल अछि तकर एकमात्र कारण आर्थिक दवाब समितिक समक्ष रहल वा अन्यान्य भाषासँ अनूदित वा उपन्यासकेँ रूपान्तरित क' कए मंचस्थ कयल गेल हो यथा सीताराम झा श्यामक *एकदिन एक राति*, जनार्दन रायक *एकटा अन्तर्यात्रा* एवं *इन्टरव्यू*, रवीन्द्रनाथ ठाकुरक *रिहर्सल टूलेट*, एवं *जखने कहल कक्का हो*, दमनकान्त झाक *ओझा जी*, सच्चिदानन्द चौधरीक *हॉस्टलक गेस्ट*, उषाकिरण खाँक *चानोदाइ* एवं *नवतुरिया*, शैलेन्द्र पटनियाँक *बेचारा भगवान*, शारदानन्द झाक *भर्तृहरि*, रोहिणीरमण झाक *जादू जंगल एवं सेहन्ता*, छत्रानन्द सिंह *आदर्श कुटुम्ब*, संजय कुन्दनक *अथ अद्धदानन्द*, कुमार गगनक *जयजय जनार्दन*, महेन्द्र मलंगियाक *छूत घैल*, मनोज मनुक *नदी गोंगिआयल जाय* एवं अखनीन्द अक्कूक *अलख निरंजन* आदि।

समिति द्वारा मंचस्थ किछु नाटकक एहनो उपलब्ध भ' रहल अछि जकर

प्रकाशनमे निरर्थक विलम्ब देखि नाटककार ओकरा अन्यान्य संस्थादिसँ प्रकाशित करयबाक सयत्न प्रयास कयलनि यथा सुधांशु शेखर चौधरीक *पहिल साँझ* (मैथिली अकादमी पटना 1989) रामदेव झाक *पसिझैत पाथर* (संकल्य लोक, लहेरियासराय 1989) अरविन्द अक्कूक *रक्त* (शेखर प्रकाशन, पटना 1992) महेन्द्र मलंगियाक ओरिजनल काम (ललित प्रकाशन, मलंगिया 2000) एवं छत्रानन्द सिंह झाक प्रायश्चित/सुनूजानकी (शेखर प्रकाशन, पटना 2007) आदि।

चेतनाक नाट्य प्रभाग नाट्यमंच द्वारा प्रस्तुति एतेक बेसी लोकप्रियता अर्जित कयलक, जनमानसकेँ आकर्षित कयलक जे नाटककमे भाग लेनिहार अभिनेतामे अभिनेत्रीकेँ पुरस्कृत करबाक घोषणा नाट्यप्रेमी जनमानस द्वारा भेल जाहिसँ नाट्यत्योजनामे प्रतिभागी कलाकार लोकनिकेँ प्रोत्साहन भेटब प्रारम्भ भेलनि तथा ओ सभ अत्यन्त मनोसोग पूर्वक एहिमे प्रतिभागी बनब प्रारम्भ कयलनि। एहि प्रकारक दू पारितोषिक चेतनाक मंचसँ घोषित भेल जकर आर्थिक भार ओ वहन कयलनि जनिक स्मृतिमे एकर स्थापना कयलनि।

शैलवाला मिश्र स्मृति पारितोषिक :

मधुबनी जिलाक चानपुरा ग्राम निवासी साइन्स कॉलेज पटनाक प्राक्तन प्रधानाचार्य एवं विश्वविद्यालय सेवा आयोगक प्राक्तन अध्यक्ष सूर्यकान्त मिश्र अपन दिवंगता धर्मपत्नीक स्मृतिमे हुनक सांस्कृतिक कार्यक्रमक प्रति अनुराग विशेषतः अभिनयमे अभिरुचिक लेल चेतना समितिक नाट्य प्रभाग नाट्यमंच द्वारा आयोजित विद्यापति स्मृति पर्वोत्सवपर अभिनीत नाटकक अभिनयमे सर्वोत्तम अभिनयक लेल शैलवाला स्मृति परितोषिकक घोषणा कयलनि। एहि निमित्त 1984 वर्षक लेल एक सय एक एवं भविष्यक हेतु एक हजार एक टाका फिक्स डिपोजिटमे रखबाक हेतु समितिकेँ समर्पित कयलनि। तदनुसार चेतना समितिक नाट्य प्रभाग नाट्यमंच द्वारा शैलवाला स्मृति पारितोषिक योजना प्रारम्भ कयलक जकरा अन्तर्गत निम्नस्थ सर्वोतम कलाकारकेँ सर्वोतम अभिनयक हेतु पुरस्कृत कयल गेल अछि, यथा :

वर्ष	नाटकक	नाटकककार	पुरस्कृत कलाकार
1984	नवतुरिया	नाटयरूपकार उषाकिरण खाँ	हेमचन्द्र लाभ
1985	एनाकते दिन?	अरविन्द अक्कू	त्रिलोचन झा
1986	अन्हार जंगल	अरविन्द अक्कू	अशोक चौधरी
1987	जादू जंगल	रोहिणी रमण झा	प्रशान्त कान्त
1988	रुकमिणी हरण	गोविन्द झा	प्रेमलता मिश्र प्रेम
1990	राजा सलहेस	रोहिणीरमण झा	सुनीलकुमार झा
1991	रक्त	अरविन्द अक्कू	शारदा सिंह

1992	लीडर	वनदेवी पुत्र भवनाथ	शरारदा सिंह
1993	ओरिजनलकाम	महेन्द्रमलंगिया	सुभद्राकुमारी
1994	अथ अद्बुदानन्द	संजय कुन्दन	लक्ष्मीनारायण मिश्र
1995	एकटा चिनमा	विनोद कुमार मिश्र	शारदा सिंह
1996	के केकर ?	अरविन्द अक्कू	रघुवीर मोची
1997	पदुआ कक्का अएला गाम	अरविन्द अक्कू	अनीता मन्नू
1998	गुलाबछडी	अरविन्द अक्कू	अनीता मन्नू
1999	अगिनपथक सामा	कुमार शैलेन्द्र	रश्मि
2000	सेहन्ता	रोहिणीरमण झा	रश्मि
2001	नवघर उठे	कमल मोहन चुन्नू	कुमार गगन
2002	शपथ ग्रहण	कुमार गगन	मिथिलेश कुमार मिश्र
2003	राज्याभिषेक	अरविन्द अक्कू	कुमार गगन
2004	छूतहाघैल	महेन्द्र मलंगिया	रामश्रेष्ठ पासवान
2005	जय जय जनता जनार्दन	कुमार गगन	उमाकान्त झा
2006	नदी गोगिंआयल जाय	मनोज मनु	रामश्रेष्ठ पासवान
2007	अलख निरंजन	अरविन्द अक्कू	रामश्रेष्ठ पासवान

कामेश्वरी देवी पुरस्कार :

मिथिलाक सर्वांगीन विकासार्थ अपन जीवनक आहूति देनिहार मिथिलाक वरदपुत्र ललितनारायण मिश्रक धर्मपत्नी कामेश्वरी देवीक निधनोपरान्त हुनक स्मृतिमे हुनक ज्येष्ठ पुत्र विजयकुमार मिश्र चेतना समितिक वर्त्तमान अध्यक्ष एवं हुनक परिवारक सहयोगसँ नाट्याभिनयमे प्रतिभागी कलाकारकेँ विद्यापति स्मृति पर्वोत्सवपर अभिनीत नाटकक लेल सर्वश्रेष्ठ अभिनयक लेल पुरस्कृत करबाक परम्पराक शुभारम्भ भेल एकैसम शताब्दीक प्रथम दशकमे।

2002	शपथ ग्रहण	कुमार गगन	आती
2003	राजयभिषेक	अरविन्द अक्कू	गुडिया
2004	छूतहा घैल	महेन्द्र मलंगिया	गुडिया
2005	जय जय जनताजनार्दन	कुमार गगन	स्वाती सिंह
2006	नदी गुगुआएल जाय	मनोज मनु	सपनाकुमारी
2007	अलखनिरंजन	अरविन्द अक्कू	विजय लक्ष्मी

मैथिली रंगमंचकेँ व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करबामे चेतना समितिक माँ पुत्र नाट्यमंच प्रभाग वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे मिलक पाथर बनि गेल अछि जे जाहि दिशामे एकर प्रयास प्रारम्भ भेलैक आ ओकरा मूर्त्तरूप प्रदान करैत गेल तकर श्रेय आ प्रेय एकर समर्पित कलाकार लोकनिकेँ छनि। समितिक ई प्रयास कतेक सार्थक भेलैक जे नाट्यमंचक स्थापनोपरान्त नव-नव तकनिकसँ संयुक्त कयक नवीनतासाँ संयुक्त एकसँ एक कलाकारकेँ मंचपर आनि हुनका अपन यथार्थ प्रतिभाक प्रदर्शनार्थ स्वर्णिम अवसर प्रदान कयलक। चेतना द्वारा नाटकक ओ रंगमंचक

विकास यात्राक मार्गकेँ प्रशस्त करबाक हेतु जे अभियान चलौलक ओ साहित्येतिहासमे स्वर्णक्षरमे अंकित होयबाक योग्य थिक। एकरा इहो श्रेय आ प्रेय छैक जे एकर समर्पित कलाकार लोकनि अपन अभिनय कौशलक प्रदर्शनार्थ समितिक नाट्यमंचसँ अनुप्राणित भ' कतिपय नव-नव नाट्य-संस्थादि स्थापित भेलैक अरिपन (1982), भंगिमा (1984), कलासमिति, आङन, भाव तरंग, अभिनव भारती आदि-आदि रंगकर्मी संस्थादिक जन्मक मूलमे चेतना समितिक नाट्यमंच प्रभाग अछि।

चेतनाक नाट्यमंचक नियमित प्रदर्शनिक फलस्वरूप जनमानसकेँ नाटकक देखबाक लुतुक पड़ि गेलैक अछि जाहिसँ दर्शकक संख्यामे अपार वृद्धि भेलैक ताहिमे सन्देह नहि। मैथिली रंगमंचीय गतिविधिक व्यौरा अछि जे रंगकर्मक क्षेत्रमे चेतनाक नाट्यमंच प्रभागक अवदानसँ हमरा परिचय करबैत अछि जे इतिहासक दृष्टिएँ उल्लेखनीय अध्याय थिक। एहिमे सन्देह नहि जे मैथिली रंग जगतकेँ चेतनाक देनक चर्चा-अर्चा रंगमंचक इतिहासमे सतत स्मरणीय रहत, कारण एकरा स्थायित्व प्रदान करबाक दिशामे ई एहन ठोस कार्य कयलक अछि एकर नाट्य प्रभाग आ करैत आबि रहल अछि आ आशा कयल जाइत अछि जे भविष्यमे सेहो उज्ज्वल आ कर्मरत हैत से विश्वास अछि।

वस्तुतः चेतना समिति नाटकक ओ रंगमंचक माध्यममे मिथिलाक सांस्कृतिक, साहित्यिक आ कलाक प्रचार-प्रसारक सुकार्य करैत आबि रहस अछि। समिति रंगमंचक माध्यमे सांस्कृतिक आ साहित्यक आन्दोलन चलौलक जे जनचेतना जगयबामे सहायक सिद्ध भेल। एकर प्रयासक फलस्वरूप नाट्य-लेखन आ मंचनक विकासक दिशामे लोकक प्रतिवद्धता बढ़लैक। निजी निर्देशक, निजी तकनिशियन आ विशुद्ध मैथिल अभिनेता-अभिनेत्रीक सहयोगसँ नाट्य-प्रस्तुति करबामे निजी व्यक्तित्व निर्माण कयलक अछि संगहि अपन प्रदर्शनसँ राष्ट्रीय स्तरक कतिपय कलाकार बनौलन्हि। समितिक सत्प्रयासक फलस्वरूप नव नाटकक, नव-शैली आ नव-कथ्यक जन्म द' कए नव जागरणक शंखनाद कयलक अछि। एकरासँ प्रेरित भ' नव-नव संस्थादिक उदय आ विकास रंगमंचकेँ निस्सन्देह स्मृद्धि कयलक अछि। एकरा ई श्रेय आ प्रेय छैक जे नाट्यान्दोलनमे तीव्रता अनलक आ रंगमंचकेँ स्थायीत्व प्रदान करबाक निमित्त अत्यधिक क्रियाशील अछि।

* * *